हरियाणा विधान सभा

की

कार्यवाही

27 जुलाई, 1999

खण्ड 3, अंक 2

अधिकृत विवरण

विषय सूची

मंगलवार, 27 जुलाई, 1999

	पृष्ठ संख्या
अध्यक्ष का त्यागपत्र	(2)1
शोक प्रस्ताव	(2)1
कार्यकारी अध्यक्ष द्वारा घोषणा :	(2)1
सभापतियों के नामों की सूची	(2)11
बिजनैस एडवाइजरी कमेटी की पहली रिपोर्ट पेश करना	(2)11
सदन की मेज पर रखे गए/पुनः रखे गए कागज-पत्र	(2)15
विशेषाधिकार मामलों के संबंध में विशेषाधिकार समिति के प्रारंभिक प्रतिवेदन प्रस्तुत करना तथा अन्तिम प्रतिवेदन प्रस्तुत करने के लिए समय बढ़ाना।	(2)16
(i) श्री भजनलाल, भूतपूर्व एम०एल०ए० के विरूद्ध	(2)16
(ii) इंडियन एक्सप्रेस के संवाददाता, सम्पादक, प्रकाशक तथा मुद्रक के विरूद्ध	(2)17
मंत्रिपरिषद के सत्ता में न होने संबंधी औचित्य का प्रश्न तथा उस पर निर्णय	(2)18
विश्वास-मत	(2)20

मूल्य :

वैयक्तिक स्पष्टीकरण	
प्रो० छत्तर सिंह चौहान द्वारा	(2)31
विश्वास मत (पुनरारम्भ)	(2)32
वैयक्तिक स्पष्टीकरण -	
श्री जगदीश नेयर द्वारा	(2)40
विश्वास-मत (पुनरारम्भ)	(2)41
वैयक्तिक स्पष्टीकरण -	
श्री कंवल सिंह द्वारा	(2)48
विश्वास-मत (पुनरारम्भ)	(2)48
वैयक्तिक स्पष्टीकरण	
श्री मनी राम गोदारा द्वारा	(2)50
विश्वास-मत (पुनरारम्भ)	2)50
वैयक्तिक स्पष्टीकरण	
श्री रामविलास शर्मा द्वारा	(2)57
बैठक का समय बढ़ाना	(2)58
विश्वास-मत (पुनरारम्भ)	(2)58
वैयक्तिक स्पष्टीकरण -	
श्री कंवल सिंह द्वारा	(2)71
विश्वास-मत (पुनरारम्भ)	(2)72
बैठक का समय बढ़ाना	(2)81
विश्वास-मत (पुनरारम्भ)	(2)81
वैयक्तिक स्पष्टीकरण -	
(i) प्रो० छत्तर सिंह चौहान द्वारा	(2)82
(ii) श्री अत्तर सिंह सैनी द्वारा	(2)83
विश्वास-मत (पुनरारम्भ)	(2)83
बैठक का समय बढ़ाना	(2)96
विश्वास-मत (पुनरारम्भ)	(2)96
बैठक का समय बढ़ाना	(2)102
विश्वास-मत (पुनरारम्भ)	(2)102
बैठक का समय बढ़ाना	(2)109
विश्वास-मत (पुनरारम्भ)	(2)109
अध्यक्ष के निर्वाचन के बारे में घोषणा	(2)110

हरियाणा विधान सभा

मंगलवार, 27 जुलाई, 1999

विधान सभा की बैठक, हरियाणा विधान सभा हाल, विधान भवन, सैक्टर-1 चण्डीगढ़ में 14.00 बजे हुई। कार्यकारी अध्यक्ष (श्री फकीर चन्द अग्रवाल) ने अध्यक्षता की।

अध्यक्ष का त्यागपत्र

सचिव : मुझे सदन को यह सूचित करना है कि श्री छत्तर सिंह चौहान जी ने अपने अध्यक्ष पद से त्यागपत्र दे दिया है।

शोक प्रस्ताव

Mr. Acting Speaker : Hon'ble Members, Now, the Chief Minister will make obituary references.

Shri Birender Singh : Sir, before the Leader of the House makes the obituary references, we must be told where we have to sit because there is no sitting arrangement.

श्री कार्यकारी अध्यक्ष : बीरेन्द्र सिंह जी, क्योंकि स्पीकर साहब ने अपने पद से त्याग-पत्र बहुत देरी से दिया है इसलिए सीटिंग अरेंजमेंट समय पर नहीं हो सका।

प्रो० छत्तर सिंह चौहान : कार्यकारी अध्यक्ष महोदय, मैंने त्यागपत्र देने से पहले सीटिंग अरेंजमैंट कर दिया था।

श्री कार्यकारी अध्यक्ष : उस सीटिंग अरेंजमैंट को रिवाइज किया गया है। सभी सदस्यों को सीटें प्रोवाईड कर दी गई हैं। (विघ्न)

प्रो० छत्तर सिंह चौहान : कार्यकारी अध्यक्ष महोदय, मैंने आपके पास 12.35 बजे अपना इस्तीफा भेज दिया था और उससे पहले मैंने सीटिंग अरेंजमैंट कर दिया था फिर भी अगर आपने उस अरेंजमैंट को रिवाइज करना था तो भी आपके पास डेढ़ घण्टे का समय था आप उसको तबदील कर सकते थे।

श्री कार्यकारी अध्यक्ष : सीटिंग अरेंजमैंट को तबदील करने के बारे में मैम्बर्ज को सूचना दे दी गई थी।

श्री वीरेन्द्र सिंह : अध्यक्ष महोदय, हम जहां पर बैठें हैं क्या वहीं बैठे रहें।

श्री कार्यकारी अध्यक्ष : जैसे सभी मैम्बर्ज बैठे हैं ऐसे ही बैठे रहें मुझे इस बारे कोई आब्जैक्शन नहीं है।

मुख्यमंत्री (श्री ओम प्रकाश चौटाला) : कार्यकारी अध्यक्ष महोदय, पिछले सदन के और इस सदन के बीच में कुछ जानी मानी हस्तियां हमारे बीच नहीं रही विशेष रूप से कारगिल क्षेत्र की लड़ाई में शहीद हुए उन लोगों को श्रद्धांजलि अर्पित करने के लिए आपने मुझे अवसर प्रदान किया है उसके लिये आपका धन्यवाद।

आपरेशन विजय के शहीद

यह सदन कारगिल तथा दूसरे क्षेत्रों में पाकिस्तानी घुसपैठियों से मुकाबला करते हुए शहीद होने वाले भारत के वीर जवानों को अपना अश्रुपूर्ण नमन करता है।

इन रण-बांकुरों ने मातृभूमि की एकता और अखण्डता की रक्षा करते हुए जिस अदम्य साहस और वीरता का परिचय दिया तथा अपने जीवन का जो सर्वोच्च बलिदान दिया है, उसके लिए हर भारतवासी इनका सदैव कृतज्ञ रहेगा और भारत माँ का मस्तक सदा गर्व से ऊँचा रहेगा। माँ के आँचल की लाज रखने वाले इन लाडलों के बलिदान का कोई ऋण नहीं चुका सकता।

देश की रक्षा के लिए शहीद होने वाले इन जवानों और अधिकारियों में से अधिकतर वीरभूमि हरियाणा से हैं। देश के सम्मान की रक्षा के लिए हरियाणा के सैनिक सदैव अग्रणीय रहे हैं। हमारे रणबांकुरों की वीरता एवं बलिदान एक मिसाल है।

इस सदन के 25 जून 1999 को हुए अधिवेशन के बाद अब तक हरियाणा के 36 और वीर सैनिकों के आपरेशन विजय के दौरान अपने प्राणों की आहुति दी है। इन महान् शहीदों के नाम इस प्रकार हैं:-

1. मेजर संदीप सागर, सैक्टर-8, (पंचकूला)
2. कैप्टन संजीव दहिया, गांव रोहणा (सोनीपत)
3. लैफ्टिनैंट अमित वर्मा, गांव बराही (झज्जर)
4. नायब सूबेदार मदन सिंह, गांव सारंगपुर (हिसार)
5. उप कमाण्डैंट सतपाल चौधरी, गांव पंजुपुर (यमुनानगर)
6. लांस नायक भीम सिंह, गांव डाबी खुर्द (फतेहाबाद)
7. हैडकांस्टेबल तेजा राम, गांव बलवा कलां (नारनौल)
8. हवलदार रामकुमार, गांव भानी चन्द्रापल (रोहतक)
9. ग्रनेडियर संजय सिंह, गांव मध माधवी (भिवानी)
10. नायक लीला राम, गांव जटवाड़ा (झज्जर)
11. सिपाही हर प्रसाद, गांव फरीदपुर (फरीदाबाद)

12. हवलदार शिवकुमार, गांव ककरौला (महेन्द्रगढ़)
13. राईफलमैन जसबीर सिंह, गांव सामण (रोहतक)
14. नायक रामपाल, गांव सोलधा (झज्जर)
15. हवलदार गनर लाल सिंह, गांव गोकुल (भिवानी)
16. लांस नायक विजय सिंह, गांव सुन्दरपुर (रोहतक)
17. हवलदार महावीर सिंह, गांव घिराय (हिसार)
18. नायक किशन पाल, गांव टिटौली (रोहतक)
19. लांस हवलदार लेख राम, गांव सोलाह (महेन्द्रगढ़)
20. लांस हवलदार बलवान सिंह, गांव जिन्दराण (रोहतक)
21. सिपाही वीरेन्द्र कुमार, गांव मोहाना (फरीदाबाद)
22. सिपाही धर्मवीर, गांव ढाकला (झज्जर)
23. लांस नायक जाकिर हुसैन, गांव सोहता (फरीदाबाद)
24. लांस नायक अहमद अली, गांव गुड़डी (गुड़गांव)
25. ग्रनेडियर रियासत अली, गांव अधमी (पानीपत)
26. लांस नायक आजाद सिंह, गांव मुमताजपुर (गुड़गांव)
27. सिपाही नरेन्द्र सिंह, गांव महबाला (फतेहाबाद)
28. सिपाही पवित्र कुमार, गांव मिल्कपुर (हिसार)
29. हवलदार हरिओम, गांव खुंगई (झज्जर)
30. लांस नायक राजेश सिंह, गांव जनसावा (झज्जर)
31. लांस नायक राजबीर सिंह, गांव गढ़ी (फरीदाबाद)
32. सिपाही सुरेन्द्र सिंह, गांव बड़दू (भिवानी)
33. सिपाही संजीव सिंह, गांव कौलापुर (कुरुक्षेत्र)
34. राईफलमैन परमिन्द्र सिंह, गांव तेजली (यमुनानगर)
35. नायक सुरेश कुमार, गांव मोखरा (रोहतक)
36 हवलदार राजबीर सिंह, गांव मौड़ी (भिवानी)

इनके साथ-साथ तथा देश के विभिन्न भागों से सेना तथा अर्ध-सैनिक बलों के वीर-सैनिकों के बलिदान का स्मरण करते हुए हमारा हृदय दुःख से भर जाता है परन्तु उन्होंने देश को जो गौरव दिलवाया है हमें उस पर गर्व है।

यह सदन इन महान वीरों की शहादत पर इन्हें शत्-शत् नमन करता है और इनके शोक संतप्त परिवारों के सदस्यों के प्रति अपनी हार्दिक संवेदना प्रकट करता है।

डॉ (श्रीमती) राजेन्द्रा कुमारी बाजपेयी, पांडिचेरी की भूतपूर्व उप-राज्यपाल

यह सदन पांडिचेरी की भूतपूर्व उप-राज्यपाल डॉ० (श्रीमती) राजेन्द्रा कुमारी बाजपेयी के 17 जुलाई, 1999 को हुए दुःखद निधन पर गहरा शोक प्रकट करता है।

उनका जन्म 8 फरवरी, 1925 को हुआ। उन्होंने इलाहाबाद विश्वविद्यालय से 1951 में अर्थशास्त्र में पी०एच०डी० पूरी की। उन्होंने भारत छोड़ो आन्दोलन, 1942 में सक्रिया रूप से भाग लिया तथा गिरफ्तार हुई। वह 1962 से 1977 तक उत्तर प्रदेश विधान सभा की सदस्या रही और मंत्री के रूप मे कार्य किया। वह 1980,1984 और 1989 में लोकसभा के लिए चुनी गई और सितम्बर, 1985 से नवम्बर 1989 तक केन्द्रीय राज्य मंत्री रही। उन्होंने वर्ष 1976 में जिनेवा में हुए श्रम सम्मेलन, 1980 में संयुक्त राष्ट्र में जाने वाले प्रतिनिधि मण्डल तथा 1986 में टोकयो में विश्वशांति और परमाणु निरस्त्रीकरण के लिए हुये 'पराग' सम्मेलन में भारतीय प्रतिनिधि मण्डल का नेतृत्व किया। अप्रैल 1995 में वे पांडिचेरी की उप-राज्यपाल नियुक्त की गई।

उनके निधन से देश एक स्वतन्त्रता सेनानी, योग्य सांसद तथा कुशल प्रशासक की सेवाओं से वंचित हो गया है। यह सदन दिवंगत के शोक-संतप्त परिवार के सदस्यों के प्रति अपनी हार्दिक संवेदना प्रकट करता है।

यह सदन हरियाणा विधान सभा के सदस्य, श्री सम्पत सिंह के ससुर श्री सज्जन कुमार, के 15 जुलाई, 1999 को हुए दुःखद निधन पर गहरा शोक प्रकट करता है। उनका जन्म 1933 में हुआ था। वह व्यवसाय से एक अध्यापक थे।

यह सदन दिवंगत के शोक-संतप्त परिवार के सदस्यों के प्रति अपनी हार्दिक संवेदना प्रकट करता है।

श्री मनी राम गोदारा (भट्टू कलां) : कार्यकारी अध्यक्ष महोदय, आज इस हाउस में हमारे देश के महान सपूत जिन्होंने देश की रक्षा के लिए अपने जीवन का बलिदान किया, उनको श्रद्धांजलि भेंट करने के लिए यह रैजोल्यूशन लीडर ऑफ दि हाउस ने रखा है, हरियाणा विकास पार्टी की तरफ से हम भी उनके साथ मिलकर कारगिल तथा दूसरे क्षेत्रों में पाकिस्तानी घुसपैठियों से मुकाबला करते हुए शहीद होने वाले भारत के वीर जवानों को अपना अश्रुपूर्ण नमन करते हैं।

इन रण-बांकुरों ने मातृभूमि की एकता अखण्डता की रक्षा करते हुए जिस अदम्य साहस और वीरता का परिचय दिया तथा अपने जीवन का जो सर्वोच्च बलिदान दिया है, उसके लिए हर भारतवासी इनका सदैव कृतज्ञ रहेगा और भारत मां का मस्तक सदा गर्व से ऊंचा रहेगा। माँ के आंचल की लाज रखने वाले इन लाडलों के बलिदान का कोई ऋण नहीं चुका सकता।

देश की रक्षा के लिए शहीद होने वाले इन जवानों और अधिकारियों में से अधिकतर वीरभूमि हरियाणा से हैं। देश के सम्मान की रक्षा के लिए हरियाणा के सैनिक सदैव अग्रणीय रहे हैं। हमारे रणबांकुरों की वीरता एवं बलिदान एक मिसाल है।

इस सदन के 25 जून 1999 को हुए अधिवेशन के बाद अब तक हरियाणा के 36 और वीर सैनिकों ने आपरेशन विजय के दौरान अपने प्राणों की आहुति दी है। इन महान शहीदों के नाम इस प्रकार

हैं :- मेजर संदीप सागर, सैक्टर-8, (पंचकूला), कैप्टन संजीव दहिया, गांव रोहणा (सोनीपत), लैफ्टिनैंट अमित वर्मा, गांव बराही (झज्जर), नायब सूबेदार मदन सिंह, गांव सारंगपुर (हिसार), उप कमाण्डैंट सतपाल चौधरी, गांव फंजूपुर (यमुनानगर), लांस नायक भीम सिंह, गांव डाबी खुर्द (फतेहाबाद), हैडकांस्टेबल तेजा राम, गांव बलवा कलां (नारनौल), हवलदार रामकुमार, गांव भानी चन्द्रापल (रोहतक), ग्रेनेडियर संजय सिंह, गांव मध माधवी (भिवानी), नायक लीला राम, गांव जटवाड़ा (झज्जर), सिपाही हर प्रसाद, गांव फरीदपुर (फरीदाबाद), हवलदार शिवकुमार, गांव ककरौला (महेन्द्रगढ़), राईफलमैन जसबीर सिंह, गांव सामण (रोहतक), नायक रामपाल, गांव सोलधा (झज्जर), हवलदार गनर लाल सिंह, गांव गोकुल (भिवानी), लांस नायक विजय सिंह, गांव सुन्दरपुर (रोहतक), हवलदार महावीर सिंह, गांव घिराय (हिसार), नायक किशन पाल, गांव टिटोली (रोहतक), लांस हवलदार लेख राम, गांव सोलाह (महेन्द्रगढ़), लांस हवलदार बलवान सिंह, गांव जिन्दराण (रोहतक), सिपाही वीरेन्द्र कुमार, गांव मोहाना (फरीदाबाद), सिपाही धर्मवीर, गांव ढाकला (झज्जर), लांस नायक जाकिर हुसैन, गांव सोवता (फरीदाबाद), लांस नायक अहमद अली, गांव गुड्डी (गुड़गांव), ग्रेनेडियर रियासत अली, गांव अधमी (पानीपत), लांस नायक आजाद सिंह, गांव मुश्ताजपुर (गुड़गांव), सिपाही नरेन्द्र सिंह, गांव महवासा (फतेहाबाद), सिपाही पवित्र कुमार, गांव मिल्कपुर (हिसार), हवलदार हरिओम, गांव खुंगई (झज्जर), लांस नायक राजेश सिंह, गांव जनसावा (झज्जर), लांस नायक राजबीर सिंह, गांव गढ़ी (फरीदाबाद), सिपाही सुरेन्द्र सिंह, गांव बड्डू (भिवानी), सिपाही संजीव सिंह, गांव कौलापुर (कुरुक्षेत्र), राईफलमैन परमिन्द्र सिंह, गांव तेजली (यमुनानगर), नायक सुरेश कुमार, गांव मोखरा (रोहतक), हवलदार राजबीर सिंह, गांव मौड़ी (भिवानी), इनके साथ-साथ तथा देश के विभिन्न भागों से सेना तथा अर्धसैनिक बलों के वीर सैनिकों के बलिदान का स्मरण करते हुए हमारा हृदय दुःख से भर जाता है परन्तु उन्होंने देश को जो गौरव दिलवाया है, हमें उस पर गर्व है।

मैं इन महान वीरों की शहादत पर इन्हें शत्-शत् नमन करता हूं और इनके शोक संतप्त परिवारों के सदस्यों के प्रति अपनी हार्दिक संवेदना प्रकट करता हूं।

कार्यकारी अध्यक्ष महोदय, मैं अपनी तरफ से और अपनी पार्टी की तरफ से पांडिचेरी की भूतपूर्व उप-राज्यपाल डॉ॰ (श्रीमती) राजेन्द्रा कुमारी वाजपेयी के 17 जुलाई, 1999 को हुए दुःखद निधन पर गहरा शोक प्रकट करता हूं।

उनका जन्म 8 फरवरी, 1925 को हुआ। उन्होंने इलाहाबाद विश्वविद्यालय से 1951 में अर्थशास्त्र में पी०एच०डी० पूरी की। उन्होंने भारत छोड़ो आन्दोलन, 1942 में सक्रिया रूप से भाग लिया तथा गिरफ्तार हुई। वह 1962 से 1977 तक उत्तर प्रदेश विधान सभा की सदस्या रही और मंत्री के रूप मे कार्य किया। वह 1980,1984 और 1989 में लोकसभा के लिए चुनी गई और सितम्बर, 1985 से नवम्बर 1989 तक केन्द्रीय राज्य मंत्री रही। उन्होंने वर्ष 1976 में जिनेवा में हुए श्रम सम्मेलन, 1980 में संयुक्त राष्ट्र में जाने वाले प्रतिनिधि मण्डल तथा 1986 में टोकयो में विश्वशांति और परमाणु निरस्त्रीकरण के लिए हुये "पराग" सम्मेलन में भारतीय प्रतिनिधि मण्डल का नेतृत्व किया। अप्रैल 1995 में वे पांडिचेरी की उप-राज्यपाल नियुक्त की गई।

उनके निधन से देश एक स्वतन्त्रता सेनानी, योग्य सांसद तथा कुशल प्रशासक की सेवाओं से वंचित हो गया है। मैं अपनी तरफ से और अपनी पार्टी की तरफ से दिवंगत के शोक-संतप्त परिवार के सदस्यों के प्रति अपनी हार्दिक संवेदना प्रकट करता हूं।

[श्री भनी राम गोदारा]

मैं अपनी तरफ से और अपनी पार्टी की तरफ से हरियाणा विधान सभा के सदस्य, श्री सम्पत सिंह के ससुर श्री सज्जन कुमार के 15 जुलाई, 1989 को हुए दुःखद निधन पर गहरा शोक प्रकट करता हूं। उनका जन्म 1933 में हुआ था। वह व्यवसाय से एक अध्यापक थे।

मैं अपनी तरफ से और अपनी पार्टी की तरफ से दिवंगत के शोक संतप्त परिवार के सदस्यों के प्रति अपनी हार्दिक संवेदना प्रकट करता हूं।

श्री कर्ण सिंह दलाल (पलवल) : कार्यकारी अध्यक्ष महोदय, सदन के नेता श्री ओम प्रकाश चौटाला जी द्वारा जो शोक प्रस्ताव सदन में प्रस्तुत किया गया है मैं उसका विकास पार्टी (लोकतांत्रिक) के सभी सदस्यों की तरफ से समर्थन करता हूं। सर, मैं अपनी तरफ से और अपनी पार्टी की तरफ से कारगिल तथा दूसरे क्षेत्रों में पाकिस्तानी घुसपैठियों से मुकाबला करते हुए शहीद होने वाले भारत के वीर जवानों को अपना अश्रुपूर्ण नमन करता हैं।

इन रण-बांकुरों ने मातृभूमि की एकता और अखण्डता की रक्षा करते हुए जिस अदम्य साहस और वीरता का परिचय दिया तथा अपने जीवन का जो सर्वोच्च बलिदान दिया है, उसके लिए हर भारतवासी इनका सदैव कृतज्ञ रहेगा और भारत माँ का मस्तक सदा गर्व से ऊंचा रहेगा। माँ के आँचल की लाज रखने वाले इन लाडलों के बलिदान का कोई ऋण नहीं चुका सकता।

देश की रक्षा के लिए शहीद होने वाले इन जवानों और अधिकारियों में से अधिकतर वीरभूमि हरियाणा से हैं। देश के सम्मान की रक्षा के लिए हरियाणा के सैनिक अग्रणीय रहे हैं। हमारे रणबांकुरों की वीरता एवं बलिदान एक मिसाल है।

इस सदन के 25 जून 1999 को हुए अधिवेशन के बाद अब तक हरियाणा के 36 और वीर सैनिकों ने ऑप्रेशन विजय के दौरान अपने प्राणों की आहुति दी है। इन महान् शहीदों के नाम इस प्रकार हैं :- मेजर संदीप सागर, सैक्टर-8, पंचकूला, कैप्टन संजीव दहिया, गांव रोहणा, सोनीपत, लैफ्टिनैंट अमित वर्मा, गांव बराही, झज्जर, नायब सूबेदार मदन सिंह, गांव सारंगपुर, हिसार, उप कमाण्डैंट सतपाल चौधरी, गांव पंजूपुर, यमुनानगर, लांस नायक भीम सिंह, गांव डाबी खुर्द, फतेहाबाद, हैडकांस्टेबल तेजा राम, गांव बलवा कलां, नारनौल, हवलदार रामकुमार, गांव भानी चन्द्रावल, रोहतक, ब्रिगेडियर संजय सिंह, गांव मध माधवी, भिवानी, नायक लीला राम, गांव जटवाड़ा, झज्जर, सिपाही हर प्रसाद, गांव फरीदपुर, फरीदाबाद, हवलदार शिवकुमार, गांव कनौला, महेन्द्रगढ़, राईफलमैन जसबीर सिंह, गांव सामण, रोहतक, नायक रामपाल, गांव सोलधा, झज्जर, हवलदार गनर लाल सिंह, गांव गोकुल, भिवानी, लांस नायक विजय सिंह, गांव सुन्दरपुर, रोहतक, हवलदार महाबीर सिंह, गांव घिराय, हिसार, नायक किशन पाल, गांव टिटौली, रोहतक, लांस हवलदार लेख राम, गांव सोलाह, महेन्द्रगढ़, लांस हवलदार बलवान सिंह, गांव जिन्दराण, रोहतक, सिपाही वीरेन्द्र कुमार, गांव मोहाना, फरीदाबाद, सिपाही धर्मवीर, गांव ढाकला, झज्जर, लांस नायक जाकिर हुसैन, गांव सोधता, फरीदाबाद, लांस नायक अहमद अली, गांव गुड्डी, गुड़गांव, ब्रिगेडियर रियासत अली, गांव अधमी, पानीपत, लांस नायक आजाद सिंह, गांव मुमताजपुर, गुड़गांव, सिपाही नरेन्द्र सिंह, गांव महवाला, फतेहाबाद, सिपाही पवित्र कुमार, गांव मिल्कपुर, हिसार, हवलदार हरिओम, गांव खुंगई, झज्जर, लांस नायक राजेश सिंह, गांव जनसावा, झज्जर, लांस नायक राजबीर सिंह, गांव गढ़ी, फरीदाबाद, सिपाही सुरेन्द्र सिंह, गांव बड़दू, भिवानी, सिपाही संजीव सिंह, गांव कौलापुर, कुरुक्षेत्र, राईफलमैन परमिन्द्र सिंह, गांव तेजली, यमुनानगर, नायक सुरेश कुमार, गांव

मोखरा, रोहतक, हवलदार राजबीर सिंह, गांव मौड़ी, भिवानी, सर, इनके साथ-साथ तथा देश के विभिन्न भागों से सेना तथा अर्ध-सैनिक बलों के वीर-सैनिकों के बलिदान का स्मरण करते हुए हमारा हृदय दुःख से भर जाता है परंतु उन्होंने देश को जो गौरव दिलवाया है हमें उस पर गर्व है।

मैं इन महान वीरों की शहादत पर इन्हें शत्-शत् नमन करता हूं और इनके शोक संतप्त परिवारों के सदस्यों के प्रति अपनी हार्दिक संवेदना प्रकट करता हूं।

मैं अपनी तरफ से और अपनी पार्टी की तरफ से पांडिचेरी की भूतपूर्व उप-राज्यपाल डॉ० राजेन्द्र कुमारी बाजपेयी के 17 जुलाई, 1999 को हुए दुःखद निधन पर गहरा शोक प्रकट करता हूं।

उनका जन्म 8 फरवरी, 1925 को हुआ। उन्होंने इलाहाबाद विश्वविद्यालय से 1951 में अर्थशास्त्र में पी०एच०डी० पूरी की। उन्होंने भारत छोड़ो आन्दोलन, 1942 में सक्रिया रूप से भाग लिया तथा गिरफ्तार हुई। वह 1962 से 1977 तक उत्तर प्रदेश विधान सभा की सदस्या रही और मंत्री के रूप मे कार्य किया। वह 1980,1984 और 1989 में लोकसभा के लिए चुनी गई और सितम्बर, 1985 से नवम्बर 1989 तक केन्द्रीय राज्य मंत्री रही। उन्होंने वर्ष 1976 में जिनेवा में हुए श्रम सम्मेलन, 1980 में संयुक्त राष्ट्र में जाने वाले प्रतिनिधि मण्डल तथा 1986 में टोकयो में विश्वशांति और परमाणु निरस्त्रीकरण के लिए हुये 'पराग' सम्मेलन में भारतीय प्रतिनिधि मण्डल का नेतृत्व किया। अप्रैल 1995 में वे पांडिचेरी की उप-राज्यपाल नियुक्त की गई।

उनके निधन से देश एक स्वतन्त्रता सेनानी, योग्य सांसद तथा कुशल प्रशासक की सेवाओं से वंचित हो गया है। मैं दिवंगत के शोक-संतप्त परिवार के सदस्यों के प्रति अपनी हार्दिक संवेदना प्रकट करता हूं।

सर, मैं अपनी तरफ से और अपनी पार्टी की तरफ से हरियाणा विधान सभा के सदस्य श्री सम्पत सिंह के ससुर श्री सज्जन कुमार, के 15 जुलाई, 1999 को हुए दुःखद निधन पर गहरा शोक प्रकट करता हूं। उनका जन्म 1933 में हुआ था। वह व्यवसाय से एक अध्यापक थे।

मैं दिवंगत के शोक-संतप्त परिवार के सदस्यों के प्रति अपनी हार्दिक संवेदना प्रकट करता हूं।

श्रीमती करतार देवी (कलानौर, अनुसूचित जाति) : सम्मानीय कार्यकारी अध्यक्ष महोदय, सदन में जो शोक प्रस्ताव विचाराधीन है, मैं अपने दल की तरफ से और अपनी तरफ से उसमें शामिल होने के लिए और जो दिवंगत आत्माएं हमारे बीच में पहले सदन के बाद नहीं रही उन सब के परिवारों के प्रति हार्दिक संवेदना प्रकट करने के लिये खड़ी हुई हूं। सर, मैं कारगिल तथा दूसरे क्षेत्रों में पाकिस्तानी घुसपैठियों से मुकाबला करते हुए शहीद होने वाले भारत के वीर जवानों को अपना अश्रुपूर्ण नमन करती हूं।

इन रण-बांकुरों ने मातृभूमि की एकता और अखण्डता की रक्षा करते हुए जिस अदम्य साहस और वीरता का परिचय दिया तथा अपने जीवन का सर्वोच्च बलिदान दिया है उसके लिए हर भारतवासी का मस्तक गर्व से ऊंचा हो जाता है और उनके लिये यह देश हमेशा कृतज्ञ रहेगा और भारत माँ का मस्तक सदा गर्व से ऊंचा रहेगा। माँ के आँचल की लाज रखने वाले इन लाडलों के बलिदान का कोई ऋण नहीं चुका सकता।

इस देश की रक्षा के लिये शहीद होने वाले इन जवानों और अधिकारियों में से अधिकतर वीरभूमि हरियाणा से है। देश के सम्मान की रक्षा के लिये हरियाणा के सैनिक सदैव अग्रणीय रहे हैं। हमारे

[श्रीमती करतार देवी]

रणबांकुरों की वीरता एवं बलिदान अपने आप में एक मिसाल है जो देश भर में बड़ी श्रद्धा और करुणा से याद किये जा रहे हैं और उनके बाद उदाहरण दिये जा रहे हैं।

इस सदन के 25 जून 1999 को हुए अधिवेशन के बाद अब तक हरियाणा के 36 और वीर सैनिकों ने ऑपरेशन विजय के दौरान अपने प्राणों की आहुति दी है। इन महान् शहीदों के नाम इस प्रकार हैं :- मेजर संदीप सागर, सैक्टर-8, (पंचकूला), कैप्टन संजीव दहिया, गांव रोहणा (सोनीपत), लैफ्टिनैंट अमित वर्मा, गांव बराही (झज्जर), नायब सूबेदार मदन सिंह, गांव पंजूपुर, यमुनानगर उप कमाण्डैंट सतपाल चौधरी, गांव सारंगपुर (हिसार), लांस नायक भीम सिंह, गांव डाणी खुर्द (फतेहाबाद), हैडकांस्टेबल तेजा राम, गांव बलवा कलां (नारनौल), हवलदार रामकुमार, गांव भानी चन्द्रापल (रोहतक), ब्रगेडियर संजय सिंह, गांव मध मांधवी (भिवानी), नायक लीला राम, गांव जटवाड़ा (झज्जर), सिपाही हर प्रसाद, गांव फरीदपुर (फरीदाबाद), हवलदार शिवकुमार, गांव ककरौला (महेन्द्रगढ़), राईफलमैन जसबीर सिंह, गांव सामण (रोहतक), नायक रामपाल, गांव सोलधा (झज्जर), हवलदार गनर लाल सिंह, गांव गोकुल (भिवानी), लांस नायक विजय सिंह, गांव सुन्दरपुर (रोहतक), हवलदार महाबीर सिंह, गांव घिराय (हिसार), नायक किशन पाल, गांव टिटोली (रोहतक), लांस हवलदार लेख राम, गांव सोलाह (महेन्द्रगढ़), लांस हवलदार बलवान सिंह, गांव जिन्दराण (रोहतक), सिपाही वीरेन्द्र कुमार, गांव मोहाना (फरीदाबाद), सिपाही धर्मवीर, गांव ढाकला (झज्जर), लांस नायक जाकिर हुसैन, गांव सोहता (फरीदाबाद), लांस नायक अहमद अली, गांव गुड़डी (गुड़गांव), ब्रगेडियर रियासत अली, गांव अधमी (पानीपत), लांस नायक आजाद सिंह, गांव मुमताजपुर (गुड़गांव), सिपाही नरेन्द्र सिंह, गांव महवाला (फतेहाबाद), सिपाही पवित्र कुमार, गांव मिल्कपुर (हिसार), हवलदार हरिओम, गांव खुंगाई (झज्जर), लांस नायक राजेश सिंह, गांव जनसावा (झज्जर), लांस नायक राजबीर सिंह, गांव गढ़ी (फरीदाबाद), सिपाही सुरेन्द्र सिंह, गांव बहदू (भिवानी), सिपाही संजीव सिंह, गांव कैलापुर (कुरुक्षेत्र), राईफलमैन परमिन्द्र सिंह, गांव तेजली (यमुनानगर), नायक सुरेश कुमार, गांव मोखरा (रोहतक), हवलदार राजबीर सिंह, गांव मौड़ी (भिवानी), इसके साथ-साथ देश के विभिन्न भागों से सेना और अर्ध-सैनिक बलों के वीर सैनिकों के बलिदान का स्मरण करते हुए हमारा हृदय दुःख से भर जाता है परन्तु उन्होंने देश को जो गौरव दिलवाया है हमें उस पर गर्व है। हम इन महान वीरों की शहादत पर इन्हें शत्-शत् नमन करते हैं और इनके शोक संतप्त परिवारों के सदस्यों के प्रति अपनी हार्दिक संवेदना प्रकट करते हैं। कार्यकारी अध्यक्ष महोदय, मैं आपके माध्यम से मुख्य मंत्री जी को याद दिलाना चाहती हूं कि आपने बहादुर सैनिकों की शहादत के बारे में बोलते हुए यह कहा था कि उन वीरों के परिवारों को ज्यादा से ज्यादा सहायता की जाए। उन्होंने इसी सदन में बोलते हुए यह सुझाव दिया था कि उन वीरों के परिवारों की ज्यादा से ज्यादा सहायता की जाए। अब प्रशासन की बागडोर उनके हाथ में है इसलिए मैं उनसे आशा करूंगी कि उन शहीद हुए नौजवानों के परिवारों को सहायता के लिए जिन्होंने प्रदेश का नाम ऊंचा किया है उनको ज्यादा से ज्यादा धनराशि दे कर, उनके परिवारों के सदस्यों को नौकरी दे कर, मकानों की सुविधा दे कर और वार विडोज को दी जाने वाली सारी सुविधाएं दे कर, सहायता करेंगे। इसी आशा के साथ इन महान वीरों की शहादत पर इन्हें शत्-शत् नमन करते हुए अपनी तरफ से और अपने दल की तरफ से इनके शोक संतप्त परिवारों के सदस्यों के प्रति अपनी हार्दिक संवेदना प्रकट करती हूं।

कार्यकारी अध्यक्ष महोदय, मैं अपनी तरफ से और अपने दल की तरफ से पांडिचेरी के भूतपूर्व उप-राज्यपाल डॉ० (श्रीमती) राजेन्द्रा कुमारी वाजपेयी के 17 जुलाई, 1999 को हुए दुःखद निधन पर

गहरा शोक प्रकट करती हूं। उनका जन्म 8 फरवरी, 1925 को हुआ। उन्होंने एक महिला होते हुए 1951 में अर्थ शास्त्र में पी०एच०डी० की। जिस समय उन्होंने अर्थ शास्त्र में पी०एच०डी० की उस समय महिलाओं का अपने घर से बाहर निकलने पर बड़ा भारी बंधन था। उन्होंने भारत छोड़ो आन्दोलन, 1942 में सक्रियता से भाग लिया और गिरफ्तार हुई। वह 1962 से 1977 तक उत्तर प्रदेश विधान सभा की सदस्या रही और मंत्री के रूप में भी कार्य किया। वह 1980,1984 और 1989 में लोक सभा के लिए चुनी गई वह हमारी पार्टी की हरियाणा प्रदेश की प्रभारी और महा मंत्री रही उस समय मुझे उनके बहुत नज़दीक काम करने का मौका मिला। उन्होंने वर्ष 1976 में जिनेवा में हुए श्रम सम्मेलन, 1980 में संयुक्त राष्ट्र में जाने वाले प्रतिनिधि मण्डल तथा 1986 में टोकयो में विश्व शांति और प्रमाणु निरस्त्रीकरण के लिए हुए पराग सम्मेलन में भारतीय प्रतिनिधि मण्डल का नेतृत्व किया। वह अप्रैल, 1995 में पांडिचेरी की उप-राज्यपाल नियुक्त की गई। उनके निधन से देश एक स्वतंत्रता सेनानी, योग्य सांसद तथा कुशल प्रशासक की सेवाओं से वंचित हो गया है। मैं दिवंगत के शोक संतप्त परिवार के सदस्यों के प्रति अपनी संवेदना प्रकट करती हूं। कार्यकारी महोदय, मैं अपनी तरफ से और अपने दल की तरफ से इसी सदन के सदस्य श्री सम्पत सिंह जी के ससुर श्री सज्जन कुमार के 15 जुलाई 1999 को हुए दुःखद निधन पर गहरा शोक प्रकट करती हूं। उनका जन्म 1933 में हुआ था। वह व्यवसाय से एक अध्यापक थे। मैं अपनी तरफ से और अपने दल की तरफ से दिवंगत के शोक संतप्त परिवार के सदस्यों के प्रति अपनी हार्दिक संवेदना प्रकट करती हूं।

श्री राम बिलास शर्मा (महेन्द्रगढ़) : कार्यकारी अध्यक्ष महोदय, मैं अपनी तरफ से व अपने दल की तरफ से कारगिल तथा दूसरे क्षेत्रों में पाकिस्तानी घुसपैठियों से मुकाबला करते हुए शहीद होने वाले भारत के वीर जवानों को अपना अश्रुपूर्ण नमन करता हूं। कार्यकारी अध्यक्ष महोदय, अब तक हरियाणा के 79 जवान शहादत को प्राप्त हो चुके हैं। इन रण बांकुरों ने मातृभूमि की एकता और अखण्डता की रक्षा करते हुए जिस अदम्य साहस का परिचय दिया तथा अपने जीवन का जो सर्वोच्च बलिदान दिया है, उसके लिए हर भारतवासी इनका सदैव कृतज्ञ रहेगा और भारत माँ का मस्तक सदा गर्व से ऊंचा रहेगा। माँ के आंचल की लाज रखने वाले इन लाडलों के बलिदान का कोई ऋण नहीं चुका सकता।

देश की रक्षा के लिए शहीद होने वाले इन जवानों और अधिकारियों में से अधिकतर वीरभूमि हरियाणा से हैं। इस सदन के 25 जून, 1999 को हुए अधिवेशन के बाद अब तक हरियाणा के 36 और वीर सैनिकों ने आप्रेशन विजय के दौरान अपने प्राणों की आहुति दी है। इन महान शहीदों में हैं मेजर संदीप सागर, सैक्टर-8, (पंचकूला), कैप्टन संजीव दहिया, गांव रोहणा (सोनीपत), लैफ्टिनैंट अमित वर्मा, गांव बराही (झज्जर), नायब सूबेदार मदन सिंह, गांव सारंगपुर (हिसार), उप कमाण्डैंट सतपाल चौधरी, गांव पंजू पुर (यमुनानगर), लांस नायक भीम सिंह, गांव ढाबी खुर्द (फतेहाबाद), हैडकांस्टेबल तेजा राम, गांव बलवा कलां (नारनौल), हवलदार रामकुमार, गांव भानी चन्द्रपाल (रोहतक), ग्रनेडियर संजय सिंह, गांव मध माधवी (भिवानी), नायक लीला राम, गांव जटवाड़ा (झज्जर), सिपाही हर प्रसाद, गांव फरीदपुर (फरीदाबाद), हवलदार शिवकुमार, गांव ककरौला (महेन्द्रगढ़), राईफलमैन जसबीर सिंह, गांव सामण (रोहतक), नायक रामपाल, गांव सीलधा (झज्जर), हवलदार गनर लाल सिंह, गांव गोकुल (भिवानी), लांस नायक विजय सिंह, गांव सुन्दरपुर (रोहतक), हवलदार महाबीर सिंह, गांव घिराय (हिसार), नायक किशन पाल, गांव टिटोली (रोहतक), लांस हवलदार लेख राम, गांव सोलाह (महेन्द्रगढ़), लांस हवलदार बलवान सिंह, गांव जिन्दराण (रोहतक), सिपाही वीरेन्द्र कुमार, गांव भोखाना (फरीदाबाद), सिपाही धर्मवीर, गांव ढाकला (झज्जर), लांस नायक जाकिर हुसैन, गांव सौथरा (फरीदाबाद), लांस नायक अहमद अली, गांव

[श्री राम बिलास शर्मा]

गुड्डी (गुड़गांव), ब्रिगेडियर रियासत अली, गांव अधमी (पानीपत), लांस नायक आजाद सिंह, गांव मुमताजपुर (गुड़गांव), सिपाही नरेन्द्र सिंह, गांव मेहुवाला (फतेहाबाद), सिपाही पवित्र कुमार, गांव मिल्कपुर (हिसार), हवलदार हरिओम, गांव खुंगई (झज्जर), लांस नायक राजेश सिंह, गांव जनसावा (झज्जर), लांस नायक राजबीर सिंह, गांव गढ़ी (फरीदाबाद), सिपाही सुरेन्द्र सिंह, गांव बड़दू (भिवानी), सिपाही संजीव सिंह, गांव कौलापुर (कुरुक्षेत्र), राईफलमैन परमिन्द्र सिंह, गांव तेजली (यमुनानगर), नायक सुरेश कुमार, गांव मोखरा (रोहतक), हवलदार राजबीर सिंह, गांव मौड़ी (भिवानी), कार्यकारी अध्यक्ष महोदय, इनके अलावा देश के विभिन्न भागों से सेना तथा अर्ध-सैनिक बलों के वीर-सैनिकों के बलिदान का स्मरण करते हुए हमारा हृदय दुःख से भर जाता है परन्तु उन्होंने देश को जो गौरव दिलवाया है हमें उस पर गर्व है।

मैं इन महान् वीरों की शहादत पर इन्हें शत्-शत् नमन करता हूं और इनके शोक संतप्त परिवारों के सदस्यों के प्रति अपनी हार्दिक संवेदना प्रकट करता हूँ।

कार्यकारी अध्यक्ष महोदय, मैं अपनी तरफ से व अपने दल की तरफ से उप-राज्यपाल डॉ० (श्रीमती) राजेन्द्र कुमारी बाजपेयी के 17 जुलाई, 1999 को हुए दुःखद निधन पर गहरा शोक प्रकट करता हूं।

उनका जन्म 8 फरवरी, 1925 को हुआ। उन्होंने इलाहाबाद विश्वविद्यालय से 1951 में अर्थशास्त्र में पी०एच०डी० पूरी की। उन्होंने भारत छोड़ो आन्दोलन 1942 में सक्रिय रूप से भाग लिया तथा गिरफ्तार हुई। वह 1962 से 1977 तक उत्तर प्रदेश विधान सभा की सदस्या रहीं और मंत्री के रूप मे कार्य किया। वह 1980,1984 और 1989 में लोकसभा के लिए चुनी गई और सितम्बर, 1985 से नवम्बर 1989 तक केन्द्रीय राज्य मंत्री रही। उन्होंने वर्ष 1976 में जिनेवा में हुए श्रम सम्मेलन, 1980 में संयुक्त राष्ट्र में जाने वाले प्रतिनिधि मण्डल तथा 1986 में टोक्यो में विश्वशांति और परमाणु निरस्त्रीकरण के लिए हुये पराग सम्मेलन में भारतीय प्रतिनिधि मण्डल का नेतृत्व किया। अप्रैल 1995 में वे पांडिचेरी की उप-राज्यपाल नियुक्त की गई।

उनके निधन से देश एक स्वतन्त्रता सेनानी, योग्य सांसद तथा कुशल प्रशासक की सेवाओं से वंचित हो गया है। मैं अपने दल की तरफ से दिवंगत के शोक-संतप्त परिवार के प्रति अपनी हार्दिक संवेदना प्रकट करता हूं।

कार्यकारी अध्यक्ष महोदय, मैं हरियाणा विधान सभा के सदस्य, श्री संपत सिंह के ससुर श्री सज्जन कुमार, के 15 जुलाई, 1999 को हुए दुःखद निधन पर गहरा शोक प्रकट करता हूं। उनका जन्म 1933 में हुआ था। वह व्यवसाय से अध्यापक थे।

मैं अपने दल व अपनी तरफ से शोक-संतप्त परिवार के सदस्यों के प्रति अपनी हार्दिक संवेदना प्रकट करता हूं।

श्री कार्यकारी अध्यक्ष : सम्मानित सदन में भिन्न-भिन्न पार्टियों के नेताओं ने दिवंगत सैनिकों के प्रति अपने श्रद्धा सुमन अर्पित किए हैं, मैं भी अपने आप को उनकी भावनाओं से जोड़ता हूं। इस सदन के 25 जून, 1999 को हुए अधिवेशन के पश्चात् आज तक 36 और वीर सैनिकों ने कारगिल तथा दूसरे क्षेत्रों में पाकिस्तानी घुसपैठियों से मुकाबला करते हुए अपने प्राणों की आहुति दी और वीरगति को प्राप्त

हुए। मैं इन सभी शहीदों को अपनी भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं। मातृभूमि की एकता और अखण्डता की रक्षा के लिए उन्होंने जिस साहस और वीरता का परिचय दिया है उसके लिए प्रत्येक भारतवासी उनका कृतज्ञ रहेगा और भविष्य में वे हमारे प्रेरणा-स्रोत रहेंगे। इसके साथ ही साथ देश के विभिन्न भागों में जिन जवानों और सैनिकों ने भारत मां की आन-बान और शान की रक्षा हेतु अपने प्राण न्यौछावर किये हैं उनको भी मैं शत्-शत् नमन करता हूं तथा श्रद्धा सुमन अर्पित करता हूं। शोक संतप्त सभी सैनिक परिवारजनों को अपनी हार्दिक संवेदना प्रकट करते हुए परम पिता परमेश्वर से प्रार्थना करता हूं कि वह इन दिवंगत आत्माओं को शान्ति और सद्गति प्रदान करे और उनके परिवारजनों, सम्बन्धियों तथा मित्रगणों को इस अपूर्णीय क्षति को सहन करने की शक्ति प्रदान करे। मैं अपने तथा सदन के सभी सम्मानित सदस्यों की ओर से पाण्डिचेरी की भूतपूर्व उप-राज्यपाल श्रीमती राजेन्द्रा कुमारी वाजपेयी जी के 17 जून, 1999 को हुए दु:खद निधन पर गहरा शोक एवं संवेदना प्रकट करता हूं। वे एक उच्च कोटि की देशभक्त, स्वतन्त्रता सेनानी तथा कुशल प्रशासक रहीं। वे अनेक वर्षों तक उत्तर प्रदेश की विधान सभा की सदस्या रहीं लोक सभा की सदस्या भी रहीं। उन का कुशल मार्गदर्शन अनेक वर्षों तक देशवासियों को मिलता रहा। उन्होंने भिन्न-भिन्न पदों पर रहते हुए देश की अविस्मरणीय सेवा की। उनके निधन से यह देश एक देश भक्त, स्वतन्त्रता सेनानी तथा कुशल प्रशासक की सेवाओं से वंचित हो गया है। मैं दिवंगत के शोक संतप्त परिवारजनों के प्रति अपनी हार्दिक संवेदना प्रकट करता हूं। श्री सम्पत सिंह जी के ससुर के निधन पर भी मैं गहरा शोक और संवेदना व्यक्त करता हूं। मैं शोक संतप्त परिवारों को इस सदन की सहानुभूति सम्प्रेषित कर दूंगा। अब मैं माननीय सदस्यों से दिवंगत आत्माओं के सम्मान में श्रद्धांजलि देने के लिए दो मिनट के लिए अपने स्थानों पर खड़े होने के लिए निवेदन करूंगा।

(इस समय सदन के सभी सम्मानित सदस्यों ने दिवंगत आत्माओं के सम्मान में खड़े होकर दो मिनट का मौन धारण किया)

कार्यकारी अध्यक्ष द्वारा घोषणा-

सभापतियों के नामों की सूची

Mr. Acting Speaker : Hon'ble Members, under rule 13 (1) of the Rules of Procedure and Conduct of Business in the Haryana Legislative Assembly, I nominate the following members to serve on the panel of Chairperson :—

1. Shri Ganeshi Lal
2. Shri Krishan Lal
3. Shri Karan Singh Dalal
4. Shri Ram Bhajan Aggarwal

बिजनैस ऐडवाइजरी कमेटी की पहली रिपोर्ट पेश करना

Mr. Acting Speaker : Hon'ble Members, now I report the time table of various business fixed by the Business Advisory Committee.

"The Committee met on Tuesday, the 27th July, 1999 at 12.40 p.m. in the Chamber of the Hon'ble Speaker.

[Mr. Acting Speaker]

The Committee recommends that on Tuesday, the 27th July, 1999 the Assembly shall meet at 2.00 p.m. and adjourn after conclusion of the Business entered in the list of Business for the day.

The Committee also recommends that the business on Tuesday, the 27th July, 1999 be transacted by the Sabha as follows :-

Tuesday, the 27th July, 1999 (2.00 p.m.)

1. Obituary References.
2. Presentation and adoption of the first Report of the Business Advisory Committee.
3. Papers to be laid/re-laid.
4. Presentation of two preliminary Reports of the Committee of Privileges and extension of time for presentation of final Reports thereon.
5. Motion regarding seeking of Vote of Confidence by the Chief Minister.
6. Any other business."

Mr. Acting Speaker : Now, a member will move the motion that this House agrees with the recommendations contained in the First Report of the Business Advisory Committee.

Shri Sampat Singh : Hon'ble officiating Speaker Sir, I beg to move-

That this House agrees with the recommendations contained in the First Report of the Business Advisory Committee.

Mr. Acting Speaker : Motion moved -

That this House agrees with the recommendations contained in the First Report of the Business Advisory Committee.

श्री बीरेन्द्र सिंह : डिप्टी स्पीकर सर, इन्होंने आपको ओफिसिएटिंग स्पीकर कहा, मैं भी कह दूँगा। पता नहीं आप ओफिसिएटिंग स्पीकर हैं या नहीं हैं। (Interruptions). He is there on the Chair as Deputy Speaker. Nobody has conferred this status of Speaker upon him. (Interruptions) O.K. Sir, Deputy Speaker is alright because we are attuned to saying this, to you atleast. (Interruptions).

श्री मनी राम बोदास : डिप्टी स्पीकर सर, यह जो सम्पत सिंह जी ने कहा है इसका मतलब यह नहीं है कि पैनल में जितने भी चेयरपर्सन्ज हैं वे सभी स्पीकर हों।

श्री कर्ण सिंह दलाल : कार्यकारी स्पीकर सर, रूल में प्रोविजन है कि अगर स्पीकर इस्तीफा दे दे तो उनके बाद डिप्टी स्पीकर ओफिसिएटिंग स्पीकर का काम करता है। यह संविधान में भी लिखा हुआ है।

श्री बीरेन्द्र सिंह : आप दिखा दें कि कहां पर लिखा हुआ है। आप हमें दिखाएं। (शोर एवं व्यवधान)

श्री कार्यकारी अध्यक्ष : बीरेन्द्र सिंह जी, इस बहस में पड़ने का कोई लाभ नहीं है। जैसे आपको ठीक लगे वैसे बोलें।

श्री बीरेन्द्र सिंह : ठीक है सर, मेरा कहना है कि डिप्टी स्पीकर को ओफिशिएटिंग स्पीकर सम्बोधन किया जाए तो अगर लीडर ऑफ दि हाऊस एग्री हो तो हम यह समझें कि आपको स्पीकर बनाने के लिए इनकी तैयारी है। तो हम अभी से आपको स्पीकर कहना शुरू कर देंगे। डिप्टी स्पीकर सर, बिजनैस एडवाईजरी कमेटी की रिपोर्ट हाऊस के सामने रखी गई है।

With the change of the Government, I don't think that the entire groups and the political parties have been asked to attend the meeting. Only Mr. Sampat Singh, Mr. Dhirpal Singh and Mr. Ram Bilas Sharma members, attended this meeting under your chairmanship. My submission is that this doesn't reflect the mind of the entire House because most of the important political parties either they have not been invited or they have not been conveyed at the appropriate time. My request to you is, after the change of the Government the newly Leader of the House is seeking vote of confidence when there is total political uncertainty in the State. It is not only seeking the confidence of the House, but it is in a way, he has to come out with new programmes and policies and he has to draw the coming programmes and policies and how he would function as a Government and as a Chief Minister in Haryana. So, Sir, the time which has been allotted is not sufficient because this has been the practice. When there is a confidence motion or a no-confidence motion, then only the leaders of the different groups under different parties have to participate in the discussion and when there is a change in the Government then we will have to participate and we will have to go in-depth about the pronouncements of the new Leader of the House. After all, he has to run the Government for the next two years then we must give our views because we are responsible opposition. So, in that light, we would request you that we should be given ample time and opportunity so that the members those who want to participate in the discussion and those who want to participate in the discussion and those who want to pin-point where the Government may improve upon or where the Government's decisions are going to affect the entire population of Haryana i.e. about 2 crore, should be given opportune and ample time.

Mr. Acting Speaker : Don't worry. You will get ample time.

श्री बीरेन्द्र सिंह : लेकिन आप हमें बताएं तो सही कि आपने कितना समय बोलने के लिए निर्धारित किया है।

श्री कार्यकारी अध्यक्ष : आपको बोलने के लिए जितना समय चाहिए उतना समय आपको मिल जाएगा। अभी हर ग्रुप के एक-एक नेता को 15 मिनट बोलने के लिए दिए जाएंगे।

Shri Birender Singh : That is what I am saying. If the confidence motion is moved by the Leader of the House who has just stepped in as Chief Minister of the State then he has to give his policy statement and full account about what

[Shri Birender Singh]

is going to do in the next two years. So, Sir, we must be given appropriate and sufficient time to express our views on the pronouncements of the Chief Minister.

Mr. Acting Speaker : The time will be given to your satisfaction. Nothing to worry. And one thing I want to make clear to you that हमने बिजनैस ऐडवाइजरी कमेटी की मीटिंग में श्री मनीराम गोदारा जी एवं श्रीमती करतार देवी जी को भी निमंत्रित किया था परन्तु वे आए ही नहीं।

Shri Birender Singh : But Sir, the meeting was attended by only 4 members.

श्री कार्यकारी अध्यक्ष : अगर वे नहीं आएँ तो इसमें किसका दोष है ? इसका अंदाजा आप खुद लगा लीजिए।

मुख्य मंत्री (श्री ओम प्रकाश चौटाला) : कार्यकारी अध्यक्ष महोदय, मैं आपके द्वारा इस सदन के सम्मानित सदस्यों को यह आश्वासन देना चाहूंगा कि बदले हुए वातावरण के तहत परम्पराएं बदलेंगी। किसी भी साथी के बोलने पर कोई पाबन्दी नहीं है। ठिक के बोलिये, बोलने की पूरी छुट्टी है जब थक जाओ तब बैठ जाना।

श्री मनी राम गोदारा : आप सभी मैम्बर्ज के बारे में बताइए कि क्या सभी मैम्बर्ज को बोलने दिया जाएगा।

श्री ओम प्रकाश चौटाला : सभी सम्मानित सदस्यों को जिनको कार्यकारी अध्यक्ष महोदय, अलाऊ करेंगे, उनको बोलने का पूरा मौका दिया जाएगा।

श्री राम बिलास शर्मा : कार्यकारी अध्यक्ष महोदय, हरियाणा परिवर्तन की धरती है। चौधरी बीरेन्द्र सिंह जी ने जो स्पीच लिखवा के दी थी वह 20 दिन में बदल गई। बोलने के लिए अब इनके पास मामला नहीं है। पिछली बार ये, राम बिलास, अटल बिहारी बाजपेयी यही बोलते रहे थे- जब रेज बुतों ने दिया तो खुदा याद आया। अब मुसीबत यह है कि इनके पास बोलने के लिए कुछ बचा नहीं। (शोर एवं व्यवधान)

श्री कार्यकारी अध्यक्ष : सभी सदस्यों से मेरी प्रार्थना है कि वे मेरी बात सुनें। (शोर एवं विघ्न) जो सदस्य अपने विचार रखना चाहते हैं, वे अपने ग्रुप लीडर से एक स्लिप मेरे पास भेज दें ताकि मैं उनको बोलने के लिए समय दे सकूं।

प्रो० छत्तर सिंह चौहान : कार्यकारी अध्यक्ष महोदय, आपसे गुजारिश है कि आप समय निर्धारित कर दें और जितना समय दिया जाएगा उसके हिसाब से हम नाम दे देंगे।

श्री मनी राम गोदारा : कार्यकारी अध्यक्ष महोदय, आपके द्वारा यह फैसला होना चाहिए कि कितने ग्रुप हैं हमारे सामने लीडर ऑफ दि हाऊस का एक ग्रुप है, एक ग्रुप अपोजीशन का है, एक ग्रुप कांग्रेस का है, एक ग्रुप बी०जे०पी० का है और बाकी 17,18 या 20 का जो ग्रुप है उसको मैं क्या कहूं वह ग्रुप नहीं है पिन्डारी है। (शोर एवं व्यवधान)

श्री कार्यकारी अध्यक्ष : जब यह आइटम आएगी तब इसका टाइम फिक्स कर दिया जाएगा। बी०ए०सी० से संबंधित अगर कुछ बोलना चाहते हैं तो बोलिये। (शोर एवं व्यवधान)

डॉ० बीरेन्द्र पाल अहलावत : कार्यकारी अध्यक्ष महोदय, मैं सभी सम्मानित सदस्यों को बताना चाहूंगा कि समय निर्धारित करने की बात तब आएगी, जब आपको बोलने के लिए समय न मिले। (शोर एवं विघ्न)

Shri Satpal Sangwan : You kindly give me time for one minute only (Interruptions) हमारी पार्टी के कुछ साथियों ने अलग होकर एक नई पार्टी बनाई है जिसका नाम वे हरियाणा विकास पार्टी (डेमोक्रेटिक) बताते हैं Their party is not Haryana Vikas Party (Democratic). It is Haryana Vikas Party ****

Mr. Acting Speaker : Nothing to be recorded. (Interruption).

Shri Satpal Sangwan : ****

Mr. Acting Speaker : Question is -

That this House agrees with the recommendations contained in the First Report of the Business Advisory Committee.

The motion was carried.

Prof. Chhattar Singh Chauhan : Mr. Speaker Sir, *****

Shri Sat Pal Sangwan : Sir, *****

Mr. Acting Speaker : I request all the members not to make the House a fish market. (Interruptions). Nothing to be recovered without my permission.

सदन की मेज पर रखे गए / पुनः रखे गए कागज-पत्र

Mr. Acting Speaker : Now, the Hon'ble Chief Minister will lay/relay the papers on the table of the House.

मुख्य मंत्री (श्री ओम प्रकाश चौटाला) : माननीय कार्यकारी अध्यक्ष महोदय, मैं क्रमांक संख्या 1 से 4 तक कागज़-पत्र सदन की मेज़ पर पुनः रखता हूँ तथा क्रमांक संख्या 5 से 6 तक कागज़-पत्र सदन की मेज़ पर रखता हूँ।

The Power Department Notification No. S.O. 106/H.A. 10/98/S. 23,24/25/98, dated the 14th August, 1998, as required under Section 55 (3) of the Haryana Electricity Reform Act, 1997.

The Power Department Notification No. S.O.111/H.A. 10/98/S.55/98, dated the 16th August, 1998, as required under Section 55(3) of the Haryana Electricity Reform Act, 1997.

The Prohibition, Excise and Taxation Department Notification No. G.S.R. 35/H.A. 20/73/S.64/99, dated the 31st March, 1999, regarding the Haryana General Sales Tax (First Amendment) Rules, 1999, as requiered under Section 64(3) of the Haryana General Sales Tax Act, 1973.

---

* चेयर के आदेशानुसार रिकार्ड नहीं किया गया।

[Mr. Acting Speaker]

The Prohibition, Excise and Taxation Department Notification No. G.S.R. 47/H.A. 20/73/S.64/99, dated the 18th May, 1999 Regarding the Haryana General Sales Tax (Second Amendment) Rules, 1999, as required under Section 64(3) of the Haryana General Sales Tax Act, 1973.

The Power Department Notification No. S.O.156/H.A. 10/98/S. 23,24,25 and 55/99, dated the 1st July, 1999, as required under Section 55(3) of the Haryana Electricity Reforms Act, 1997.

The General Administration Department (Political Branch) Notification No. G.S.R. 57/H.A. 21/1998/S/99, dated the 4th June, 1999. The Haryana Lokayukta Functions, Inquiry and Investigation Rules, 1999, as required under sub section (2) of Section 23 of the Haryana Lokayukta Act, 1997.

विशेषाधिकार मामलों के संबंध में विशेषाधिकार समिति के प्रारंभिक प्रतिवेदन प्रस्तुत करना तथा अंतिम प्रतिवेदन प्रस्तुत करने के लिए समय बढ़ाना।

(i) श्री भजन लाल, भूतपूर्व एम०एल०ए० के विरुद्ध

Mr. Acting Speaker : Now, Shri Narpender Singh, M.L.A. Chairperson, Committee of Privileges, will present the Sixth Preliminary Report of the Committee of Privileges on the matter in regard to the question of alleged breach of privileges given notice of by Shri Jagan Nath, the then Minister against Shri Bhajan Lal, Ex-M.L.A. and Former Leader of the Congress Legislature Party, who made a press statement in the press lobby/ lounge in the Vidhan Sabha casting serious reflection on the conduct and impartiality of the Chair i.e. the then Hon'ble Speaker, Prof. Chhattar Singh Chauhan and using very derogatory remarks against him wilfully and deliberately with a malicious motive in order to lower down the dignity of the Chair as published in the Indian Express on 22-11-1996.

And he will also move the motion for extension of time for the presentation of the final report to the House upto the first sitting of the next Session.

Shri Narpender Singh (Chairperson, Committee of Privileges) : Sir, I beg to present the sixth Preliminary Report of the Committee of Privileges on the matter in regard to the question of alleged breach of privileges given notice of by Shri Jagan Nath the then Minister against Shri Bhajan Lal, Ex-M.L.A. and former Leader of the Congress Legislature Party, who made a press statement in the press lobby/lounge in the Vidhan Sabha casting serious reflection on the conduct and impartiality of the Chair i.e. the then Hon'ble Speaker, Prof. Chhatar Singh Chauhan, and using very derogatory remarks against him wilfully and deliberately with a malicious motive in order to lower down the dignity of the Chair as published in the Indian Express on 22-11-1996.

Sir, I also beg to move —

That the time for the presentation of the final Report to the House be extended upto the first sitting of next Session.

Mr. Acting Speaker : Motion moved —

That the time for the presentation of the final Report to the House be extended upto the first sitting of next Session.

Mr. Acting Speaker : Question is —

That the time for the presentation of the final Report to the House be extended upto the first sitting of next Session.

The motion was carried.

(ii) इंडियन ऐक्सप्रैस के संवाददाता, सम्पादक, प्रकाशक तथा मुद्रक के विरुद्ध

15.00 बजे **Mr. Acting Speaker :** Now, Shri Narpender Singh, Chairperson of Committee of Privileges will present the Sixth Preliminary Report of the Committee of Privileges on the matter in regard to the question of alleged breach of privileges given notice of by Shri Jagan Nath, the then Minister against the Correspondent, Editor, Publisher and Printer of the Indian Express for publishing the statement of Shri Bhajan Lal, Ex-M.L.A. containing derogatory remarks which cast serious aspersions on the impartiality, character and conduct of the Chair in discharge of his parliamentary duties on the floor of the House as this act has lowered the prestige and dignity of the Chair in the eyes of the public in the issue of Indian Express dated 22-11-1996.

He will also move the motion for the extension of time for the presentation of the Final Report to the House upto the first sitting of the next Session.

Shri Narpender Singh (Chairperson, committee of Privileges) : Sir, I beg to present the Sixth Preliminary Report of the Committee of Privileges on the matter in regard to the question of alleged breach of privileges given notice of by Shri Jagan Nath, the then Minister against the Correspondent, Editor, Publisher and Printers of the Indian Express for publishing the statement of Shri Bhajan Lal, Ex-M.L.A. containing derogatory remarks which cast serious aspersions on the impartiality, character and conduct of the Chair in discharge of his parliamentary duties on the floor of the House as this act has lowered the prestige and dignity of the Chair in the eyes of the public in the issue of Indian Express dated 22-11-1996.

Sir, I also beg to move —

That the time for the presentation of the final report to the House be extended upto the first sitting of the next Session.

Mr. Acting Speaker : Motion moved —

That the time for the presentation of the final Report to the House be extended upto the first sitting of next Session.

Mr. Acting Speaker : Question is —

That the time for the presentation of the final Report to the House be extended upto the first sitting of next Session.

The motion was carried.

श्री धर्मबीर बाबा : कार्यकारी अध्यक्ष महोदय, मेरी सब्मिशन है कि जिन्होंने यह प्रिविलेज मोशन सदन में पेश की है, वे अब मंत्री भी नहीं रहे हैं, शायद उनका अब इस प्रिविलेज मोशन से कोई वास्ता भी नहीं होगा। यह मोशन किस बिनाह पर पेश की गई है ? क्या यह राजनीतिक आधार पर पेश की गई है ? मेरी आपसे प्रार्थना है कि इस मामले को यदि खत्म ही कर दें तो अच्छा रहेगा क्योंकि इसको आगे चलाने का अब कोई फायदा नहीं है।

Mr. Acting Speaker : Now, the motion has been carried.

मंत्रिपरिषद के सत्ता में न होने संबंधी औचित्य का प्रश्न तथा उस पर निर्णय

Mr. Acting Speaker : Hon'ble Members, now the Chief Minister will move the motion for seeking vote of confidence in the House.

Shri Khurshid Ahmed : Sir, before the Hon'ble Chief Minister moves the motion seeking confidence of this House, I want to say that there is a constitutional provision that the Government is to be run by the Governor with the aid and on the advice of the Council of Ministers. This provision has been provided under Article 163 (i) of the Constitution of India. There will be a Council of Ministers to aid and advise the Governor to run the business of the Government. Here there is no Council of Ministers. We are having one individual as Chief Minister only. Therefore, the whole business of the State is being run illegally and is void. I do not know whether there is a separate constitution for this Government. Everything is being done in the name of the Governor. It cannot be done till it has required Council of Ministers. We could have made Council of Ministers. Now there is no Council of Ministers. We can have one or two other Ministers in the Council of Ministers but we do not have any minister except the Chief Minister himself. As such, there is no Government in Haryana. Sir, we expect your ruling in this regard.

Prof. Chhattar Singh Chauhan : Sir, Article 163 (i) clearly says that there will be a Council of Ministers to aid and advise the Governor.

मैं आपको एक अहम बात कहना चाहता हूं कि जब गवर्नमैंट ही कांस्टीच्यूशन नहीं है तो कांन्फीडैंस मोशन का प्रश्न ही पैदा नहीं होता। इसलिए मेरा आपसे अनुरोध है कि आप कांस्टीच्यूशन को ध्यान में रखते हुए अपनी रूलिंग दें।

श्री रणदीप सिंह सुरजेवाला : अध्यक्ष महोदय, आपकी इजाजत से मैं आपका ध्यान सदन के आर्टिकल 163 की तरफ आकर्षित करना चाहूंगा जिसमें यह साफ लिखा है कि -

"There shall be a Council of Ministers with the Chief Minister at the head to aid and advise the Governor....."

So, there must be more than one person. It is very clear, categorical and unequivocal. In this case, there is not even a single Minister. There is only a Chief Minister. It is a patent breach of sub-clause (i) of Article 163 of the Constitution of India. This Government cannot seek the Vote of Confidence under these circumstances, unless and until there is a Council of Ministers. There is no assemblance of any Government. We require your ruling on this Sir.

Mr. Acting Speaker : Government is there.

Shri Randeep Singh Surjewala : No, Sir. (Interruptions).

Mr. Acting Speaker : Please listen to me. Let the Motion be moved first.

Shri Birender Singh : We want your observation, Sir. (Interruptions).

श्री कार्यकारी अध्यक्ष : पहले मोशन मूव होगा उसके बाद आपने जो कुछ कहना है वह कह लेना।

Prof. Chhattar Singh Chauhan : We request you to give your ruling in this regard. (Interruptions).

Shri Birender Singh : Sir, I have a suggestion to make to the House through you.

श्री संपत सिंह : स्पीकर सर, आपने मुझे बोलने के लिए कहा है।

Mr. Acting Speaker : Appointment of Ministers is not the function of the House. (Interruptions). Let the motion be moved, first.

Shri Birender Singh : How can you over-rule the Constitution ? You are the custodian of the House. When there is no Government. When there is no Council of Ministers then what type of Confidence the Chief Minister wants to seek ? (Interruptions).

श्री संपत सिंह : आप हमारी बात तो सुन लें। (शोर एवं व्यवधान)

Prof. Chhattar Singh Chauhan: If there is no Council of Ministers he cannot move the motion.

श्री संपत सिंह : चौहान साहब आप हमारी बात तो सुनें। अब आप उस चेयर पर नहीं हैं। You will be guided by the Hon'ble Speaker. (Interruptions) You are simply a Member. You will be guided by the Speaker.

Mr. Acting Speaker : This motion has already been approved by the Ex-Speaker and I hold that the Chief Minister can seek the Vote of Confidence. I have given my ruling. Now, please sit down.

श्री सम्पत सिंह : कार्यकारी अध्यक्ष महोदय, अभी जो पुरानी सरकार थी उसको गवर्नर महोदय ने वोट ऑफ कान्फीडैंस सीक करने के लिये कहा था और वह सरकार वोट ऑफ कान्फीडैंस सीक नहीं कर पाई क्योंकि उससे पहले ही उस वक्त के मुख्य मंत्री ने इस्तीफा दे दिया। उसके बाद गवर्नर महोदय ने डिफरैंट पार्टीज को नई सरकार के फोरमेशन के बारे में बात करने के लिये बुलाया। गवर्नर महोदय ने हर लीडर की बात सुनने के बाद टाइम दे दिया कि आप अपने-अपने क्लेम दें। उसके बाद चौधरी ओम प्रकाश चौटाला जी ने अपना क्लेम उनको दिया। क्लेम देने के बाद गवर्नर महोदय ने क्लेम असैप्ट कर लिया। क्लेम असैप्ट करने के बाद मुख्य मंत्री पद की शपथ लेने के लिये श्री ओम प्रकाश चौटाला जी को आमंत्रित किया। ओथ होने के बाद यह प्रोसैस शुरू हुआ है। कार्यकारी अध्यक्ष महोदय, इन्होंने जो संविधान का जिक्र किया है उसके बारे में मैं कहना चाहता हूं कि जहां तक संविधान का सवाल है यह ठीक है कि गवर्नर के नाम पर सारा काम होता है और गवर्नर महोदय की एडवाइज के लिये कौंसिल ऑफ मिनिस्टर्ज हैडिड बाई सी०एम० होती है लेकिन संविधान में यह कहीं नहीं लिखा कि सी०एम० कितने दिनों में कौंसिल ऑफ मिनिस्टर्ज बनाए। कार्यकारी अध्यक्ष महोदय, जब ओथ होती है तो शुरू में सी०एम० की ही ओथ होती है। सी०एम० की ओथ होने के बाद सी०एम० अपने दूसरे साथियों की सलाह लेकर कौंसिल ऑफ मिनिस्टर्ज का गठन करते हैं। इन दी मीन टाइम कौंसिल ऑफ मिनिस्टर्ज का गठन होने से पहले गवर्नर महोदय की डायरैक्शन आ गई जो कि कौंसिल ऑफ मिनिस्टर्ज को नहीं आई, यह डायरैक्शन सी०एम० को आई कि आप वोट ऑफ कान्फीडैंस सीक करें। गवर्नर महोदय जो कि कांस्टीच्यूनल हैड है और हमारी सारी कांस्टीच्यूशनल मशीनरी के हैड हैं। (शोर)

Shri Khurshid Ahmed : But he cannot over-ride the Constitution.

श्री सम्पत सिंह : मैं दोबारा बता रहा हूं कि गवर्नर महोदय की मुख्य मंत्री को डायरैक्शन आई कि आप वोट ऑफ कान्फीडैंस सीक करें। कौंसिल ऑफ मिनिस्टर्ज को यह डायरैक्शन नहीं आई। अगर कौंसिल ऑफ मनिस्टर्ज को डायरैक्शन आती तो कौंसिल ऑफ मिनिस्टर्ज का गठन जरूरी था। जहां तक अन-कांस्टीच्यूशनल वाली जो बात ये कह रहे हैं, तो मैं इनको बताना चाहूंगा कि गवर्नर महोदय ने चौटाला साहब को सी०एम० की ओथ दिलाई और बकायदा 55 विधायकों ने उनको अपना लीडर चुना। यह क्या अन-कांस्टीच्यूशनल है। कार्यकारी अध्यक्ष महोदय, अन-कांस्टीच्यूशनल मशीनरी तो स्टेट में चल रही थी जो कि अब खत्म हो चुकी है। अब इनको दर्द हो रहा है, तकलीफ इनको हो रही है, इनकी छुट्टी हो गई है और छुट्टी होने के बाद जो तकलीफ हो रही है, वह तो इनको सहनी पड़ेगी। (शोर) You will have to bear this. इसलिये सी०एम० का इलैक्शन बकायदा अण्डर कांस्टीच्यूशन हुआ है और ओथ हुई है। बाकायदा सारी चीजें वैध हैं। ये तो बेकार में समय बर्बाद करने वाली बातें कर रहे हैं।

Mr. Acting Speaker : I have given my ruling.

विश्वास-मत

Mr. Acting Speaker : Now the Chief Minister will move the motion for seeking Confidence in the House.

मुख्य मंत्री (श्री ओम प्रकाश चौटाला) : माननीय कार्यकारी अध्यक्ष महोदय, मैं प्रस्ताव करता हूं-

कि यह सदन अपने सदस्यों के बहुमत के समर्थन से मुख्यमंत्री में अपना विश्वास व्यक्त करता है।

Mr. Acting Speaker : Motion moved—

That the House reposes its Confidence in the Chief Minister enjoying the support of the majority of its Members.

चौहान जी आप क्या बोलना चाहते हैं।

प्रो० छत्तर सिंह चौहान (मुडाल खुर्द) : कार्यकारी अध्यक्ष महोदय, इस मोशन पर बोलने से पहले मेरा एक नम्र निवेदन है कि हमने अभी थोड़ी देर पहले इस बारे में एक अहम मुद्दा उठाया था कि इसमें संवैधानिक क्राइसिज हैं। (शोर)

श्री सम्पत सिंह : संवैधानिक क्राइसिज कोई नहीं है, थारे घर में क्राइसिज है। (शोर)

श्री बृज मोहन सिंगला : चौहान साहब, क्या आपने बोलने के लिए चेयर से परमिशन ली है। (शोर)

प्रो० छत्तर सिंह चौहान : मुझे बोलने के लिए चेयर से परमिशन मिली है। (शोर) इसमें संवैधानिक क्राइसिज है। (शोर)

श्री कार्यकारी अध्यक्ष : कोई संवैधानिक क्राइसिज नहीं है। गवर्नर महोदय ने जैसा आदेश दिया है उसके अनुसार वोट ऑफ कॉफिडैंस के लिए मोशन मूव हुआ है। (शोर)

श्री धीरपाल सिंह : मोशन मूव हो चुका है अब उसी मोशन पर बोला जा सकता है।

श्री कार्यकारी अध्यक्ष : चौहान जी आप क्या बोलना चाहते हैं। (शोर)

प्रो० छत्तर सिंह चौहान : कार्यकारी अध्यक्ष महोदय, मैं बोलना चाहता हूं और आपने मुझे बोलने के लिए समय दिया उसके लिए आपका आभारी हूं। कार्यकारी अध्यक्ष महोदय मेरा आपसे नम्र निवेदन है कि कांस्टीच्यूशन ऑफ इंडिया के आर्टीकल 163 में बिल्कुल क्लीयर है ..... (शोर)

श्री बृज मोहन सिंगला : यह बात खत्म हो चुकी है अब आप मोशन पर बोलें। (शोर)

मुख्य मंत्री (श्री ओम प्रकाश चौटाला) : कार्यकारी अध्यक्ष महोदय, मैं आपके द्वारा इस सदन के सम्मानित सदस्यों से विनम्र निवेदन करूंगा कि चेयर की तरफ से रूलिंग आ चुकी है और मोशन मूव हो चुकी है। अब जिस किसी माननीय सदस्य को इस मोशन के बारे में चर्चा करनी है वह चर्चा करे। कायदे कानून की बात तो यह है। यदि आपके पास कोई बात कहने को नहीं है तो मैं क्या करूं।

Mr. Acting Speaker : Hon'ble Members motion has been moved, everything is in order.

श्री ओम प्रकाश चौटाला : कार्यकारी अध्यक्ष महोदय, मुझे इस बात से कोई एतराज नहीं है चाहे आप हाऊस को एक दिन चलाएं, दो दिन चलाएं और चाहे तीन दिन चलाएं मुझे इसमें कोई आपत्ति नहीं है। सभी को बोलने की खुली छूट है लेकिन कार्यकारी अध्यक्ष महोदय, इनका दिवालिया पिट गया इनके

[श्री ओम प्रकाश चौटाला]

पास बोलने के लिए कुछ नहीं है। थारे पे कुछ रहा नहीं जो था वह मैदान छोड़ कर भाग गया। (शोर) चौधरी मनी राम जी मैं आपका बहुत सम्मान करता हूं। मेरा आप सभी से केवल यह निवेदन है कि सदन की मर्यादा को बरकरार रखने का हम सभी का फर्ज है। प्रजातंत्र प्रणाली में परिवर्तन अवश्यंभावी है। जिस वातावरण में हरियाणा प्रदेश में पूर्व सरकार चल रही थी उसमें परिवर्तन सुनिश्चित था और वह परिवर्तन आया है। हमें प्रजातांत्रिक प्रणाली का सम्मान करना चाहिए। हमारे प्रदेश का स्तर इस मामले में बहुत ही गिरा है इसलिए मैं आपसे निवेदन करूंगा कि इसे बरकरार रखें। अब मैंने वोट ऑफ कांफीडैंस सीक करने का मोशन मूव कर दिया है । (विघ्न) मैं तो 24 तारीख को युनानीमसली इलैक्ट हुआ हूं। पहले वाली सरकार से पहले भारतीय जनता पार्टी ने समर्थन वापस लिया और फिर कांग्रेस ने समर्थन वापस ले लिया। सदन का जो नेता था वह मैदान छोड़कर भाग खड़ा हुआ। मेरे मुख्यमंत्री बनने में मेरे रास्ते में तो किसी की तरफ से कोई रुकावट थी ही नहीं। आप सबने मेरा साथ दिया इसके लिए मैं आपका धन्यवाद करता हूं। मैं आपको यह विश्वास दिलाता हूं कि इस सदन की गरिमा को ध्यान में रखते हुए सभी सम्मानित सदस्यों को कभी भी किसी प्रकार की शिकायत का अवसर नहीं दूंगा। अब किसी को कोई दिक्कत या परेशानी नहीं आयेगी। मैंने 24 तारीख को मुख्य मंत्री के तौर पर ओथ ली है। ओथ लेने के बाद सबसे पहले मैंने सैक्रेटेरिएट आकर प्रजातंत्र प्रणाली का जो चौथा स्तम्भ मीडिया का होता है उसको सम्मान दिया है और उसके गिरे हुए सम्मान को बहाल किया है। मेरे पूर्व मुख्य मंत्री ने जनतंत्र के चौथे स्तम्भ मीडिया को अपने पांव तले रौंद दिया था। उन्होंने पत्रकार परवाना, राधेश्याम और जगमोहन फुटेला को जो मान्यता हरियाणा सरकार की तरफ से दी थी वह खत्म कर दी थी। अब मैंने पुनः उनकी मान्यता को बहाल कर दिया है ताकि जनतंत्र कायम रह सके। दूसरा फैसला मैंने 25 तारीख को अग्रोहा जाकर (शोर एवं विघ्न) आपके बोलने के लिए कहा गया था मगर आप बोले ही नहीं क्योंकि आप लोगों के पास मेरे खिलाफ बोलने के लिए कुछ है ही नहीं। चेयर की तरफ से आपको बोलने के लिए समय दिया गया था लेकिन आप लोग बोले नहीं। जब आप लोग बोले नहीं तो मैंने बोलना शुरू किया। मुझे काम करते हुए 2-4 रोज हुए हैं। आज सब कुछ बदल गया है इसलिए अब सदन की परम्परा को भी बदलना पड़ेगा ताकि किसी को किसी प्रकार की शिकायत न रहे। कार्यकारी अध्यक्ष महोदय, मैं आपसे अनुरोध करता हूं कि मेरे खिलाफ अगर कोई साथी कोई बात कहे तो उसे कहने दें, हम ध्यान से उसकी बात सुनेंगे। सभी को बोलने की पूरी छूट दी जाएगी। कार्यकारी अध्यक्ष महोदय मैं कह रहा था कि मैंने 25 तारीख को अग्रोहा जाकर अग्रसेन मैडिकल कालेज की जो ग्रान्ट पूर्व सरकार ने बन्द कर दी थी, उसको अब बहाल कर दिया गया है। एक काम मैंने यह किया है कि कारगिल की लड़ाई में जो हमारे नौजवान शहीद हुए हैं, जो हमारे देश की रक्षा के सजग प्रहरी थे, उनके परिवार वालों को अधिक से अधिक आर्थिक मदद दी जा सके।

श्री हर्ष कुमार : कार्यकारी अध्यक्ष महोदय, मैं आदरणीय चौधरी ओम प्रकाश चौटाला जी से केवल एक ही निवेदन करूंगा तथा मेरा प्वांयट ऑफ आर्डर भी है कि ये बताएं कि अग्रोहा मैडिकल कॉलेज की ग्रान्ट किस सरकार ने और कब बन्द की थी ? (विघ्न एवं शोर)

श्री बीरेन्द्र सिंह : कार्यकारी अध्यक्ष महोदय, मैं यह बात जानना चाहता हूं कि मुख्य मंत्री महोदय अपने विश्वास प्रस्ताव पर बोल रहे हैं या किसी और विषय पर बोल रहे हैं। अगर वे विश्वास प्रस्ताव पर बोल रहे हैं तो भी बताएं ताकि हम उनके भाषण को सुने। वे प्वांयट ऑफ आर्डर पर बोल रहे हैं या किस बात पर बोल रहे हैं, ये बताएं। (विघ्न एवं शोर)

श्री कार्यकारी अध्यक्ष : मैंने पहले चौहान साहब से बोलने के लिए कहा था लेकिन वे विषय से हट कर बोलने लग गए। (विघ्न एवं शोर)

प्रो० छत्तर सिंह चौहान : कार्यकारी अध्यक्ष महोदय, आपने मुझे बोलने के लिए समय दिया उसके लिए आपका आभार। मैंने आपसे प्रार्थना की थी कि हम यहां पर सब प्रजातन्त्र प्रणाली के अधीन काम करते हैं। चाहे महामहिम राष्ट्रपति महोदय हों, चाहे गवर्नर साहब हों, चाहे चीफ मिनिस्टर हों, चाहे कोई एम०एल०ए० या एम०पी० हो इस देश का कोई भी नागरिक कांस्टीच्यूशन से ऊपर नहीं है। अगर कोई अपने आप को कांस्टीच्यूशन से ऊपर समझता है तो मैं समझता हूं कि वह ठीक नहीं है (विघ्न)

डॉ० वीरेन्द्र पाल अहलावत : कार्यकारी अध्यक्ष महोदय, कांस्टीच्यूशन की बात अगर प्रो० छत्तर सिंह चौहान जैसा आदमी करे तो यह बात इनको शोभा नहीं देती, बाकी इनकी मर्जी। पहले भी ये अशोभनीय काम करते रहे हैं और आज फिर अशोभनीय काम ही कर रहे हैं। हमारे नेता ने साफ कर दिया है कि कोई कितना ही बोले, जो बात कहना चाहते हैं कहें और परम्परा के अनुसार तथा लोकतान्त्रिक ढंग से ही कहें। लोकतन्त्र में इन लोगों का विश्वास कभी रहा ही नहीं। इनके पास कहने के लिए कुछ है नहीं इसलिए आज ये संविधान और लोकतन्त्र की बात कर रहे हैं, इनकी बात में कोई दम नहीं है। सारी बात आपके सामने है। (विघ्न एवं शोर)

श्री कार्यकारी अध्यक्ष : अहलावत साहब, अगर आप भी परमिशन ले कर बोलते तो ज्यादा अच्छा होता। (विघ्न)

प्रो० छत्तर सिंह चौहान : कार्यकारी अध्यक्ष महोदय, मैं आपसे निवेदन कर रहा था कि प्रजातन्त्र प्रणाली और संविधान के अन्तर्गत हम सभी हैं। मेरे माननीय साथी डॉ० अहलावत साहब ने जो कहा इस बारे में मेरा कहना है कि हो सकता है कोई गलती हुई हो और गलती इन्सान से ही होती है। (विघ्न एवं शोर) अगर कोई व्यक्ति अपने आप को संविधान से ऊपर समझता है तो वह प्रजातन्त्र पर कुठाराघात है। (विघ्न एवं शोर) Nobody is above the Constitution. मैंने यह बात पूरे विश्वास के साथ एक बार नहीं बीस बार कही है कि I will be the last person to go beyond the Constitution. आज भी मैं उसी विचारधारा पर स्थिर हूं कि मैंने अपने कार्यकाल में कोई अन-कांस्टीच्यूशनल कार्य नहीं किया है। (विघ्न एवं शोर)

श्री धीरपाल सिंह : कार्यकारी अध्यक्ष महोदय, मैं प्वायंट ऑफ आर्डर पर बोलना चाहता हूं। प्रो० छत्तर सिंह चौहान 12.35 से पहले इस हाउस की स्पीकर की कुर्सी पर आसीन थे और अब ये विश्वास मत के विरोध में संविधान की दुहाई दे रहे हैं। सर, मैं इस हाउस का एक वाक्या इनको याद दिलाना चाहता हूँ। संविधान और डैमोक्रेटिक सिस्टम में जब भी कोई सदस्य इस सदन में मत विभाजन की बात करता था तो उस वक्त ये उनकी मांग को स्वीकार नहीं करते थे। जबकि मत विभाजन का अधिकार सदस्य को है। उस वक्त चौहान साहब संविधान की बात भूल गए थे। सर, उस वक्त के विरोधी दल के नेता चौधरी ओम प्रकाश चौटाला जी, कांग्रेस के नेता चौधरी भजन लाल जी और मैंने जैसे ही बजट सैशन के दौरान मत विभाजन की बात रखी तो इनके द्वारा मत विभाजन तो दूर रहा, इन्होंने चौटाला साहब, भजन लाल जी, रमेश खटक और मुझे केवल इसी बात पर नेम करके हाउस से बाहर निकाल दिया कि हम हाउस में मत विभाजन की बात कर रहे थे। (विघ्न) मैं इनको याद दिलाना चाहूंगा। आज आप 12.35 पर स्पीकर के पद से हटे हैं और आपको यहां पर संविधान की आड़ लेकर बोलने

[श्री धीरपाल सिंह]

का हक नहीं बनता है। अगर आपको यहां पर कुछ बोलना है तो आप संविधान को फाड़ कर फैंक दें और उससे बाहर बोलें। अगर आप संविधान की आड़ में बोलेंगे तो हमें वे दिन याद हैं जो हमने आपके स्पीकर होते हुए भुगते हैं। आपने उस समय जैसा व्यवहार हमारे साथ किया था उसका एक-एक दिन का, एक-एक मिनट का रिकार्ड रखा हुआ है इसलिए मेहरबानी करके आप संविधान की बात न करें। (शोर एवं व्यवधान)

श्री जगन नाथ : एक्टिंग स्पीकर सर, मेरा प्वायंट ऑफ आर्डर है।

प्रो० छत्तर सिंह चौहान : सर, क्या प्वायंट ऑफ आर्डर पर प्वायंट ऑफ आर्डर होता है। (शोर एवं व्यवधान)

श्री जगन नाथ : सर, आपने मुझे बोलने की इजाजत दी है। सर, मेरा प्वायंट ऑफ आर्डर है लेकिन इनके लिए जगन नाथ आर्डर है। जब हम चौहान साहब वाली पार्टी में थे तो हम डिसिडैंट थे। ये हमारी बात तो मानते नहीं थे, ये धक्काशाही और तानाशाही करते थे। (शोर एवं व्यवधान) आप सब मेरी बात सुनें। (शोर एवं व्यवधान) यह जो कैप्टन साहब बोल रहे हैं तो मैं इनको बताना चाहूंगा कि जब इनकी सरकार थी तो कर्ण सिंह दलाल जी यहां पर बैठे हुए थे और ये किसी मुद्दे पर सदन से वाक-आउट करके चले गए। इन्होंने सम्पत सिंह को जाने के बाद नेम कर दिया था। अब ये यहां पर बोल रहे हैं।

श्री सतपाल सांगवान : सर, मेरा प्वायंट ऑफ आर्डर है। (शोर एवं व्यवधान)

श्री कार्यकारी अध्यक्ष : सांगवान जी आप बैठ जाएं। जब आपका नाम लिया जाएगा तब आप बोल लेना। (शोर एवं व्यवधान)

श्री जगन नाथ : सर, मैं इनको यह भी बताना चाहूंगा कि सम्पत सिंह यहां पर बैठे हुए थे और किसी मुद्दे पर वाक-आउट करके चले गए थे और उस वक्त चौहान साहब स्पीकर थे इन्होंने इनके वाक-आउट के बाद इनको रैस्ट ऑफ दि सैशन के लिए सस्पैंड कर दिया था। (शेम-शेम)

श्री सतपाल सांगवान : सर, मेरा प्वायंट ऑफ आर्डर है। (शोर एवं व्यवधान)

श्री कार्यकारी अध्यक्ष : चौहान साहब, आप बोलें। (विघ्न) सतपाल सांगवान जी आप बैठिए। जब आपका नाम लिया जाएगा तो आप बोल लेना। अब आप चौहान जी को बोलने दें। (शोर एवं व्यवधान)

श्री भागी राम : कार्यकारी अध्यक्ष महोदय, मेरा प्वायंट ऑफ आर्डर है। (विघ्न)

Shri Sat Pal Sangwan : Why time has not been given to me. I am speaking on a point of order. (Interruptions)

श्री भागी राम : कार्यकारी अध्यक्ष महोदय, आप मेरी बात तो सुनिये। श्री छत्तर सिंह चौहान ने अध्यक्ष रहते हुए कई बार हमारे विधायकों को हाउस से बाहर निकलवाया है इसलिए अब इनको इस तरह की बातें यहां पर नहीं करनी चाहिएं। (शोर एवं व्यवधान)

श्री कार्यकारी अध्यक्ष : मेरी आप सभी से प्रार्थना है कि आप सदन का समय व्यर्थ में न गवाएं। अब चौहान साहब को बोलने दें।

प्रो० छत्तर सिंह चौहान : कार्यकारी अध्यक्ष महोदय, मैं तो आपको केवल एक ही आश्वासन दे सकता हूं कि मैं यहां पर जो भी बोलूंगा अगर उसके बारे में कोई भी माननीय सदस्य यह कह देगा कि मैंने फलां शब्द अन-पार्लियामैंट्री बोला है तो मैं हाथ जोड़कर माफी मांग लूंगा। मेरी शब्दावली में अन-पार्लियामैंट्री शब्द नहीं हैं। मैं धीरपाल जी की तरह या भागीराम जी की तरह कोई भी अन-पार्लियामैंट्री शब्द नहीं बोलूंगा। (शोर एवं व्यवधान)

श्री धीरपाल सिंह : कार्यकारी अध्यक्ष महोदय, मैंने तो केवल इनको वही हादसा याद करवाया है जो इन्होंने हमारे साथ इस कुर्सी पर बैठकर किया था। ये अब अन-पार्लियामैंट्री शब्द कैसे बोलेंगे क्या यह ***** हाउस है ? (शोर एवं व्यवधान)

श्री कार्यकारी अध्यक्ष : यह इनका शब्द रिकार्ड न किया जाए। (शोर एवं व्यवधान)

प्रो० छत्तर सिंह चौहान : कार्यकारी अध्यक्ष महोदय, मेरी आपके माध्यम से यह गुजारिश है कि आज जिस तरह से माननीय मुख्यमंत्री जी ने वोट ऑफ कांफीडैन्स के लिए मोशन मूव किया है वह अन-कांस्टीच्यूशनल है क्योंकि आर्टिकल 163 में यह लिखा है ..... (शोर एवं व्यवधान)

श्री कर्ण सिंह दलाल : कार्यकारी अध्यक्ष महोदय, मेरा प्वायंट ऑफ आर्डर है। सर, बहुत देर से इस बात पर चर्चा होने लग रही है और जैसा आदरणीय छत्तर सिंह चौहान साहब ने भी कहा एवं चौधरी खुर्शीद अहमद जी ने भी अपनी बात यहां पर इस बारे में कही कि यहां पर जो यह कार्यवाही हो रही है वह संवैधानिक तौर पर ठीक नहीं हो रही है जबकि स्थिति इसके विपरीत है। सर, संविधान की जिस धारा 163 का जिक्र इन्होंने किया है उसके साथ ही मैं इनको संविधान की धारा 163 (2) पढ़कर सुना देता हूं। इस धारा के अनुसार ही महामहिम राज्यपाल महोदय ने सदन के नेता श्री ओम प्रकाश चौटाला जी को यहां पर बहुमत साबित करने के लिए कहा है वह संवैधानिक तरीके से बिल्कुल ठीक है। ये इस धारा को सुनें। मैं इसको पढ़कर सुना देता हूं। इसमें लिखा है कि -

> "If any question arises whether any matter is or is not a matter as respect. which the Governor is by or under this Constitution required to act in his discretion, the decision of the Governor in his discretion shall be final, and the validity of anything done by the Governor shall not be called in question on the ground that he ougth not to have acted in his discretion."

एक्टिंग स्पीकर सर, इसमें साफ लिखा हुआ है फिर ये क्यों यहां पर बेकार की बातें कर रहे हैं। इनके पास कहने के लिए जो मुद्दा है उसको ही इनको यहां पर कहना चाहिए। (शोर एवं व्यवधान)

श्री बीरेन्द्र सिंह : इसमें कहां लिखा हुआ है। (शोर)

श्री कार्यकारी अध्यक्ष : बीरेन्द्र सिंह जी, लेकिन वह मैटर तो पहले ही सैटल हो चुका है।

Shri Birender Singh : Why you have allowed him to speak. Whatever the Hon'ble Member has said, that should be expunged. (Interruptions)

श्री कार्यकारी अध्यक्ष : ऐसा है कि आप सम्मानित सदस्य अपनी-अपनी कांस्टीच्यूएंसी के एक लाख लोगों से भी अधिक के प्रतिनिधि हैं और उनमें से बहुत से लोग हाउस की गैलरीज के अंदर बैठे

---

* चेयर के आदेशानुसार कार्यवाही से निकाल दिया गया।

[श्री कार्यकारी अध्यक्ष]

सारी कार्यवाही को देख भी रहे हैं इसलिए मेरा आप सभी से कहना है कि आप सभी हाउस की मर्यादा बनाए रखें। सदन की एक मर्यादा होती है। यहां पर जो भी आपके बोटर हाउस की कार्यवाही को देख रहे हैं वह आपके बारे क्या धारणा बनाएंगे ? यह स्थिति बहुत ही चिन्ताजनक और अशोभनीय है। इसलिए मेरी सभी सम्मानित सदस्यों से प्रार्थना है कि सदन की कार्यवाही ठीक ढंग से चलने दें। जो सदस्य बोल रहे हैं उनको बोलने दीजिए, सभी को बोलने का पूरा मौका मिलेगा, इस बात का विश्वास रखें, बीच में बाधा शोभा नहीं देती।

प्रो० छत्तर सिंह चौहान : कार्यकारी अध्यक्ष महोदय, मेरा आपसे नम्र निवेदन है कि जितना भी आप मुझे समय दें, वह आप तय कर दें लेकिन कम से कम माननीय सदस्यों से निवेदन है कि वे मुझे बीच में इन्टरप्ट न करें, कोई बात हो तो प्वाइंट ऑफ आर्डर के जरिए से कहें, मैं बैठ जाऊंगा। प्रजातंत्र की एक परिभाषा है। In democracy there is a government of the people, by the people and for the people. (शोर)

श्री कार्यकारी अध्यक्ष : राज कुमार जी, आप बैठ जाएं। (शोर एवं व्यवधान)

प्रो० छत्तर सिंह चौहान : राज कुमार जी, जो आप बोलना चाहते हैं वह हम भी जानते हैं कि जब आप यहां बैठते थे तो क्या-क्या बात कहा करते थे। (शोर एवं व्यवधान)

श्री कार्यकारी अध्यक्ष : जो भी सदस्य चेयर से मुखातिब होकर नहीं बोलता उसकी रिपोर्टिंग न की जाए।

प्रो० छत्तर सिंह चौहान : मैं आपसे यह निवेदन कर रहा था कि यह प्रजातंत्र का मूल नियम है (शोर एवं व्यवधान) लेकिन आज मुख्यमंत्री जी ने जो विश्वास का प्रस्ताव रखा है इस बारे मेरा कहना है कि It is a Government of the ****, by the **** and for the ****. आज ये लोग किस मुंह से कहते हैं । (शोर एवं विघ्न) चौधरी बंसी लाल जी को ये कहा करते थे कि ये हरियाणा के निर्माता हैं। उनके पैर छूते थे। आज ये किस मुंह से कहते हैं ? (विघ्न)

डॉ० बीरेन्द्र पाल अहलावत : कार्यकारी अध्यक्ष महोदय, मेरा प्वाइंट ऑफ ऑर्डर है। मैं सदन को यह बतलाना चाहूंगा कि जैसा प्रोफैसर साहब अभी डैमोक्रेसी की डैफिनेशन बतला रहे थे। अब तक तो हम इस गलतफहमी में थे कि शायद इनको डैमोक्रेसी की डैफिनेशन का पता ही नहीं है। इनको डैमोक्रेसी की डैफिनेशन का पता होते हुए स्पीकर होते हुए, हमारे साथ बहुत अन-डैमोक्रेटिकली विहेव करते रहे। यह और भी चिंतनीय और शर्मनाक बात है। (शोर एवं व्यवधान)

कार्यकारी अध्यक्ष महोदय, हमारे साथियों ने यह सिद्ध भी कर दिया कि हरियाणा विकास पार्टी (डैमोक्रेटिक) है और उन्होंने यह भी सिद्ध कर दिया कि बाकि जो हरियाणा विकास पार्टी के सदस्य बच गए हैं वे सभी अन-डैमोक्रेटिक हैं। (इस समय श्री कर्ण सिंह दलाल सभापति के पद पर आसीन हुए)

श्री सभापति : चौधरी धीरपाल जी आप बोलिए।

श्री धीरपाल सिंह : सभापति महोदय, मैं तो एक बात कहना चाहता हूं कि अगर बोये पेड़ बबूल के तो आम कहां से होए। इन विपक्ष के साथियों ने बोये तो थे पेड़ बबूल के अब ये आशा कर रहे हैं आम खाने की ऐसा कैसे संभव हो सकता है।

---

* चेयर के आदेशानुसार रिकार्ड नहीं किया गया।

श्री सभापति : मेरी सभी सदस्यों से प्रार्थना है कि वे सदन की कार्यवाही ठीक तरह से चलने दें। मैंने श्री जसवन्त सिंह जी को बोलने के लिए कहा है उन्हें बोलने दीजिए।

श्री जसवन्त सिंह : सभापति महोदय, मेरा प्वायंट ऑफ आर्डर है। बड़ी देर से यह बात हो रही है। हमारे आदरणीय साथी चौधरी मनीराम गोदारा जी ने भी यह बात कई बार कही कि ये जो 17 आदमी बैठें हैं, इस पर भी मैं चुप बैठा रहा। हमारे भूतपूर्व अध्यक्ष जी ने भी कहा कि यह जो हरियाणा विकास पार्टी (डैमोक्रेटिक) है यह ***** की पार्टी है। जब हम इस सदन के सदस्य बने तो हमने यह शपथ खाई थी कि हमारा विश्वास भारतीय संविधान में है। संविधान के मुताबिक हमने कार्य किया। हमने 17 आदमियों ने हरियाणा विकास पार्टी से विभाजन करके अपनी अलग से पार्टी बनाई और उस अलग हुई पार्टी का नाम हरियाणा विकास पार्टी (डैमोक्रेटिक) रखा। उसके बाद हमने अपनी पार्टी के पदाधिकारियों को चुना। पार्टी की कार्यवाही के बारे में महामहिम राज्यपाल महोदय, को अवगत कराया। महामहिम राज्यपाल महोदय ने हमें आमंत्रित किया। उसके बाद हमारी पार्टी ने अपना समर्थन चौधरी ओम प्रकाश चौटाला को दिया। चौधरी ओम प्रकाश चौटाला जी को अपना समर्थन देना हमारी संवैधानिक कार्यवाही थी जो संविधान के मुताबिक थी। उसी के मुताबिक महामहिम राज्यपाल महोदय ने चौधरी ओम प्रकाश चौटाला जी को मुख्यमंत्री पद शपथ दिलाने के लिए निमंत्रण दिया, मुख्यमंत्री पद की शपथ दिलाई। हमें तो संविधान में पूरा विश्वास है। यह आप गलत कह रहे हैं कि हमारा संविधान में विश्वास नहीं है। चौहान साहब संविधान की बात करते हैं उनका कोई संविधान नहीं है। सभापति महोदय, ये आज संविधान की बात करते हैं। मुझे इनके समय का सारा पता है जब ये इस माननीय सदन के अध्यक्ष होते थे तो इन्होंने चौटाला साहब की पार्टी के 10-11 सदस्यों को बिना कोई गलती किए ही सदन से बाहर चले जाने को कहा था। उसके बाद भी असैंबली को चलाए रखा ताकि प्राईवेटाईजेशन ऑफ पॉवर का बिल पास हो सके। आज ये संविधान की बात करते हैं। (शोर एवं विघ्न) मैं फैज़ अहमद का एक शेर सुनाकर अपनी जगह लूंगा -

"गैर सिखलाएंगे रस्मे वफा ऐसे नहीं होती है,
और खुद सिखलाएंगे रस्मे दुआ ऐसे नहीं होती है।।"

सभापति महोदय, संविधान को बिगाड़ने वाले हमें क्या संविधान सिखलाएंगे ? (शोर एवं विघ्न)

श्री मनी राम गोदारा : सभापति जी, मैं कुछ कहना चाहता हूं। (शोर)

श्री सभापति : जिन-जिन माननीय सदस्यों ने जो "डिफैक्टर" शब्द का इस्तेमाल किया है, वह कार्यवाही से निकाल दिया जाए।

श्री मनी राम गोदारा : सभापति महोदय। भाई जसवंत सिंह ने जो फैज़ अहमद का शेर सुनाया है, उसके संदर्भ में मैं तो थोड़ा सा बोलना चाहूंगा। मैं ज्यादा लंबा लैक्चर नहीं दूंगा। मैं तो सिर्फ इतना ही कहना चाहता हूं कि—

"तहजीबे कौमा मुझ पर नाज कर,
धोखा दिया यारों ने,
शर्म मुझ को आती है।"

---

* चेयर के आदेशानुसार कार्यवाही से निकाल दिया गया।

श्री जगन नाथ : सभापति जी, 38 महीनों में ये आज बोले हैं। (शोर एवं विघ्न)

श्री सूरजपाल : सभापति जी कृपया मेरी बात सुनिए। (शोर)

श्री सभापति : सूरजपाल जी, आप सदन की कार्यवाही को ठीक से चलने दें। (शोर)

श्री खुर्शीद अहमद : सभापति महोदय, इस सदन में बड़ी सीरियस मोशन पर डिस्कशन हो रही है। इस बारे में कई दफा यहां पर डाउट्स आए। (विघ्न) इस सदन में पुरानी दास्तानों को दोहराया गया, ये चाहे इनकी हों या उनकी हों लेकिन हम तो यहां पर बैठकर दोनों का तमाशा देख रहे हैं। सभापति महोदय, मैं तो एक सुझाव देना चाहूंगा कि जिसको भी इनाम देना है, उस को "महावीर चक्र" देने हेतु सिफारिश कर दी जाए। (शोर)

प्रो० छत्तर सिंह चौहान : सभापति महोदय, मैं एक बात कहना चाहता हूं।

श्री सभापति : चौहान साहब, मेरा आपसे निवेदन है कि आप अपनी बात बड़ी शालीनता व संवैधानिक तरीके से कहें ताकि दूसरे माननीय सदस्यों को कोई तकलीफ न हो।

प्रो० छत्तर सिंह चौहान : सभापति जी, मैं अपनी बात बड़ी शालीनता व संवैधानिक तरीके से कहूंगा। इसके साथ ही मैं आपका धन्यवाद करता हूं कि आपने मुझे बोलने के लिए समय दिया।

श्री सभापति : ऑनरेबल मैंबर्ज, अब आपको इस सदन में प्रजातंत्र कायम होता नजर आ रहा होगा। (हंसी)

प्रो० छत्तर सिंह चौहान : सभापति महोदय, भावी अध्यक्ष के रूप में आप काफी अच्छे रहेंगे। इन शब्दों के साथ मैं अपनी बात आगे बढ़ाता हूं। चौधरी जसवंत सिंह जी ने एक बात कही*****

16.00 बजे **श्री सभापति :** श्री छत्तर सिंह चौहान जी, जो कुछ जसवन्त सिंह के बारे में कह रहे हैं उसे रिकार्ड न किया जाए। चौहान साहब आप बैठिए। मेरा आपसे निवेदन है कि यहां पर चौटाला साहब द्वारा पेश किए गए विश्वास मत प्रस्ताव पर बहस हो रही है न कि हरियाणा विकास पार्टी के अलग होने पर हो रही है। आपके पास सरकार के बारे में कोई सुझाव हो तो उसे रखिए। आपके पास प्रदेश की दिक्कतें और तकलीफों के बारे में कोई बात हो तो रखिए। आप बार-बार हरियाणा विकास पार्टी की बात क्यों करते हैं ? (शोर)

श्री मनी राम गोदारा : चेयरमैन साहब, किस तरह से हाउस टूटा, किस तरह से सरकार टूटी और विश्वास मत की जरूरत क्यों पड़ी, इन सारी बातों के ऊपर डिस्कशन के लिए हम यहां पर बैठे हैं।

श्री सभापति : आप डिस्कस कीजिए। (शोर एवं व्यवधान)

श्री मनी राम गोदारा : आज कौन्फीडैंस पर वोट लेने की बात आ रही है। सरकार को कौन्फीडैंस लेना है, किन से लेना है। (शोर)

श्री सभापति : मनी राम जी जब आपका बोलने का नम्बर आए तब आप अपनी सारी बातें कह लेना।

---

* चेयर के आदेशानुसार रिकार्ड नहीं किया गया।

श्री मनी राम गोदारा : चेयरमैन साहब, मेरा प्वायंट ऑफ आर्डर है। इस हाउस के अन्दर विश्वास मत पर फैसला होना है तो उसके अन्दर सारे सरकमस्टान्सिज पर बहस की जा सकती है या नहीं ?

श्री सभापति : मनीराम जी, आप सुनिए। That matter is under consideration with the office of the Speaker. उस पर कोई बहस करने की जरूरत नहीं है। (शोर) आपके पास सरकार के बारे में कोई सुझाव है, अपनी पार्टी का कोई मत है तो उसे रखिए। चौहान साहब आप 3 साल तक स्पीकर के पद पर रहे हैं मेरा आपसे निवेदन है कि बेकार की बातों में सदन का समय मत गवाएं। आपके पास सरकार के बारे में कोई सुझाव है तो उसे रखिए, आपको कोई नहीं रोकेगा। (शोर एवं व्यवधान)

कैप्टन अजय सिंह यादव : चेयरमैन साहब, चौहान साहब कौन से मामले की बात कर रहे हैं आप उसे बताएं। (शोर एवं व्यवधान)

श्री सभापति : कैप्टन साहब आप तीन बार विधायक कैसे बन गये। आपको पता नहीं है कि अगर किसी सदस्य को विधान सभा की कार्यवाही के बारे में कुछ पता करना हो तो उसे स्पीकर के चेम्बर में जाना पड़ता है। मुझे ताज्जुब है कि आप तीन बार विधायक कैसे बन गये। आप स्पीकर के चैंबर में जायें और इस बारे में वहां पर पता करें। (शोर एवं व्यवधान)

कैप्टन अजय सिंह यादव : सभापति जी आपको यह कहने का अधिकार नहीं है कि मैं विधायक कैसे चुनकर आ गया। मेरे को जनता ने विधायक चुना है आपने नहीं। (शोर एवं व्यवधान)

श्री सभापति : मेरी आप सभी सदस्यों से प्रार्थना है कि आप सदन की कार्यवाही आराम से चलने दें और अपनी-अपनी सीटों पर बैठ जायें।

श्री जसवन्त सिंह : सभापति जी विधान सभा के स्पीकर के पास जितने भी डाकूमैंट होते हैं वे मोस्ट सिक्रेट डाकूमैंट होते हैं लेकिन हमारे पहले वाले स्पीकर साहब उन डाकूमैंट को लीक आउट करते थे।

श्री मनी राम गोदारा : चेयरमैन साहब, मेरा प्वायंट ऑफ आर्डर है।

प्रो० छत्तर सिंह चौहान : सर, मेरा पर्सनल एक्सप्लेनेशन है। (शोर एवं व्यवधान)

श्री सभापति : चौहान साहब आप बैठिये, अब धीरपाल जी बोलेंगे।

श्री धीरपाल सिंह : सभापति जी चौधरी मनीराम गोदारा जी बहुत ही वरिष्ठ विधायक हैं इन्होंने प्वायंट ऑफ आर्डर पर बोलना शुरू किया और फिर उसी प्वायंट ऑफ आर्डर पर ये दोबारा बोल रहे हैं। सभापति जी मैं यह क्लेरिफाई चाहता हूं कि क्या प्वायंट ऑफ आर्डर पर प्वायंट ऑफ आर्डर दोबारा बनता है।

श्री सभापति : नहीं प्वायंट ऑफ आर्डर पर प्वायंट ऑफ आर्डर नहीं बनता।

श्री मनी राम गोदारा : सभापति जी मेरा प्वायंट ऑफ आर्डर यह था कि ..... (शोर)

श्री सभापति : गोदारा साहब प्लीज आप बैठिये। मैंने अपनी रूलिंग दे दी है कि प्वायंट ऑफ आर्डर पर प्वायंट ऑफ आर्डर नहीं होता। (शोर एवं व्यवधान)

प्रो० छत्तर सिंह चौहान : सभापति महोदय *****

श्री सभापति : चौहान साहब, आप स्पीकर के पद पर तीन साल रहे हैं और अच्छी तरह से जानते हैं कि विधान सभा के कार्यालय या स्पीकर साहब के चैम्बर में क्या होता है उसके बारे में सदन में चर्चा नहीं हो सकती। इसलिए विधान सभा कार्यालय के बारे में और स्पीकर चैम्बर के बारे में जो भी बात कही गई है वह कार्यवाही से निकाल दी जाए।

श्री जसवन्त सिंह : सर, मेरा प्वाइंट ऑफ आर्डर है। (शोर एवं व्यावधान)

श्री सभापति : जसवन्त सिंह जी, बताइए, आपका क्या प्वायंट ऑफ आर्डर है।

श्री जसवन्त सिंह : सर, चौहान साहब जो मेरे दस्तखतों की बात कह रहे हैं तो मैं आपको बताना चाहूंगा कि पिछले दो महीनों में ये दस दफा मेरे पास आए और इन्होंने कहा कि अगर किसी के दस्तखत में दम है तो वह आपके दस्तखत में दम है और ये कह रहे हैं कि मेरे दस्तखतों में कोई दम नहीं है। इनसे मुझे ऐसी उम्मीद नहीं थी।

श्री सभापति : चौहान साहब, आपके बोलने के चार मिनट बाकी हैं।

प्रो० छत्तर सिंह चौहान : मेरी आपसे गुजारिश है कि आप चाहे मुझे ढाई मिनट और दें लेकिन कम से कम माननीय सदस्य मेरी बात सुनें तो सही और शोर न करें या फिर मुझे यह कह दें कि मैं बोलना बन्द करूं।

श्री सभापति : चौहान साहब, आप साढ़े तीन बजे से बोल रहे हैं, अपनी बात जल्दी कन्क्लूड कीजिए।

प्रो० छत्तर सिंह चौहान : सभापति जी, गोदारा साहब जो कह रहे थे वह ठीक ही कह रहे थे कि यह सरकार कैसे बनी, क्या हालात थे। अगर इस पर चर्चा नहीं करनी तो अच्छा यही है कि हमें यह कह दें कि आपको बोलने का अधिकार ही नहीं है। बड़े अफसोस की बात है कि आप जैसे विद्वान व्यक्ति कल तक चौधरी बंसी लाल जी को पिता कहते थे, उनके पैरों को हाथ लगाते थे और अब कुछ और हैं। यह देखकर मुझे बड़ा दुःख होता है यह ठीक है कि परिवर्तन प्राकृति का नियम है। (शोर एवं व्यवधान)

श्री सभापति : चौहान साहब, आपने यह पैरों को हाथ लगाने वाली बात किसके लिये कही है ?

श्री धीरपाल सिंह : सभापति जी, ये अपने लिये कह रहे हैं।

श्री सभापति : अगर अपने लिए कह रहे हैं तो ठीक।

---

* चेयर के आदेशानुसार कार्यवाही से निकाल दिया गया।

वैयक्तिक स्पष्टीकरण -

प्रो० छत्तर सिंह चौहान द्वारा

प्रो० छत्तर सिंह चौहान : इस बारे मैं पर्सनल ऐक्सप्लेनेशन देना चाहता हूं। सभापति जी, आप यह अच्छी तरह जानते हैं कि जो साथी आज बातें कर रहे हैं उन्होंने चौधरी बंसी लाल जी के साथ एक दिन नहीं बल्कि 25 साल गुजारे हैं। आप अपने मुख से कहा करते थे कि अगर हरियाणा का कोई विकास कर सकता है तो वह चौधरी बंसी लाल ही कर सकते हैं। वे हरियाणा के निर्माता हैं और उन्होंने भविष्य की सोच की है।आप ही कहा करते थे कि चौधरी बंसी लाल ने हरियाणा के समाज में आई विकृति को दूर किया है। (शोर) अब आपको सुनने का साहस तो करना ही पड़ेगा क्योंकि आपको जनता की अदालत में जाना पड़ेगा। आज जनता देख रही है कि जिन्होंने किसी को धोखा दिया है जो ***** हैं, आज तक उनमें से दोबारा कोई चुन कर नहीं आया है। (शोर)

श्री सभापति : यह "भगौड़े" शब्द कार्यवाही से निकाल दिया जाए।

प्रो० छत्तर सिंह चौहान : सभापति जी, संपत सिंह जी यहां बैठे हैं और आप इनसे पूछिये कि 1987-88 में इनकी पार्टी के 86 विधायक थे और आज उनमें से कितने एम०एल०ए० हैं। (विघ्न) उनमें से केवल अब 4 विधायक ही बैठे हैं। इसी तरह से 1996 में जो सदस्य जीत कर आये और उनमें से जिन्होंने ये डिफैक्ट किया वह प्रजातंत्र के साथ धोखा है। (शोर)

श्री सभापति : चौहान साहब, आपका टाईम समाप्त हो गया है इसलिए आप अपनी सीट पर बैठें। (शोर)

प्रो० छत्तर सिंह चौहान : चेयरमैन साहब, आप मुझे अपनी बात कंक्लयूड करने के लिए दो मिनट का टाईम और दें। (शोर)

श्री सभापति : आप दो मिनट में अपनी बात सीधे रास्ते से कंक्लयूड करें।

प्रो० छत्तर सिंह चौहान : चेयरमैन साहब, मैं सही ढंग से बोल रहा हूं। (शोर)

श्री बृज मोहन सिंगला : चेयरमैन साहब, ये अपने समय में सदस्यों को सदन से बाहर फैंकवा देते थे इसलिए उसी तरह से आप इनको सदन से बाहर फैंकवा दें। (शोर)

प्रो० छत्तर सिंह चौहान : चेयरमैन साहब, अभी सिंगला जी ने यह कहा है कि इनको सदन से बाहर फैंकवा दें। सिंगला साहब कल तक यह कहते रहे हैं कि उनके घर पर डले मारे, उनकी बेइज्जती की। मैं तो यह चाहता हूं कि जो भाई चौधरी बंसी लाल जी को धोखा देकर गए हैं उनको भगवान हिम्मत दे जो जिनके साथ हैं वह उनके साथ रहें। जब वे लोग जनता की अदालत में जाएंगे तब उनको मालुम हो जाएगा। (शोर)

श्री बृज मोहन सिंगला : पिछली सरकार ने हमारे ऊपर झूठे मुकद्दमें बनवाए। (शोर)

श्री सभापति : मेरा सभी माननीय सदस्यों से निवेदन है कि जो भी माननीय सदस्य बोलना चाहे वह चेयर की परमिशन ले कर बोले। इस तरह से एक दूसरे की तरफ ऊंगलियों के इशारे करके न

---

* चेयर के आदेशानुसार कार्यवाही से निकाल दिया गया।

[श्री सभापति]

बोलें। इस तरह से एक दूसरे पर आरोप प्रत्यारोप लगाना सदन की गरिमा के विपरीत है। चौहान साहब आप तो स्पीकर की कुर्सी पर विराजमान रहे हैं इसलिए आप कायदे कानून को अच्छी तरह से जानते हैं। आपका मन अब भी इस कुर्सी पर बैठने का था लेकिन क्या करें। (हंसी)

प्रो० छत्तर सिंह चौहान : मैंने तो आज 12.35 बजे इस कुर्सी से अपना त्यागपत्र दे दिया था। मैं तो यह कहना चाहता हूं कि जो हमारे साथी चौधरी बंसी लाल जी का नाम ले कर वोट ले कर जीते हैं और जिन्होंने चौधरी बंसी लाल जी को धोखा दिया है उनके बारे में भगवान ही फैसला करेंगे। (शोर)

श्री सभापति : चौहान साहब, अब आपका समय समाप्त हो गया है इसलिए आप बैठ जाएं। अब श्री कैलाश चन्द्र शर्मा बोलेंगे।

प्रो० छत्तर सिंह चौहान : चेयरमैन साहब, मुझे इन्होंने अपनी पूरी बात नहीं कहने दी इसलिए आप मुझे एक मिनट का टाईम और दें ताकि मैं अपनी बात कंक्लयूड कर सकूं। (शोर)

श्री सभापति : नहीं आपका समय समाप्त हो गया। अब श्री कैलाश चन्द्र शर्मा बोलेंगे।

श्री कैलाश चन्द्र शर्मा : चेयरमैन साहब, आपने मुझे बोलने के लिए समय दिया उसके लिए आपका बहुत-बहुत धन्यवाद।

श्री बीरेन्द्र सिंह : चेयरमैन साहब, क्या शर्मा जी प्वायंट ऑफ आर्डर पर बोल रहे हैं या स्पीच दे रहे हैं।

श्री सभापति : ऐसा है कि इस मोशन पर सभी पार्टीज के सदस्यों के अनुसार बोलने के लिए समय दिया जाएगा इसलिए शर्मा जी आप यदि प्वायंट ऑफ आर्डर पर बोलना चाहते हैं तो बोल सकते हैं।

श्री सतपाल सांपवान : चेयरमैन साहब, प्वायंट ऑफ आर्डर बीच में कहां से आ गया।

श्री कैलाश चन्द्र शर्मा : चेयरमैन साहब, मैं आपके द्वारा चौहान साहब को बताना चाहूंगा कि यह समय की बात है हमने चौधरी बंसी लाल जी को बिना शर्त समर्थन दिया था लेकिन ज्यों ही 25 जून को मैंने उनके खिलाफ वोट डाला तो उन्होंने अगले ही दिन नारनौल एस०पी० को मेरे ऊपर झूठे मुकद्दमें बनाने के लिए कहा और जब मैं 15 साल पहले सरपंच था उस समय के मेरे ऊपर 10 मुकद्दमें दर्ज कराए गए।

विश्वास-मत (पुनरारम्भ)

प्रो० छत्तर सिंह चौहान : चेयरमैन साहब, जब भी कोई नई गवर्नमैंट बनती है तो उसको काम करने के लिए, प्रदेश की डिवैल्पमैंट के लिए कुछ समय चाहिए यह हम मानते हैं। गवर्नमैंट अभी बनी है। चौटाला साहब ने अभी सरकार की बागडोर संभाली है, उनके पास कोई जादू की छड़ी तो है नहीं कि वह सारे डिवैल्पमैंट के काम एक दिन में ही कर दें। जब भी कोई पार्टी सत्ता लेती है तो ला एण्ड आर्डर की जिम्मेवारी को ठीक रखना उस सरकार की जिम्मेदारी उसी वक्त से शुरू हो जाती है जब से

वह सत्ता संभालती है। (विघ्न) मेरे कहने का मतलब यह है कि ला एण्ड आर्डर को मेनटेन रखना उस सरकार का सबसे पहला कर्तव्य बिना एक बड़ी-सैकिंड गंवाय बन जाता है। मैं आपको बताना चाहूंगा कि चौधरी ओम प्रकाश चौटाला ने सत्ता संभालते ही कहा था कि मैं हरियाणा के लोगों को विश्वास दिलाता हूं कि ला एण्ड आर्डर को मेनटेन करना मेरी पहली प्राथमिकता होगी। (शोर एवं विघ्न)

श्री सभापति : अभी आप बैठिये। (विघ्न) आप एक मिनट में अपनी बात खत्म करें।

प्रो० छत्तर सिंह चौहान : मैं एक मिनट में अब अपनी बात खत्म कर देता हूं। श्री ओम प्रकाश चौटाला ने अभी सत्ता संभाली है इसलिए इतनी जल्दी उनसे कोई अपेक्षा भी नहीं करते कि उन्होंने क्या किया क्या नहीं किया। किसी को भी काम करने के लिए समय चाहिए। (शोर) मगर मैं आपको एक घटना गुड़गांव की बताना चाहूंगा कि गुड़गावां में जो कुछ इस सरकार के सत्ता संभालते ही हुआ उसकी जिम्मेवारी इस सरकार की बनती है। (शोर एवं विघ्न) गुड़गांव के अन्दर कोई साढ़े सतरह एकड़ जमीन थी जिसकी कीमत लगभग 250-300 करोड़ की थी, उस जमीन पर सत्ताधीन पार्टी के कुछ लोगों ने कब्जा कर लिया। (शोर एवं विघ्न)

श्री सभापति : चौहान साहब, आप बैठिये। आपका समय हो चुका है। अब बहन करतार देवी जी बोलेंगी।

मुख्य मंत्री (श्री ओम प्रकाश चौटाला) : सभापति महोदय, बोलने से पहले मैं केवल एक बात कहना चाहूंगा । चेयरमैन साहब, मैं आपके द्वारा इस सदन के सभी सम्मानित सदस्यों से अनुरोध करना चाहूंगा कि सदन की गरिमा को कायम रखते हुए उन्हें रचनात्मक सुझाव देने चाहिएं। वैसे देखा जाए तो मौजूदा सरकार के पास ऐसा कोई काम था ही नहीं जिसके बारे में ये कुछ कहेंगे। आगे हम क्या कर सकते हैं, उसके बारे में मैं बताना चाहूंगा कि हम मिलजुल कर कोई अच्छा निर्णय लेंगे। आज इस सदन में कही बातें एक इतिहास बनने जा रही हैं। हम चाहते हैं कि एक अच्छा इतिहास बने और प्रदेश को लाभ मिले। अब तक का जो वातावरण था वह सदन की गरिमा बिगाड़ने की दृष्टि से नहीं था या पद की गरिमा को बिगाड़ने की दृष्टि से नहीं था। सिर्फ एक व्यक्ति के प्रति सब को रोष था इसलिए यह केवल छत्तर सिंह जी तक सीमित था। मुझे यह पूरी उम्मीद है कि अब यह हाउस बड़े शान्त वातावरण में चलेगा।

श्रीमती करतार देवी (कलानौर, अनुसूचित जाति) : चैयरमैन सर, सदन के सामने एक बड़ी अजीब स्थिति में विश्वास प्रस्ताव पर बहस करने का मौका आया है। हमारी पार्टी के एक वरिष्ठ सदस्य चौधरी खुर्शीद अहमद जी ने एक सवाल उठाया था और उन्होंने आर्टिकल 163 का हवाला भी दिया था। सदन के सभी सदस्य इस तथ्य से वाकिफ हैं और जानते हैं लेकिन मुझे अफसोस से कहना पड़ता है कि हो सकता है कि यह छोटी सी भूल हो परन्तु इसे नज़र अन्दाज नहीं किया जाना चाहिए था। यह नहीं कहा जा सकता कि कौंसिल ऑफ मिनिस्टर्ज़ का गठन हुआ है। चाहे ये एक ही मिनिस्टर को ओथ दिलवा देते और बाकी का मंत्रीमंडल बाद में पूरा कर लिया जाता। लेकिन यह बात न कर के इस बात को इतना साईड ट्रैक किया गया कि उसके बाद इस बारे में न तो किसी ने पूछने की जरूरत समझी और न ही चेयर की ओर से कोई रूलिंग इस बारे में आई। बात चाहे छोटी ही क्यों न हो परन्तु हम सदस्यों और सरकार की पूरी रिस्पौंसिबिलिटी बनती है, हम कोई भी शब्द बोलें, कोई भी कार्य करें, उस में यह जरूर देखा जाए कि वह भारतीय संविधान के प्रतिकूल न हो। हमारा कोई भी वचन, हमारा कोई भी कदम संविधान के प्रतिकूल नहीं होना चाहिए। खैर अब तो बहस शुरू हो चुकी है इसलिए इस पर ज्यादा कहने की

[श्रीमती करतार देवी]

आवश्यकता नहीं है लेकिन जनता और प्रदेश के प्रबुद्ध नागरिकों का वर्तमान सरकार के प्रति क्या मत होगा। वर्तमान परिस्थितियों में अगर कोई आशंका है तो वह यह है कि काम तो होंगे लेकिन संविधान को ताक पर रख कर होंगे। सदन के नेता ने यहां पर विश्वास दिलाया है यह विश्वास वैसा ही न हो जैसा पूर्व में एक और नेता ने भी विश्वास दिलाया था कि अब मैं पहले वाला नहीं रह गया हूं। अब मैं बदल गया हूं। शायद ऐसा ही चौटाला साहब के मन में भी है। इन्होंने कहा है कि पहले तरीके से काम नहीं करूंगा इसलिए शायद कुछ बदले हुए तरीके से यह सरकार चलेगी। ऐसा विश्वास मान कर आज की वर्तमान परिस्थितियों में यह कहना चाहूंगी कि जिस प्रकार से सरकार का गठन हुआ है और एक हफ्ते में जिस तेजी से घटनाएं घटी हैं यह सब वक्त की बात है। इस अवसर को एक आदर्श रूप भी दिया जा सकता है क्योंकि परिस्थितियां ऐसी हैं कि आम चुनाव के समय जब हम जनता के सामने गये थे तब कोई किसी के साथ खड़ा था और कोई किसी के खिलाफ खड़ा था। अब हालात बदल गये हैं। पिछली सरकार ने अच्छा काम नहीं किया या सदस्यों की कुछ नाराज़गी थी ऐसी बात हो सकती है। उनकी नाराज़गी जायज़ भी हो सकती है। जनता में भी उस सरकार के प्रति नाराज़गी थी। उसमें कोई दो राय नहीं है। हमारा प्रदेश ऋषि मुनियों की धरती कहलाता है। हरियाणा प्रदेश काफी दिनों से आया राम गया राम की प्रक्रिया में देश में बदनाम है। पिछले दिनों चौधरी बंसी लाल जी के विश्वास मत पर जब चौटाला साहब बोले थे तो उन्होंने कहा था कि हम भी चुनाव चाहते हैं। आओ सदन के अन्दर एक रैज़ोल्यूशन कर दें लेकिन जब यह मौका आया तो वह बात नहीं रही। इन्होंने सही मौका देखा क्योंकि कांग्रेस ने अपनी सरकार बनाने का दावा पेश नहीं किया। हम तो यह दावा कर भी नहीं सकते थे क्योंकि हमारी संख्या इतनी थी भी नहीं इसलिए हमने महसूस किया कि हम जोड़-तोड़ की सरकार क्यों बनाएं। जो यह सरकार बनाई गई है यह जनता की आकांक्षाओं के अनुरूप नहीं है, जनता द्वारा दिए गए जनादेश के अनुरूप नहीं है। यह बात तो सभी सदस्य अपने मन-मन में सोचेंगे क्योंकि जनता ने हमें चुना था उस वक्त रूप दूसरा था आज का रूप नहीं था। खैर, मैं आगे यह कहना चाहती हूं कि यह किसी एक सदस्य की जिम्मेदारी नहीं है यह हम सब की जिम्मेदारी की बात बनती है कि जनता में एक विश्वास की भावना जगाएं। जनता हमें चुन कर भेजती है वह हम से आशा रखती है कि ये लोग जो बात कहते हैं वह करेंगे। काफी दिनों से राजनीतिज्ञ लोगों के वचन का आम लोगों में विश्वास घटता जा रहा है। आप यकीन मानिए आज लोग कहते हैं कि वोट देकर क्या करना है। अगर ऐसे ही निराशा का भाव जनता में रहेगा तो लोकतन्त्र बच नहीं पाएगा। लोकतन्त्र को बचाना सबकी जिम्मेदारी है और उसको बचाने के लिए केवल एक ही फार्मूला है कि हम केवल उतना ही कहें जितना कि हम कर सकें। आज राज्य की आर्थिक परिस्थितियां हरेक के आड़े आती हैं, सामाजिक हालात हरेक के आड़े आते हैं लेकिन हम इनके बारे में कहने का साहस नहीं जुटा पाते हैं। हम लोगों में जिन-जिन विकास के कामों की बातें कह कह कर भावनाएं जगाते हैं हम उन कामों को नहीं कर पाते हैं। उससे लोगों में फरस्ट्रेशन आती है। जब कोई दूसरी सरकार आती है तो उस सरकार से भी हम आशाएं रखते हैं लेकिन वही समस्याएं, वही परिस्थितियां उनके सामने ही आकर खड़ी हो जाती हैं और फिर वातावरण वैसा ही बनता है। फिर सदस्यों को परेशानियां होती है कि हम लोगों के बीच में क्या कह कर आए थे और कल उनके बीच में क्या कहने जाएंगे। मैं तो यह कहूँगी कि इस वातावरण को बंद करना चाहिए। एम०एल०ए० को अपने आप में देखना चाहिए कि वे बहुत बड़ी पंचायत के सदस्य हैं। सर, जैसी प्राचीन परम्परा है कि फलां आदमी चाहे कैसा भी है, चाहे गरीब है लेकिन वह सही बात को मानता है। आज यही छवि हम सबको अपनी बनानी है। अभी-अभी चौटाला साहब ने कहा है कि हम उनकी सरकार को रचनात्मक सुझाव दें जिससे ये सरकार को जनता की आशाओं

के अनुरूप चला सकें। मैं तो ऐसे मौके पर यह कहूँगी कि आप आज सरकार में बैठे हैं। आप सरकार की आर्थिक स्थिति की समीक्षा करें। आज देहात और शहरों में बेरोजगारी की बड़ी भारी समस्या है। बेरोजगारी को कैसे दूर किया जा सकता है इस बारे में सोचना चाहिए। हमें एक प्लांड तरीके से लाखों लोगों को रोजगार देना चाहिए। चेयरमैन साहब, नौकरियों के साथ आज यह बात जुड़ गई है कि नौकरियों के लिए नौजवानों से लाखों लाखों रुपये लिये जाते हैं। मैं इसके लिए किसी का नाम नहीं लेना चाहती हूँ। लेकिन यह सच है जोकि आप भी जानते हैं। मैं यह बात कह कर इसकी तरफ आपका ध्यान दिलाना चाहती हूँ। सर, हमें लोग पांच साल के लिए चुनकर अपने अधिकारों का कस्टोडियम बनाकर भेजते हैं। इसमें उनकी कई आशाएं शामिल होती हैं। वह यह सोचता है कि उसके घर में बेरोजगारी है वह दूर हो जाए। आज उसको नौकरी चाहिए। उसके घर के साथ जो गली लगती है वह पक्की हो जाए। वह बिजली का प्रयोग करता है तो उसको बिजली हमेशा मिलती रहे और उचित दामों पर मिलती रहे। मुख्यमंत्री जी ने पहले जैसा कहा था कि लोगों को फ्री बिजली मिले तो यह बहुत ही अच्छी बात होगी। आज जिस प्रकार से यह गठबंधन हुआ है मुझे नहीं लगता है कि आप जनता की आशाओं के अनुरूप काम कर पाएंगे। हम तो यह चाहते थे कि हम जनता के अधिकारों को फिर से उनके हाथों में दे दें। जिस पार्टी को जनता चुनकर भेजती वह अपनी सरकार बना लेती। जिस समय आपका गठबंधन हुआ उस समय आपका यह प्रिविलेज नहीं था कि आप जोड़ तोड़ की सरकार बना लें, उस समय परिस्थितियां बदली हुई थीं। जिस विकास पार्टी ने बी०जे०पी० के साथ हाथ मिलाकर चुनाव लड़ा था, बी०जे०पी० ने उससे अपना हाथ खींच लिया। जिस पार्टी ने बी०जे०पी० के खिलाफ चुनाव लड़ा था, बी०जे०पी० ने अब उससे हाथ मिला लिया। आपको ऐसा नहीं करना चाहिए था। मैंडेट हमें नया लेने के लिए लोगों के बीच में जाना चाहिए था। जब कांग्रेस पार्टी ने विकास पार्टी का समर्थन किया तब यह कहा गया था कि कांग्रेस पार्टी ने गलती करी है। अब हम देखेंगे कि जिस पार्टी को सरकार बनाने की जल्दी है वह कितने दिनों तक लोगों के अधिकारों का दुरुपयोग कर सकेगी। चेयरमैन साहब, आज हालात को देखते हुए जो परिस्थितियां हैं वह किसी एक के सामने नहीं आएंगी, सबके सामने आएंगी। अगर हम झूठ बोल करके लोगों को वास्तविकता से दूर भगाते रहेंगे तो अच्छा नहीं होगा। सर, जिन हालात में यह सरकार बनाई गई है मैं उसका विरोध करती हूँ। चेयरमैन साहब, ये एक तानाशाह के खिलाफ लड़ रहे थे। उसको हटाकर के एक और आदमी को तानाशाह के रूप में लेकर यहां पर आए हैं इसलिए मैं विश्वास प्रस्ताव का विरोध करती हूँ।

श्री अत्तर सिंह सैनी (हांसी) : चेयरमैन साहब, हमारे देश में प्रजातंत्र है और प्रजातन्त्र में सारी शक्तियां प्रजा के हाथ में होती है। प्रजातंत्र में चुनाव होते हैं उसका कानून कायदा होता है। प्रजातंत्र प्रणाली में जो चुनाव होते हैं उनमें प्रत्येक राजनैतिक दल अपने-अपने जनहित के कार्यक्रम जनता के सामने रखते हैं। चुनावों में जनता ही फैसला करती है कि किस पार्टी को वह सरकार चलाने की जिम्मेवारी सौंपती है और किस पार्टी को वह विपक्ष की भूमिका निभाने की जिम्मेदारी सौंपती है या किसी दल को वह इन दोनों में से कोई भी जिम्मेदारी नहीं सौंपती है। पिछले आम चुनाव में परम आदरणीय चौधरी बंसी लाल जी के नेतृत्व में हरियाणा विकास पार्टी और भारतीय जनता पार्टी के गठबंधन को जनता ने सरकार चलाने की जिम्मेदारी सौंपी थी और चौटाला साहब एवं उनके दल को विपक्ष की भूमिका या सरकार पर निगरानी रखने के लिए जिम्मेदारी सौंपी थी। साथ ही हमारे कांग्रेसी भाईयों को जनता ने कोई भी जिम्मेदारी नहीं सौंपी थी और उनको उसने रिटायर कर दिया था। लेकिन जनता के उस जनादेश का उल्लंघन करके जो आज इस नयी सरकार का गठन हुआ है वह बिल्कुल अनुचित है और बिल्कुल गलत है क्योंकि उस

[अत्तर सिंह सैनी]

समय जनता ने जो आदेश दिया था उसकी उल्लंघना आज हुई है। जब पहले हमारे गठबंधन के साथी यानी बी०जे०पी० ने विपक्ष से मिलकर सत्ता हथियाने के लिए समर्थन वापस लिया था उस समय हमारे कांग्रेस पार्टी के भाईयों ने जो कि बहुत अनुभवी हैं इनकी पार्टी भी बहुत अनुभवी है, ने साम्प्रदायिक एवं जातिवादी ताकतों को सत्ता में आने से रोकने के लिए हमें समर्थन दिया था। मैंने 25 जून को ही उनका इस बात के लिए धन्यवाद किया था कि उन्होंने हमें बिना शर्त समर्थन देकर साम्प्रदायिक एवं जातिवादी ताकतों की सत्ता में आने से रोक दिया। लेकिन बाद में उन्होंने हमसे समर्थन वापस लेकर साम्प्रदायिक एवं जातिवादी ताकतों का सत्ता में आने के लिए जो रास्ता साफ कर दिया है उसके लिए भी मैं उनको मुबारिकवाद एवं बधाई देना चाहता हूं क्योंकि वे कहा करते थे कि हम जातिवादी एवं साम्प्रदायिक ताकतों को सत्ता में नहीं पहुंचने देंगे। सर, आज सवाल किसी सरकार का नहीं है कि सरकार किसकी रहे या किसकी न रहे।

कैप्टन अजय सिंह यादव : चेयरमैन साहब, मेरा प्वायंट ऑफ आर्डर है।

श्री सभापति : आप बैठें। आपका कोई प्वायंट ऑफ आर्डर नहीं है। अभी आप सैनी साहब को बोलने दें।

श्री रामविलास शर्मा : चेयरमैन साहब, आप पहली बार चेयर पर आए हैं लेकिन आप हाउस को बहुत ही गरिमा के साथ चला रहे हैं इसलिए मैं आपको बधाई देना चाहता हूं।

श्री अत्तर सिंह सैनी : सर, आज सवाल किसी सरकार का नहीं है आज सवाल प्रजातांत्रिक प्रणाली का है और उसकी रक्षा करने का है। प्रजातांत्रिक प्रणाली की हर हिसाब से, हर कुर्बानी देकर रक्षा की जानी चाहिए। आज जो सरकार बनी है उससे मैं आशा करता हूं कि वह इसकी रक्षा करेगी। हमारे जो साथी हमारे को छोड़कर उनके साथ गए हैं वह इनकी तरफ दयनीय अवस्था में बहुत अच्छी तरह से निहार रहे हैं। मुझे आशा है कि ये उनके ऊपर कृपा दृष्टी बनाए रखेंगे। सर, जो विकास के कार्य परम आदरणीय चौधरी बंसी लाल जी की सरकार ने शुरू किए थे वह सरकार उनको पूरा करेगी। एक बात हमारे नये मुख्यमंत्री जी ने कही कि हम सबको मिलकर यहां पर ऐसा कार्य करना चाहिए जिससे सारे हरियाणा की भलाई हो। वह काम मैं आपको बताना चाहता हूं। सदन के नेता को सबसे पहला यह काम करना चाहिए कि एस०वाई०एल० का पानी हरियाणा की जनता को मिलना चाहिए। इस बात से सारे सदस्य सहमत होंगे।

श्री धीरपाल सिंह : सभापति महोदय, मेरा प्वायंट ऑफ आर्डर है। श्री सैनी साहब जो चौधरी बंसी लाल जी के गीत गा रहे हैं, उन्होंने और इन्होंने कितनी बार एस०वाई०एल० का मौके पर जाकर विजिट किया है। चौधरी बंसी लाल ने हरियाणा की जनता से वायदा किया था कि बीस सिपाही लगाकर एस०वाई०एल० का निर्माण कराऊंगा। मैं हरियाणा की जनता से कहना चाहता हूं कि सवा तीन साल में ये भाई राज के ठेकेदार थे उस समय इन्होंने क्या किया ? आज ये एस०वाई०एल० की चिन्ता जाहिर कर रहे हैं। क्या इन्होंने जाकर देखा कि एस०वाई०एल० कहां से टूटी है क्या उसकी आवश्यकता है ? इनके पास महकमा भी रहा है और ये जिम्मेदार मंत्री भी थे। ये बताएं कि सवा तीन साल में इन्होंने और इनके मुख्यमंत्री ने कितनी बार एस०वाई०एल० का मौके पर जाकर विज़िट किया ?

श्री बृज मोहन सिंगला : सभापति महोदय, मेरा प्वायंट ऑफ आर्डर है। सैनी साहब प्रजातंत्र की बात करते हैं ये किस हैसियत से बहन कान्ता को घुमाने के लिए ले गए थे। (शोर एवं व्यवधान)

श्री अत्तर सिंह सैनी : सभापति महोदय, मैं इस बात का जवाब देना चाहता हूं। (शोर एवं व्यवधान)

श्री सभापति : सैनी साहब, आप मेरे से बात कीजिए। मैं आपसे अनुरोध करता हूं कि जो आपके सुझाव या अच्छी बातें हैं इन्हें चौधरी ओम प्रकाश चौटाला जी बड़े ध्यान से लिख रहे हैं। इस तरह के आरोपों व प्रत्यारोपों का यह समय नहीं है। (शोर एवं व्यवधान) सिंगला साहब, आप बैठिए। (शोर एवं व्यवधान) सैनी साहब, आप सीधे तरीके से अपनी बात खत्म कीजिए। आपके चार मिनट बाकी हैं।

श्री अत्तर सिंह सैनी : सभापति महोदय, जो बात मेरे माननीय साथी श्री सिंगला ने कही है मैं उसका जवाब देना चाहता हूं कि हमारी साथी मंत्री कांता जी और हम परिवार समेत बद्रीनाथ गए थे, धाम पर गए थे, तीर्थ यात्री पर गए थे। हमारा प्रोग्राम पहले से बना हुआ था।

श्री कृष्ण मोहन सिंगला : आपके साथ राम भज, जगदीश नेयर और राम सरूप रामा भी गए थे सारे तीर्थ करने गए थे। अब खाली हो अब जाओ।

श्री सभापति : सिंगला साहब, आप बैठ जाइए। सैनी साहब, आप अपनी बात दो मिनट में समाप्त कीजिए।

श्री अत्तर सिंह सैनी : आप इस बारे में कान्ता जी से पूछ लें वे बता देंगी। सारे के सारे तीर्थ यात्रा पर गए थे। एस०वाई०एल० के बारे में जो चौधरी बीरपाल जी ने बात कही है उस बारे में हमारे से पिछली सरकार ने सुप्रीम कोर्ट में केस दायर किया था। (विघ्न)

श्री बीरपाल सिंह : मैंने यह जानना चाहा है कि एस०वाई०एल० पर आपने कितनी बार विजिट किया और कितनी बार आपके मुख्य मंत्री जी ने विजिट किया था ?

श्री अत्तर सिंह सैनी : उसके बारे में कई लैटर लिखे। केन्द्र सरकार को लिखा और सुप्रीम कोर्ट में जो मुकदमा था उसको वापस लेकर ठीक ढंग से मुकदमा डाला गया। मुख्य मंत्री बनने से पहले ओम प्रकाश चौटाला जी ने बिजली पानी मुफ्त देने की बात कही थी। (विघ्न)

श्री सभापति : आपका समय समाप्त हो गया है। आप बैठ जाइए।

श्री बीरेन्द्र सिंह : सभापति महोदय, शुरू में यह तय हुआ था कि विश्वास-मत पर चर्चा के लिए कितना समय निर्धारित किया जाए। सदन के नेता ने और एक्टिंग स्पीकर साहब ने भी यह कहा कि कोई समय निर्धारण नहीं है। At least, you are the Chairman, You must know, when there is no time limit, we can make a speech. If there is repetition then you can ask us to sit down, otherwise you cannot say us to sit down.

श्री बीरपाल सिंह : मैं यह कहना चाहता हूं कि हाउस के नेता ने तब यह बात कही थी जब चौधरी बीरेन्द्र सिंह ने आपत्ति जाहिर की थी। हमारे नेता ने तब यह बात खुलेमन से कही थी कि कोई साथी जितना बोलना चाहे, बोले। लेकिन कोई सदस्य बेवजह गैरजिम्मेदाराना तरीके से एक-एक दो-दो घण्टे बोले, विषय से हटकर बोले, उस पर कोई अंकुश न हो तो यह कोई बात नहीं है। (शोर एवं व्यवधान)

श्री ओम प्रकाश चौटाला : सभापति जी, मेरी सबमीशन है और मैं आपके द्वारा चौधरी बीरेन्द्र सिंह को पुनः एक बार कहना चाहूंगा कि मैं वोट ऑफ कांफीडैंस सीक कर रहा हूं। मेरी सरकार के खिलाफ कोई बात हो तो विस्तार से जितने साथियों ने कहनी है, कहें, कोई सुझाव हो तो दें। लेकिन

[श्री ओम प्रकाश चौटाला]

अगर गठबंधन के बारे में बातें करें कि ये गठबंधन था तो इसे तो ये भुगतने लग रहे हैं। पुराने कुकर्म खुद गिनाएंगे तो शोभा नहीं देगा। आज केवल एक लाइन की बात है- मैं सदन से वोट ऑफ कांफीडैंस सीक कर रहा हूं। भारतीय संविधान में तो एक सीधा सा प्रावधान है कि जनतांत्रिक प्रणाली में संख्या के आधार पर सरकारें बनती हैं। संख्या के आधार पर अगर मैं सदन का नेता हूं तो मैं रहूंगा अगर मेरे पास उतनी संख्या नहीं है तो मैं सदन का नेता नहीं रहूंगा। अब इसके लिए समय चाहे कितना ही बर्बाद कर दो। बहन जी ने ठीक ही कहा है कि चौहान साहब और सैनी साहब ने कोई रचनात्मक सुझाव नहीं दिए हैं। ये तो अपने समय के कुकर्म गिनाने में लगे हुऐ हैं। एस०वाई०एल० नहर अब इन्हें याद आ रही है। 'दिया जब रंज बुतों ने तो खुदा याद आया'। मैं अब भी सहमत हूं कि मेरी सरकार में जिस भी सदस्य को विश्वास है या अविश्वास है वह खुलकर चर्चा कर ले। गड़े मुर्दे उखाड़ने से तो अपनी ही जांघ उघड़ेगी और शर्म आयेगी इसलिए जाने दो इन बातों को, इन बातों में क्या रखा है।

श्री अत्तर सिंह सैनी : सभापति महोदय, हमारे नये मुख्य मंत्री जी ने मुख्य मंत्री बनने से पहले लोगों को बिजली और पानी मुफ्त देने की बात कही थी। मेरा उनको यही सुझाव है कि वे जल्दी से जल्दी इस अपने वायदे को पूरा करें। धन्यवाद।

श्री सभापति : राम बिलास शर्मा जी आप बोलिए।

श्री राम बिलास शर्मा (महेन्द्रगढ़) : सभापति महोदय, 24 तारीख को श्री ओम प्रकाश चौटाला जी के नेतृत्व में हरियाणा में नई सरकार बनी है। (विघ्न)

श्री बीरेन्द्र सिंह : शर्मा जी, आज तो चौधरी ओम प्रकाश चौटाला जी की तारीफ में जितने चाहो प्रशंसा के पुल बांध लो आपको मान जायेंगे।

श्री राम बिलास शर्मा : सभापति महोदय, चौधरी बीरेन्द्र सिंह जी मुझे प्रोवोक कर रहे हैं। 25 तारीख को बढ़-चढ़कर और कूद-कूद कर बोल रहे थे। हमारे वरिष्ठ साथी चौधरी खुर्शीद अहमद जी, चौधरी बीरेन्द्र सिंह जी और गाबा साहब, गाबा साहब तो बोलना नहीं चाहते थे फिर भी बोलना पड़ा। उनका भाषण मैं अभी पढ़ रहा था। साम्प्रदायिक ताकतों, जातिवादी ताकतों की बात कर रहे थे और उनके तीन मंत्री लाबी में थे। इनकी पार्टी के अध्यक्ष, हुड्डा साहब का एक पैर मुख्य मंत्री महोदय के कमरे में था और एक पैर सदन की लाबी में था। फिर उन्होंने चौधरी बीरेन्द्र सिंह जी को बुला लिया। ये पहले फैसला नहीं कर सके थे। सौभाग्य से मेरी सीट भी चौधरी खुर्शीद अहमद जी व चौधरी बीरेन्द्र सिंह जी की लाइन में थी। मैंने इन से दो बजे पूछा कि क्या फैसला हुआ है। फिर 3 बजे पूछा, 4 बजे पूछा, 5 बजे पूछा, 6 बजे पूछा तथा 6.30 बजे पूछा। अंततः वे कहने लगे कि भारतीय जनता पार्टी एक सांप्रदायिक पार्टी है। सभापति महोदय, यो तो चौधरी बंसी लाल जी का भाषण भी सोनिया जी से लिखवाकर लाए थे। उस समय इस सदन में भारत के यशस्वी प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी को बड़ी मोटी-मोटी गालियां दी गई। आज चौधरी बंसी लाल जी सदन में उपस्थित नहीं हैं। वे इस कुर्सी पर बैठकर तो सदस्यों को जलील कर सकते हैं, परंतु उधर बैठने की उन में हिम्मत नहीं है। (शोर)

श्री सतपाल सांगवान : सभापति महोदय, मैं प्वाएंट ऑफ आर्डर पर बोलना चाहता हूं। *****

श्री सभापति : सांगवान साहब, आप इजाजत लेकर ही बोल सकते हैं। सांगवान साहब जो कुछ भी कह रहे हैं, वह रिकार्ड न किया जाए।

---

* चेयर के आदेशानुसार रिकार्ड नहीं किया गया।

श्री रामविलास शर्मा : सभापति महोदय, 22 जून, 1999 तक पूरे 3 साल हम ने इन के साथ सखा धर्म निभाया तथा जब इन को कांग्रेस पार्टी से समर्थन मिल गया, चौधरी बीरेन्द्र सिंह जी की इच्छा के विरुद्ध मिल गया या आर्थिक कारणों से मिल गया फिर इन्होंने इस महान सदन में श्री वाजपेयी जी को व रामविलास को क्या-क्या कहा, यह सदन उसका चश्मदीद गवाह है। सभापति जी, कांग्रेस की भूमिका में मैं एक बात कहना चाहता हूं। मैं गांव का आदमी हूं। गांव में बुजुर्ग आदमी एक बात सुनाया करते हैं। एक औरत थी। उसका एक पति था जिसका नाम लटूरा था। वह उसको छोड़कर चली गई। फिर उसको एक अमरा नाम का पति मिला जिसके साथ उस ने अपना घर बसा लिया। फिर वह अमरा मर गया। (शोर एवं विघ्न)

प्रो० छत्तर सिंह चौहान : सभापति महोदय, मैं कुछ कहना चाहता हूं। (शोर एवं विघ्न) (इस समय बहुत से सदस्य खड़े होकर बोलने लगे)

श्री सभापति : मेरी सभी माननीय सदस्यों से प्रार्थना है कि वे अपनी-अपनी सीट पर बैठ जाएं। (विघ्न)

श्री सतपाल सांगवान : सभापति महोदय, मैं प्वाएंट ऑफ आर्डर पर बोलना चाहता हूं।

श्री सभापति : सांगवान साहब, आप बिना इजाजत लिए बोलने के लिए खड़े हो जाते हैं। आपका यह रवैया मुझे बहुत अखरता है। पहले आप मुझ से बोलने के लिए इजाजत लीजिए उसके बाद अपनी बात कहिए, आपका क्या प्वाएंट ऑफ आर्डर है ?

श्री सतपाल सांगवान : सभापति जी, अभी सदन में लीडर ऑफ दि हाउस ने कहा कि हमें कोई सुझाव दो। मैं पूछना चाहता हूं कि क्या यह कोई सुझाव है ?

श्री सभापति : यह कोई प्वाएंट ऑफ आर्डर नहीं है। कृपया आप बैठिए।

श्री राम विलास शर्मा : सभापति महोदय, मैं कह रहा था कि अमरा मर गया। उस औरत ने फिर सूरा नाम के एक आदमी से शादी कर ली। वह सूरा भी उसको छोड़कर भाग गया। कांग्रेस के मित्रों के साथ भी 25 जून से 22 जुलाई तक इन 20-25 दिनों में ऐसा ही हुआ। इन दिनों में क्या-क्या परिवर्तन हुआ, क्या-क्या हुआ, यह आप सभी जानते हैं। (शोर एवं विघ्न)

प्रो० छत्तर सिंह चौहान : सभापति महोदय, मेरी बात तो सुनिए।

श्री सभापति : जितने भी विपक्ष के माननीय सदस्य हैं, मैं उन से अनुरोध करना चाहूंगा कि अगर वे कोई बात कहना चाहते हैं तो पहले मेरे से इजाजत ली जाए। अगर वे बिना पूर्व इजाजत लिए बोलेंगे तो सदन की कार्यवाही में बाधा आएगी। (शोर)

श्री बीरेन्द्र सिंह : सभापति महोदय, मैं भी कुछ कहना चाहता हूं।

श्री सभापति : बीरेन्द्र सिंह जी, आपसे तो मैं चैंबर में भी मिलने पर विचार कर रहा हूं। (शोर)

श्री राम विलास शर्मा : सभापति महोदय, कांग्रेस पार्टी का तो वह हाल हो गया कि

" अमरा हमने मरता देख्या, भागता देख्या सूरा,
अगले से पाछला भला, खसम भला लटूरा।"

इन 20-25 दिनों में एक राष्ट्रीय पार्टी अपना भाषण लिखकर मुख्य मंत्री को पढ़वाती है। सभापति महोदय, देश की राजनीति में अस्थिरता पैदा करने का यह हरियाणा का ही एकमात्र उदाहरण

[श्री राम विलास शर्मा]

नहीं है। मैं तो उन बहादुरों को बधाई देना चाहता हूं जिन विकास पार्टी (डैमोक्रेटिक) के विधायकों ने हरियाणा की जन भावनाओं का आदर करते हुए, हिम्मत करते हुए हमारा साथ दिया Congress is the name of instability in the politics.

17 अप्रैल को एक वोट कम होने के कारण अटल बिहारी वाजपेयी की सरकार चली गई। उसी दिन से हरियाणा में षड्यंत्रों की सांठ गांठ शुरू हो गई। हरियाणा में भी इन्होंने यह खेल खेला। चेयरमैन साहब, हरियाणा प्रदेश महाभारत की धरती है, यह भगवान कृष्ण की धरती है, यह गीता की धरती है। हमारे विरोधी पक्ष के माननीय सदस्य कह रहे हैं कि बी०जे०पी० ने चौधरी बंसी लाल के साथ विश्वासघात किया। हमने तो भगवान कृष्ण का संदेश अर्जुन के नाते सुना। हमने वही किया है, हमने किसी के साथ विश्वासघात नहीं किया। श्री कृष्ण ने कहा था कि जो योद्धा होता है, जो शूरवीर होता है संकट में उसका अपना धर्म होता है। चेयरमैन साहब, बी०जे०पी० ने जब देखा कि जिस कुर्सी की टांग हमने अपने सिर पर रखी थी वह कुर्सी जन भावनाओं का निरादर करने लगी है, वह कुर्सी जन प्रतिनिधियों के खिलाफ मुकद्दमें दर्ज करने लगी है, वह कुर्सी विधायकों को धमकाने लगी है। चेयरमैन साहब, दलित समाज से सम्बन्धित बहन कान्ता जी, जगदीश नेयर और रामसरूप राना जो सदन में बैठे हैं, ये पिछले डेढ़ महीने से अपने घर नहीं जा सके। किस तरह से इन तीनों लोगों के जज्बातों को दबाकर, इनको बंधक बनाकर, तीर्थ यात्रा करने वाले विकास पार्टी के लोग हैं, ये तो जान लेने वाले लोग हैं। तीर्थ यात्रा तो मैं और बृज मोहन सिंगला करके आए थे। (शोर) हम जिस संकल्प के लिए वहां पर गए थे, वह हमारा पूरा हुआ। चेयरमैन साहब, ये लोग प्रजातंत्र की बात करते हैं। चौ० बंसीलाल ने 8-8 मंत्रियों को डिसमिस कर दिया था और फिर वे उनके पैर पकड़ने के लिए तैयार हो गए। (शोर)

श्री सतपाल सांगवान : चेयरमैन साहब, मेरा प्वायंट ऑफ आर्डर है (शोर)

श्री सभापति : सांगवान साहब, आप चेयर की परमिशन के बगैर बोल रहे हैं, आप कृपया बैठ जाएं। आप चेयर की परमिशन के बगैर न बोलें। (शोर)

श्री जगदीश नेयर : चेयरमैन साहब, मेरी पर्सनल एक्सप्लानेशन है।

17.00 बजे **श्री सभापति :** नेयर साहब आप अपनी पर्सनल एक्सप्लेनेशन पर बाद में बोलना पहले शर्मा जी को समाप्त करने दो। (शोर एवं व्यवधान) प्लीज आप बैठिये।

श्री करतार सिंह भड़ाना : सभापति जी, मेरा प्वायंट ऑफ आर्डर है। मैं सदन के सभी सदस्यों को एक बात बताना चाहता हूं कि नेयर साहब रात को मेरे पास आये और कहने लगे कि मेरे को तो जबरदस्ती रोक रखा है अगर इन्होंने ऐसा नहीं कहा तो ये बतायें मैं अपनी सदस्यता से त्यागपत्र दे दूंगा। (शोर एवं व्यावधान)

वैयक्तिक स्पष्टीकरण

श्री जगदीश नेयर द्वारा

श्री जगदीश नेयर : सभापति जी, मैं अपना वैयक्तिक स्पष्टीकरण देना चाहता हूं। मेरे बारे में पहले भी अखबारों में काफी कुछ लिखा गया था और शर्मा जी भी कह रहे हैं। मैं आपको बताना चाहूंगा

कि मैं तो अपनी मर्जी से घूमने के लिए गया था। जो 70 हजार रुपये विधायक को मिलते हैं वे मैंने लिये और घूमने के लिए चला गया था। मेरे बारे में शर्मा जी जो कुछ भी कह रहे हैं वह गलत कह रहे हैं।

श्री सभापति : शर्मा जी ने आपके बारे में क्या कहा है ?

श्री जगदीश नेयर : सभापति जी, जो बात भडाना साहब ने कही है मैं उसके बारे में कहना चाहूंगा कि मैंने इनसे ऐसी कोई भी बात नहीं की। भडाना साहब मेरे जिले के हैं। मैं इनको विपक्ष का नेता नहीं मानता। शर्मा जी ने जो बाहर भेजने वाली बात कही है मैं उसको सार्थक नहीं मानता। (शोर एवं व्यवधान)

श्री करतार सिंह भडाना : सभापति जी, जब भाई नेयर रात को मेरे पास आया तो मैंने इनसे कहा कि भाई तू आज आया इतने दिन कहां था। इन्होंने मुझे कहा कि मेरे को तो जबरदस्ती रोक रखा है, बड़े-बड़े पुलिस अधिकारी मेरी निगरानी में लगा रखे हैं। सभापति जी, जो कुछ मैं कह रहा हूं अगर यह गलत है तो ये धर्म से बता दें मैं अपनी सदस्यता से त्यागपत्र दे दूंगा। (शोर एवं व्यवधान)

श्री सभापति : नेयर साहब आपने कुछ और कहना है या कह चुके। आपने शर्मा जी की बात का जवाब भी दे दिया है, प्लीज अब आप बैठिये। (शोर एवं व्यवधान)

श्री जगदीश नेयर : सभापति जी, मैंने ऐसी कोई बात नहीं कही कि मुझे बाहर भेजा गया था। (शोर एवं व्यवधान)

विश्वास-मत (पुनरारम्भ)

श्री राम विलास शर्मा : सभापति जी, एक बात तो इन सब साथियों ने मानी। (शोर एवं व्यवधान)

श्री रणदीप सिंह सुर्जेवाला : सभापति जी, मैं भी कुछ कहना चाहता हूं। (शोर)

श्री सभापति : श्री रणदीप सिंह सुर्जेवाला जी, आप एक पढ़े-लिखे वकील हैं। आप बिना इजाजत के बार-बार खड़े होकर बोलने लग जाते हैं। आपको यह शोभा नहीं देता। जब आपको बोलने का समय दिया जाएगा तभी आप अपनी बात कह लेना। अभी आप बैठिए। रामविलास शर्मा जी, आप अपनी बात पूरी करें। (शोर)

श्री हर्ष कुमार : सर, मैं कुछ कहना चाहता हूं। *****

श्री सभापति : हर्ष कुमार जी, जो कुछ बिना इजाजत कह रहे हैं वह रिकार्ड न किया जाए। आपको जो बात कहनी है उसके लिए पहले इजाजत लीजिए। आपका यह तरीका गलत है कि इस तरह कुछ भी कहने के लिए आप खड़े हो जाएं तो यह मतलब नहीं होता कि आपको इजाजत मिल गई। (शोर एवं व्यवधान)

श्री राम विलास शर्मा : सभापति जी इन लोगों ने एक बात मानी है कि ये लोग ऐसे मौके पर घूमने गये थे जब वह तीर्थ यात्रा शुरू ही नहीं हुई थी। अमरनाथ जी की तीर्थ यात्रा तो अब शुरू हुई है। उस समय तो बद्रीनाथ मंदिर के कपाट ही नहीं खुले थे। ये कहां तीर्थ यात्रा करने गये थे। (शोर)

---

* चेयर के आदेशानुसार रिकार्ड नहीं किया गया।

[श्री राम बिलास शर्मा]

इसीलिये इनको तीर्थ यात्रा का पुण्य लगा ही नहीं। सभापति जी, ये लोग प्रजातंत्र की बात करते हैं। (शोर एवं व्यवधान)

(इस समय श्री छत्तर सिंह चौहान व विपक्ष के अन्य कई माननीय सदस्य खड़े होकर बोलने लगे)

श्री सभापति : चौहान साहब, आप इस सदन के वरिष्ठ सदस्य हैं और बार-बार आपका खड़े होकर बोलना इस सदन की गरिमा के विपरीत है। मेरा आपसे निवेदन है कि आप उम्र में बुजुर्ग भी हैं और स्पीकर के पद पर भी आसीन रह चुके हैं। इसलिये इस तरीके से बार-बार खड़े होकर बोलना आपको शोभा नहीं देता। एक रचनात्मक ढंग से वार्तालाप सदन के अन्दर चली हुई है। किसी माननीय साथी का कोई सुझाव या कोई अच्छी बात है तो वह अपनी बात कहे। सदन के नेता उनकी बात नोट करने के लिये बैठे हुए हैं। इसलिए मैं सभी सदस्यों से अनुरोध करता हूं कि उन्हें बेकार की बातें यहां पर नहीं करनी चाहिएं। बेकार की बात सदन की गरिमा के विपरीत है। (शोर)

श्री राम बिलास शर्मा : सभापति जी, मैं कह रहा था कि एक बात तो काफी संघर्ष के बाद इन सभी साथियों ने मानी कि इनके दलित समाज के कुछ माननीय विधायक जो उस समय मंत्री थे, तीर्थ यात्रा पर गये हुए थे। इस बात को इन सब ने स्वीकार किया है। सभापति जी, बद्रीनाथ जी के कपाट तो उसके बाद खुले हैं। (शोर एवं व्यवधान) तीर्थ यात्रा का पुण्य तो इनको लगा ही नहीं। (शोर) ये बैं-मौसम की तीर्थ यात्रा करते हैं। (शोर) सभापति जी, इनको हमसे मुहुर्त कढ़वा कर तीर्थ यात्रा पर जाना चाहिए था। (शोर) पिछली बार 8 अगस्त को हम अमरनाथ जी की तीर्थ यात्रा पर गये थे और श्री ब्रिज मोहन सिंगला, शशी पाल मेहता जी भी साथ थे तो हमने वहां पर अनन्त अमरेश्वर जी के सामने यह संकल्प लिया था कि हरियाणा को किसी तरह से अगली रक्षा बन्धन तक तानाशाही से मुक्त कराना है और हमारा वह संकल्प सफल हुआ। वह तीर्थ यात्रा थी जिसका फल हमको मिला। चेयरमैन साहब, बोलने मात्र से ही बात नहीं बनती उनकी मर्दानगी इतनी थी कि उन्होंने मिनिस्टर्ज को डिसमिस किया, एम०एल०एज० के खिलाफ झूठे मुकदमें बनवाए। (शोर)

श्री सभापति : सभी माननीय सदस्यों से मेरा निवेदन है कि शर्मा जी तीर्थ यात्रा की बात कर रहे हैं इसलिए आप उनकी बात को ध्यान से सुने।

श्री अत्तर सिंह सैनी : चेयरमैन साहब, क्या तीर्थ यात्रा करने का हक केवल शर्मा जी को है किसी दूसरे आदमी को नहीं है। (शोर)

श्री बीरेन्द्र सिंह : चेयरमैन साहब, राम बिलास शर्मा जी पढ़े लिखे और बहुत सीनियर विधायक हैं इन्होंने कहा कि जब वे माननीय सदस्य तीर्थ यात्रा पर गए उस समय बद्रीनाथ मंदिर के कपाट नहीं खुले थे। He is misleading the House. This is a privilege issue. I want to bring a privilege motion against him.

श्री सभापति : शर्मा जी ने ऐसी कोई बात नहीं कही। (शोर)

मुख्य मंत्री (श्री ओम प्रकाश चौटाला) : चेयरमैन साहब, चौधरी बीरेन्द्र सिंह जी बहुत सीनियर लैजिस्लेटर हैं। इन्हें उस मन्दिर के कपाट खुलने के समय का तो पता है लेकिन इनको यह भी ज्ञान होना चाहिए कि वह तीर्थ यात्रा कब हुई थी। आप जैसे सीनियर लैजिस्लेटर यह कहें कि इनके खिलाफ ब्रीच ऑफ प्रिविलेज का मोशन लाया जाना चाहिए, यह ठीक नहीं है। मजाक में जो कुछ कहें, वह अलग बात है। (शोर)

श्री राम बिलास शर्मा : चेयरमैन साहब, मैं इस सदन में जो बात कहता हूं वह बात आने वाले

समय में सच साबित होती है। पिछले टैन्योर में मैंने इस विधान सभा में जो कुछ बोला था वह श्री रणदीप सिंह सुर्जेवाला, श्री अत्तर सिंह सैनी और श्री सतपाल सांगवान के हाथ में थमा दिया। मैंने जो बात कही वह यह कही कि जब हम अमरनाथ जी की तीर्थ यात्रा पर गए तो भगवान की कृपा से ऐसा संयोग हुआ कि हम उस मंदिर में अढ़ाई घंटे तक प्रार्थना करते रहे और हमने जो संकल्प किया था वह पूरा हो गया। इसलिए इसमें इनको तकलीफ की कोई बात नहीं होनी चाहिए। यह तो संकल्प है किसी को कावड़ लाने का है, किसी को जल चढ़ाने का है। कुछ आदमी ऐसे हैं जो भगवान को नहीं मानते हैं। इन्सान को नहीं मानते हैं। जो कर्मचारियों को बेइमान कहते हैं, व्यापारियों को चोर कहते हैं किसानों पर गोलियां चलवाते हैं जवानों की शहादत का विरोध करते हैं (शोर) मैंने किसी का नाम नहीं लिया है। चेयरमैन साहब, यह तो प्रभु की कृपा है कि कितना जल्दी किसको क्या फल मिलता है। ये आज की सरकार का मुद्दा उठा रहे हैं। सभी को पता है कि आज की सरकार की उमर अभी अढ़ाई दिन की है। यह सरकार 24 तारीख को सवा ग्यारह बजे 55 बहादुर विधायकों के सहयोग से बनी है। इसकी बधाई इन विधायकों को जाती है, प्रदेश की 36 बिरादरी को जाती है, आपको पता है कि दिल्ली की सरकार केवल एक वोट से सभी पार्टियों ने मिला कर गिरायी थी। सब पार्टियों ने मिलकर सरकार तो गिरा दी थी लेकिन नई सरकार बनाने का वे कोई विकल्प नहीं दे सके। जो साथी हमारे बारे में कह रहे थे कि ये कोई विकल्प नहीं दे सकते तो हमारे 55 विधायकों ने 48 घंटे के अन्दर सशक्त सरकार का विकल्प दिया। इस अढ़ाई दिन पहले बनी सरकार के बारे में चौधरी बीरेन्द्र सिंह जी, खुर्शीद अहमद जी व अत्तर सिंह सैनी आदि पूछ रहे हैं कि इसने क्या किया। (शोर एवं विघ्न) चौधरी खुर्शीद अहमद व बीरेन्द्र सिंह जी को तो देश की संसद में भी सदस्य रहने का सौभाग्य मिला है। आज इन्होंने कान्स्टीच्यूशन की धारा 163 का हवाला देकर कहा कि हरियाणा में कौंसिल ऑफ मिनिस्टर नहीं है। चौटाला साहब ने 24 तारीख को सवा ग्यारह बजे मुख्य मंत्री पद की शपथ ली तो माननीय राज्यपाल महोदय ने कहा कि आप कितना जल्दी हाउस में बहुमत ले पाएंगे तो चैटाला साहब ने कहा कि आप थोड़े से थोड़ा जो समय देंगे उसमें हम बहुमत साबित कर देंगे। 24 तारीख का और 27 तारीख का अंक बहुत अच्छा है क्योंकि 2 और 7 अंक को मिलाकर 9 पूर्ण अंक बनता है। यह एक अच्छा शुभ संकेत देता है। यह अढ़ाई दिन पहले बनी सरकार है, इससे ये हिसाब मांग रहे हैं। हम पिछली सरकार में 3 साल से कहते रहे कि कुछ काम करें, लेकिन कोई सुनने वाला नहीं था। मैं सदन की जानकारी के लिए बताना चाहूंगा कि कारगिल की लड़ाई में 4 जून तक 25 जवान हरियाणा के शहीद हो चुके थे। जो नौजवान वहां पर शहीद हो रहे थे उनको दूसरे प्रदेशों की सरकारें बड़ा सम्मान दे रही थी और उनके परिवार वालों को अधिक से अधिक आर्थिक सहायता दे रही थी। उत्तर प्रदेश की सरकार ने वहां पर शहीद होने वाले जवानों के परिवार वालों को दस-दस लाख रुपये की आर्थिक सहायता दी। इसी प्रकार से राजस्थान की सरकार, हिमाचल प्रदेश की सरकार ने काफी आर्थिक सहायता दी। इसी प्रकार से सरदार प्रकाश सिंह बादल ने भी काफी आर्थिक सहायता दी। उनके परिवारों के शोक में शामिल हुए। हमने राज्यपाल से अनुरोध किया कि हमारे शहीदों की चिताएं जल रही हैं लेकिन उनके परिवार वालों को सरकार की तरफ से कुछ इमदाद नहीं दी जा रही न ही उनको उचित सम्मान दिया जा रहा है। इसलिए आप कुछ करें। तब कहीं जाकर बड़ी मुश्किल से सरकार ने शहीद होने वाले जवानों के परिवारों को दो-दो लाख रुपये देने की घोषणा की। (विघ्न) मैं सदन की जानकारी के लिए बताना चाहूंगा कि महेन्द्रगढ़ के थाने में वहां के एक गांव के सरपंच को चौहान साहब ने खुद मौके पर जाकर गिरफ्तार करवाया। इन्होंने स्पीकर के ओहदे का अपमान किया। इसी प्रकार से ये महेन्द्रगढ़ जिले के एक-एक गांव में 10-15 मंत्री घूमते रहे। (शोर) चेयरमैन साहब इनके, मंत्री महेन्द्रगढ़ के गांव में ऐसे घूम रहे थे जैसे बर्तनों पर कली करने वाला घूमता है कि कलई करवा लो, बर्तन

[श्री राम बिलास शर्मा]

कली करवा लो बर्तनों की मोच निकलवा लो। चेयरमैन सर, चौधरी बीरेन्द्र सिंह के कारनामे भी मैं बता देता हूं। (विघ्न एवं शोर)

श्री सतपाल सांगवान : चेयरमैन सर, *****

श्री सभापति : सांगवान साहब मैंने आपसे पहले भी कहा है कि आपका नाम मेरे पास बोलने के लिए आया हुआ है और मैं आपको बुलवाऊंगा। आप इनकी बात को सुनिये और नोट कर लीजिए। जब आपको बोलने का समय दिया जाएगा आप अपने जवाब में बोल लीजिए। (विघ्न)

श्री राम बिलास शर्मा : चेयरमैन सर, 25 तारीख के बाद विडिक्टिव हो कर ये महेन्द्रगढ़ हल्के में गए। मैं महेन्द्रगढ़ हल्के का प्रतिनिधि हूं। वहां की 36 बिरादरियों का नुमाइंदा हूं। मैं वहां से चुन कर आया हूं। मैं एक बार नहीं चार बार वहां से चुनकर आया हूं। वह मैं जनता जनार्दन की कृपा से आया हूं। 10-10 मंत्री वहां पर घूमते रहे और जिस प्रकार गांव में कली करने वाले घूमते हुए कहते हैं कि बर्तन कली करवा लो, बर्तनों की मोच निकलवा लो उस प्रकार से गांव-गांव कहते रहे कि सड़क बनवा लो, गली बनवा लो लेकिन राम बिलास को वोट मत दो। (विघ्न एवं शोर)

श्री सतपाल सांगवान : चेयरमैन सर, *****

श्री सभापति : सांगवान साहब, आप अपनी सीट पर बैठें। मैंने आपसे पहले भी निवेदन किया है कि एक वरिष्ठ सदस्य अपनी बात कह रहे हैं आप उसे सुनिये। आपकी बारी भी आएगी। (विघ्न) आपको भी बुलवाएंगे। आप इनकी बात को नोट कर लें जब आपको बोलने का समय मिलेगा तब आप इन बातों का पूरा जवाब दे देना। (विघ्न एवं शोर) आप सभी अपनी सीटों पर बैठें। चेयर की परमिशन के बिना जो बोला जा रहा है वह रिकार्ड न किया जाए। (विघ्न एवं शोर)

श्री राम बिलास शर्मा : चेयरमैन सर, इस सरकार को बने हुए अभी अढ़ाई दिन ही हुए हैं। जिन मुद्दों को लेकर हम तीन साल तक लड़ते रहे, वे अढ़ाई दिन में हल हो गए। किसानों को राहत राशि के लिए हम कोशिश करते रहे लेकिन पिछली सरकार कुछ नहीं कर पाई। मुआवजे की बात कही थी वह नहीं हो पाई। कारगिल में शहीद हुए लोगों के परिवारों को राहत की बात की वह नहीं हो पाई। लेकिन इस सरकार के अढ़ाई दिन के कार्यकाल में अग्रोहा मैडिकल कॉलेज की बन्द ग्रान्ट बहाल हो गई। 10 लाख रूपये की राशि हर शहीद के परिवार को राहत देने की घोषणा की गई। चुनाव के कारण अभी चुनाव आचार संहिता का मामला सामने है चुनाव के बाद चुंगी समाप्ति के लिए काम होगा। यह अढ़ाई दिन पहले बनी सरकार की उपलब्धियां हैं। जिस तरह से 24 तारीख को सवा ग्यारह बजे ऐसा लगा जैसे हरियाणा प्रदेश में प्रजातन्त्र बहाल हो गया क्योंकि उस वक्त रूकी हुई बारिश बरसी। एक ओथ वह हुई थी जिस वक्त ओले पड़े थे और एक शपथ समारोह ऐसा हुआ जिस दिन रूकी हुई बारिश हुई और हरियाणा के खेतों को पानी मिला। राम जी ने उस दिन फुल बरसात की। चेयरमैन सर, मैं अपनी बात को संक्षिप्त करते हुए इतना ही कहना चाहूंगा कि हरियाणा की वर्तमान अढ़ाई दिन पहले बनी सरकार की जो उपलब्धियां हैं उसका श्रेय हरियाणा के लोगों को जाता है। बड़े-बड़े लोग बड़ी-बड़ी पार्टियां अपना खेल-खेल सकती हैं लेकिन हरियाणा के बहादुर विधायकों ने साबित कर दिया है कि वे हरियाणा प्रदेश को तानाशाही से मुक्त भी करवा सकते हैं और तानाशाही का दूसरा विकल्प भी खड़ा कर सकते हैं और

* चेयर के आदेशानुसार रिकार्ड नहीं किया गया।

एक सशक्त विकल्प खड़ा कर सकते है तथा इस वायदे के साथ इस सरकार ने कार्यभार सम्भाला है। चेयरमैन साहब, चौधरी ओम प्रकाश चौटाला जी ने जो इस सदन में विश्वास-मत रखा है मैं उसका पुरजोर समर्थन करता हूँ। (विघ्न) चेयरमैन साहब, मैं अपने इन सभी साथियों से भी कहूंगा कि ये अपनी आत्मा की आवाज सुनें और ओम प्रकाश चौटाला जी ने जो विश्वास-मत सदन में रखा है उसका समर्थन करें। आज हरियाणा की जनता की भी यही मांग है इसलिए आप भी इनका समर्थन करें। चेयरमैन साहब, मैं एक बार फिर विश्वासमत का पुरजोर समर्थन करता हूँ। (शोर एवं व्यवधान)

श्री जगन नाथ (बवानीखेड़ा, अनुसूचित जाति) : चेयरमैन साहब, यहां पर कहा गया है कि हम यहां पर चौधरी बंसी लाल के कारण बन कर आए हैं। अगर ऐसा है तो चार सितम्बर को चुनाव होंगे उस वक्त सांगवान जी, लाला जी और सोमवीर जी आप देख लेना कौन किस की वजह से जीत कर आता है। यह तो आपको जनता दिखा देगी। मैं आपको बंसी लाल के बारे में बताता हूँ। चेयरमैन साहब, ज्वायंट पंजाब की बात है उस समय कौंसिल हुआ करती थी। उस वक्त चौधरी बंसी लाल को कांग्रेस की तरफ से एम०एल०सी० का टिकट मिला और यह हार गया। ये 1975 में देश के रक्षा मंत्री थे, उस वक्त इन्होंने क्या किया यह सारी दुनिया जानती है। (विघ्न)

श्री सभापति : आप सब बैठ जाएं जगन नाथ जी को अपनी बात कहने दें। (विघ्न) चौहान साहब, आप बैठ जाएं।

श्री जगन नाथ : चेयरमैन साहब, बंसी लाल 1977 के अन्दर श्रीमती चन्द्रावती से पौने दो लाख वोट से हारा, जिनको उन्होंने अपने मंत्री मण्डल से डिसमिस किया था। 1987 के अन्दर ये फिर हारे। मैंने तो पहले भी कहा था कि जब यह पावर में होता है तो यह जीत नहीं सकता। (शोर एवं व्यवधान)

श्री सभापति : चौहान साहब, आप बैठ जाएं, आपको जब समय दिया जाएगा तो आप उस वक्त अपनी बात कह लेना।

श्री ओम प्रकाश चौटाला : चेयरमैन साहब, दो तीन साथियों ने इस बात की आपत्ति की कि चौधरी बंसी लाल सदन में नहीं हैं इसलिए उनका जिक्र नहीं किया जाए। मैं इनको यह बताना चाहूंगा कि जिक्र उसका नहीं होता है जो अलग संसार में चला जाता है। (हंसी) वे इस सदन के सदस्य हैं। चौधरी बीरेन्द्र सिंह जी आप ही बताएं कि क्या उनका जिक्र करना गलत है ?

श्री बीरेन्द्र सिंह : नहीं जी। (शोर एवं व्यवधान)

श्री सभापति : सोमवीर जी और सांगवान जी, आप अपनी सीटों पर बैठ जाएं।

श्री सतपाल सांगवान : वे इस समय हाउस में उपस्थित नहीं हैं, इसलिए ये उनका नाम नहीं ले सकते।

श्री जगन नाथ : चेयरमैन साहब, मैं नाम नहीं लूंगा लेकिन अब से पहले जो मुख्य मंत्री था उनका नाम तो मैं ले सकता हूं। (शोर एवं व्यवधान)

श्री सतपाल सांगवान : चेयरमैन साहब, आप मेरी बात तो सुनिये।

श्री सभापति : सांगवान साहब, आप बैठें। आप बार-बार इस तरह से क्यों खड़े हो जाते हैं। यह टैलीफोन एक्सचेंज नहीं है बल्कि यह विधान सभा है। (शोर एवं व्यवधान)

श्री सतपाल सांगवान : चेयरमैन साहब, *****

श्री सभापति : अब ये जो भी बोल रहे हैं वह रिकार्ड न किया जाए। जगन नाथ जी आप अपनी बात पूरी करिए।

श्री जगन नाथ : सर, चौधरी बीरेन्द्र सिंह और कांग्रेस पार्टी के दूसरे भाई भी आज महसूस करते हैं कि चौधरी बंसी लाल जी के कारण ही हमारे से धोखा हुआ है। मैं इनको बताना चाहता हूं कि इन्होंने धोखा आज ही नहीं दिया बल्कि 1967, 1968 एवं 1969 में भी इन्होंने पं० भगवत दयाल के साथ धोखा किया था।

श्री सतपाल सांगवान : चेयरमैन सर, *****

श्री सभापति : ये बिना इजाजत के बोल रहे हैं इसलिए ये जो भी बोल रहे हैं वह रिकार्ड न किया जाए। सांगवान जी, आप बैठें।

श्री जगन नाथ : चेयरमैन साहब, चौधरी रिजक राम को ये अपना राजनैतिक गुरू बाप कहा करते थे लेकिन उनके साथ भी धोखा हुआ। इसी तरह से चौधरी देवी लाल जी के साथ भी इन्होंने धोखा किया था। जिस आदमी ने धोखा देने में कभी चूक नहीं की तो वह अब भी धोखा ही देगा।

श्री सोमवीर सिंह : आपने तो सबको धोखा दिया है। (शोर एवं व्यवधान)

श्री सभापति : सांगवान साहब, आप बैठें। (शोर) सिंगला साहब, आप भी बिना किसी बात के खड़े न हों। (शोर एवं व्यवधान)

श्री जगन नाथ : चौहान साहब, आप जिस बहादुर आदमी की बात कर रहे थे उसने रिवासा कांड में हमारी बार-बार जेल करायी। हथकड़ी लगवायी। (शोर एवं व्यवधान)

श्री सभापति : सांगवान साहब, मैं आपको चेतावनी देता हूं। आप बैठ जाएं।

श्री सतपाल सांगवान : आप इससे ज्यादा कर भी क्या सकते हो ?

श्री सभापति : मैं तो इससे भी ज्यादा आपके साथ कर सकता हूं लेकिन मैं करना नहीं चाहता। क्या आप जानते हैं कि आप किनसे बात कर रहे हैं ? आप अपनी मर्यादा में रहकर बात करें। (शोर एव व्यवधान)

श्री जगन नाथ : रिवासा कांड में हमारा पुलिस रिमांड रहा। हम जेलों में रहे। एमरजैन्सी में भी हम जेलों में रहे लेकिन 1977 में जब जनता पार्टी की सरकार बनी और जब उसके बाद उनके सिटी थाना भिवानी में हथकड़ी लगी तो उनको बर्दाश्त नहीं हो सका और उनके पसीने आ गये। (शोर एवं व्यवधान)

Mr. Chairman : Mr. Satpal Sangwan Ji, please don't interrupt. Let him speak. (Noise & Interruptions).

श्री जगन नाथ : भिवानी सिटी थाने के अंदर उनको जब खड़ा किया था, उनका पजामा गीला हो रहा था। जो मैंने यह कहा था कि हमारे नेता चाहे हमें गोली मारें उस बारे कप्तान साहब कह रहे थे तो मैं उन्हें बताना चाहूंगा कि आप तो मिलिट्री में रहे हो। आपने फस्ट वर्ल्ड वार के बारे में पढ़ा होगा, सैकिण्ड वर्ल्ड वार के बारे में पढ़ा होगा, कारगिल की लड़ाई के बारे में भी सुना होगा। माओत्सतुंग ने कहा था- "Two steps forward, one step backward."

---

* चेयर के आदेशानुसार रिकार्ड नहीं किया गया।

लड़ाई की रणनीति के हिसाब से कभी आगे बढ़ना पड़ता है, कभी पीछे जाना पड़ता है। सर, उस दिन इन कांग्रेस वालों ने बंसी लाल जी को अपनी स्पोर्ट दे दी तो हमें अपनी रणनीति बदलनी पड़ी। चौटाला साहब की पार्टी वाले हमारे बारे में कहते हैं कि ये बहादुर विधायक हैं और विकास पार्टी वाले हमारे बारे में कहते हैं कि तुम उनके पैर पकड़ा करते थे। कुलुर्ग आदमी होने के कारण हम उनकी रिस्पैक्ट करते थे उनके पैर नहीं छूते थे बल्कि उनके पैर काटने में लग रहे थे। (हंसी) (शोर एवं विघ्न)

श्री सभापति : सांगवान साहब, मैं आपकी तरफ देख रहा हूं। आप मर्यादा में रह कर बात करें। आपने जो कहा है माइक पर बोलिये बैठे-बैठे बोलना आपकी सेहत के लिए अच्छा नहीं है आपका वजन भी बहुत ज्यादा है।

श्री सतपाल सांगवान : मैं चेयरपर्सन के थ्रू लीडर ऑफ दि हाउस से प्रार्थना करना चाहता हूं कि ये पैर खींचने में बहुत तेज हैं *****

श्री सभापति : जो कुछ सतपाल सांगवान जी कह रहे हैं उसे रिकार्ड न किया जाए। सांगवान साहब आप तो पढ़े लिखे आदमी हैं आप अपनी जबान से ऐसे शब्द मत निकालें। यहां सारे पत्रकार बैठे हैं, सभी अधिकारी बैठे हैं और हरियाणा की जनता बैठी है।

श्री सतपाल सांगवान : *****

श्री सभापति : यह जो सांगवान साहब कह रहे हैं उसे रिकार्ड न किया जाए। आप बैठिए।

श्री जगन नाथ : सर, मेरे पास यह कागज भेज दें मैं भी इस्तीफे पर दस्तखत कर देता हूं और इनसे भी इस्तीफे पर दस्तखत करवा लें। सांगवान भी असैम्बली से इस्तीफा दे दें और मैं भी दे देता हूं। लोक सभा के साथ चुनाव करा लो। (शोर एवं व्यवधान)

श्री सभापति : चौधरी जगन नाथ जी, आप अपनी बात पूरी कीजिए। (शोर एवं व्यवधान) सांगवान साहब, आप किसकी इजाजत से बोल रहे हैं। आपको बोलने से पहले चेयर से परमिशन लेनी चाहिए और चेयर को एड्रैस करना चाहिए। आज के दिन अगर कोई आपको बचा सकता है तो मैं ही आपको बचा सकता हूं। (विघ्न)

श्री सतपाल सांगवान : सभापति महोदय, मैं अपनी बात कहना चाहता हूं।

श्री सभापति : सांगवान जी आप बैठिये, जगन नाथ जी आप बोलिये, पहले आप अपनी बात पूरी कीजिए।

श्री जगन नाथ : सभापति महोदय, मैं 1962 में पहली बार एम०एल०ए० बनकर सदन में आया था उस समय मेरी उम्र 25 साल की थी। उस समय मेरी औरत नौकरी करती थी, आज भी नौकरी करती है, दूसरे विधायकों के घर में क्रीम पाऊडर का जितना खर्चा होता है उसका खर्च तो मेरे पूरे घर का भी नहीं है। मैंने दो महीने पहले हिन्दुस्तान के अखबारों में यह स्टेटमेंट दी थी कि हमारे कुछ भाई खासकर हमारी जाति के गरीब लोग, एस०सी० और बी०सी० के लोगों को उस समय की सरकार के कुछ मंत्री, मैं चौधरी कंवल सिंह जी का नाम नहीं लूंगा, उन भाइयों को तीर्थयात्रा पर ले गये थे परन्तु उन हमारे भाइयों के घर वालों को, उनके पी०ए० तथा प्राईवेट सैक्रेटरी तक को उनके बारे में पता नहीं था कि वे

* चेयर के आदेशानुसार रिकार्ड नहीं किया गया।

[श्री जगन नाथ]

कहां पर हैं। यहां तक कि सैक्रिटेरिएट में भी पता नहीं था और न ही मुख्य मंत्री जी को पता था कि ये साथी कहां पर गये हैं। वे मंत्री लोग सिर्फ गरीब मंत्रियों को ही अपने साथ ले गये थे।

वैयक्तिक स्पष्टीकरण

श्री कंवल सिंह द्वारा-

श्री कंवल सिंह : सभापति महोदय मेरा पर्सनल एक्सप्लेनेशन है पहले जगदीश भाई ने ठीक ही कहा है कि हम 5-7 आदमी घूमने के लिए गये थे जिनमें 2-3 हरिजन भाई भी थे। एक हरिजन भाई तो तीन दिन पहले मेरे घर में रात को 9 बजे आ गया कि चौधरी साहब मैं आपके पास ही ठहरूंगा। वह दो दिन तक मेरे घर पर रहा। मैंने बिजनैस एडवाइजरी कमेटी की मीटिंग में जाना था। मैं तो अपने दफ्तर में जाने लगा तो मैंने उस हरिजन भाई से भी कहा कि चलो मेरे दफ्तर में चलो तो उसने कहा कि नहीं मैं तो आपके घर पर ही टी०वी० देखूंगा। जब मैं वापिस घर आया तो वह भाई मेरे घर पर नहीं था। उसी दौरान चौधरी जगन नाथ का फोन मेरे पास आया कि फलां आदमी कहां पर है तो मैंने कहा कि आप अपनी गोद में लिए तो बैठे हैं और मेरे से पूछ रहे हैं। यह तो इन लोगों का चरित्र है। आज के जमाने में कोई किसी के साथ जबरदस्ती नहीं कर सकता ।

श्री सभापति : कंवल सिंह जी, चौधरी जगन नाथ जी को तो यह तकलीफ है कि आप बद्रीनाथ तो उन साथियों को अपने साथ ले गये लेकिन जब आप इंगलैंड और मानचेस्टर गये तब उन हरिजन भाइयों को अपने साथ नहीं ले गये। अगर तब भी ले जाते तो अच्छा होता।

श्री कंवल सिंह : सभापति महोदय, यह काम तो ये भी कर सकते थे।

श्री सभापति : जब आप विदेश गये तब भी उन हरिजन भाइयों को ले जाते तो अच्छा होता।

श्री कंवल सिंह : सभापति जी, मैं विदेश तो अकेले ही गया था।

श्री सभापति : फिर आप बद्रीनाथ अकेले क्यों नहीं गए ?

श्री जगन नाथ : सभापति महोदय, मैं श्री कंवल सिंह जी पर आरोप नहीं लगा रहा हूं लेकिन मैं तो यह कहना चाहता हूं कि क्या इनको बद्रीनाथ ले जाने के लिए धानक व चमार ही मिले थे। ब्राह्मण व जाट कहां चले गए थे ? (शोर एवं विघ्न)

श्री कंवल सिंह : सभापति महोदय, ये तो सब को धक्का मारते फिर रहे हैं। (शोर)

विश्वास-मत (पुनरारम्भ)

श्री जगन नाथ : सभापति महोदय, पिछली सरकार में मंत्री रहते हुए भी मैंने बार-बार बयान दिया कि जितने भी हरियाणा से सम्बन्धित एस०सी० व बी०सी० के अधिकारीगण एवं कर्मचारीगण हैं, उनकी ए०सी०आर० खराब कर दी गई है, उनको सस्पैंड कर दिया गया है। उनके साथ बेरहमी से व्यवहार किया गया है। (शोर एवं विघ्न)

प्रो० छत्तर सिंह चौहान : सभापति महोदय, मैं आपको कई दफा बोलने के लिए प्रार्थना कर चुका हूं।

श्री सभापति : आप मेरे से बात कीजिए। (शोर) यहां पूरा सदन बैठा है। मैं अपनी तरफ से पूर्ण रूप से अपनी संवैधानिक जिम्मेवारी निभा रहा हूं तथा जितना भी मुझ से बन पा रहा है मैं सभी माननीय सदस्यों को बोलने के लिए समय दे रहा हूं। चौहान साहब, इधर से मैं खड़ा हूं और उधर आप खड़े हो गए हैं यह ठीक बात नहीं है। (शोर)

श्री जगन नाथ : सभापति महोदय, चौधरी बंसी लाल जी यह कहा करते थे कि 1996 के चुनावों में एस०सी० व बी०सी० के लोगों के कारण उन्हें सबसे ज्यादा फायदा हुआ है, परिणामस्वरूप उनकी सरकार बनी है। लेकिन फिर भी सबसे ज्यादा हासमैंट इन्हीं लोगों की हुई है। देहात के अंदर अधिकारीगण एवं कर्मचारीगण के साथ जो व्यवहार हुआ, वह सभी जानते हैं। उनकी ए०सी०आर० खराब की गई तथा उनको सस्पैंड किया गया। अगर वे हाई-कोर्ट से बहाल हो गए तो सरकार ने उनके खिलाफ सुप्रीम कोर्ट में अपील कर दी। गोदारा साहब ने खुद कहा, बार-बार आपके सामने भी कहा कि अधिकारीगण, डी०सी० व एस०पी० उनकी नहीं मानते हैं। सिंगला साहब ने कहा कि डी०सी० व एस०पी० की तो बात छोड़ो, उनकी तो थानेदार भी नहीं मानता है। चौधरी बंसी लाल जी ने गोदारा साहब को कहा कि इस बारे में इन को बताओ। इस पर गोदारा साहब ने कहा कि इनकी क्या, वे तो मेरी ही नहीं मानते हैं। उस समय इन्होंने साफ कहा था कि थानों में पैसे इकट्ठे होते हैं तथा ऊपर तक जाते हैं। ऊपर का मतलब पता नहीं कि मंगल ग्रह पर जाते हैं या कहीं और जाते हैं। सभापति महोदय, गरीब से गरीब जो एम०एल०ए० था, ये उसको लेकर गए थे, जो मंत्री थे, उनको भी ये लेकर गए थे। सभापति महोदय, इसी संदर्भ में मैं एक बात और कहना चाहता हूं कि जब ये मंत्रिगण अपने कार्यालयों में वापिस आ गए तो उनके कार्यालयों में डी०एस०पी० अथवा इंस्पैक्टर खुद टैलिफोन सुना करते थे, उनकी गाड़ियों में खुद चला करते थे। इस प्रकार के हालात पैदा कर दिए गए थे, वे सब गोदारा साहब जानते हैं, चौहान साहब भी जानते हैं। (शोर एवं विघ्न)

प्रो० छत्तर सिंह चौहान : सभापति महोदय, मैं नहीं जानता हूं। (विघ्न) मैं पर्सनल एक्सप्लेनेशन पर बोलने के लिए आप से कई बार प्रार्थना कर चुका हूं लेकिन आप मुझे समय ही नहीं दे रहे हैं।

श्री सभापति : यदि मैं प्रसन्न हूंगा तो आपको जरूर समय दे दूंगा।

श्री मनी राम गोदारा : सभापति महोदय, मैं पर्सनल एक्सप्लेनेशन पर बोलना चाहता हूं।

श्री सभापति : लेकिन आपके बारे में तो इन्होंने कोई पर्सनल एक्सप्लेनेशन वाली बात कही ही नहीं है।

श्री मनी राम गोदारा : सभापति महोदय, इन्होंने मेरा नाम लिया है।

श्री सभापति : ठीक है, पहले इन को अपनी बात खत्म कर लेने दीजिए।

श्री जगन नाथ : सभापति जी, गोदारा साहब तो अब पता नहीं क्या कहेंगे लेकिन इन्होंने यह बात सब के बीच में कही थी। इसके साथ ही साथ मैं चौटाला साहब से यह निवेदन करना चाहूंगा कि पिछली सरकार ने गरीब आदमियों को बहुत सताया है, जिन एस०सी० व बी०सी० अधिकारीगण व कर्मचारीगण को सस्पैंड किया गया तथा जिनकी ए०सी०आर० खराब की गई, उनके वैल्फेयर की तरफ विशेष रूप से ध्यान दिया जाए।

वैयक्तिक स्पष्टीकरण

श्री मनी राम गोदारा द्वारा-

श्री मनी राम गोदारा : सभापति महोदय, मेरा पर्सनल एक्सप्लेनेशन है सबसे पहली बात तो यह है कि हमने सीक्रेसी की कसम खाई थी कि कैबिनेट की मीटिंग में क्या बातें होती हैं और क्या नहीं होती हैं वे लीक आउट न की जाएं। (शोर एवं विघ्न)

श्री जगन नाथ : कैबिनेट मीटिंग में इस बारे में हमारी कोई बात नहीं थी। यह तो पार्टी मीटिंग की बात थी। (शोर)

श्री मनी राम गोदारा : चेयरमैन साहब, मेरा कहने का मतलब यह है कि कुछ बातें जरूर हुई हैं, मुझे शिकायत हो सकती है, इनको भी शिकायत हो सकती है। ये उस कैबिनेट के सदस्य थे और और आप भी उसी कैबिनेट के सदस्य थे। मैंने पहले भी कहा है कि यह जो कुछ भी हुआ है मुझे उस पर शर्म आती है, इनको चाहे इसमें फख्र हो।

श्री सभापति : मेरा आपसे निवेदन है कि अब न तो आप कैबिनेट के सदस्य हैं और न ही वे कैबिनेट के सदस्य हैं। सदन के अन्दर कोई भी माननीय सदस्य सरकार से सम्बन्धित कोई भी बात कह सकता है।

श्री मनी राम गोदारा : मेरे सामने कोई बात नहीं हुई ।

श्री कंवल सिंह : मेरा प्वायंट ऑफ आर्डर है *****

श्री सभापति : यह प्वायंट ऑफ आर्डर नहीं है, इसे रिकार्ड न किया जाए।

विश्वास-मत (पुनरारम्भ)

श्री बीरेन्द्र सिंह (उचाना कलां) : चेयरमैन साहब, मुख्यमंत्री जी ने जो विश्वास प्रस्ताव सदन में रखा है मैं उसके विरोध में बोलने के लिए खड़ा हुआ हूं। मुख्यमंत्री जी ने भी जिक्र किया और बाद में राम बिलास शर्मा जी ने भी कहा कि गवर्नर साहब ने मुख्यमंत्री को कोई तारीख निश्चित करके नहीं दी थी कि आप इस तारीख को सदन का विश्वास प्राप्त करें। और न ही उन्होंने कोई अवधि निर्धारित की थी कि आप इस तारीख तक सदन में विश्वास प्राप्त करें। हमने जो संवैधानिक सवाल उठाया उसमें सीधी बात है कि अकेले मुख्यमंत्री शपथ लेते हैं उनके साथ दूसरे मंत्री शपथ नहीं लेते तो वह कौंसिल ऑफ मिनिस्टर्स नहीं है। संवैधानिक स्थिति यह है कि विश्वास मत प्राप्त करने के लिए कौंसिल ऑफ मिनिस्टर्स का होना जरूरी है। अगर चौटाला साहब 27 तारीख की बजाय 7 तारीख को भी कहते कि मैं विश्वास प्राप्त करूंगा तो वे कोई सीमा में नहीं बांधे गए। इतने समय में वह कौंसिल ऑफ मिनिस्टर्स बनाकर हाउस का विश्वास मत ले सकते थे। ऐसी परिस्थिति में कार्यकारी अध्यक्ष महोदय ने अपनी रूलिंग दी कि मैं चाहता हूं कि सदन के नेता विश्वास प्रस्ताव लेकर आएं।

श्री ओम प्रकाश चौटाला : चौधरी बीरेन्द्र सिंह को इस बात का ध्यान होना चाहिए कि गवर्नर महोदय का लिखित रूप से मेरे पास लैटर है जिसमें मुझे यह कहा गया है कि आपको 27 तारीख को विश्वास मत अर्जित करना है।

---

* चेयर के आदेशानुसार रिकार्ड नहीं किया गया।

श्री बीरेन्द्र सिंह : अखबारों में इसका कहीं कोई जिक्र नहीं था कि गवर्नर साहब ने इनको विश्वास मत प्राप्त करने के लिए कोई सीमा बांधी हो।

श्री ओम प्रकाश चौटाला : अखबारों में आया है।

श्री सभापति : यह कायदे कानून का काम है, यहां जो भी काम होते हैं कायदे कानून को ध्यान में रखकर होते हैं।

श्री बीरेन्द्र सिंह : सभापति महोदय, आप अगर इस कुर्सी से उतर कर यहां हाउस में बैठें तब मैं आपको बताऊं कि आप कितना कायदे-कानून का पालन करते हैं। आप हमारी बात सुनें और हमारी बात पर आप अपनी बात कहें फिर हम कुछ कहें तब हाउस की मर्यादा है। इसलिए आपमें हिम्मत है तो आप अपनी सीट पर आएं तब मैं आपको बताऊंगा।

श्री सभापति : चौधरी बीरेन्द्र सिंह जी, मेरी हिम्मत तो बहुत है। (शोर) आपको मेरी हिम्मत में कोई शक नजर आ रहा है।

श्री बीरेन्द्र सिंह : आज अगर हरियाणा विकास पार्टी (डैमोक्रेटिक) को मुख्य मंत्री बनने से वंचित किया गया है तो आपकी वजह से ही किया गया है। वैसे मुख्यमंत्री बनने का हक तो उनका ही बनता था। लेकिन आप स्पीकर की चेयर पर बैठे हैं, इसलिए आप चुप रहिए, मैं आपको कुछ नहीं कह सकता। मैं चेयर को एड्रैस कर रहा हूं न कि करण सिंह दलाल को।

श्री सभापति : यह बात करने का कोई मुद्दा नहीं है। (शोर) आपको यह किसने कहा कि हरियाणा विकास पार्टी (डैमोक्रेटिक) अपने किसी सदस्य को मुख्यमंत्री बनाना चाहती थी। आप इसके बीच में कहां से आ गए।

श्री बीरेन्द्र सिंह : मैं इस बात को हाउस में प्रूव करके बताऊंगा बशर्ते आप अपनी सीट पर आएं। (शोर एवं व्यवधान)

श्री सभापति : चौधरी बीरेन्द्र सिंह जी आप कह रहे हैं कि हरियाणा विकास पार्टी (लोकतांत्रिक) का कोई सदस्य मुख्यमंत्री बनना चाहता था ऐसे काम तो आपकी पार्टी में होते हैं कि मुख्यमंत्री बनना किसी ने होता है और बन कोई और जाता है।

श्री जसवंत सिंह : सभापति जी, मेरा प्वाइंट ऑफ आर्डर है। मैं भी हरियाणा विकास पार्टी लोकतांत्रिक का सदस्य हूं। मैं मेरे माननीय साथी चौधरी बीरेन्द्र सिंह जी को कहना चाहूंगा कि इन्होंने जो कुछ कहा है कि हमारी पार्टी का मुख्यमंत्री बनना चाहता था यह बात बिल्कुल गलत है, निराधार है। (शोर एवं व्यवधान) सभापति जी, हमारी पार्टी ने यूनानीमस मिलकर यह फैसला किया था कि हममें से मुख्यमंत्री कोई भी नहीं बनेगा और हम चौधरी ओम प्रकाश चौटाला जी को समर्थन देंगे। (शोर एवं व्यवधान)

श्री सभापति : चौधरी बीरेन्द्र सिंह जी आप बोलिये।

श्री बीरेन्द्र सिंह : सभापति जी, पिछले 15-20 दिन का मेरा जो तजुर्बा रहा है उसके हिसाब से जो यह नई पार्टी बनी है इसमें और इनकी पुरानी पार्टी में कोई फर्क नहीं है। फर्क सिर्फ इतना है कि इनमें से एक सत्ता में है और दूसरी विपक्ष में है। (शोर एवं व्यवधान)

श्री ओम प्रकाश चौटाला : सभापति जी, मैं चौधरी बीरेन्द्र सिंह जी से यह पूछना चाहता हूं कि अगर इनको इधर और उधर वाले भाईयों का इतना ज्ञान था तो ये 25 तारीख को कहां गये थे, उस दिन इनकी पार्टी ने इनको समर्थन क्यों दिया ?

श्री बीरेन्द्र सिंह : सभापति जी, जो आदमी जितनी ज्यादा खुशामद की हद पार करता है वही धोखा देता है। सभापति जी, चौटाला जी को जो 22 आदमियों की पार्टी है इसके सभी सदस्यों ने तीन साल तक एक ईमानदार सिपाही की तरह चौटाला साहब का साथ दिया है। मैंने इनको चौटाला साहब के नेतृत्व में काम करते हुए देखा है ये चौटाला साहब की भावनाओं के साथ जुड़े हुए हैं। वरना ये भी वही काम कर सकते थे जो दूसरे भाईयों ने किया। मैं यह बात इसलिए कह रहा हूं क्योंकि आज मुझे डर है कि कहीं मेरे इन भाईयों का हक न मारा जाये।

डॉ० कमला वर्मा : सभापति जी, मेरा प्वायंट आफ आर्डर है। मैं कांग्रेस के इन भाईयों के बारे में कहना चाहती हूं कि आज ये किस मुंह से बात कर रहे हैं। इन्होंने चौधरी बंसी लाल जी की सरकार को समर्थन दिया और वापिस ले लिया। इन्होंने समर्थन वापिस लेकर अपने आपको एक्सपोज किया कि ये किसी के भी मित्र नहीं हैं। मुझे तो पहले ही पता था कि ये समर्थन देकर जल्दी ही समर्थन वापिस ले लेंगे जो सदा से इनकी नीति रही है। सभापति जी, मेरे कांग्रेस के भाईयों ने चौधरी चरण सिंह जी और चन्द्रशेखर जी को समर्थन की सीढ़ियां देकर ऊपर चढ़ाया और फिर सीढ़ी खींच ली। इन्होंने श्री देवगौड़ा, श्री इन्द्र कुमार गुजराल जी के साथ भी ऐसा ही किया और आज ये हमें रूल्ज सिखा रहे हैं। सभापति जी, जो ये सांप्रदायिक और जातिवाद ताकतों को दूर रखने की बात करते थे वह भी सामने आ गई है। सभापति जी, उसको ये रोक नहीं सके। आज इनकी पीड़ा सही है, आज ये विधान सभा में बोलें तो किस बात के ऊपर बोलें। मैं तो कहना चाहूंगी कि इन्हें बोलते वक्त थोड़ा अपनी बातों पर ध्यान देना चाहिए।

18.00 बजे

श्री सभापति : चौधरी बीरेन्द्र सिंह जी, आप यह बताइए कि क्या आप भी अपने आप को कांग्रेसी कहते हैं ?

श्री बीरेन्द्र सिंह : सभापति जी, आप इस कुर्सी से उतर कर नीचे आकर बैठिए फिर मैं आपको इस बात का जवाब दूंगा। (शोर) आप सभापति की कुर्सी पर बैठे हैं इसलिये मैं सदन की गरिमा के विपरीत कुछ भी नहीं कहना चाहूंगा। (शोर)

श्री सभापति : बीरेन्द्र सिंह जी, आप यह बताइए कि क्या आपने कांग्रेस नहीं छोड़ी थी और फिर कांग्रेस में वापिस आए ?

श्री बीरेन्द्र सिंह : मैंने कांग्रेस कभी नहीं छोड़ी थी। कांग्रेस से मुझे निकाला गया था।

श्री सभापति : बीरेन्द्र सिंह जी, क्या आपको यह पता नहीं है कि जो हरियाणा विकास पार्टी (डैमेक्रेटिक) के सदस्य यहां पर हैं इनको हरियाणा विकास पार्टी से निकाला गया है ? क्या इन्होंने अपने आप पार्टी तोड़ ली है ? (शोर)

Sh. Birender Singh : Sir, if you want to sit on this Chair and if you want to become the party then I will have to say certain thing. Better you come down and face the realities. Don't pass commentary sitting on the Chair. This is not fair. (interruption) बहन कमला वर्मा जो नैतिकता की बात कह रही थीं इनकी नैतिकता का तो ये जनाजा निकाल चुके हैं। इनके दो दिन पहले 11 में से 9 आदमी एक तरफ तो बंसी लाल जी को समर्थन देते हैं और दो दिन के बाद इन 9 सदस्यों में से 8 सदस्य यह कहते हैं कि हमारा बंसी लाल जी से कोई लेना-देना नहीं है। ये क्या नैतिकता की बात करते हैं जिसमें यह खुद भी शामिल थीं। ये हमारी बात किस मुंह से करते हैं ? (शोर)

श्री कृष्ण पाल गुर्जर : सभापति जी, चौ० बीरेन्द्र सिंह सहित इनके 13 सदस्यों में से 9 सदस्य सोनिया जी से लास्ट टाइम तक यह कहते रहे कि हम चौधरी बंसी लाल को समर्थन नहीं देंगे। सोनिया

जी और प्रणव मुखर्जी को लिखकर दे आये कि हम समर्थन नहीं देंगे लेकिन मजबूरी में इनको समर्थन देना पड़ा। (शोर)

श्री बन्ता राम वाल्मीकि : सर, मेरा एक प्वाइंट ऑफ आर्डर है।

श्री सभापति : श्री बन्ता राम जी, आप अपनी बात कहिए।

श्री बन्ता राम वाल्मीकि : सभापति जी, प्यार, नफरत, खुशबू छुपाये से भी नहीं छुपती। कांग्रेस वाले साथियों के पेट में मरोड़ा है। इनकी तो नैगेटिव एप्रोच रहती है और यह बात इनके बस की नहीं है। सभापति जी, काफी लम्बे समय से हरिजनों और दलितों की जो बात चल रही थी। (शोर) उसमें इन्होंने जगन नाथ जी को काफी उलझाने की कोशिश की लेकिन वे इनकी बातों में नहीं आये क्योंकि वे बड़े विद्वान व्यक्ति हैं। (शोर) सभापति जी, आप इनको बिठाइए। इनको मेरी बात सुननी पड़ेगी। हमारी हरिजन जाति का एक वरिष्ठ आई०ए०एस० अधिकारी एम०पी० बिधलान सिरसा में लगा हुआ था और डबवाली में जब एक फंक्शन हुआ था उसमें अकेले इस एम०पी० बिधलान का दोष नहीं था लेकिन उसको आज घर बिठा दिया गया। (शोर) इसके अलावा रवि आजाद, डी०एस०पी० के साथ भी इन्होंने इसी तरह का व्यवहार किया जबकि उसके साथ के अब डी०आई०जी० बन चुके हैं। (शोर) सभापति जी, मेरी बात को सुनने की इनमें हिम्मत नहीं है। पूर्व सरकार हमेशा हरिजनों और बैकवर्डों की विरोधी रही है। (शोर) सभापति जी, इनको बिठाइए। मेरी आपसे यह गुजारिश है। प्रैस देख रही है कि सम्मानित सदस्य यहां पर बैठे हुए हैं। केवल ये 4 आदमी सदन में जीत कर नहीं आये बाकी के 80 सदस्यों को भी बोलने का अधिकार है। इनकी सुनने की क्षमता नहीं है। (शोर) मैं चौधरी ओम प्रकाश चौटाला की सरकार बनाने पर बधाई देता हूं। (शोर)

श्री सभापति : धीरपाल जी, आपको जो कहना है वह कहें उसके बाद चौधरी बीरेन्द्र सिंह जी बोलेंगे।

श्री धीरपाल सिंह : चेयरमैन साहब, प्रैस के साथी प्रैस गैलरी में बैठे हैं और दर्शक दीर्घा में पब्लिक बैठी हुई है। (शोर) चेयरमैन साहब, सतपाल सांगवान जी आपकी नरमाई का नाजायज फायदा उठा रहे हैं। चेयरमैन साहब, आपने देखा होगा पिछले तीन साल के दौरान श्री छत्तर सिंह चौहान स्पीकर की कुर्सी पर विराजमान रहे। जब हम विरोधी पक्ष के सदस्य किसी एक बात को दोबारा रिपीट करते तो उस समय ये हमें बार बार नेम कर देते थे। चेयरमैन साहब, आप देख रहे हैं कि सतपाल सांगवान जी दो बजे से ले कर इस समय 6.00 बज गए हर बात को ओवर टेक कर रहे हैं। श्री छत्तर सिंह चौहान ने अपने समय में हमारे साथ बार बार हाउस में ज्यादती की इसलिए इनको खड़ा होने पर शर्म आनी चाहिए। इनको अपने बीते हुए कल को याद करना चाहिए। इन्होंने अपने समय में विरोधी पक्ष को बोलने के लिए कितना समय दिया था उस बात को ध्यान में रख कर इनको शर्म आनी चाहिए। (शोर)

श्री सतपाल सांगवान : चेयरमैन साहब, मेरा प्वाइंट ऑफ आर्डर है। माननीय सदस्य ने कहा कि इनको शर्म आनी चाहिए। यह अनपार्लियामैंटरी शब्द है इसलिए यह विदड्रा होना चाहिए। (शोर)

श्री सभापति : सांगवान साहब, आप बैठ जाएं। (शोर) सांगवान साहब, जब तक आप बैठेंगे नहीं तब तक मैं आपकी कोई बात नहीं सुनूंगा। आप बैठ जाएं।

श्री सतपाल सांगवान : चेयरमैन साहब, शर्म आनी चाहिए शब्द विदड्रा होना चाहिए।

श्री बीरेन्द्र सिंह : चेयरमैन साहब, चौधरी बंसी लाल जी की सरकार गिरने की शुरूआत और श्री ओम प्रकाश चौटाला के मुख्य मंत्री बनने की शुरूआत उस दिन शुरू हुई जब श्री ओम प्रकाश चौटाला ने

[श्री बीरेन्द्र सिंह]

लोकसभा के अन्दर श्री अटल बिहारी वाजपेयी की सरकार से समर्थन वापिस ले लिया था। इन्होंने उनकी सरकार से यह कह कर समर्थन वापिस लिया था कि श्री अटल बिहारी वाजपेयी की सरकार किसान विरोधी सरकार है। इन्होंने यह कहा था कि इस सरकार ने यूरिया खाद की कीमतें बढ़ाई हैं चावल और दूसरी चीजों की कीमतें बढ़ाई हैं। सस्ती चीजें जो पब्लिक डिस्ट्रीब्यूशन सिस्टम के माध्यम से बेची जाती हैं उनकी 40 परसैंट से 70 परसैंट तक कीमतें बढ़ाई इसलिए ऐसी सरकार को इंडियन नैशनल लोकदल कभी बर्दाश्त नहीं करेगा और समर्थन के बारे में पुनर्विचार करेगा। अब पता नहीं इन्होंने किन कारणों से उनको समर्थन दे दिया। कारण बताया गया कि कांग्रेस पार्टी सरकार बनाना चाहती थी इसलिए इन्होंने श्री अटल बिहारी वाजपेयी को वापिस स्पोर्ट दे दी। मैं एक बात कहना चाहता हूं कि आप कांग्रेस विरोधी तो हो सकते हैं लेकिन किसान विरोधी और गरीब विरोधी कैसे हो गए ? एक तरफ तो आप गरीबों की और किसानों की हिमायत करते हैं और दूसरी तरफ आप अटल बिहारी वाजपेयी की सरकार को वापिस स्पोर्ट देने की बात करते हैं जबकि उस सरकार ने कीमतें बढ़ाई। कांग्रेस की आड़ ले कर आप यह कहें कि कहीं कांग्रेस पार्टी सरकार न बना ले इसलिए आपने अटल बिहारी वाजपेयी की सरकार को समर्थन दिया तो क्या यह नैतिकता के विरुद्ध राजनीति करने की बात नहीं है। सिलसिला शुरू हुआ जब जय ललिता के 18 एम०पीज० ने अटल बिहारी वाजपेयी की सरकार से समर्थन वापिस ले लिया और उनकी सरकार गिर गई। दिल्ली की सरकार गिरने के बाद भारतीय जनता पार्टी ने सुनिश्चित रणनीति के तहत बंसी लाल जी की सरकार से समर्थन वापिस लेने की बात कही। फिर इनका रेज्योल्यूशन पास हुआ और उसके बाद वह विदड्रा हुआ। जब कारगिल के अन्दर हरियाणा के हजारों जवान देश की रक्षा कर रहे थे उस दौरान दर्जनों जवान हरियाणा के शहीद हो चुके थे तो ऐसे मौके पर बी०जे०पी० को समर्थन वापस नहीं लेना चाहिए था। देश के ठीक हालत होते तो वे कुछ भी कर सकते थे। बंसी लाल जी का जो विश्वास प्रस्ताव था उसमें हमने यह कहा था कि अधिनायकवादी ताकतें, जात-पात के आधार पर, धर्म के नाम पर, और साम्प्रदायिकता के आधार पर दीवार खड़ी करना चाहते हैं, ऐसी ताकतों को हम कभी नहीं चाहेंगे कि वे सत्ता में आए इसीलिए हमने उसी कड़ी में विश्वास मत का समर्थन किया था। उस वक्त बोलते हुए बंसी लाल जी ने कहा था कि मैं कांग्रेस पार्टी की अध्यक्षा श्रीमती सोनिया गांधी जी का आभार व्यक्त करता हूं कि वे जो कहेंगी, मैं मानूंगा।

श्री मनी राम गोदारा : चेयरमैन साहब उन्होंने यह नहीं कहा था कि सोनिया जी जो कहेंगी वह मैं मानूंगा बल्कि उन्होंने यह कहा था कि सोनिया जी हरियाणा के हित की जो बात कहेंगी, वह मैं मानूंगा।

श्री बीरेन्द्र सिंह : यह तो रिकार्ड में है, आप बेशक रिकार्ड मंगवा कर देख लें।

श्री सभापति : ठीक है, हम रिकार्ड मंगवा लेते हैं।

श्री बीरेन्द्र सिंह : चेयरमैन साहब हमने उस वक्त विकास पार्टी को समर्थन नहीं दिया था बल्कि हमने विश्वास मत का समर्थन किया था। उस वक्त हमने कोई शर्त नहीं लगाई थी। बंसी लाल जी ने उस वक्त दो बार कहा था कि सोनिया जी जो कहेंगी वह करूंगा, यह बात मीडिया में भी और प्रिन्ट मीडिया में भी आई थी कि जो वे कहेंगी वह मुझे मान्य होगा। उस विश्वास मत के बाद सोनिया जी ने बंसी लाल जी, को कहा कि प्रजातंत्र की परम्परा यह है कि आप दुबारा से जनमत लें और जनता के बीच आएं। सोनिया जी ने यह बात इसलिए कही कि आपने यह चुनाव जो 1996 में लड़ा था वह बी०जे०पी० के साथ लड़ा था। उन्होंने किन्हीं कारणों से समर्थन वापस ले लिया इसलिए कांग्रेस पार्टी यह चाहती है आप जनता का फ्रैश मैन्डेट लें। कांग्रेस पार्टी ने विश्वास मत का समर्थन किया था इस बदले

में यह बात नहीं कही थी। कांग्रेस पार्टी का तो यह कहना था कि बी०जे०पी० और एच०वी०पी० दो दलों ने मिलकर चुनाव लड़ा था और जो उस वक्त वोट मिले थे वे दो दलों को मिले थे। इसलिए कांग्रेस पार्टी चाहती है कि आप नया मैनडेट लें लेकिन बंसी लाल जी ने यह बात नहीं मानी। मैंने उस वक्त भी यह बात कही थी कि जो इन दो दलों ने चुनाव मिलकर लड़ा था वह उसमें बी०जे०पी० 3 साल तक सत्ता में भागीदार रही। अब बी०जे०पी० वाले 3 साल तक सत्ता में साथ रह कर यह कहें कि वह सरकार दिशाहीन है, नखेती है या उसका ये क्रिटिसिज्म करें, अच्छा नहीं लगता। तीन साल तक उनके साथ रह कर और बाद में विपक्ष में बैठकर, उनके बारे में कहें कि सरकार बुरी है इनका यह कहने का कोई औचित्य नहीं बनता।

अभी इन्होंने एक बात कही कि एक ऐसी विरोधी सरकार जो दलित विरोधी हो। जो किसानों पर गोली चलवाए, जो दुकानदारों पर जुल्म करे और जो व्यापारियों को तंग करे, उस सरकार को हमने बहुत सहा अगर शर्मा जी की पार्टी में कोई राजनैतिक सूझ-बूझ होती तो उस सूझ-बूझ का परिचय दे कर कदम उठाते अगर आप किसानों के हितैशी होते तो जिस दिन चौधरी बंसी लाल जी की सरकार ने आपके क्षेत्र के गांव मण्डियाली के अन्दर गोली चलवाई थी उस दिन आपको इस्तीफा दे देना चाहिए था। शर्मा जी आप किसानों के हितैशी नहीं हैं आपने तो राज्य के अन्दर अपने प्रचार को फैलाना था। राज्य के अन्दर पहली बार आपको मौका मिला था जिसमें आप साम्प्रदायिक विचार के लोगों को लेकर जगह-जगह पर अपने सैल क्रिएट कर सकें और हरियाणा में जाति-पाति और साम्प्रदायिक ताकतों को ऊपर ला सकें। चेयरमैन सर, हरियाणा एक ऐसी स्टेट है जहां गरीब से गरीब व्यक्ति को भी अगर वह हमारा ताऊ लगता है तो ताऊ कह कर सम्बोधित करते हैं। (विघ्न)

डॉ० कमला वर्मा : चेयरमैन महोदय, मेरा प्वायंट ऑफ आर्डर है। चौधरी बीरेन्द्र सिंह जी बड़े सीनियर सदस्य हैं। मैं अपने माननीय साथी को बताना चाहती हूं कि इस देश में साम्प्रदायिक लोग कौन हैं। जब इनकी पार्टी के नेता पूर्वांचल में गए थे तो उस समय मिजोरम में राजीव गांधी जी ने कहा था कि अगर आप कांग्रेस को वोट दे देंगे तो मैं यहां पर बाईबल के अनुसार प्रशासन करूंगा (विघ्न एवं शोर) यह बात अखबारों में आई थी। (विघ्न) चेयरमैन साहब, मैं इन से यह कहना चाहती हूं कि ये सुनने का दम रखें। केरल के अन्दर इन्हीं के नेता ने शुक्रवार के दिन आधे दिन की छुट्टी की घोषणा की ताकि मुसलमान भाई जुम्मे की नमाज अदा कर सकें। यह आधे दिन की छुट्टी केवल इसलिए की गई ताकि मुसलमान भाई खुश हो कर इनकी पार्टी को वोट दे दें। 1984 के दंगे, बेकसूर सिक्खों को दिल्ली में मारना इन्हीं लोगों ने किया। अब आप खुद अंदाजा लगा सकते हैं कि साम्प्रदायिक कौन है ? इस देश में जितने दंगे हुए हैं उनकी इन्क्वायरी करवाई गई, तो जो 24 दंगे हुए थे उनमें से 23 दंगों में कांग्रेस पार्टी के लोग दोषी पाए गए जिन्होंने हिन्दुओं और मुसलमानों को लड़ाया। चेयरमैन सर, छाज तो बोले ही बोले लेकिन छलनी क्या बोलेगी। ये लोग सैकुलरिज्म के नाम पर जिस प्रकार से साम्प्रदायिकता फैलाते रहे हैं वह सब को मालूम हैं। धर्मनिरपेक्षता का नारा दे कर साम्प्रदायिकता फैलाने वाले लोग थे कांग्रेस के लोग हैं। 5 प्रदेशों के अन्दर हमारी पार्टी का शासन रहा है। दिल्ली, राजस्थान, मध्यप्रदेश, उत्तर प्रदेश, हिमाचल प्रदेश के अन्दर हमारी पार्टी का शासन रहा है लेकिन वहां पर साम्प्रदायिकता के नाम पर पत्ता तक नहीं हिला और एक भी हिन्दु-मुस्लिम दंगा नहीं हुआ। उस उत्तर प्रदेश के अन्दर जहां 13 वर्ष तक कभी मुहर्म का जलूस नहीं निकल पाया था लेकिन जब कल्याण सिंह की सरकार का शासन आया तो 13 वर्ष के बाद उस सरकार ने मुहर्रम का जलूस निकालने के लिए मुसलमान भाईयों को कहा और शांति व शान से जलूस निकाला। ये लोग क्या बात करेंगे? चेयरमैन सर, मैं आपके माध्यम से बताना चाहती हूं कि दूसरे लोगों

[डॉ० कमला वर्मा]
को साम्प्रदायिक कहने से पहले इन लोगों को अपने गिरेबान में झांक लेना चाहिए और देश की जनता को मिसलीड नहीं करना चाहिए (विघ्न)

श्री बीरेन्द्र सिंह : चेयरमैन सर, छाज और छलनी में बड़ा फर्क है। ये छाज और छलनी की बात कहती हैं। ये बंसी लाल जी की सरकार में मंत्री रहीं है। ***

श्री सभापति : मंत्री के बारे में चौधरी बीरेन्द्र सिंह जी ने जो बात कही है उसे कार्यवाही से निकाल दिया जाए। (विघ्न)

श्रीमती करतार देवी : सर, मेरा प्वायंट ऑफ आर्डर है।

श्री मनी राम गोदारा : सर, जो कुछ भी उनके बारे में कहा गया है, उस बारे में वे पर्सनल एक्सप्लेनेशन दे सकती है। आप उसको कार्यवाही से न निकलवाएं । (शोर एवं व्यवधान)

Shri Birender Singh : Mr. Chairman Sir, I have seen all the BJP people, and they have been the most corrupt Ministers in the Bansi Lal Government (noise & interruption)

श्री सभापति : बहन जी बैठिए। चौधरी बीरेन्द्र सिंह जी आप इतने वरिष्ठ सदस्य हैं। आपको लोकसभा का तजुर्बा है और आप चार बार चुन कर इस सदन में आ चुके हैं, क्या आपको इस तरह के आरोप लगाना सही लगता है? (शोर एवं व्यवधान)

Shri Birender Singh : Mr. Chairman Sir, you take this matter to the Privileges Committee. I will prove it that they had been the most corrupt Ministers. (noise & interruption)

(इस समय कई माननीय सदस्य अपनी सीटों पर खड़े होकर बोलने लगे)

श्री सभापति : आप सब बैठिए। मैडम जी, आप अपनी सीट पर बैठें। मैं आप सबसे निवेदन करना चाहता हूँ कि आप सब वह बातें कहें जो एक दूसरे को अच्छी लगें। अगर आप एक बात कहेंगे तो दूसरे दो बातें कहेंगे।

श्री मनी राम गोदारा : सर, मेरी सबमिशन है कि बहन जी पर्सनल एक्सप्लेनेशन में इनकी बात का जवाब दे सकती हैं। आप इनकी बात को कार्यवाही से निकलवा नहीं सकते हैं।

कैप्टन अजय सिंह यादव : सभापति जी, जो इन्होंने राजीव गांधी जी के बारे में कहा है, वह भी कार्यवाही से निकलवाएं।

श्री सभापति : यादव जी, आप अपनी सीट पर बैठें। आप चेयर की परमीशन के बिना बोल रहे हैं। (विघ्न) करतार देवी जी, क्या आपकी पार्टी का यही डिसिप्लिन है जो मिस्टर यादव दिखा रहे हैं ? बहन जी, आप बोलिए। (शोर एवं व्यवधान)

श्रीमती करतार देवी : सर, मेरा प्वायंट ऑफ आर्डर है। सर, बहन जी ने भाषण देते हुए कहा कि साम्प्रदायिक कौन है। इन्होंने ऐसे भाषण दिया जैसे आर०एस०एस० में नए सदस्यों को बताना हो। जिन आयोगों की इन्होंने चर्चा की है, वह न तो हमारा विषय है और न ही इनका। लेकिन इन्होंने यहां पर स्वर्गीय राजीव गांधी जी का नाम लेकर स्पैसिफिक बात चलाई। मैं इनसे जानना चाहती हूं कि अभी

*-चेयर के आदेशानुसार रिकार्ड नहीं किया गया।

हाल में "कृष्ण आयोग" की रिपोर्ट पर इन्होंने क्यों कार्यवाही नहीं की ? ये बताएं कि उस रिपोर्ट का क्या हुआ ? उस रिपोर्ट में लिखा हुआ था कि कैसे एक आदमी अल्पसंख्यकों पर हमला करने के लिए आगे-आगे चल रहा था। उस व्यक्ति का नाम भी लिखा हुआ है और ये इस बारे में जानते हैं। ये यह बताएं कि इनकी सरकार ने उस आयोग की रिपोर्ट पर क्या कार्यवाही की है ? आज साम्प्रदायिक दंगों को कौन प्रोत्साहित करता है। मैं किसी व्यक्ति का नाम नहीं लेती लेकिन आर०एस०एस० को इस बात की जिम्मेवारी लेनी होगी और बी०जे०पी० को मानना होगा कि देश के अन्दर नफरत का जो माहौल बना था वह इन्हीं के प्रचार से बना था। बल्कि महात्मा गांधी जी की हत्या का जो माहौल बना था वह भी इन्हीं के प्रचार से बना था ये तो आग लगाकर दूर खड़े हो जाते हैं। जैसे कहा जाता है कि "आग लगाकर जमालो दूर खड़ी"। ये कुछ भी कहते रहें, क्या इनकी कोई रिस्पोंसिब्लिटी नहीं है ? चेयरमैन सर, मैं आपसे अनुरोध करूंगी कि श्री राजीव गांधी जो कि अब इस दुनिया में नहीं हैं, का नाम लेकर बिना तथ्यों के, जिस प्रकार से ये लोग बात करते हैं यह सही नहीं है। हमें दोष दो हमें स्वीकार है, कांग्रेस को क्रीटिसाईज करो हमें स्वीकार है और हम उसका जवाब भी देंगे। लेकिन इस तरह से जो सदस्य यहां पर मौजूद नहीं है, उस पर आरोप लगाना ठीक नहीं है। यह बात इनको शोभा नहीं देती है। सर, इन्होंने स्वर्गीय राजीव गांधी का नाम लिया है और उनके बारे में जो बात कही है, उसको कार्यवाही से निकलवाएं, यह मेरी सबमिशन है

श्री सभापति : श्री राजीव गांधी जी के बारे में जो बात कही गई है, वह कार्यवाही से निकाल दी जाए।

श्री राम विलास शर्मा : सर, मेरा पर्सनल एक्सप्लेनेशन है।

श्रीमती करतार देवी : सर, ये लोग इस तरह की जो बातें करते हैं इससे इनके दल की मनोवृति झलकती है तथा पता लगता है कि इनकी पार्टी में क्या सिखाया जाता है। यह तो इनकी तहजीब है कभी सोनिया जी का नाम लेते हैं कभी राजीव जी का नाम लेते हैं और उनके बारे में तथ्यहीन बातें कहते हैं। ये लोग इस तरह की जो बातें करते हैं वे बातें भारतीय संस्कृति के मूल पर कुठाराघात करती हैं। आज जो आदमी इस दुनिया में नहीं है और जिसको सारी दुनिया ने माना है, उसके बारे में कोई गलत बात कहे यह ठीक नहीं है।

श्री सभापति : मैडम जी आप बैठ जाएं। आप जो कह रही हैं हमने उसको कार्यवाही से निकलवा दिया है। अब राम विलास शर्मा जी पर्सनल एक्सप्लेनेशन देंगे। (शोर एवं व्यवधान)

वैयक्तिक स्पष्टीकरण

श्री राम विलास शर्मा द्वारा -

श्री राम विलास शर्मा : आदरणीय बहन करतार देवी जी ने एक बहुत ही बड़ा निराधार आरोप आर०एस०एस० के ऊपर लगाया है। उन्होंने कहा है कि आर०एस०एस० के प्रचार के कारण ही ऐसे काम होते हैं। चेयरमैन सर, सारे देश की घटनाएं तो इतनी हैं कि उन सबका तो पता नहीं लगेगा लेकिन मैं दादरी की विमान दुर्घटना के समय की ही इनको बात बता देता हूं। जब हवाई जहाज की यह दुर्घटना हुई थी तो उसमें कजाकिस्तान एवं दो मुस्लिम देशों के लगभग 300 लोग मारे गये थे। बाद में जब वहां पर अरब देशों के लोग आये और उन्होंने आर०एस०एस० के लोगों को वहां पर काम करते हुए देखा तो उनकी आखों में आंसू आ गये। वहां पर आर०एस०एस० के लोगों ने उनसे कहा कि आपके लोगों

[श्री राम बिलास शर्मा]
की डैड बॉडीज तो मिल गयी हैं फिर आप लोग रो क्यों रहे हैं। चेयरमैन सर, उन देशों के लोगों ने उस समय यह कहा कि हम इसलिए नहीं रो रहे हैं कि हमारे लोगों की डैड बॉडी मिल गई है या हमारे लोग मारे गये हैं बल्कि हम तो इसलिए रो रहे हैं कि हमें आज तक यहां के राजनीतिज्ञों ने यह पढ़ाया था कि आर०एस०एस० मुस्लिम विरोधी हैं लेकिन आज जब हमने आर०एस०एस० के लोगों को यहां पर इतनी लगन से काम करते देखा तब हमें पता चला कि असलियत क्या है और इसीलिए हम रो रहे हैं। आज तक हम तो उनके बारे में गलतफहमी में ही थे। आज उन्होंने हमारे लोगों की डैड बॉडीज को, हमारे लोगों की मिट्टी को बहुत ही अच्छे तरह से सम्मानित किया है। चेयरमैन सर, करतार देवी जी हमारी किस-किस बात का जवाब देंगी। 1984 में जब श्रीमती इंदिरा गांधी की हत्या हुई थी तो उस समय दिल्ली में दंगों में 2700 केशधारक लोगों को पैट्रोल डालकर जला दिया गया था और इनके एक मैम्बर पार्लियामैंट ने तथा इनके नेताओं ने कहा था कि जब कोई पेड़ गिरता है तो धरती हिलती ही है लेकिन आज ये कारगिल की जानकारी मांग रहे हैं। चेयरमैन सर, मैं इनको बताना चाहता हूं कि जब 1971 में श्रीमती इंदिरा गांधी के नेतृत्व में पाकिस्तान के साथ लड़ाई हो रही थी तो अटल बिहारी वाजपेयी जी ने उनको दुर्गा कहा था।

Shri Birender Singh : This is not the way of speaking. This is not a point of order.

श्री राम बिलास शर्मा : चेयरमैन सर, उस समय सोनिया गांधी जी श्री राजीव गांधी को लेकर इटली चली गयी थीं। (शोर एवं व्यवधान) चेयरमैन सर, अगर ये इस तरह की बात कहेंगे तो फिर हम भी कहेंगे।

बैठक का समय बढ़ाना

श्री सभापति : यदि हाउस की सहमति हो तो हाउस का समय दो घंटे के लिए और बढ़ा दिया जाये।

आवाजें : ठीक है जी।

श्री सभापति : ठीक है, हाउस का समय दो घंटे और बढ़ाया जाता है।

श्री वीरेन्द्र सिंह : सर, मेरी बात तो पूरी होने दीजिए।

विश्वास-मत (पुनरारम्भ)

श्री सभापति : वीरेन्द्र सिंह जी, मैंने आपसे पहले ही निवेदन किया था कि अगर आप इस तरह से आरोप प्रत्यारोप लगाएंगे तो उसका कहीं अंत नहीं होगा। आप यहां पर अच्छी बातें कहें। आप किसी के बारे में निजी तौर पर न कहें क्योंकि इससे सदन का समय खराब होता है।

श्री राम बिलास शर्मा : सर, मैं पर्सनल एक्सप्लेनेशन पर बोल रहा था। बहन करतार देवी जी ने ही आर०एस०एस० के ऊपर इतना बड़ा आरोप लगाकर शुरूआत की है हमने तो कोई शुरूआत नहीं की थी। इसलिए अब जो भी तथ्य हैं वह तो आपके सामने लाए ही जाएंगे।

श्री जसविन्द्र सिंह : चेयरमैन साहब, मेरा प्वायंट ऑफ आर्डर है। सर, बहन करतार देवी जी साम्प्रदायिकता की बात कर रही थी लेकिन मैं इनको बताना चाहता हूं कि इन्होंने देश एवं प्रदेश की सिख जनता के साथ क्या किया था मैं इनको यह बात इसलिए बताना चाहता हूं ताकि सदन को भी पता चल सके कि साम्प्रदायिक कौन है (शोर एवं व्यवधान)

श्री सभापति : जसविन्द्र जी, आप बैठें और बीरेन्द्र सिंह जी को अपनी बात पूरी करने दें।

डॉ० कमला वर्मा : चेयरमैन साहब, वीरेन्द्र सिंह जी बहन जी के ऊपर अपना भाषण देना चाहते हैं या अपनी बात विश्वास मत पर कहना चाहते हैं। अगर ये मेरे ऊपर भाषण देना चाहते हैं तो मैं भी उसका जवाब देना जानती हूं।

श्री सभापति : बीरेन्द्र सिंह जी, आप अपनी बात जल्दी पूरी करें।

श्री बीरेन्द्र सिंह : सर, चौटाला साहब ने तो कहा है कि टाईम की कोई दिक्कत नहीं है।

श्री सभापति : चौटाला साहब ने कहा था कि अगर कोई कायदे कानून की बात कहेगा तो उसको टाईम की कोई दिक्कत नहीं होगी तथा बोलने का पूरा मौका मिलेगा। आप हरियाणा में ही रहिए और यहीं से संबंधित अपनी बात कहें।

श्री बीरेन्द्र सिंह : चेयरमैन सर, मैं इनकी धर्मनिरपेक्षता या सभी बिरादरी के प्यार के लोगों की भावना का उदाहरण दिए बिना नहीं रह सकता। 1977 से 1982 तक हम दोनों इसी सदन के सदस्य थे। 1980 के बाद जब आतंकवाद सिर उठाने लगा तो एक घटना यमुनानगर में हुई। (विघ्न)

श्री सभापति : मेरा आपसे निवेदन है कि आप एक वरिष्ठ सदस्य हैं इसलिए बेहतर होगा कि आप इन बातों को छोड़कर अपनी मुख्य बात पर आएं।

श्री बीरेन्द्र सिंह : सभापति महोदय, मैं लीडर ऑफ दि हाउस की एक बात तक ही अपने को सीमित रखूंगा। उन्होंने कहा कि हमारी ढाई-तीन दिन की सरकार है कोई भी अच्छा या बुरा कार्य अभी तक हमने नहीं किया इसलिए किस बात पर ज्यादा बोलोगे। सर, चौटाला साहब भूतकाल में तीन बार मुख्यमंत्री रह चुके हैं।

मुख्य मंत्री (श्री ओम प्रकाश चौटाला) : मैंने वर्तमान की बात कही है पास्ट का ज़िक्र नहीं किया।

श्री बीरेन्द्र सिंह : सभापति जी, चौटाला जी से मैं कहूंगा कि वे इस बात का जवाब दें कि जब कारगिल की लड़ाई शुरू हुई तो शहीदों के शवअंत्येष्टि के लिए गांवों में पहुंचे। इनकी एक बात की तो मैं तारीफ करूंगा कि जहां कहीं भी किसी शहीद की अंत्येष्टि हुई, वहां ये गए लेकिन साथ ही इन्होंने यह भी कहा था कि हरियाणा का जो भी सैनिक शहीद होगा उसे अपनी पार्टी की तरफ से एक लाख रूपया देंगे। वैसे तो इतनी राशि ये अपनी तरफ से भी दे सकते हैं। इन्होंने मुख्य मंत्री बनते ही वह राशि पांच लाख से बढ़ाकर दस लाख तो कर दी लेकिन जो पैसा इन्होंने अपनी जेब से देना था, वह भी ये निकालें। अपनी आदत को सुधारो, थोड़ा दानवीर बनो। इनको दो-तीन चीजों का ख्याल रखना पड़ेगा। (विघ्न)

श्री ओम प्रकाश चौटाला : सभापति जी, वैसे तो मैं यह जवाब अपनी रिप्लाई के समय देना चाहता था लेकिन जैसे वातावरण दिखाई दे रहा है शायद जब मैं रिप्लाई देने लगूं तब यहां ये लोग सुनने के लिए न हों इसलिए अभी इस बारे में बता देता हूं। चौधरी देवी लाल जी की तरफ से दो-दो लाख रूपये हर शहीद के परिवार को दिये जाएंगे। हमने एक लाख की बजाए दो लाख रूपये किए हैं।

श्री सभापति : दो-दो लाख रूपये चौटाला साहब ने दिए हैं एक-एक लाख रूपये तो बीरेन्द्र सिंह जी आपकी पार्टी की तरफ से भी दिए जाने चाहिएं।

श्री बीरेन्द्र सिंह : देवी लाल जी राज्यसभा के मैम्बर हैं उन्हें साल का दो करोड़ रुपया मिलता है। हमारे हरियाणा से अभी तक 75 सैनिक शहीद हुए हैं अगर दो-दो लाख रूपया देंगे तो भी डेढ़ करोड़ में काम चल जाएगा देखना यह है कि चौधरी देवी लाल जी की पार्टी क्या देती है।

श्री ओम प्रकाश चौटाला : हमारी पार्टी ही चौधरी देवी लाल है यह सब कुछ चौधरी देवी लाल के नाम पर ही है।

श्री बीरेन्द्र सिंह : सर, मैं इसलिए कह रहा था कि पैसे के मामले में दलील देने में चौटाला साहब का कोई जवाब नहीं है। यह बात सही है कि आज जितने सैनिक परिवार हैं वे दुःखी हैं जब लड़ाई का समय होता है तो समाज का वह वर्ग जो धनी वर्ग है, जो समाज के ज्यादा पैसे पर कंट्रोल रखता है जब मुल्क पर आफत आती है तो ये सभी धनी लोग अपना सब कुछ दान करने को तैयार रहते हैं। सैनिकों के लिए पूरी हलुआ लेकर रेलवे स्टेशनों पर पहुंच जाते हैं। लेकिन इन्हीं सैनिकों में से शहीद हुए सैनिकों के परिवारों को बाद में मुसीबतों का सामना करना पड़ता है। इन्होंने जो फैसला किया है हम उसकी तारीफ करते हैं इन्होंने कहा है कि अगर वह सैनिक शादीशुदा है तो आधा पैसा हम पेरैन्टस को देंगे। सर, इस कैजुएलिटीज में 17 से 27 साल तक की उम्र के ज्यादा बच्चे शहीद हुए हैं। मैं यह कहना चाहता हूं कि जो सैनिक कुर्बानी दे चुके हैं उसके परिवार को आर्थिक कमी के कारण कभी किसी के सामने हाथ न फैलाने पड़े अथवा उसके परिवार को समाज में इसलिए सम्मान न मिले कि वह आर्थिक रूप से पीछे हैं, हम यह समझते हैं कि उन परिवारों को सही तौर पर सम्मानित किया है या वे शहीदों के परिवार 1,2,3,4 या 5 साल के बाद आर्थिक गुलामी की जिन्दगी बसर करने पर मजबूर हो जायेंगे। हम कहते हैं कि उन शहीदों के परिवारों को सही तरीके से सहायता दी जाये। अगर ऐसा किया जायेगा तो हम अपने समाज की बड़ी भारी सेवा कर सकेंगे। दूसरी बात यह है कि चौधरी ओम प्रकाश चौटाला जी ने एक बहुत अच्छा काम किया है कि अग्रोहा कॉलेज की ग्रान्ट को दोबारा शुरू कर दिया है। लेकिन मैं यह कहता हूं कि पहले की तरह बनिए और रफ्यूजी का वोट का अधिकार नहीं होना चाहिए उस बात को दोबारा शुरू मत कीजिए नहीं तो बहुत बुरा लगेगा। क्योंकि आप जिस तरीके से अपनी पार्टी में सभी बिरादरियों को शामिल करने का प्रयास कर रहे हैं यह उसी प्रयास की कड़ी है। कभी आप वह पुरानी बातें करते जायें। इसलिए कई बार हमें ऐसा लगता है कि साम्प्रदायिक ताकतें हरियाणा में अपना सिर उठा रही हैं। श्री राम बिलास शर्मा जी का सिक्का तो कभी नहीं चल सकता क्योंकि जिस समाज के अन्दर किसान अपनी मेहनत से अन्न पैदा करता है उस समाज में साम्प्रदायिक ताकतों की जगह नहीं होती। उसी की एक मिसाल है कि जब हिन्दुस्तान आजाद हुआ उस समय की मेवात क्षेत्र की एक मिसाल मैं सदन को देना चाहता हूं। आजादी के समय पाकिस्तान और हिन्दुस्तान का एक एग्रीमेंट हुआ था कि जो हिन्दुस्तान में मुसलमान हैं वे सभी पाकिस्तान जायेंगे और पाकिस्तान में जो हिन्दू हैं वे हिन्दुस्तान में आयेंगे। लेकिन उन्ही दिनों में मेवात का एक आदमी महतो जोकि पढ़ा-लिखा नहीं था बल्कि अनपढ़ था परन्तु उसकी कार्यशैली ऐसी थी कि उसका प्रभाव उस इलाके के लोगों पर अच्छा था। वह मेवात के लोगों का एक डेपूटेशन लेकर देश के गृह मंत्री सरदार पटेल से मिलते हैं और उनसे कहते हैं कि मेवात इलाके में यह बात फैलाई जा रही है हमें हिन्दुस्तान छोड़कर पाकिस्तान जाना होगा परन्तु मेवात का कोई भी आदमी पाकिस्तान जाना नहीं चाहता। हिन्दुस्तान हमारी धरती है हम इस धरती पर पैदा हुए हैं और इसी धरती पर जियेंगे और यहीं रहेंगे। आज उसी बात का प्रमाण है कि मेवात क्षेत्र के सोफ्त गांव के

जाकिर हुसैन और गुढी गांव के अली मोहम्मद के बारे में सभी प्रमुख अखबारों में खबर छपी थी और टाइम्स ऑफ इंडिया में भी यह खबर छपी थी कि इन नौजवानों ने जिस तरीके से, जिस बुद्धिमत्ता से नवाज पढ़ते-पढ़ते अपने साथियों को लेकर दुश्मन का मुकाबला करने के लिए कारगिल में पहाड़ी की चोटी पर चढ़ गये और जब दुश्मन को यह पता लगा कि ये तो हमारे साथी नहीं है जो नमाज पढ़ रहे थे ये तो हिन्दुस्तान की फौज के सिपाही हैं तो दुश्मन की पहली गोली का निशाना जाकिर हुसैन को बनाया गया। हमें इस बात पर गर्व होता है। इसलिए जिस हरियाणा के अन्दर आप यह नफरत का बीज बो रहे हैं वह कभी भी नहीं हो पायेगा लेकिन मैं 1982 की एक बात इस सदन को बताना चाहता हूं। जो मुझे बहन कमला वर्मा ने सचिवालय के कोरीडोर में कही थी (विघ्न)

श्री सभापति : चौधरी बीरेन्द्र सिंह जी आप 15 मिनट में कंक्लयूड कीजिए क्योंकि पहले आप बोलेंगे और फिर बहन जी उसका जवाब देंगी। इसलिए सदन का समय ही बर्बाद होगा।

श्री बीरेन्द्र सिंह : मैं तो बहन जी को नाराज नहीं करूंगा। मैं सी०एम० साहब के कमरे में जा रहा था तो कोरीडोर में बहन जी ने मुझे आवाज दी कि बीरेन्द्र भाई एक बात सुनिए, मैंने कहा कहिये बहन जी। तो बहन जी ने कहा कि ये कैसे होगा कि उग्रवादी तो हमारे आदमियों को मारते जायें और हम देखते रहें। आज से हमें भी देहात में ऐसी चिन्गारी पैदा करनी होगी जो इनका जवाब दे सकें।

डॉ० कमला वर्मा : सभापति महोदय, ये कहानियां बना रहे हैं।

श्री बीरेन्द्र सिंह : सभापति महोदय, मैं कहानियां नहीं बना रहा हूं। मैं तो यह बात कह रहा हूं कि उग्रवाद की कितनी घटनाएं हरियाणा के बॉर्डर पर हुई हैं, कितनी जगहों पर उग्रवादियों ने बेगुनाह लोगों को मौत के घाट उतार दिया है। इस संदर्भ में मैंने 1947 में "हिम्मतें" का आपको एक उदाहरण दिया है। लेकिन हिन्दू और सिक्ख के नाम पर हरियाणा का आदमी कभी नहीं लड़ा। यहां पर किसी भाई को इस बात पर नहीं तोला जाता कि वह गरीब है, अमीर है, किस मजहब का है, किस जाति का है ?

डॉ० कमला वर्मा : सभापति महोदय, जिस वक्त इनकी पार्टी के द्वारा हिन्दू सिख को आपस में लड़वाने का प्रयास किया जा रहा था, उस वक्त हरियाणा में कांग्रेस का शासन था। मैं इनसे पूछना चाहता हूं कि उस वक्त कौन सी बस ऐसी जाती थी जिस में से सिक्खों को उतारकर अपमानित नहीं किया जाता था ? उस वक्त यह सब कौन करता था ? हिन्दू-सिक्ख की साझेदारी की क्या बात करेंगे मैं बताना चाहती हूं कि उस वक्त कांग्रेस की सरकार ने हर सिख भाई को तलाशी लेकर उसे उग्रवादी की लाइन में खड़ा कर दिया था।

श्री जसविन्द्र सिंह : सभापति महोदय, मैं आपके माध्यम से चौधरी बीरेन्द्र सिंह जी से पूछना चाहता हूं कि 1982 में गलत हुआ था अथवा ठीक हुआ था ? (विघ्न)

डॉ० कमला वर्मा : सभापति महोदय, मैं सदन को बताना चाहती हूं कि हिन्दू-सिक्ख एक मां की दो आंखें हैं। आज तक हम ने भेदभाव पैदा नहीं किया है। हम ने एक बेटे का नाम शाम लाल रखा तो दूसरे बेटे का नाम राम सिंह रखा है। हिन्दू-सिक्ख में फूट न कभी थी न आगे होने की संभावना है। क्योंकि उनकी संस्कृति एवं उन का मरना जीना इकट्ठा रहा है। लेकिन राजनीति ने इन को अलग करने की कोशिश अवश्य की जो सफल नहीं हो सकी।

श्री सभापति : बीरेन्द्र सिंह जी, आप अपनी बात 5 मिनट में खत्म करें।

श्री बीरेन्द्र सिंह : सभापति महोदय, मैं आपके माध्यम से चौटाला साहब को एक बात कहना चाहता हूं। जैसे कि मैंने पहले भी कहा है कि अगर इन को वाकई पार्लियामैंट के चुनावों के बाद भी अपनी सरकार चलानी है तो कुछ "सैल्फ-इम्पोजड" रिस्ट्रिक्शंज़ इनको लगानी पड़ेंगी, इससे हरियाणा की राजनीति चुस्त-दुरुस्त हो सकेगी। इस संदर्भ में मैं आपको एक उदाहरण देना चाहता हूं। गोवा के अंदर अभी चुनाव हुए हैं। वहां पर 40-सदस्यीय विधान सभा में कांग्रेस को 21 सीटें मिली हैं यानि कांग्रेस को वहां पर बहुमत मिला है। कांग्रेस पार्टी ने अपने चुनाव घोषणा-पत्र में यह ऐलान किया था कि वे सदन की कुल स्ट्रैंथ के 15 प्रतिशत् ही मंत्री बनाएंगे, इससे ज्यादा नहीं, तदानुसार उस छोटे से राज्य में उन्होंने 6 मंत्री बनाएं हैं। इसी प्रकार से मेरा आपसे अनुरोध है कि आप किसी भी धड़े को मंत्री बनाओ, चाहे नरबीर-धड़े को बनाओ, चाहे कर्ण सिंह दलाल-धड़े को बनाओ या फिर करतार-धड़े को बनाओ लेकिन मंत्रियों की संख्या कम रखो। (विघ्न)

श्री धीरपाल सिंह : सभापति महोदय, " औरों को नसीहत, खुद मियां फजीहत"। ये खुद भी मंत्री रहे हैं। कांग्रेस की सरकार के समय में इस प्रकार के बढ़िया-बढ़िया सुझाव इन्हें कांग्रेस को देने चाहिए थे।

श्री सभापति : बीरेन्द्र सिंह जी, आपका केवल एक मिनट बाकी है। आप जल्दी ही अपनी बात पूरी कर लीजिए।

श्री बीरेन्द्र सिंह : सभापति महोदय, मैं कह रहा था कि कुछ "सैल्फ-इम्पोजड" रिस्ट्रिक्शंज़ लगाई जाएं तथा गोवा की तरह से 15-20 प्रतिशत से ज्यादा लोगों को मंत्री नहीं बनाया जाए। ये जो डिफैक्शन है, ये जो दल बदल है इसको हम आया राम गया राम की संज्ञा देते हैं। इसी बात को लीडर ऑफ दि हाउस ने भी शुरू में कहा कि दल बदल से हरियाणा बदनाम हुआ। यह बात सिर्फ हरियाणा की ही नहीं है बल्कि जिन विधान सभाओं के सदस्यों की संख्या 100 से कम है वहां ऐसे नाटक होते ही रहते हैं।

श्री सभापति : जब आपकी सरकार होती है तो भी बड़े मंत्रीमंडल बनते हैं जिसके आप भी सदस्य होते हैं, उस समय आपने यह बात क्यों नहीं कही ?

श्री बीरेन्द्र सिंह : मैंने उस समय भी इसका विरोध किया था और आज भी करता हूं (शोर) ये अपने ऊपर रिस्ट्रक्शन लगाएं और चाहे 20 मंत्री बनाएं। ये 20 मंत्री चाहे अपनी पार्टी से या दूसरी समर्थक पार्टियों से बनाएं। बड़ी कैबिनेट बनाकर ये हरियाणा की 2 करोड़ जनता के साथ मजाक न करें। लोग यह नहीं देखते कि कौन कैसे दल बदलता है। हरियाणा के लोगों की जो डिवैल्पमैंट एक्टीविटीज है, वह खत्म हो रही हैं। हम रात दिन इसी उधेड़ बुन में लगे रहते हैं कि किस तरह से एम०एल०एज० को रोकें और किस तरह से दूसरे एम०एल०एज० को खींच कर ले आएं। अगर हम चुप रहें तो ठीक है वरना आज की स्थिति भी ऐसी है कि आप में से 9-10 साथी हमारे सामने दंडवत हो जाएं तो फिर से गड़बड़ हो सकती है। लेकिन हम ऐसे नहीं करेंगे।

श्री सभापति : चौ० बीरेन्द्र सिंह जी आप दिन में सपने देखना छोड़ दें।

श्री बीरेन्द्र सिंह : आप दलाल साहब दिन में सपने तो देखते हैं, और इस हद तक देखते हैं कि उनकी कलाकारी को कोई मात नहीं दे सकता। एक तरफ वे भूपेन्द्र सिंह हुड्डा जी से फोन पर बात करते हैं तो साथ ही साथ चौटाला जी से भी फोन पर बात करते हैं। बंसी लाल जी को रिपोर्ट दे कर आए कि हमने यह करवा दिया। मैंने डेढ़ साल पहले इनको कहा था कि बंसीलाल जी ने आप पर ऐतबार करना छोड़ दिया है। आप भले आदमी हैं लेकिन आपकी क्रैडिबिलिटी कम हो रही है इसलिए आप इसको सुधारने की कोशिश करें।

श्री सभापति : चौ० बीरेन्द्र सिंह जी, जो बातें आप कह रहे हैं मैं नहीं समझता कि आप ये बातें दिल से कह रहे हैं।

श्री बीरेन्द्र सिंह : मुझे आपने यह बात कही। मैंने हाउस में कहा था और आज भी कहता हूं। मैं ओन ओथ कहता हूं कि आदमी को कभी डबल कैरेक्टर नहीं रखना चाहिए। राजनीति में आदमी को ईमानदार होना चाहिए। डबल कैरेक्टर लेकर हरियाणा के लोगों का नुकसान करते हैं। कब तक ऐसी राजनीति चलेगी। कब तक लोगों को झूठे नारे देकर तथा एक स्टैण्ड से दूसरा स्टैण्ड बदलकर बेवकूफ बनाते रहेंगे। (शोर) हरियाणा की जनता आज प्रगति चाहती है। हरियाणा की जनता को आप गुमराह नहीं कर सकते। (शोर)

श्री बलबीर सिंह (महम) : चेयरमैन साहब, आपने मुझे बोलने के लिए समय दिया उसके लिए मैं आपका आभार प्रकट करता हूं। चौ० बीरेन्द्र सिंह जी बुजुर्ग और सीनियर नेता हैं, इसलिए हम उनका आदर करते हैं। ये हाउस में ऐसी बातें कह रहे हैं जैसे इसी स्टैण्ड पर ये और इनकी पार्टी खुद कायम हो। 1991 के चुनावों में हरियाणा प्रदेश में चौ० बीरेन्द्र सिंह के मुख्यमंत्री के रूप में कांग्रेस द्वारा वोट मांगे गए थे। इन्होंने पीपल के पत्ते पकड़े कि कोई दूसरा मुख्यमंत्री नहीं बनने देंगे। चौ० बीरेन्द्र सिंह भजन लाल जी की वजारत में शामिल हो गए। इनको भाषण दे कर नहीं बल्कि शरीर पर कंट्रोल करके कोई बात कहनी चाहिए।

श्री सभापति : चौ० बीरेन्द्र सिंह जी, मैं आपकी जानकारी के लिए बताना चाहता हूं। चौटाला साहब सदन में बैठे हैं आप इनकी आफिस में मिलें और इनसे पूछें कि क्या कभी मेरी इन से फोन पर बात हुई है ? केवल आपको ही बोलने का अधिकार नहीं है आप धर्मराज के सुपुत्र नहीं हैं कि आप जो कह रहे हैं वही ठीक है बाकि झूठ बोलेंगे। मेरा चरित्र आपकी तरह नहीं है कि सार्वजनिक तौर पर किसी को गालियां दो और रात को उनको माई बाप समझो। चौधरी बंसी लाल जी से पूछना कि क्या मेरी उनसे आज तक कोई बात हुई है ? अगर आप धर्म ईमान में यकीन की बात करते हैं तो या तो धर्म ईमान आप यहां रखो या फिर मैं रखता हूं। मेरी चौटाला साहब से कोई बात नहीं हुई। आप यहां 2 शब्द बोल लेते हैं तो इसका मतलब यह नहीं कि जो आपने बोल दिया वह कानून बन गया। आप हरियाणा की राजनीति में सबसे बड़ा धब्बा हैं। आपके उसूल क्या हैं जो आप बार-2 उसूलों की बात करते हैं। हरियाणा की राजनीति में कौन से ऐसे उसूल है जो आपने साबित करके बताए। कौन सी सच्चाई के रास्ते पर आप चले हैं। आप एक-एक मिनट के बाद सिद्धान्तों की बात करने लग जाते हैं। (विघ्न एवं शोर)

श्री ओम प्रकाश चौटाला : मैंने आपको कहा है कि आज किसी और बात को मत छेड़ो। आज का दिन मेरे ऊपर खर्च करो।

श्री बीरेन्द्र सिंह : सभापति जी, आज हरियाणा के अंदर जन साधारण सरकार से सबसे बड़ी अपेक्षा, सबसे बड़ी उम्मीद यही रखता है कि उसे पूरी प्रोटैक्शन मिले। जिस आदमी को ट्रांसफर, नौकरी, कोटे का प्लाट या परमिट आदि से कुछ लेना देना नहीं होता वह यही चाहता है कि उसे पूरी तरह से प्रोटैक्शन मिले तथा उसे समाज में किसी तरह की असुरक्षा महसूस न हो। अगर आप उसको प्रोटैक्शन देने में सफल हो गये तो बहुत अच्छा होगा। हरियाणा प्रदेश के अंदर ऐसा नहीं होना चाहिए कि जिस तरह से मण्डल आयोग की रिपोर्ट को लेकर बसें फूंकी गई थी हो सकता है कुछ मनचले युवक ऐसा कर देते हों, यूनियनों के लीडर ऐसा फैसला कर लेते हों, लेकिन यह बात सोचने की है कि वह प्रौपर्टी किसकी है अगर गवर्नमैंट स्पौंसर्ड वायलैंस होगा then the very thesis of the Government is demolished. Sir, this impression has gone around when this Government came into existance. It was the feeling and I don't want to quote instances here but we

[श्री वीरेन्द्र सिंह]

must concentrate and give this assurance to the people at large. This is the Government which is headed by Shri Om Parkash Chautala which is being supported by BJP and Democratic people like you should assure the people that they will be given full protection. सभापति जी, आज शहरी लोग सबसे बड़ी बात यही सोचते हैं कि कोई गुंडा या बदमाश उनसे झगड़ा न करे और वे आराम की जिंदगी जियें। जब कोई सरकार यह काम करने में सफल हो जायेगी उसी सरकार को सफल सरकार मानेंगे, दूसरी चीजें तो बाद की बात हैं लोगों को बिजली मुफ्त दी जाये या कम दरों पर दी जाये, नहरों में पानी आया या नहीं आया, शिक्षा पद्धति किस तरह की हो, शिक्षा के लिए कौन-कौन से नये स्कूल और कॉलेज बनाये जायें या कहां-कहां अस्पताल आदि बनाये जायें। आज जो हालात हरियाणा प्रदेश मे हो गये हैं वे सभी प्रोहिबिशन के कारण हुए हैं। इनकी जननी, प्रोहिबीशन है। आज हरियाणा को वैस्टर्न यू०पी० से भी ज्यादा क्राईम वाला प्रदेश समझा जाता है। सभापति जी, जिस पोलिसी के कारण आज हरियाणा प्रदेश में ऐसे हालात हुए हैं उसके लिए शर्मा जी की पार्टी भी जिम्मेवार है, इसमें इनकी पार्टी की भी अहम भूमिका रही है। ये अपनी जिम्मेवारी से बच नहीं सकते। आज चौधरी बंसी लाल सरकार से समर्थन वापिस लेकर ये हीरो नहीं बन सकते। श्री राम बिलास शर्मा जी को उस वक्त अपना इस्तीफा दे देना चाहिए था जिस वक्त इनके गांव मंडियाली में इनके घर आग लगी थी। सभापति जी, लॉ एंड आर्डर की स्थिति ऐसी होनी चाहिए जिसमें हरियाणा की जनता यह महसूस करे कि वह सुरक्षित है और मुख्य मंत्री महोदय की यही सबसे बड़ी जिम्मेवारी भी है। अगर मुख्यमंत्री महोदय हरियाणा को नई दिशा में ले जायेंगे तो उसके लिए हमें भी उनका कायल होना पड़ेगा और जनता भी इनका साथ देगी। सभापति जी, चाहे चौ० बंसी लाल जी की सरकार हो, चाहे चौटाला साहब की सरकार हो और चाहे हमारी पार्टी की सरकार हो, जो भी सरकार गरीब विरोधी होगी, उस सरकार का हम डटकर विरोध करेंगे। हम चाहेंगे कि हरियाणा के अन्दर एक-एक आदमी को सुरक्षा प्रदान हो। हम चाहेंगे कि हरियाणा के अंदर जो हमारे भाई शहीद हुए हैं उनके परिवारों को स्थापित करने का कार्य स्थाई हो, वह तरीका ऐसा न हो जिसका मैंने जिक्र किया था। इसलिए हम चाहते हैं कि हरियाणा की राजनीति का सुधारीकरण हो। अगर आपकी पार्टी इन से गठबंधन करती है तो उस पर खरे उतरें और हो सके तो आप इन्हें अपनी पार्टी में शामिल कर लें ताकि लोगों को यह न लगे कि कौन जायेगा और किस की तरफ जायेगा। सभी राजनीतिक लोगों को इस बात का अहसास होने लगे कि हमने पिछले 25 सालों में क्या गलतियां की हैं और आयाराम गयाराम कहलवाने वाले लोगों को हम आइडैंटीफाई करें। लेकिन आज तो बदकिस्मती यह है कि दोबारा चुनाव वही जीत कर आते हैं जो ज्यादा दल बदल करते हैं।आज लोगों को भी अपनी जिम्मेदारी को निभाना है। हम हरियाणा के अन्दर एक परिपक्व राजनीतिक मोड़ ला सकें इसके लिए लोगों की भावनाओं के अनुरूप ही राजनीतिक लोगों को काम करना चाहिए और लोगों का डर उनके मन में होना चाहिए तभी वे सही राजनीतिक दिशा में काम कर सकते हैं। अगर हम यह समझें कि हम तो कंट्रोली हैं इसलिए हमें फलां-फलां कौम की वोट मिलनी ही है और चौटाला साहब यह समझें कि हमारे जो-जो वोटर्ज हैं वे तो हम को वोट देंगे ही चाहे हम कुछ करें या न करें तो फिर हम लोगों की सेवा नहीं कर रहे होंगे बल्कि हम राजनीतिक तौर पर एक पाप कर रहे होंगे। आपका बहुत-बहुत धन्यवाद। सभापति जी अगर भावावेश में आपकी शान के खिलाफ मैंने कोई गलत शब्द कहे हों तो उसके लिए मैं माफी चाहता हूं। सभापति जी, हमें एक नई सोच को पैदा करना होगा और जैसे आपने एक-दो ब्यान पिछले दो-तीन दिन में दिये अगर इसी दिशा में आप प्रयास करेंगे तो फिर हरियाणा के लोगों को नई दिशा दे सकेंगे और एक नई शुरूआत होगी।

श्री धीरपाल सिंह (बावली) : सभापति जी, हाउस के नेता ने विश्वास मत अर्जित करने के लिये जो प्रस्ताव रखा है मैं उसके पक्ष में बोलने के लिये खड़ा हुआ हूं। जब से इस प्रस्ताव पर चर्चा शुरू हुई है कई माननीय साथियों ने उस चर्चा में हिस्सा लिया और यह दर्शाने की कोशिश की है कि वाकई ही इस हाउस में और हरियाणा प्रदेश में हरियाणा प्रदेश की जनता का कोई शुभ चिन्तक है तो केवल वही लोग हैं। सरकार के गठन में उन्होंने शंका जाहिर की। संविधान के आर्टिकल 163 का सहारा लिया। हमारी पार्टी के सदस्य प्रो० सम्पत सिंह, राम बिलास शर्मा जी और मैं भी एक बात मानता हूं (शोर एवं व्यवधान) सभापति जी, मैं निवेदन कर रहा था कि हमारी सरकार का गठन संविधान के अन्तर्गत हुआ और महामहिम गवर्नर महोदय ने अपने दायित्व की पालना करते हुए बहुमत के आधार पर आदरणीय चौधरी ओम प्रकाश चौटाला को आमंत्रित किया और 24 तारीख को सवा ग्यारह बजे हरियाणा प्रदेश के मुख्य मंत्री के रूप में शपथ दिलाई। उस समय सरकार का गठन संविधान के अन्तर्गत हुआ। महामहिम 19.00 बजे राज्यपाल महोदय ने अपने दायित्व का पालन करते हुए बहुमत के आधार पर आदरणीय चौधरी ओम प्रकाश चौटाला जी को सरकार बनाने के लिए इन्वाइट किया और 24 तारीख को 11.15 बजे चौधरी ओम प्रकाश चौटाला जी को हरियाणा प्रदेश के मुख्य मंत्री के रूप में शपथ दिलाई। उसके बाद 24 तारीख 11.15 बजे से ले कर आज 27 तारीख को दो बजे के बाद विश्वासमत अर्जन होने का प्रस्ताव आया है। इस थोड़े से समय में बहुत लम्बी चौड़ी बातें भिन्न-भिन्न पार्टीज के विरोधी पक्ष के माननीय सदस्यों ने कहीं उससे साफ जाहिर होता है कि वे माननीय सदस्य अन्दर से इस सरकार के गठन से भयभीत हैं। उन माननीय सदस्यों को इस बात की जलन है कि हरियाणा प्रदेश के बहादुर विधायकों ने अपनी सरकार का गठन किया है। आज कांग्रेस पार्टी आदर्श की बात कर रही है। कांग्रेस पार्टी के लोग उस बात को भूल गए कि जब केन्द्र में बाजपेयी जी की सरकार विश्वास मत हासिल नहीं कर सकी और वह सरकार गिर गई तो उस समय दिल्ली में सरकार बनाने के लिए कांग्रेस पार्टी के लोगों की भागदौड़ शुरू हुई। उस समय पहले कांग्रेस पार्टी के लोगों ने एक बात यह रखी कि केन्द्र की सरकार में किसी दूसरे दल को कैबिनेट में सम्मिलित नहीं किया जाएगा। जब केन्द्र में कांग्रेस पार्टी की सरकार बनती दिखाई नहीं दी तो कांग्रेस पार्टी के नेताओं और इनकी पार्टी की अध्यक्षा, उनका मैं नाम नहीं लेना चाहूंगा वे सभी सीमाएं लांघ कर भी जब सरकार नहीं बना पाए तो वे औंधे मुंह गिरे। चेयरमैन साहब, चौधरी बीरेन्द्र सिंह और चौधरी खुर्शीद अहमद जो सदन में नहीं हैं वे दोनों मेरे से बहुत सीनियर हैं। वे दोनों पार्लियामैंट के सदस्य भी रहे हैं। वे दोनों इस हाउस में भी मेरे से बहुत पहले आए हैं। मैंने इस विधान सभा का एम०एल०ए० बनने के बाद अगर किसी पार्टी को बार-बार व्हिप जारी करते देखा है तो वह कांग्रेस पार्टी है। चेयरमैन साहब, 25 जून को इसी हाउस में जैसे ही विश्वासमत पर चर्चा शुरू हुई उस समय से ले कर उस सरकार द्वारा विश्वासमत हासिल करने तक कांग्रेस पार्टी ने तीन बार व्हिप जारी किया। तीन बार व्हिप जारी करने के पीछे क्या साजिश थी, क्या था क्या नहीं था यह मुझे नहीं पता लेकिन उस दिन कांग्रेस पार्टी ने तीन बार व्हिप जारी किया था। ऐसा क्यों हुआ यह वह जानें यह उनका सब्जैक्ट है। मैं यह बात कहना चाहता हूं और सैद्धांतिक बात यह है कि किसी भी पार्टी का व्हिप एक बार ही जारी होता है और उसका कोई महत्व भी होता है। अगर व्हिप बार-बार जारी हुआ तो उसके पीछे इनका स्वार्थ था। जो इनका स्वार्थ था उसी के लिए कांग्रेस पार्टी ने चौधरी बंसी लाल जी की सरकार को समर्थन दिया। आज चौधरी बंसी लाल जी हाउस में नहीं हैं। उन्होंने 25 जून को इस सदन में मुख्य मंत्री के रूप में एक बात कही थी कि मैं सोनिया गांधी जी का एहसानमंद हूं और मेरी 7 पीढ़ी उनकी एहसानमंद रहेगी आज उन्होंने मेरी सरकार बचाई। लेकिन 25 तारीख के बाद हरियाणा प्रदेश की जनता ने महसूस किया कि कांग्रेस पार्टी ने बहुत बड़ी गुस्ताखी की है, बड़ी गलती की है और हरियाणा प्रदेश

[श्री धीरपाल सिंह]

की जनता के साथ उन्होंने धोखा किया है। कांग्रेस पार्टी ने अपने स्वार्थ के वशीभूत हो कर उस समय चौधरी ओम प्रकाश चौटाला की सरकार को बनने से रोकने के लिए ऐसा किया। कांग्रेस पार्टी ने ऐसा काम कर दिया जो हरियाणा प्रदेश की जनता नहीं चाहती थी। कांग्रेस पार्टी ने अपने स्वार्थ के लिए जो काम किया उसके लिए कांग्रेस पार्टी को बहुत बुरे परिणाम भुगतने पड़ेंगे।

श्रीमती करतार देवी : ऑन ए पाएंट ऑफ आर्डर सर, चेयरमैन साहब, भाई धीर पाल जी ने हमारी पार्टी के बारे में कहा कि हम सैन्टर में अपनी पार्टी की सरकार बनाना चाहते थे और हम यहां पर आदर्श की बात कर रहे हैं। मैं इनको बताना चाहूंगी कि सैन्टर में सरकार का गठन इसलिए नहीं हो पाया कि कांग्रेस की कंडीशन थी कि हम सरकार बनाएंगे और बाकी दल बाहर से समर्थन देंगे। जो लोग सैन्टर की सरकार तोड़ने में कांग्रेस पार्टी के साथ थे वे बाद में समर्थन देने से क्यों मना कर गए, यह तो वे जाने। यह तो सभी को पता है कि हमारे यहां पर गठबंधन सरकार की राजनीति विफल रही है। ये सैन्टर में ममता-समता की लड़ाई में ही उलझे रहे। दूसरी बात इन्होंने यहां के बारे में कही कि यहां पर कांग्रेस पार्टी ने तीन बार व्हिप जारी किया था। मैं बताना चाहूंगी कि सिर्फ एक बार व्हिप जारी किया था, तीन बार नहीं। हमारे यहां पर सभी को बोलने का और अपनी बात कहने का पूरा मौका दिया जाता है। इनकी पार्टी की तरह नहीं कि विधायकों को पीट-पीट कर भगा दिया जाए। पिछली सरकार के समय में इन लोगों ने क्या किया था, उसको याद करो। हमने तो बंसी लाल जी को नहीं कहा था कि आप दोनों पार्टियों ने इकट्ठा चुनाव लड़ा था अब एक भाग अलग हो गया है इसलिए जनता के पास जाकर दोबारा से मत हासिल करें। चेयरमैन सर, अंत में मैं यही कहना चाहूंगी कि इनका यह कहना गलत है कि हमने तीन बार व्हिप जारी किया। व्हिप केवल एक बार जारी किया गया था। (विघ्न) ****

श्री सभापति : बहन करतार देवी जी अब आगे जो बात कह रही हैं वह रिकार्ड न की जाये।

श्री धीरपाल सिंह : सभापति महोदय, बहन जी ने कहा कि ये सरकार बनाने के इच्छुक नहीं थे, मैं तो यह कहूंगा कि ये लोग तो सरकार बनाने के लिए तड़प रहे थे।

श्रीमती करतार देवी : हरियाणा में तो सरकार बनाने की हमने सोची ही नहीं, फिर तड़पने वाली बात कहां से आ गई।

श्री धीरपाल सिंह : हरियाणा में कांग्रेस पार्टी द्वारा जो ड्रामा हुआ उसको सारा प्रदेश, इस प्रदेश का हर बहन-भाई व छोटा-बड़ा सभी जानते हैं। इनके स्पष्टीकरण से लोग इनको माफ करने वाले नहीं हैं। (विघ्न) चेयरमैन साहब, एक बार विश्वास मत का समर्थन करने के बाद 20-25 दिन के अन्दर ही कांग्रेस पार्टी ने जो खेल खेला उसे हरियाणा की जनता अच्छी तरह से जानती है। (विघ्न) अपने स्वार्थ के लिए इन्होंने चौधरी बंसी लाल जी की पार्टी को समर्थन दिया था। यदि इनके कहने के अनुसार चौधरी बंसी लाल कांग्रेस में शामिल हो जाते तो उनकी सारी बुराई धुल जाती। इन्होंने 25 तारीख को समर्थन किया और फिर बाद में वापस लिया, इससे सारी जनता वाकिफ है। कांग्रेस पार्टी ने चौधरी बंसी लाल को एक साजिश के तहत धोखा दिया। कांग्रेस पार्टी ने सबसे पहले चौधरी चरण सिंह जी को धोखा दिया, उसके बाद चन्द्रशेखर, देवेगौड़ा और इन्द्रकुमार गुजराल को भी धोखा दिया। कांग्रेस पार्टी धोखा देने की जननी है, जहां स्वार्थ सिद्ध होता है यह पार्टी उस तरफ जाती है। भाई जसविन्द्र सिंह जी कहते रहे हैं, मैं नहीं चाहता कि उस भावना का जिक्र आए। 1984 के दंगों को हमने देखा है (विघ्न एवं शोर) उन दंगों में बेकसूर लोगों को मारने का काम किया गया था। ये लोग अपना वह समय भूल गये हैं (विघ्न एवं शोर)

* चेयर के आदेशानुसार रिकार्ड नहीं किया गया।

श्री राम बिलास शर्मा : चेयरमैन सर, इस मामले में इन्क्वायरी हुई थी तथा कांग्रेस के एम०पीज० को सजा भी हुई थी। धर्मपाल और एच०के०एल० भगत को सजा भी हुई थी और वे तिहाड़ जेल काट कर आए थे (विघ्न एवं शोर)

श्री बीरपाल सिंह : चेयरमैन सर, शुरूआत उधर से हुई है। कैप्टन साहब को भी अपना वक्त याद होगा। जो ड्रामा हुआ था उसे हमने भी महसूस किया है और उसको देखा भी है ये पाक और साफ होने की बात कह रहे हैं। इनको इस बात का भी कष्ट था कि सरकार बनने के बाद चौधरी ओम प्रकाश चौटाला जी ने शहीदों के मुआवजे की राशि सबसे ज्यादा कर दी। 25 तारीख तक हरियाणा प्रदेश की आबादी के हिसाब से शहादतें सबसे ज्यादा थीं और शहीद होने वाले के परिवार को पहले 50 हज़ार तमाम वर्ग के अधिकारियों को एक-एक लाख व डेढ़ लाख या दो लाख रैंक के आधार पर मिलता था। हरियाणा प्रदेश की जनता और हरियाणा प्रदेश का विरोधी पक्ष इस बात की मांग करता था कि कारगिल की लड़ाई में जो शहीद हुए हैं उनके परिवारों को रैंक के आधार पर आर्थिक मदद नहीं मिलनी चाहिए। इस बात का कुछ प्रैशर पड़ा और सरकार ने कुछ राशि प्रैशर पड़ने के बाद बढ़ाई। जैसे कि पिछली सरकार की कारगुजारी रही है वह सबको पता है। मैं यह नहीं कहता की कोई कार्य नहीं हुआ। तीन साल तक सफाई कर्मचारी, बिजली कर्मचारी, रोडवेज कर्मचारी इस सरकार से दुखी रहे। इस सरकार के काम करने के बारे में मैं एक छोटी सी घटना का ज़िक्र करना चाहूंगा। पोपला गांव में हरियाणा विकास पार्टी के सांसद किसी शिलान्यास के सिलसिले में गए हुए थे। पोपला से बादली तक सड़क का कोई भाग नहीं। उन लोगों ने सांसद महोदय से यह कहा कि साहब बहादुर इस सड़क की रिपेयर करवा दीजिए। चौधरी कंवल सिंह जी भी उस समय मंत्री थे और उस सभा में थे। ये लोग लोकतन्त्र की दुहाई देते हैं क्या वोट देने का अधिकार वोट देने वाले को नहीं है ? यह वोट देने वाले की मर्जी है और उसका अधिकार है कि वह अपना वोट किस को दे। उन्होंने वहां कहा कि तुमने अपना वोट विपक्षी एम०एल०ए० को डाला है और सड़क की मुरम्मत हम से चाहते हो। मैं तो उस सड़क में गढ्ढे डलवा दूंगा। मैं यह बात कह रहा हूं अगर वह असत्य है तो इस बारे में हाउस की कोई भी कमेटी इसकी जांच कर लें। उस वक्त लोगों ने कहा था कि तेरे मौसा ने चार बार गढ्ढे गुडवाए हैं और पांचवीं बार भी गुडवा देंगे। चेयरमैन सर, मैं यह बात किसी भावावेश में नहीं कह रहा हूं। जो विकास कार्य पिछले तीन सवा तीन साल के अर्से में हुए हैं उन पर विचार करने की जरूरत है लेकिन इस बात पर कोई चिन्तन नहीं किया जाता है। 25 तारीख को तत्कालीन मुख्य मंत्री जी ने हाउस में बैठ कर कहा कि मेरा कसूर क्या था ? चौधरी बंसी लाल जी और हरियाणा विकास पार्टी के साथियों से मैं कहना चाहूंगा कसूर इनका था कि इन्होंने हरियाणा प्रदेश की जनता के साथ जो वायदे किए थे वे पूरे नहीं किये। (विघ्न) ये लोग सरकार के मुखिया थे, इनकी पार्टी की सरकार थी (विघ्न) चेयरमैन साहब, जो वायदे हुए थे वे पूरे नहीं हुए। सैनी साहब बड़े सज्जन, नेक और अच्छे आदमी हैं लेकिन सवा तीन साल तक इनको याद नहीं आया लेकिन जब कोठी गई, झण्डी हट गई तो इनको एस०वाई०एल० की याद आई। सवा तीन साल इन्होंने कभी कष्ट नहीं किया कि वे वहां पर जा कर देखें कि क्या कोई काम हो रहा है ?

श्री अत्तर सिंह सैनी : सर, मेरा प्वायंट ऑफ आर्डर है।

श्री बीरपाल सिंह : सर, मैंने इनके खिलाफ कोई आरोप नहीं लगाया है।

श्री अत्तर सिंह सैनी : * * * *

---

* चेयर के आदेशानुसार रिकार्ड नहीं किया गया।

श्री सभापति : सैनी साहब, आप बिना इजाजत के बोल रहे हैं। ये जो कुछ भी बोल रहे हैं वह रिकार्ड नहीं किया जाए।

श्री बीरपाल सिंह : सर, मैं यह बात ऑन रिकार्ड कह रहा हूं कि किसी भी मंत्री ने चाहे वह सैनी साहब हों, या कोई दूसरे मंत्री हों उन्होंने पंजाब के इलाके में जो एस०वाई०एल० का हिस्सा है, वहां पर जाने की कोशिश नहीं की। इनका दूसरा वायदा बेरोजगारी को दूर करने का था, बेरोजगारी के बारे में बहन करतार देवी ने बड़ी लम्बी चौड़ी बात कही। आज बेरोजगारी बढ़ रही है। चेयरमैन साहब आज देश की बढ़ती हुई आबादी बेरोजगारी के सबसे ज्यादा विस्फोटक हालात पैदा कर रही है। इस बढ़ती हुई आबादी के लिए हम सभी दोषी हैं। इस बारे में कोई माने या न माने लेकिन अगर पोलिटिकल आदमी बढ़ती हुई आबादी के लिए चिन्ता व्यक्त नहीं करता है तो आने वाले समय में बढ़ती हुई आबादी सबसे ज्यादा घातक सिद्ध हो सकती है। सर, ज्यों-ज्यों आबादी बढ़ेगी, उसी हिसाब से मांगें भी बढ़ेंगी। यहां पर किसी ने कह दिया कि नौजवानों को नौकरियां भी देनी चाहिएं। सर, 1991 से 1996 तक हरियाणा में कांग्रेस का राज रहा और आप भी हमारे साथ अपोजिशन में बैठते थे। आपको भी पता है कि उस वक्त कांग्रेस के राज्य में नौकरियां नीलाम होती थीं। क्या उस समय की सरकार का दायित्व नहीं बनता था, उसकी जिम्मेवारी नहीं बनती थी कि वह सरकार लोगों को योग्यता के आधार पर नौकरियां देती ? अब हमारी सरकार आई तो सारी जिम्मेवारियां, सब्जबाग, सारे उद्देश्य इकट्ठे हो गए। बहन जी, हम इस बात को कबूल करते हैं कि यह हमारा दायित्व बनता है। सरकार हमारी बनी है और अच्छा प्रशासन देना हमारी जिम्मेवारी बनती है। कानून व्यवस्था को सुधारना, योग्यता के आधार पर नौकरियां मुहैया करवाना हमारी जिम्मेवारी बनती है। पिछले तीन सालों के दौरान किसानों के गन्ने की जो पेमेंट नहीं हुई वह पेमेंट करवाना और किसानों के साथ जो ज्यादतियां हुई हैं उनको दूर करना हमारी जिम्मेवारी बनती है। इसके साथ-साथ विद्यार्थी संगठनों के जो चुनाव नहीं हुए तथा विद्यार्थियों की जो भी मांगें हैं उनको पूरा करने की हम कोशिश करेंगे। हरियाणा प्रदेश के लोगों को अच्छा प्रशासन देना हमारी जिम्मेवारी बनती है। हम इसको कबूल करते हैं। हम अपनी जिम्मेवारी से भाग नहीं रहे हैं। जिस तरह से एच०वी०पी०. के साथी सवा तीन साल मौज मस्ती करके भाग गए और कांग्रेस भी भाग गई। हम कहते हैं कि सुझाव देना अच्छी बात है लेकिन उसको लागू करना बहुत ही कठिन काम है। चेयरमैन साहब, ईमानदारी बहुत बढ़िया चीज है। ईमानदारी पड़ौसी के लिए होनी चाहिए। पड़ौसी के लिए ईमानदार रहना बहुत अच्छी बात है। सर, हमारी सरकार का गठन 24 तारीख को 11.15 बजे हुआ। आज अगर ये लोग यह कहते कि चौधरी ओम प्रकाश चौटाला ने बी०जे०पी० और एच०वी०पी० (डैमोक्रेटिक) के साथ मिलकर जो अहम फैसले किए हैं हम उनका स्वागत करते हैं तो अच्छा होता। यहां पर कांग्रेस के भाईयों ने कहा कि अग्रोहा मैडिकल कालेज की ग्रांट किस के समय में बंद हुई। मैं इनको बताना चाहूँगा कि चौधरी देवी लाल ने मुख्य मंत्री होते हुए सरकार की तरफ से एक रूपया प्रति एकड़ के हिसाब से अग्रवाल समुदाय को जमीन दी थी। चौधरी देवी लाल जी की सोच थी कि अग्रोहा अग्रवाल समाज के लिए एक पूजा का स्थान है, वहां पर चिकित्सा शिक्षा का गठन होना चाहिए। उन्होंने बिल्डिंग के लिए मैचिंग ग्रांट की व्यवस्था की और जमीन फ्री में दी। चौधरी देवी लाल की जब तक सरकार रही, उसके लिए जितनी आशा वहां का समाज करता था उसमें ज्यादा सहयोग दिया। एच०वी०पी० के लोग कांग्रेस पर दोष लगा रहे हैं कि उनके राज में यह ग्रांट बंद हुई। इस बारे में बारीकी का हिसाब-किताब तो भाई सम्पत सिंह के पास होगा लेकिन कांग्रेस पार्टी ने और उसी परिपाटी पर चलते हुए एच०वी०पी० ने उन बच्चों के साथ खिलवाड़ किया है, धोखा किया है जिनका वहां पर चयन किया गया था और जो वहां पर ट्रेनिंग ले रहे थे। चेयरमैन सर, ग्रांट बंद होने के बाद वह संस्था बिल्कुल लाचार हो गयी। किसी भी संस्था के ऊपर

जो पार्टी राजनीति करती है वह पार्टी राज करने के लायक नहीं है इसलिए उस पार्टी को कोई और काम शुरू कर देना चाहिए और राजनीति छोड़ देनी चाहिए। सर, अगर इंस्टीच्यूशन के साथ कोई भी राजनीति करता है तो उससे गंदा काम मैं कोई नहीं मानता क्योंकि राजनीति करने के लिए और बहुत से मुद्दे हैं। राजनीति आमने सामने की होनी चाहिए। चरित्र हनन की राजनीति को मैं अच्छा नहीं मानता। अगर कोई बुरा काम करेगा तो निश्चित रूप से लोग उसे सजा देंगे। हरियाणा बनने के बाद वे लोग चले गए जिन्होंने लोगों के साथ नाइंसाफी की थी और वे लोग रह गये जिन्होंने लोगों के साथ इंसाफ किया था। चेयरमैन सर, महेन्द्रगढ़ जिले में एक शहीद सैनिक की विधवा पत्नी शहीद की 13वीं के बाद सारी अनुदान राशि लेकर चली गयी जिसकी वजह से उस शहीद के मां-बाप लाचार हो गये थे। जब चौटाला साहब एवं रामबिलास जी वहां गए होंगे तो उस शहीद के मां-बाप ने रोते हुए कहा कि हमारा तो संसार ही उजड़ गया है हमारा कोई सहारा नहीं रहा। लेकिन उस वक्त राम बिलास जी या चौटाला साहब इतने सक्षम नहीं थे कि वे उनके लिए कुछ कर पाते। परन्तु जैसे ही हमारी सरकार का गठन हुआ वैसे ही हमारी सरकार ने यह अनुदान राशि पांच लाख रूपये से बढ़ाकर दस लाख रूपये कर दी। अब उसमें से अढ़ाई लाख रूपये हर शहीद सैनिक की माँ को और अढ़ाई लाख रूपये उसके बाप को एवं पांच लाख रुपये उसकी विधवा को दिए जाएंगे। इसके साथ ही उसके बच्चों की शिक्षा की जिम्मेदारी भी ली गयी है। चेयरमैन सर, लड़ाई 1962 में भी हुई, 1965 में भी हुई और 1971 में भी हुई। उस समय हम छोटे-छोटे हुआ करते थे। उस समय तो शहीद हुए सैनिक की विधवा को एक सिलाई मशीन दी जाती थी ताकि वह अपना गुजारा कर सके लेकिन आज केन्द्र सरकार ने भी उन शहीदों के परिवारों को आर्थिक रूप से मजबूत बनाने के लिए मदद देने की घोषणा की है कि उनके परिवार वालों को गैस की ऐजेंसियां पैट्रोल पम्प के लाईसेंस या तेल के डिपो खोलने के लाईसेंस यानी कोई न कोई सुविधा दी जाएगी। इसके साथ ही आजादी के बाद पहली बार ऐसा हुआ है कि कारगिल से लेकर शहीदों के गांवों तक उनके शव हवाई जहाज से पहुंचाए गए हैं। उसी का परिणाम यह है कि गांव में जब किसी शहीद का शव पहुंचता था तो वहां पर हजारों की संख्या में बहन बेटी इकट्ठे हो जाते थे और कहते थे कि हम वहां तो नहीं जा पाए लेकिन हम इन शहीदों के प्रति अपने को नत मस्तक करते हैं। (विघ्न) एक तरफ हमारी सरकार ने जहां यह अनुदान राशि बढ़ायी वहीं दूसरी तरफ अग्रोहा मेडिकल कॉलेज की ग्रांट बहाल की। सैनी साहब बिजली पानी की बात कर रहे थे। मैं इनको बताना चाहता हूं कि अब चुनावों की घोषणा हो गयी है इसलिए अब हमारी सीमाएं हैं। (विघ्न) शहादत पर कोई राजनीति नहीं है और अग्रोहा मैडीकल कॉलेज की ग्रांट बहाल करने की मांग 1991 से 1998 तक लोग कर रहे थे। यह एक पुरानी मांग थी।

चेयरमैन साहब, चौधरी कंवल सिंह जी 1977 में जनता पार्टी के साथ थे और हमारे से सीनियर थे, फिर लोकदल में हमारे साथ थे व हमसे सीनियर थे लेकिन इनका जुगाड़ जहां बैठा वहां बैठा लिया। कभी कांग्रेस में बैठ गया, कभी चौधरी बंसी लाल जी के साथ बैठ गया। यह सूत की राजनीति है। चेयरमैन साहब, वर्तमान राजनीति सूत कपूत की रह गई है जहां जाते हैं वहां के गीत गाना शुरू कर देते हैं। हमारी सरकार हरियाणा की जनता की इच्छाओं पर खरा उतरकर दिखायेगी। आपके शासन काल की (इस सम्मन सभापतियों की सूची में से एक सदस्य श्री गणेशी लाल चेयर पर पधारीन हुए।) तरह नहीं कि विपक्षी विधायकों के हल्के में न बिजली गई न पानी गया। आपको भगवान ने भी नहीं बख्शा। मौसम विभाग ने भविष्यवाणी की थी मौनसून समय पर और अच्छा आएगा लेकिन 30 जून से 21 जुलाई तक एक बूंद वर्षा भी नहीं हुई जिसके फलस्वरूप कृषि क्षेत्र में बिजली की डिमान्ड बढ़ गई और तीस तारीख से पहले जो बिजली मिलती थी वह भी मिलनी बंद हो गई। सांगवान साहब, आप सच्चाई से भाग नहीं सकते हैं। आप हरियाणा प्रदेश के किसी भी गांव में जाकर इंक्वायरी करवा लें ? आखिर बिजली कहां

[श्री धीरपाल सिंह]

गई ? हरियाणा प्रदेश के मुख्यमंत्री कहते थे कि मैं तो बिजली देता हूं बिजली वालो को बांध दो, ये बिजली आगे नहीं देते हैं। बिजली वाले कोई सांगवान का भाई है, कोई धीरपाल का भाई है। क्या किसी को हम अमरीका से इम्पोर्ट करके लाए हैं ? कोई मुख्य मंत्री यह कहें कि बिजली वालों को मारो, उनको बांध दो यह अच्छी बात नहीं है। कानून और व्यवस्था कायम रखने की जिम्मेदारी आखिर किसकी है ? सारे प्रदेश का नाश कर दिया। चौधरी बंसी लाल मेरे जिले की प्रीवैंसिज कमेटी के चेयरमैन थे। हमारे जिले की शराबबंदी के नाम पर जो हालत हुई उसके बारे में क्या कहें। जैसा चौधरी बीरेन्द्र सिंह ने कहा कि रोहतक, झज्जर और सोनीपत इन तीन जिलों में दो साल के दौरान शराबबंदी की वजह से हालत बहुत खराब हुई। वैस्टर्न उत्तर प्रदेश से घुस आए लोगों द्वारा अपराध बढ़े। जो जवान नौकरी की इच्छा रखते थे उनके साथ नौकरी के नाम पर राजनीति की गई थी। कहा गया था कि गैस एजेन्सी दी जाएंगी। चौपाल में बैठकर नौकरियों के पत्र बांटे गए थे वो लोग शराब बेचने पर मजबूर हो गये थे, सब पर केस बने हुए हैं, 17 साल से लेकर 27 साल तक की उम्र के किसान के बेटे, गरीब के बेटे शराब बेचने का काम करते रहे, सरकार आंख मीचकर बैठ गई। मैंने चौधरी बंसी लाल जी से कहा भी कि एस०पी० व डी०सी० आपको गुमराह कर रहे हैं मगर उन्होंने मेरी एक नहीं सुनी। डी०सी० ने कहा कि 80 परसैंट दारू बंद हो रही है जबकि वहां शाम के समय दारू के ट्रक के ट्रक भरकर आते थे। यह जिम्मेदारी सरकार की बनती है उन दो सालों के दौरान मेरे विकास पार्टी के दोस्तों, जो बातें नहीं होनी चाहिए थी वह हुई और फलस्वरूप हरियाणा प्रदेश का युवा वर्ग पथ भ्रष्ट हो गया और वही लोग आज अपहरण कर रहे हैं। दारू खुल गई तो उनका काम बन्द हो गया और वे पैसा कमाने के लिए दूसरे रास्ते अपनाने लगे जैसे डकैती का, किडनिंग का। ये दूसरे काम उन्होंने इस बात के लिए किए क्योंकि एच०वी०पी० के लोगों ने प्रदेश का माहौल खराब कर दिया था और ये इस बात के लिए दोषी भी हैं और आने वाला समय एच०वी०पी० को कभी माफ नहीं करेगा।

श्री सभापति : धीरपाल जी थोड़ा वाईड-अप कीजिए।

श्री धीरपाल सिंह : सभापति जी, 24 तारीख को हमारी पार्टी की सरकार बनी। इन विपक्ष के भाइयों को चाहिये तो यह था कि जैसे ही हमारे सदन के नेता ने अपना विश्वास-मत का प्रस्ताव इस सदन में रखा तो इनको उस प्रस्ताव का समर्थन करना चाहिए था क्योंकि हम लोगों ने अच्छे काम करने का वायदा प्रदेश की जनता से किया है। (विघ्न)

श्री धर्मबीर गाबा : अच्छे काम करने के या बुरे काम करने के वायदे किए हैं।

श्री धीरपाल सिंह : गाबा साहब, बुरे काम करने के ठेके तो आपने ही ले रखे हैं।

कैप्टन अजय सिंह यादव : सभापति जी, (विघ्न)

श्री धीरपाल सिंह : सभापति जी, मैं तो यह समझता था कि कैप्टन अजय सिंह फौज में रहे हैं तो सही ही होंगे। सुरजेवाला भी बड़ा मीठा और अच्छा बोलते हैं परन्तु क्या करें गलत पार्टी में फंस गये। उनका मन तो कहता होगा कि विश्वास-मत के पक्ष में मतदान करें लेकिन क्या करें पार्टी की सीमाओं में बंधे हुए हैं। इसलिए अच्छा यही होगा कि हमारे सदन के नेता ने जो गरीब आदमियों के लिए, छोटे दुकानदारों के लिए और इम्प्लाईज के लिए घोषणाएं की हैं उनको ध्यान में रखते हुए आप सभी हमें सहयोग दीजिए और जैसा श्री रामबिलास शर्मा जी ने कहा कि प्रदेश की जनता के हित को समझते हुए श्री ओम प्रकाश चौटाला जी के पक्ष मे आप मतदान कीजिए। मैं इस प्रस्ताव का समर्थन करता हूं और

इन भाइयों से भी कहता हूं कि भविष्य की राजनीति को ध्यान में रखते हुए उन आदमियों के अविश्वास पर जाते हुए संकीर्णता को छोड़ते हुए इस विश्वास प्रस्ताव के पक्ष में मतदान कीजिए। मैं भी इस प्रस्ताव का समर्थन करता हूं और सभी दोस्तों से अनुरोध करता हूं कि वे भी इस प्रस्ताव का स्पोर्ट करें। धन्यवाद।

श्री सभापति : धर्मबीर गाबा जी, आप बोलिए।

श्री धर्मबीर गाबा : सभापति महोदय (विघ्न)

वैयक्तिक स्पष्टीकरण

श्री कंवल सिंह द्वारा–

श्री कंवल सिंह : सभापति महोदय, मेरा पर्सनल एक्सप्लेनेशन है। चौधरी धीरपाल सिंह जी ने अपने भाषण में कहा कि मैंने पहले लोकदल को छोड़ा और कांग्रेस में चला गया और जहां पर इनकी सूत आई वहां पर चले गये।

श्री धीरपाल सिंह : सभापति महोदय, मैंने चौधरी कंवल सिंह पर यह आरोप थोड़े ही लगाया है। मैंने तो इनको अपने से सीनियर ही कहा है।

श्री कंवल सिंह : सभापति महोदय, चौधरी धीरपाल जी ने यह कहा कि कांग्रेस में गया लोकदल को छोड़कर। मैं लोकदल को छोड़कर कांग्रेस पार्टी में गया था और उसके बाद चौधरी बंसी लाल जी के साथ ही मैंने कांग्रेस पार्टी को छोड़ दिया था।

श्री मनीराम गोदारा : सभापति महोदय, चौधरी धीरपाल जी उस समय लोकदल में नहीं थे।

श्री धीरपाल सिंह : सभापति महोदय, हम चौधरी मनीराम जी की पार्टी में थे जिस पार्टी के ये प्रधान थे।

श्री कंवल सिंह : सभापति महोदय, उस समय चौधरी चरण सिंह जी ने चौधरी देवी लाल जी को लोकदल से निकाल दिया था। नरवाना में चौधरी देवीलाल जी ने कहा कि मैं हरियाणा में श्री मनीराम बागड़ी जी को लोकदल पार्टी का टिकट नहीं लेने दूंगा। तो इस बात पर मैंने चौधरी चरण सिंह जी से बात की और कहा कि चौधरी देवी लाल जी लोकदल में भी नहीं हैं और वे कह रहे हैं कि श्री बागड़ी को लोकदल की टिकट नहीं लेने दूंगा। उस बारे में बात हो गई। चौधरी साहब पार्टी के अंदर आ गए। उस समय हम ने कहा था कि चौधरी देवी लाल जी ने आपकी शान में जगह-जगह पर भाषण दिए हैं। (शोर एवं विघ्न) मेरी पर्सनल एक्सप्लेनेशन इसी बात से ताल्लुक रखती है।

श्री सभापति : वोट ऑफ कंफिडैंस से इस बात का कोई संबंध नहीं है।

श्री कंवल सिंह : सभापति महोदय, इन्होंने कहा कि मैंने पार्टी छोड़ी है। इन्होंने कहा कि मैंने लोकदल पार्टी छोड़ी है। (शोर एवं विघ्न) सभापति महोदय, मैंने चौधरी चरण सिंह जी को प्रार्थना की थी कि चौधरी देवी लाल जी को पार्टी में ले लो। उस समय उन्होंने दो ही बातें कहीं थीं। एक तो श्री ओम प्रकाश चौटाला को हिसार लोक सभा की सीट नहीं मिलेगी और दूसरे स्वामी इन्द्रवेश का टिकट नहीं काटा जाएगा। ****

---

* Not recorded as ordered by the Chair.

श्री सभापति : श्री कंवल सिंह जी जो कुछ भी कह रहे हैं, वह रिकार्ड न किया जाए। (शोर एवं विघ्न) These are irrelevant things which may not be recorded (Noise)

विश्वास-मत (पुनरारम्भ)

श्री धर्मवीर गाबा (गुड़गांव) : सभापति महोदय, 32 दिन के अंदर हम इस हाऊस में तीसरी बार केवल एक ही मकसद के लिए मिले हैं। शायद हरियाणा में ही नहीं बल्कि पूरे देश के इतिहास में ऐसा पहली बार हुआ है कि 32 दिन के अंदर-अंदर केवल एक ही मकसद को लिए तीन बार सत्र बुलाना पड़ा है। हमारी प्रजातांत्रिक प्रणाली में ऐसा होता है कि जिस व्यक्ति के साथ बहुमत में विधायक हों,वह हम पर हुकूमत कर सकता है, इस प्रदेश पर हुकूमत कर सकता है। लेकिन जिस ढंग से विधायक इकट्ठे किए गए हैं, इस बात की तारीफ नहीं की जा सकती है। आज जरूरत इस बात की है कि हरियाणा प्रदेश के लोगों को समझना होगा कि ऐसे आदमियों को वोट दें, किसी ऐसी पार्टी को वोट दें जो कम से कम 5 साल तक अपनी सरकार सही ढंग से चला सके। लेकिन पिछले कुछ सालों से हरियाणा में अस्थिरता की स्थिति चली आ रही है। सत्तापक्ष की ओर से कहा गया कि कोई सुझाव दें क्योंकि 2-3 दिन की ही इनकी हुकूमत है ताकि उन को कंसीडर कर सकें या अमल में ला सकें। फिर एलिगेशन व काउंटर-एलिगेशन का दौर चला कि आपने यह गलती की, आपने वह गलती की। सभापति महोदय, क्या आज हम इस सदन में इस बात का फैसला नहीं कर सकते हैं कि हमारे पास ऐसी हुकूमत हो, जिस में एक-दूसरे पर एलिगेशन लगाने की गुंजाईश ही न हो। क्या हम इस बात का वायदा नहीं कर सकते कि कोई भी ऐसा बुरा काम नहीं करेंगे। मुझे उस वक्त सुनकर दुःख हुआ कि जो लोग इस प्रदेश की दुहाई देते हैं, जो उसूलों की बात करते हैं, उनकी तो 24-24 बसें बगैर परमिट के चलती हैं। ऐसी दुगनी चाल या दो चहेरे हरियाणा के अन्दर नहीं चलेंगे। आप साफ दिल से आइए और हरियाणा के लोगों को यह बताइए कि हमने ये धन्धे छोड़ दिए तब तो कुछ बात हमारी और लोगों की समझ में आ सकती है। आज सजैशनज् की बात हुई लेकिन आज किसी ने तो यह कह दिया कि राजीव जी ने यह कह दिया, किसी ने कहा कि चौ० देवी लाल जी ने यह कह दिया और उन आदमियों के बारे में कहा जो कि आज दुनिया में नहीं हैं या जो आज इस हाऊस में नहीं हैं। लेकिन हमने अपने आपको एग्जर्ट करना है ताकि चौटाला साहब देखें कि हम उनके लिए कितना एग्जर्ट कर रहे हैं ताकि हमारी कहीं बारी आ जाए। चेयरमैन साहब, एक बात मैं जरूर कहना चाहता हूं कि आज यह जो माहौल मैंने देखा, 2-3 दिन हुए मैंने तैलीमा दुरानी की किताब पढ़ी थी उसमें बेहतरीन अल्फाज लिखे थे कि—

मैं उस गर्द-ओ-गुबार के तूफां से गुजरी हूं
रहबर नहीं मिला जो मंजिले मक्सूद मिला दे।

यही बात मैं आज हरियाणा के लिए कहता हूं। हमें ऐसा कोई रहबर नजर नहीं आ रहा कि जो हमें जिस मंजिल तक हम पहुंचना चाहते हैं उस पर पहुंचा दे। आज यहां पर सजैशनज की बात हुई। मेरे ख्याल में नहीं आता कि इनकी हुकूमत में किसी ने यह कहा हो कि अपोजीशन के एम०एल०ए० हैं और इनके हल्के में कोई काम नहीं हुआ, कोई भी डिवैल्पमैंट नहीं हुई। क्या किसी ने इस बात को कंडम करने की कोशिश की ? उसका एक सबूत मैं देता हूं। आज हुकूमत का कोई भी सदस्य यह कह दे कि एक ईंट भी मेरी कांस्टिच्यूंसी गुड़गांव में लगी हो। चेयरमैन साहब, मुझे एक छोटी सी मिसाल याद आई है। कहते हैं कि गुरू गोबिंद सिंह जी एक बार लड़ाई करके आए, जब फतेह हासिल करके आए तो उस वक्त

उन्होंने ड्यूटी लगाई थी कि यह आदमी पानी पिलाएगा, यह आदमी हथियार सप्लाई करेगा और यह आदमी रोटी देगा और यह दूसरी देखभाल करेगा। जब लड़ाई खत्म हुई तो एक सेवादार ने कहा कि गुरु जी महाराज जिस आदमी को आपने पानी पिलाने की ड्यूटी लगाई थी वह तो दुश्मन को भी पानी पिला रहा था। उसने कहा कि मेरी ड्यूटी तो पानी पिलाने की थी। मेरी ड्यूटी दोस्त और दुश्मन को देखने की नहीं थी। मेरे पास जो भी प्यासा आया उसको मैंने पानी पिलाया। मैं समझता हूं कि आज हुकूमत का जो रहबर है, रहनुमा है उसका यह देखना फर्ज हो जाता है कि कौन प्यासा है। यह देखना फर्ज नहीं है कि दोस्त कौन है और दुश्मन कौन है। अपोजीशन में बैठा है या विपक्ष में बैठा है, यह नहीं देखना चाहिए। डिवैल्पमैंट हुई है या नहीं, इस बात को देखना चाहिए। क्या ऐसी उम्मीद हम रख सकते हैं ? मैं एक छोटी सी बात बताता हूं। आज कहने को तो हम एम०एल०ए० हैं। आज सिर्फ इस बात पर कि मेरी पार्टी के 20 आदमी हैं, 24 आदमी हैं या 25 आदमी हैं बाकी 56 आदमी किसी और पार्टी से ताल्लुक रखते हैं, एम०एल०ए० ग्रांट बन्द कर दी गई। यह कौन सी सूझ-बूझ का नतीजा था, यह मुझे आज तक नहीं पता चला। मैं यह बात यकीन के साथ कह सकता हूं कि जो डिवैल्पमैंट ग्रांट एम०एल०एज० को मिलती है वह हरियाणा सरकार का पैसा नहीं होता, वह पैसा सैन्टर गवर्नमैंट का होता है और डी०आर०डी०ए० के नाम से वह पैसा आता है **(इस समय कार्यकारी अध्यक्ष पदासीन हुए)** फर्क सिर्फ इतना पड़ता है कि वह पैसा एम०एल०एज० की मर्जी से लगता था, दूसरों की मर्जी से या आफिसर्ज की मर्जी से नहीं लगता था। आज सबसे पहले चौटाला साहब ने कहा कि लॉ एण्ड आर्डर को कायम रखना मेरी सबसे पहली प्राथमिकता होगी और उसका नतीजा आज हमने अखबारों में पढ़ लिया कि दिन में गुड़गांव शहर के अन्दर सड़क के ऊपर एक ठेकेदार को गोली मार दी गई। इनकी पार्टी से मेरा निवेदन है कि ऐसे एलीमैंट को कर्ब करना होगा अगर आप इसको कर्ब नहीं करेंगे तो यह और ज्यादा सिर चढ़ेंगे। यह आपको सोच समझ कर शुरुआत करनी पड़ेगी। इस बारे में मैं एक बात और कह देता हूं। आज जेल्ज के अन्दर ऐसा माफिया है जो कितना पैसा कमा रहे हैं, वहां सैल्युलर फोन भी चलते हैं, मोबाइल भी चलते हैं, रात को शराब भी मिलती है और जितने भी दुनिया भर के ड्रग्स हैं वह सब कुछ मिलता है। कैदियों से पैसा एकत्र किया जाता है। कैदियों को कहा जाता है कि यह टेलीफोन है, अपने मां-बाप को कहो कि 10,000 रु० फलानां जगह पर नहीं पहुंचे तो हम तुम्हें मारेंगे और कैदी मारे जाते हैं। अध्यक्ष महोदय, आज हरियाणा प्रदेश में कोई भी ऐसा काम नहीं हो रहा जिसकी हम तारीफ कर सकें। मेरी चौटाला साहब से हाथ जोड़कर प्रार्थना है कि ये ऐसे आदमियों के बारे में बात न करें जो इस सदन में नहीं हैं, या इस दुनियां में ही नहीं हैं। इन्होंने कहा कि हमारी पार्टी ने चौधरी चरण सिंह जी की सरकार को गिरा दिया, फलाने की सरकार को गिरा दिया। इन्हें ऐसी बातें नहीं करनी चाहिए। चौधरी चरण सिंह जी तो इस दुनिया में भी नहीं रहे। मैं तो इन बातों के बिल्कुल अंगेस्ट हूं। अध्यक्ष महोदय, अगर मेरे हाथ में होता तो मैं कभी भी चौधरी बंसी लाल सरकार को समर्थन नहीं देता लेकिन हमारी पार्टी के नेता ने जैसा हमें कहा हमने वैसा ही किया। यह बात मैं अब भी कहता हूं और उस वक्त भी कही थी। अपनी पार्टी के नेता का कहना हमने माना है और ऐसा कौन है जो अपने नेता का कहना नहीं मानता। हमने कहा था कि हम कभी भी सांप्रदायिक और जातिवादी ताकतों को समर्थन नहीं देंगे। जो इस मुल्क और इस स्टेट को बांटना चाहते हैं। अगर वे इस देश और स्टेट को बांट देंगे तो हम कहां जायेंगे ? हमें कहीं भी जगह नहीं मिलेगी। अध्यक्ष महोदय, मैं तीसरी बार अपनी कांस्टीच्यूएंसी से जीतकर आया हूं और मैं अपने दम पर जीतकर आया हूं, लोगों ने मुझे वोट दिये हैं। अगर वहां पर कुछ गलत कार्य होंगे तो उसका खामियाजा मुझे भुगतना पड़ेगा। इसलिए मेरी आपसे प्रार्थना है कि आप अब हुकूमत में हैं और ऐसे कार्य करें जिनकी लोग तारीफ करें। जैसा कि चौधरी बीरेन्द्र सिंह जी ने कहा है कि अगर आप अपनी सरकार

[श्री धर्मवीर गाबा]

लोक सभा चुनावों तक चलाना चाहते हैं तो आपको अच्छे कार्य करने होंगे और ऐसा करने से आपकी तारीफ होगी। चौटाला साहब पर बहुत ज्यादा एलीगेशनज़ लगे हुए हैं और उन एलीगेशंज को धोने का भगवान ने इन्हें अच्छा मौका दिया है। मैं चाहता हूं कि ये अपने सारे धब्बे धो दें ताकि हरियाणा की जनता इनकी तारीफ करे। अध्यक्ष महोदय, लेकिन मुझे नहीं लगता कि ये ऐसा कुछ करेंगे। मैं सदन को बताना चाहूंगा कि कल दोपहर को मैं खाना खाने के बाद अपने कमरे में लेट गया और मुझे नींद आ गई। जब दो-चार मिनट के बाद मेरी नींद खुली तो मैंने देखा कि मेरे बैड पर एक और आदमी सोया हुआ था। मैंने उससे कहा कि भाई आप न तो मेरे रिश्तेदार हैं और न ही मेरी कांस्टीच्यूएंसी से हैं फिर आप मेरे बैड पर कैसे सो गये ? उस आदमी ने मुझे कहा कि मेरे को और कहीं पर तो कमरा मिला नहीं आप अकेले सो रहे थे इसलिए मैं आपके साथ सो गया। अध्यक्ष महोदय, मेरी पैंट की जेब में 40-45 हजार रूपये थे। आज चौटाला साहब के राज में अभी से ऐसा होना शुरू हो गया है। चौटाला साहब मेरी आपसे प्रार्थना है कि मैं शहरी कांस्टीच्यूएंसी से जीतकर आया हूं और मेरी कांस्टीच्यूंसी के लोगों को यह महसूस नहीं होना चाहिए कि उनके साथ भेदभाव हो रहा है। मुझे इस बात की बड़ी खुशी है कि चौटाला साहब ने कहा कि ये फेयर और फ्री इलेक्शन चाहते हैं। यह बात इन्होंने अपने सैक्रेटरी साहब को कही है। मैं एक बार चौटाला साहब से फिर प्रार्थना करूंगा कि इनको भगवान ने जो भी एलीगेशनज् इन पर लगे हुए हैं उनको धोने का मौका दिया है और ये उनको धो दें। अब आपको एक सच्ची, स्वच्छ और साफ-सुथरी हुकुमत प्रदेश को देनी पड़ेगी। यह मेरी आपसे गुजारिश है। अगर आप ऐसी हुकुमत दे सकेंगे तो हम भी आपकी तारीफ कर पाएंगे। वरना हम आज भी मुखालफत कर रहे हैं और आगे भी मुखालफत करते रहेंगे।

श्री निर्मल सिंह (नग्गल) : कार्यकारी अध्यक्ष महोदय, आपने मुझे बोलने का समय दिया, इसके लिए मैं आपका धन्यवाद करता हूं।

श्री कार्यकारी अध्यक्ष : निर्मल सिंह जी, आपको पांच मिनट का समय दिया जाता है।

श्री निर्मल सिंह : कार्यकारी अध्यक्ष महोदय, फिर तो आप रहने दें। चौटाला साहब ने आज जो एक अच्छी परम्परा रखी है कि जितना मर्जी बोले। उसे तो आप कायम रखें और कम से कम 15 मिनट तो बोलने दें। (शोर)

श्री कार्यकारी अध्यक्ष : निर्मल सिंह जी, इतना समय तो नहीं मिलेगा। चलिये, आप बोलना शुरू कीजिए।

श्री निर्मल सिंह : कार्यकारी अध्यक्ष महोदय, आज हालात बदले हैं और चौटाला साहब नये मुख्य मंत्री बने हैं। उन्होंने आज विश्वासमत के लिए जो प्रस्ताव सदन में रखा है मैं उसके विरोध में बोलने के लिए खड़ा हुआ हूं। कार्यकारी अध्यक्ष महोदय, यूं तो कोई भी सरकार बने लेकिन विरोधी पक्ष के सदस्यों की यह ड्यूटी बनती है कि वह अच्छे कामों के लिये सरकार को सहयोग दें। सरकार जो काम लोक हित में करना चाहे हम उसमें सरकार को सहयोग दें लेकिन कार्यकारी अध्यक्ष महोदय, जिन हालात में आज सरकार बनी है वह एक चिन्ता की विषय है और यह बात सत्य है कि हरियाणा की साख आज गिरी है। आज चाहे मीडिया को उठा कर देखें, चाहे टैलिविजनज़ या अखबारों में देखें या बाहर किसी स्टेट की पार्टी से बात करके देखें तो वे हरियाणा को आया राम गया राम की स्टेट कहते हैं बल्कि आज इसमें इज़ाफा हुआ है। यह कोई अच्छी बात तो नहीं हुई। दूसरी बात यह है कि चौटाला साहब को लोगों ने मैनडेट भी नहीं दिया। उनके अपने 22 या 24 मैम्बर्ज़ हैं। प्रदेश के लोगों ने तो पांच साल के लिए बी०जे०पी० और हविपा को हुकुमत सौंपी थी। यह तो अनफोरचूनेट बात है कि पांच साल की टर्म पूरी

हुई नहीं और अब स्टेट मिड-टर्म चुनाव की तरफ बढ़ रही है। लीडरों के जो ख्याल थे और वे पांच साल में जो काम करना चाहते थे, वे पूरे नहीं हो पाये। आफटर आल कुछ करके दिखाना काफी मुश्किल होता है। अनाउंसमैन्टस करना और प्रोग्राम बनाना आसान है लेकिन उनको इम्पलीमैन्ट करना और सिरे चढ़ाना काफी मुश्किल काम है। स्टेट में कई काम चौधरी बंसी लाल जी ने शुरू किये थे जैसे कि बिजली के काम को प्राथमिकता देना उनका एक बहुत ही अच्छा ख्याल था जिसमें बहुत काम हुआ है और काफी काम होना बाकी भी है। इसके अलावा जो सड़कें खराब थीं या स्वास्थ्य और शिक्षा संबंधी जो काम थे उनके लिए अच्छी-अच्छी स्कीमें चल रही थीं मुझे पूरी आशा है और मैं चौटाला साहब को सुझाऊंगा कि वे ये सारे काम जारी रखेंगे। (शोर) आज के हालात हैं इनके लिये जो भी व्यक्ति विशेष या पार्टी जिम्मेवार है जिससे कि स्टेट की बदनामी हुई है उसको लोग शायद ही माफ करेंगे। चौधरी बीरेन्द्र सिंह जी ने अपनी स्पीच में शायद यह कहा है कि कई डिफैक्टर्ज जीत कर आ जाते हैं। लेकिन मेरा यह ख्याल है कि डिफैक्टर्ज को हरियाणा के लोग माफ नहीं करते। कोई इक्का-दुक्का ऐसा व्यक्ति जीत कर आ जाता हो तो अलग बात है। बाकी डिफैक्टर्ज का जीत कर आना बड़ा मुश्किल है। (शोर) इस हाऊस में वैसे भी मैं 1982 से हूं लेकिन जो हाऊस के आज मैम्बर्ज हैं मुझे नहीं लगता कि 90 के सदस्यों में से शायद ही 30-35 वापिस जीत कर हाऊस में आ जायें। यह तो हरियाणा की जनता देखेगी। (शोर) कारण चाहे कुछ भी हों।

एक आवाज : पांच-छः जीत कर आ जाएं तो बड़ी बात होगी।

श्री निर्मल सिंह : मैंने तो अपनी तरफ से काफी गुंजाइश रख के ही 30-35 बोले हैं। (शोर) हो सकता है कि मैं भी जीत कर न आऊं क्योंकि ऐसे हालात में रहेंगे तो किसकी गारन्टी है। आफटर आल छींटे तो सब पर लगने ही हैं। आज राजनीतिक अस्थिरता जो आई है इस बारे में मैं बताना चाहूंगा कि श्री चौटाला ने एक बार अनाऊंस किया था कि वह अटल बिहारी वाजपेयी सरकार का विरोध करेंगे। इस आधार पर कि उन्होंने यूरिया और दूसरी चीजों की कीमतें बढ़ाई हैं इसलिए मैं इनका समर्थन नहीं करूंगा और मैं इनका समर्थन उस वक्त तक नहीं करूंगा जब तक वे उन चीजों की बढ़ी हुई कीमतें वापिस नहीं ले लेते। उन कीमतों का तो रोल बैक नहीं हुआ लेकिन इन्होंने बी०जे०पी० को समर्थन दे दिया। यह जग जाहिर है कि इनका उनके साथ यह सौदा हुआ था कि यहां पर चौधरी बंसी लाल जी की सरकार गिराई जाएगी और अगला चुनाव ये लोग आपस में मिल कर लड़ेंगे। इस बिनाह पर बी०जे०पी० ने अपने आपको चौधरी बंसी लाल से अलग कर लिया और यह अस्थिरता पैदा हो गई। अगर हम राम विलास शर्मा जी की कोई बात कहें तो ये ऊंची-ऊंची आवाज में बोल कर हमें डरा देते हैं। ये मंदिर के कपाट खुलने के बारे में बोलने लग जाते हैं और मंदिर के कपाट खुलने की चर्चा करके हमें डराने लग जाते हैं। मेरा ख्याल तो यह है कि आदमी में श्रद्धा होनी चाहिए चाहे मंदिर के कपाट खुले हों चाहे बंद हों पूजा तो हो ही सकती है। वहां पर तो राम बिलास जी जैसे बड़े-बड़े ब्राहमण ही जाते हैं। साधारण आदमी को वहां पर कौन माथा टेकने देता है। (शोर) इन्होंने वहां अमरनाथ के मंदिर में जाकर संकल्प लिया था, जैसा इन्होंने कहा मैं कहता हूं कि यह लड़ाई तो इन दोनों की अपनी पार्टी मीटिंग में भी लड़ी जा सकती थी वहां पर जा कर संकल्प लेने की क्या जरूरत थी। बी०जे०पी० और विकास पार्टी की मीटिंग तो हर महीने होती रहती थी इनकी पार्टी मीटिंग में मैंने यह देखा है कि ये चीफ मिनिस्टर की भाषा में आवाज मिला कर खुद बोलते थे और उनकी तारीफ करते थे। ये इकट्ठे मिल कर प्रोग्राम बनाते थे। कार्यकारी अध्यक्ष महोदय, मुझे खुद बड़ी हैरानगी हो रही है कि आज चौटाला साहब बहुत मीठे रहे और इन्होंने यहां पर बहुत मीठी-मीठी बातें कहीं। मैं कहता हूं कि भगवान इनको सद्बुद्धि दे और इन बातों पर ये कायम रहें। मेरी तो राय यह है कि हमें चौटाला साहब से डरना चाहिए क्योंकि इनका जो पास्ट है वह अच्छा

[श्री निर्मल सिंह]

नहीं रहा है इसलिए मैं कहता हूं कि जब तक ये आगे अच्छे काम करके नहीं दिखा देते तब तक हमें इनसे डरना चाहिए। मैं चौटाला साहब से अनुरोध करूंगा कि वे कोई ऐसा काम न करें जिससे स्टेट में खुराफात हो। परसों चौथ इन्होंने मुख्य मंत्री पद की ओथ ली थी। मुख्य मंत्री के पास तो बहुत काम होते हैं लेकिन ये सारे काम छोड़कर अम्बाला से सीधे सेखों के घर पहुंचे। दुनिया जानती है कि सेखों हत्या काण्ड हुआ उसमें मेरा ओम प्रकाश चौटाला और भजन लाल की मिलीभगत से 302 का चालान हुआ था और उस केस में मैं कोर्ट से बरी हुआ था (घंटी) कार्यकारी अध्यक्ष महोदय, मैं दो मिनट में अपनी बात कन्क्लयूड कर देता हूं आप मुझे दो मिनट का टाईम और दे दें। जैसे गाबा साहब ने बताया कि जब ये रात को सोये हुए थे तो इनके साथ एक आदमी आकर सो गया। मैं भी आपको बताना चाहूंगा कि मैं कल हरियाणा भवन, नई दिल्ली में था। मेरे पास 35-ए नम्बर कमरा था। जब मैं वहां पर रात को साढ़े बारह बजे गया तो वहां पर जो रिसैपशिनिस्ट थी वह सो रही थी। वह हमारी बहनें हैं। मैंने कहा बहन तूं उठ तूं की कर दी है मैंनूं कमरे दी चाबी दे। वह कहने लगी तेरे पे कौन सा कमरा है। मैं कहने लगा 35-ए नम्बर कमरा वह कहने लगी कि तू चाबी ले गया है। मैंने कहा मुझे अच्छी तरह से याद है मैं आपको चाबी देकर गया था और मैंने आपको 8 बज कर 40 मिनट पर चाबी दी थी। फिर वह कहने लगी कि आप ठीक कह रहे हो वह चाबी ढूंढने लग गई और मैं भी उसके साथ चाबी तलाश करने में लग गया। मैंने कहा कि यहां पर कौन-कौन ठहरे हुए हैं तो उसने बताया कि 27 नम्बर कमरे में चौटाला साहब के रिश्तेदार ठहरे हुए है। वहां पर एक चाबी पड़ी थी मैंने कहा यह चाबी कौन से कमरे की है उसने कहा कि यह चाबी तो 27 नम्बर कमरे की है। उसने कहा कि यहां पर 27 नम्बर कमरे की चाबी दे कर गया कोई और चाबी ले गया कोई और। मैंने सोचा यहीं पर कोई गड़बड़ है। उसको चाबी कोई आदमी दे गया और चाबी ले गया कोई और आदमी और जो आदमी चाबी ले गया वह मेरे 35-ए नम्बर कमरे की ले गया। उस चाबी से दरवाजा खोल कर अंदर से दरवाजा बंद करके सो गया। जब मैंने दरवाजा पीटा तो उसने दरवाजा नहीं खोला।

20.00 बजे एक बात मैं और कहना चाहता हूं कि चौटाला साहब के साथ जो गए हैं वे उनसे बचकर रहें और इस विश्वास-मत प्रस्ताव पर वोट न डालें। ये जितना मीठा आज बोल रहे हैं वह वोट लेने के लिए बोल रहे हैं। चौटाला साहब का तो एक ही मकसद है कि एक बार इनके हाथों में सींग फंस जाए बाकी तो बाद में देख लेंगे। इस बारे में एक मिसाल मैं यहां पर बताता हूं। गांव में एक जाट की भैंस गुम हो गई। वह भैंस की तलाश करते करते एक धार्मिक स्थल पर जाकर रुका। उसके साथ उसका लड़का भी था। जब वह उस धार्मिक स्थल पर गया तो कहने लगा कि हे बाबा नानकसर मेरी भैंस मिल जाए तो उसके एक थन का दूध तुझे चढ़ाया करूंगा। इसी प्रकार से वह एक मन्दिर के पास जाकर कहने लगा कि हे हनुमान जी यदि मेरी भैंस मिल गई तो एक थन का दूध तेरे पर चढ़ाया करूंगा। इसी प्रकार चलते हुए आगे चलकर एक मस्जिद पर जाकर कहने लगा कि हे अल्ला मियां यदि मेरी भैंस मिल गई तो एक थन का दूध तुझ पर चढ़ाया करूंगा। बाद में वह चौथे धार्मिक स्थल पर गया तो वहां भी कहने लगा कि यदि मेरी भैंस मिल गई तो एक थन का दूध तुझ पर चढ़ाया करूंगा। जब चौथे थन का भी दूध देने की बात लड़के के बाप द्वारा की गई तो लड़का कहने लगा कि बापू जब चारों थनों का दूध आप इन देवताओं को चढ़ा दोगे तो फिर भैंस तलाश करने का या उसके मिलने का क्या फायदा होगा क्योंकि हमें दूध तो मिलना नहीं। इस पर वह आदमी कहने लगा कि बेटे एक बार भैंस के सींग मेरे हाथ में आ जाएं फिर तो मैं सारे देवताओं को देख लूंगा। चौटाला साहब भी यही चाह रहे हैं कि एक बार सदन में वोट मिल जाएं बाद में तो सबको देख लेंगे।

श्री चन्द्र भानिया (फरीदाबाद) : एक्टिंग स्पीकर साहब, आपने मुझे बोलने का समय दिया इसके लिए मैं आपका धन्यवाद करता हूं। आज हमारे सदन के नेता ने जो विश्वास मत का प्रस्ताव रखा है मैं उसके समर्थन में बोलने के लिए खड़ा हुआ हूं। अध्यक्ष महोदय, मेरे से पूर्व वक्ताओं ने अपने-अपने क्षेत्र के हितों की बातों को यहां पर रखा। कार्यकारी अध्यक्ष महोदय, मेरे से पूर्व वक्ताओं में से बहुत से माननीय सदस्य बहुत वरिष्ठ हैं, जो कई बार चुनकर आये हैं और जो कुछ बड़े बजुर्ग हैं उनकी बातों को सुनकर हमें बड़ा दुःख हुआ। जिस तरीके से बोल रहे थे उससे ऐसा लग रहा था कि वे जो बात कह रहे हैं उसमें सही कम था गलत ज्यादा था। कार्यकारी अध्यक्ष महोदय, यह जो सरकार बनी है, इसके मुख्यमंत्री ओम प्रकाश चौटाला जी हैं। इनको हरियाणा विकास (डैमोक्रेटिक) पार्टी ने और हम सब साथियों ने मिल कर नेता चुना है। (विघ्न) कार्यकारी अध्यक्ष महोदय, यहां पर जो साथी बैठे हैं वे आज फिर दुबारा से हरियाणा के हितों की बात कर रहे हैं। मेरे अपोजिशन के भाई जिनमें कांग्रेस पार्टी शामिल है, हरियाणा की जनता के बीच में जाकर पिछले तीन साल में यह कहते रहे हैं कि हविपा और बी०जे०पी० की जो गठबंधन की सरकार बंसी लाल के नेतृत्व में चल रही है यह विकास के कोई कार्य नहीं कर रही है। यह भ्रष्ट सरकार है। इससे विकास का कोई कार्य नहीं होता। तीन साल लगातार हमें हमेशा ये लोग कहते रहे कि भारतीय जनता पार्टी सत्ता की खातिर, कुर्सी की खातिर इन लोगों के साथ चिपकी हुई है। भारतीय जनता पार्टी कुर्सी की खातिर कभी इनके साथ नहीं चिपकी रही। कार्यकारी अध्यक्ष महोदय, हम तो सरकार में रह कर भी अपने विधायक दल के नेता और विधायक साथियों के साथ बैठ कर चर्चा किया करते थे और सबसे पहले मेरे साथी विधायक आजाद शर्मा जी ने सरकार की कार्यप्रणाली का जिक्र किया था। आपको याद होगा जब हम लोग सैशन में हाउस में बोले थे और हमने कहा था कि हमारे क्षेत्र के काम नहीं होते हैं तथा विकास कार्य नहीं हो रहे हैं। उस समय हमारे कांग्रेस के साथी बड़ी तालियां बजाते थे और कहते थे कि बहुत बढ़िया बात कह रहे हैं। हम लोग करीब डेढ़ साल तक लगातार प्रयास करते रहे और सैशन के दौरान यहां पर कहा था कि हमारी बातों को सरकार मान ले लेकिन हमारी बात नहीं मानी गई। आपको याद होगा कि उसके बाद एक और सैशन हुआ था और हम लोग संघर्ष करते रहे। उसके बाद कुछ बातों के बारे में हमने मुख्य मंत्री जी से बात की और उन्होंने एक-दो काम करवाए थे। जो काम हुए थे उनके लिए मैंने उनका धन्यवाद भी किया था। लगातार हमारी पार्टी और हम लोग कहते रहे कि हमारे इलाकों के काम सही तरीके से किए जाएं लेकिन जब इस तरफ कोई ध्यान नहीं दिया गया और हमारी बातों को नहीं माना गया तो हमारे लिए सरकार में रहना मुश्किल होता गया। हमारे कांग्रेस के भाई हमें मिलते थे तो यही कहते थे कि आपको सरकार से बाहर आ जाना चाहिए। जब यह फैसला ले लिया गया तब हमें यह बात समझ में आई कि ये लोग ऐसा क्यों कहते थे। उस समय इनको एक लालच था। तीन साल तक भारतीय जनता पार्टी भी राज के अन्दर रही लेकिन हम लोगों ने गलत बात को गलत कहा। जब हम लोग सरकार से बाहर आए तो इन लोगों ने किसी को हवा नहीं लगने दी और उस तरफ आ गए। हम लोग चार सवा चार बजे तक बैठे रहे और हमारे कांग्रेसी विधायक कहते रहे कि उस सरकार को समर्थन देने का हमारा कोई विचार नहीं है। तीन साल तक लगातार ये लोग विधान सभा के अन्दर, जनसभाओं में लोगों के बीच में जा कर सरकार को गालियां देते रहे और फिर बाद में इन्हीं लोगों ने सरकार को समर्थन दिया। इस समर्थन देने का परिणाम यह निकला कि जब ये लोग हरियाणा की जनता के बीच में गए तो इन्हें पता चला और ये लोग समझ गए कि हरियाणा की जनता आने वाले लोक सभा चुनावों में इनको अपनी ताकत दिखा देगी तो इन्होंने समर्थन वापिस ले लिया। जो लोग हमारे ऊपर आरोप लगाते थे कि तीन साल तक कुर्सी से चिपके रहे वे खुद कुर्सी से चिपकना चाहते थे । हम लोगों ने तीन साल तक सरकार में रहते हुए भी अपनी बात कही।

[श्री चन्द्र भाटिया]

हमने तो इनकी सरकार को तीन साल तक सहन भी किया लेकिन ये लोग तो तीन हफ्ते भी सरकार को सहन नहीं कर पाए। हमारी बहन जी बहुत अच्छी बात कह रही थीं और बिल्कुल सही बात कह रही थीं, इनकी बातों के पीछे राज़ क्या था और क्या वजह थी अगर हम उस वक्त इनकी बातों को मान लेते तो इनके लिए बहुत ही अच्छा था। कार्यकारी अध्यक्ष महोदय, मैं यह कहना चाहूंगा कि हमारे मन के अन्दर बड़ी पीड़ा थी और हमने अपनी बात को बहुत बार सरकार से कहा और हमारी इस बात पर हमारे कांग्रेस के साथी खुद कहते थे कि ठीक बात है। मैं एक मुबारिकबाद चौधरी भजन लाल जी को भी देना चाहूंगा। हमारे ये कुछ साथी उनका विरोध करते रहे और कुछ हक में भी बोले लेकिन उन्होंने इस समर्थन का जमकर विरोध किया और उस लड़ाई में उनको कामयाबी भी मिली। जो बात सही है मैं उस बात को सही कहूंगा, इसमें कोई छिपाने वाली बात नहीं है। मैं अपनी बात के लिए खुद भी चौधरी बंसी लाल जी से लड़ता रहा और अपने क्षेत्र के विकास की बात कही। मेरे क्षेत्र की बातों को उन्होंने सामने रखा मैंने विधान सभा के अन्दर भी उनकी तारीफ की थी और उनकी बात को भी मैंने कहा लेकिन उस दिन हमें बड़ा दुख हुआ। सरकार ने जो अच्छे काम किये हमने उनकी तारीफ भी की और जो गलत काम थे उनका हमने विरोध किया और जम कर किया। जिस दिन यहां पर हमारे कांग्रेस के मित्रों ने सरकार को समर्थन दिया (विघ्न) उस समय हमारे आदरणीय नेता और देश के प्रधान मंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी को बड़ी-बड़ी मोटी-मोटी गालियां दी गईं (घंटी)। (विघ्न) कार्यकारी अध्यक्ष महोदय, मैंने चार पांच बार पर्ची भेजी है तब जाकर मुझे बोलने का समय मिला है। सर, मैं जल्दी ही खत्म कर दूंगा। सर, हम यह कहना चाहेंगे कि हमारे प्रधान मंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी की बढ़ाई आज देश के लोग और देश के बाहर के लोग भी करते हैं उनके गुणगान करते हैं, आज यहां पर उनके ऊपर आरोप लगाया गया है। जो पिछली सरकार थी, उसने जो अच्छे काम किए हमने उसकी बढ़ाई की है। लेकिन पिछले तीन साल तक जब हमारी पार्टी ने उस सरकार का समर्थन किया था तो उस वक्त हमारी बड़ी तारीफ की जाती थी, फूलों के पुल बांधे जाते थे कि जो केन्द्र में सरकार है वह बहुत ही अच्छी सरकार है। चौधरी बंसी लाल जी हमारे बुजुर्ग हैं, उन्होंने हमारे जो काम करवाए हैं हमने उसके लिए उनका धन्यवाद भी किया है। हम मन से उनकी इज्जत करते हैं। लेकिन आज जो बातें हमारे मन में हैं वह भी मैं अपने साथियों के सामने रखना चाहूंगा। सर, जब लोकसभा के चुनाव का समय आया तो हमारे भाई सुरेन्द्र सिंह जी लोकसभा का चुनाव लड़ रहे थे। उस वक्त हमारे आदरणीय पूर्व मुख्यमंत्री जी द्वारा हमारे प्रधान मंत्री अटल बिहारी वाजपेयी जी को आग्रह किया कि वे सुरेन्द्र सिंह के एरिए में आएं और प्रधान मंत्री जी उनके आग्रह पर वहां पर गए थे। सर, हम यह कहते हैं कि जो सही बात है उसको सही कहना चाहिए और जो गलत बात है उसको गलत कहना चाहिए। जब हम सरकार में थे तो उस वक्त हमारे ऊपर मुकद्दमें बनाए जाते थे और वे क्यों बनाए जाते थे इस बारे में मैं यहां पर बताना चाहूँगा। सर, आपसे पहले चेयर की कुर्सी पर श्री छत्तर सिंह चौहान हुआ करते थे और उस वक्त जब मैं बोलने के लिए इजाजत मांगता था तो मुझे बोलने की इजाजत नहीं दी जाती थी। सर, मैं आपके द्वारा सदन में बताना चाहूंगा कि जब लोक सभा के चुनाव हुए तो मुझ पर बुथ कैपचरिंग का आरोप लगाया गया जिससे मेरा कोई लेना-देना नहीं था। यह इसलिए किया गया क्योंकि मैं सरकार के गलत कामों के खिलाफ बोलता था। बूथ कैपचरिंग करने वाले कोई और लोग थे लेकिन इन्होंने उसके लिए मेरा नाम लगा दिया कि चन्द्र भाटिया ने बूथ कैपचरिंग की है। चन्द्र भाटिया ने बोगस वोट डलवाए हैं। सर, खुर्शीद अहमद जी यहां पर बैठे हुए हैं और इन्होंने भी उस समय लोकसभा का चुनाव लड़ा था। जब इनसे और दूसरे कैंडीडेट्स से जिन्होंने लोकसभा का चुनाव लड़ा था वहां के आफिसर्ज ने पूछा कि बूथ कैपचरिंग किसने की है तो इन्होंने कहा था कि बूथ कैपचरिंग

में चन्द्र भाटिया नहीं था। सर,हम अगर वहां पर होते तो हम मजबूती से कहते कि हां हम थे। इस बार में हमारे विपक्ष के साथी भी कह रहे थे कि चन्द्र भाटिया वहां पर नहीं था। लेकिन सरकार ने सोचा कि चन्द्र भाटिया को किसी तरह फांसो। सर, सी०बी०आई० का मुकदमा मेरे ऊपर बनाया गया मेरा कसूर सिर्फ इतना था कि मैंने किसी से पैसे लेने थे। उस बारे में हमने कहा तो हमारी बात को नहीं माना गया और हमारे ऊपर मुकदमा बना दिया। आज भी सी०बी०आई० का मुकदमा कोर्ट के अन्दर चल रहा है। सर, गाबा साहब कह रहे थे कि हम बिना परमिट के बसें चलाते थे। मैं इनको बताना चाहूँगा कि व्यापार करना कोई बुरी बात नहीं है। लेकिन जो बात इन्होंने कही कि हम बिना परमिट के बसें चलाते थे तो मैं इनसे पूछना चाहूंगा कि बिना परमिट के कौन बसें चलाने देता है ? (विघ्न) सर, आज अगर हम कोई सही काम करते हैं तो वह भी इनको गलत नजर आता है। आज यहां पर चौटाला साहब के बारे में भी कह दिया कि दो दिन हुए हैं और कमरो के अन्दर कोई और घुसा हुआ होता है। अब आप ही बताएं यह क्या बात हुई। ये जो मन में आता है बोल देते हैं। इन्होंने यह भी कह दिया कि शपथ के समय लोग जबरदस्ती घुस गए। मैं तो यह कहना चाहता हूं कि ये लोग इस राज को देखकर खुश नहीं हैं। इनको इस राज को देखकर तकलीफ हो रही है। ये यह सोच रहे हैं कि चौटाला साहब ने मुख्यमंत्री पद की शपथ कैसे ले ली। सर, वह भी समय था जब हम विधायक बने थे तो हमें यह भी पता नहीं चला कि शपथ हो रही है या शपथ हो गई है। आज जब चौटाला जी की शपथ हुई तो हरियाणा की सारी जनता को इस का पता चला और हरियाणा की जनता चण्डीगढ़ पहुंच गई। (इस समय मेजें थपथपाई गईं।) सर, जो सही बात है हम उसको सही कहेंगे और जो गलत बात है हम उसको गलत कहेंगे। हमने जो काम करवाए हैं उसकी तारीफ भी की है। लेकिन जब हमारे ऊपर गलत तरीके से बलेम लगाए जाते हैं तो हमें दुःख होता है। मैं विपक्ष के साथियों को कहना चाहूँगा कि हमारी सरकार ने अढ़ाई दिन में कारगिल में हुए शहीदों के परिवारों को दी जाने वाली राशि को पांच लाख से बढ़ा कर 10 लाख कर दिया है। यह कोई राजनीतिक बात नहीं है। इसके साथ ही अग्रोहा मैडिकल कालेज की जो ग्रांट बंद कर दी गई थी उसको खोल दिया गया है। सर, यह जो काम हुआ है यह बहुत बड़ा और बढ़िया काम है हमारे ये जो साथी यहां पर बैठे हुए हैं इनको यहां पर आने के बाद यह कहना चाहिए था कि यह जो काम इस सरकार ने किए हैं वे बहुत बढ़िया किए हैं। सर, मैं तो यह कहना चाहूँगा कि अभी तो हमें आए हुए अढ़ाई दिन ही हुए हैं। 10 दिन की सरकार तो हमारे ये साथी भी चला चुके हैं। अग्रोहा मैडीकल कॉलेज की जो ग्रांट खोल दी गयी यह एक बहुत बड़ा काम है। हमारे इन साथियों को सदन में आने के बाद यह कहना चाहिए था कि इस सरकार ने ये बहुत बढ़िया काम किये हैं। अभी तो ढाई दिन का समय ही हुआ है जबकि दस दिन की सरकार तो हमारे कांग्रेस के भाई भी चलवाकर देख चुके हैं। इन ढाई दिन के अंदर ही मुख्यमंत्री जी ने वह काम करके दिखाया है जिसके लिए हम तीन साल से लड़ाई लड़ते रहे हैं। मैं अपने साथियों से सही बाते कहना चाहूंगा कि जो भी पहले अच्छे काम होते रहे हैं हमने उनको सही कहा है लेकिन गलत कामों का हमने जमकर विरोध किया है। चुंगी खत्म करने के बारे में भी मुख्य मंत्री जी ने हमें विश्वास दिलाया है कि चुनाव के वक्त तो हम कुछ नहीं कह सकते लेकिन चुनावों के बाद इस काम को हम करेंगे।

प्रो० छत्तर सिंह चौहान : कार्यकारी अध्यक्ष महोदय, मेरा ब्वायंट ऑफ आर्डर है। सर, भाटिया साहब जो चुंगी खत्म करने की बात कह रहे हैं तो मैं इनको बताना चाहूंगा कि ये शायद भूल गये कि चुंगी का महकमा इनकी अपनी पार्टी के पास ही था। क्या इन्होंने कभी अपनी पार्टी से इस बारे में कहा और कभी अपने मंत्री से इस बारे में कहा ? जब भी पहले विधायकों की संयुक्त रूप से बैठकें होती थीं तो उसमें सारे मंत्री भी होते थे लेकिन इनके किसी आदमी ने भी नहीं कहा कि चुंगी बंद हो। इनका तो उस

[प्रो० छत्तर सिंह चौहान]
समय मुंह बंद था और इनके पास मुंह खोलने की ताकत नहीं थी। (विघ्न)

श्री चन्द्र भाटिया : कार्यकारी अध्यक्ष महोदय, चौहान साहब ने चुंगी के बारे में कहा कि चुंगी का महकमा हमारे पास था इसलिए चुंगी खत्म करने के लिए इनको कहना चाहिए था। सर, मैंने पहले एक बात कही कि जब हमने हरियाणा के हितों की खातिर, फरीदाबाद के लोगों की खातिर अपनी बातों को रखा तो हमारी बात नहीं मानी जाती थी तथा विधान सभा के अंदर भी हमें अपनी बात कहने से रोका जाता था। हमने तो हमेशा इस बात को कहा कि चुंगी माफ होनी चाहिए, फरीदाबाद में तोड़ फोड़ नहीं होनी चाहिए, बुलडोजर नहीं चलने चाहिएं और जो हाउस टैक्स कांग्रेस की सरकार ने दस गुना बढ़ाया था उसको खत्म किया जाना चाहिए। पिछली कांग्रेस पार्टी के एक कैबिनेट मंत्री ने यह हाउस टैक्स बढ़ाया था। हमारी जब मुख्य मंत्री से इस बारे में बात हुई तो उन्होंने विश्वास दिलाया था कि हम इस बात को ठीक करेंगे।

श्री धर्मवीर गाबा : सर, मेरा प्वायंट ऑफ आर्डर है। उस वक्त यह महकमा मेरे पास था। हमने कभी यह नहीं कहा कि हाउस टैक्स दस गुना बढ़ाया जाए। इनका यह कहना कि यह पिछली कांग्रेस सरकार ने किया था, रैलेवैन्ट नहीं है। अगर कोई रैलेवैन्ट बात हो तो अच्छी लगती है। अब वे कह रहे हैं कि चुंगी माफ कर दो, बिजली माफ कर दो। सरकार यह काम कर दे हमें कोई दिक्कत नहीं है लेकिन जब मैं मंत्री था तो हमने उस समय चुंगी कर खत्म करने की मुखालफत की थी क्योंकि इससे हमारे आमदनी के सोर्सिज खत्म हो जाते। अगर सैंट्रल गवर्नमैंट भी पैसा न दे और यदि हमारे पास अपने सोर्सिज भी न हों तो कैसे काम चलेगा ? भावना में आकर यह कह देना कि यह कर दो वह कर दो अच्छी बात नहीं है इनको हरियाणा के लोगों के हितों की बात करनी चाहिए। मैं यह दावे से कह सकता हूं कि हमने कभी हाउस टैक्स नहीं बढ़ाया।

श्री चन्द्र भाटिया : कार्यकारी अध्यक्ष महोदय, हाउस टैक्स बढ़ाने का यह ऐसा मामला है जो फरीदाबाद के हर आदमी को छूता है। गाबा साहब इस बात को अच्छी तरह से जानते हैं इसलिए ये दोनों तरफ की बात करते हैं। मैं कहना चाहूंगा कि हाउस टैक्स की बात हमने पहले भी कही है कि हाउस टैक्स पिछली कांग्रेस सरकार के समय में बढ़ाया गया है यह बात बिल्कुल सही है। उस समय महेन्द्र प्रताप जी कैबिनेट रैंक के मिनिस्टर थे, वे उस कमेटी के मैम्बर थे। जब यह सरकार बनी उसके बाद हाउस टैक्स लगने लगे तो लोगों ने ये कहना शुरू कर दिया कि ये सरकार टैक्स लगा रही है, बंसी लाल की सरकार मार रही है। हाउस टैक्स का सर्वे पांच साल बाद होता है, पहले नहीं होता। वह जो कलम इनकी लिखी हुई थी उससे ये टैक्स लग रहा है। मैं यह कहना चाहता हूं कि उस समय यह महकमा गाबा साहब के पास था। जो सही बात हो वह इनको कहनी चाहिए और माननी भी चाहिए। ये हमसे सीनियर हैं दो-तीन बार चुनकर आए हैं हम तो अभी नये हैं। जो हाउस टैक्स का एक्ट बना था उस पर उन लोगों के हस्ताक्षर किए हुए हैं। असत्य बोलकर हरियाणा की जनता को गुमराह करना ठीक नहीं है।

श्री धर्मवीर गाबा : कार्यकारी अध्यक्ष महोदय, उसका सिस्टम ही अलग है उसका अपना एक हाउस है, मेयर है, कमिश्नर है, हाउस यह फैसला करता है कि कितना टैक्स बढ़ाना है, क्या करना है।

श्री चन्द्र भाटिया : कार्यकारी अध्यक्ष महोदय, अलग से हाउस होता है मेयर भी होते हैं लेकिन जब इन्होंने ऐक्ट बनाया उसके बाद उन्होंने शपथ ली थी।

श्री कार्यकारी अध्यक्ष : चन्द्र भाटिया जी, आप कन्क्लूड कीजिए।

श्री चन्द्र भाटिया : कार्यकारी अध्यक्ष महोदय, मैं एक बात कहते हुए अपना स्थान लूंगा। आज जो यह चौधरी ओम प्रकाश चौटाला जी के नेतृत्व में सरकार बनी है हम सब लोगों ने उनको अपना नेता चुना है और हमें बड़ी उम्मीद है कि पिछले तीन सालों में हमारे काम में जो कमियां रह गई थीं उन्हें दूर किया जायेगा और मैं अपने फरीदाबाद विधान सभा क्षेत्र की बात भी करना चाहूंगा कि जो बिजली के कनैक्शन बंद हुए पड़े हैं जो सड़कों के लिए ग्रान्ट आनी है जो काम हमारे क्षेत्र में होने रह गए हैं वह सब पूरे होंगे, ऐसी उम्मीद करूंगा और इसके साथ एक बार फिर से मैं इस विश्वास प्रस्ताव का समर्थन करता हूं।

बैठक का समय बढ़ाना

श्री कार्यकारी अध्यक्ष : यदि हाउस की सहमति हो तो हाउस का समय एक घंटे के लिए बढ़ा दिया जाए।

आवाजें : जी हां।

श्री कार्यकारी अध्यक्ष : हाउस का समय एक घंटे के लिए बढ़ाया जाता है।

श्री धर्मवीर गाबा : कार्यकारी अध्यक्ष महोदय, यदि हाउस कल चलना है तो आज हमारी छुट्टी कर दीजिए।

श्री संपत सिंह : ऐसा है कि आज 27 तारीख को रात के 12 बजे से पहले-पहले हमें वोट ऑफ कांफीडैंस सीक करने का निर्देश दिया है इसलिए उससे पहले-पहले हमें कांफीडैंस सीक करना है और इस काम के लिए कल सैशन नहीं हो सकता, आज ही होगा।

विश्वास-मत (पुनरारम्भ)

श्री सतनारायण लाठर (जुलाना) : सदन के नेता माननीय श्री ओम प्रकाश चौटाला जी ने जो प्रस्ताव रखा है, मैं उसके पक्ष में बोलने के लिए खड़ा हुआ हूं। 24 तारीख को हमारी हरियाणा विकास पार्टी (प्रजातांत्रिक), भारतीय राष्ट्रीय लोकदल, भारतीय जनता पार्टी व छह निर्दलीय विधायकों ने सर्वसम्मति से श्री चौटाला जी को अपना नेता चुना और हमने हरियाणा प्रदेश की जनभावनाओं के अनुरूप काम किया। हरियाणा प्रदेश के लोग नहीं चाहते थे कि चुनाव हों। आज हमारे विपक्ष के भाई जो कल तक कठपुतली बनकर चौधरी बंसी लाल के इशारों पर नाचा करते थे आज हमें दलबदलू कहते हैं, डिफैक्टर कहते हैं। कार्यकारी अध्यक्ष महोदय, मैं बताना चाहता हूं कि हरियाणा विकास पार्टी के 35 विधायक थे उन 35 में से एक अध्यक्ष महोदय थे। उनके अलावा कुल 34 विधायक थे उन 34 विधायकों में से 17 विधायक हमारी हरियाणा विकास पार्टी (डैमोक्रेटिक) के हैं जो ट्रेजरी बैंचिज पर बैठे हैं जो हरियाणा प्रदेश का विकास चाहते हैं, इसलिए इस सरकार में शामिल हुए हैं। इस प्रदेश का विनाश चौधरी कंवल सिंह जी को छोड़कर इन विपक्ष के हरियाणा विकास पार्टी के सदस्यों ने किया है। मैं भी चौधरी बंसीलाल जी को सच्चा आदमी समझता था परन्तु चौधरी बंसी लाल जी की सच की पुलिन्दा मैं आज इस सदन में खोलता हूं। जब हरियाणा विकास पार्टी 1996 में सत्तासीन हुई तो पहले ही अधिवेशन में मैंने विधान सभा में एक क्वैश्चन लगाया था कि मेरे हल्के जुलाना में 1990 में तत्कालीन उप-प्रधान मंत्री माननीय चौधरी देवीलाल जी ने एक प्रोथ सब सैन्टर खोलने के लिए मंजूर किया था। कार्यकारी अध्यक्ष, यह रिकार्ड की बात है। उस समय चौधरी बंसी लाल जी ने यह कहा था कि या तो इस प्रोथ सब सैन्टर को जुलाना में वापस खोल दिया जायेगा या फिर सरकारी फैक्टरी जुलाना में लगा दी जायेगी। कार्यकारी

[श्री सतनारायण लाठर]

अध्यक्ष महोदय, 25 मई, 1997 को चौधरी बंसी लाल जी ने जीन्द में हमारे इलाके जुलाना के लिए एक माईनर मंजूर किया था। लेकिन जब भी जीन्द जिले का जिक्र करते तो उस मांग को सबसे लास्ट में लगा दिया जाता था। हालत यह हुई कि हांसी और भिवानी में तो माईनर चालू हो गये और जुलाना का माईनर चालू नहीं किया गया। फिर श्री अनिल अरोड़ा जो उस समय ओ०एस०डी० थे ने जुलाना माईनर चालू करने के आदेश दे दिये तो उनको उनके पद से हटा दिया गया कि उन्होंने जुलाना माईनर को शुरू क्यों कराया ? कार्यकारी अध्यक्ष महोदय, एक बात और इस सदन को मैं बताना चाहता हूँ कि चौधरी बंसी लाल जी ने यह कहा कि जीन्द में इसके बाद कोई कैंडीडेट नहीं मिलेगा जो उनकी पार्टी का मुकाबला कर सके। लेकिन कार्यकारी अध्यक्ष महोदय मैं उनको बताना चाहता हूं कि मैं खुद साढ़े बारह हजार वोटों से जीतकर आया था और चौधरी ओम प्रकाश चौटाला जी की पार्टी के उम्मीदवार को हराकर आया था और चौधरी बंसी लाल जी खुद 11 हजार वोटों से जीते थे। जुलाना में हरियाणा विकास पार्टी की कोई वोट नहीं है, चौधरी बंसी लाल जी की कोई वोट नहीं है। हरियाणा विकास पार्टी (डेमोक्रेटिक) के आदमी तो सरकार की तरफ बैठे हुए हैं। कार्यकारी अध्यक्ष महोदय, हमारे साथ क्या-क्या ज्यादतियां हुई उसके बारे में मैं इस सदन को बताना चाहता हूं। दो-दो दिन तक हम मंत्रियों को चौधरी बंसी लाल जी से मिलने का समय नहीं देते थे। हम अपने हल्के की बात कहने के लिए जब मुख्यमंत्री जी के पास जाते थे तो हमें मिलने का समय नहीं दिया जाता था। यहां पर श्री अतर सिंह सैनी और श्री छत्तर सिंह चौहान बैठे हुए हैं हम इनको अपने हल्के की दिक्कतें बताते थे कि हमारे चुनाव क्षेत्र में ये-ये दिक्कतें हैं। ये हमसे तो हमारी दिक्कतें पूछ जाते थे परन्तु चौधरी बंसी लाल जी को बताने की इनकी हिम्मत नहीं होती थी (विघ्न) आप इनसे पूछ सकते हैं।

वैयक्तिक स्पष्टीकरण

(i) प्रो० छत्तर सिंह चौहान द्वारा–

प्रो० छत्तर सिंह चौहान : कार्यकारी अध्यक्ष महोदय, मेरी पर्सनल एक्सप्लेनेशन है। मेरे साथी श्री सतनारायण लाठर जी ने कहा कि चौहान साहब बैठे हुए हैं इनसे पूछ लें। मेरे सामने एक ही बात देखने को होती थी कि जब मेरे ये साथी चौधरी बंसी लाल जी को मिलने जाते थे तो भगवान के मन्दिर की तरह लौट कर प्रणाम करते थे। अगर इनको यही बात चुभ रही थी तो तीन साल सरकार में क्यों रहे पहले ही अपना इस्तीफा देकर चले जाते परन्तु इनकी हिम्मत नहीं होती थी। ये तो कहते थे कि मुझे चेयरमैन बनाओ, मंत्री बनाओ।

श्री सतनारायण लाठर : कार्यकारी अध्यक्ष महोदय, इनका मरा हुआ सांप मैंने जिन्दा कराया। आठ साल से जुलाना हल्के से कोई उम्मीदवार जीत कर नहीं आया था। इनकी पार्टी से मैं अपने दम पर जीत कर आया। असली विकास पार्टी तो हमारी पार्टी है ये तो **** बैठे हुए हैं।

श्री कार्यकारी अध्यक्ष : लाठर साहब ने जो गुलाम शब्द कहा है, वह रिकार्ड न किया जाए। कार्यकारी अध्यक्ष महोदय, मैं सदन की जानकारी के लिए एक बात बताना चाहता हूं कि चौधरी बंसी लाल जी, सोनिया गांधी जी से क्या बात करके आए, उनके साथ क्या गुप-चुप समझौता हुआ, इस बारे में हमारी पार्टी के किसी भी सदस्य को कोई जानकारी नहीं है। इन का बी०एस०पी० के साथ क्या गुप-चुप समझौता हुआ, हमारी पार्टी के सदस्यों को इस बारे में भी कोई जानकारी नहीं है। (शोर एवं विघ्न) कार्यकारी अध्यक्ष महोदय, ये बार-बार विघ्न डाल रहे हैं तथा मेरा समय बर्बाद कर रहे हैं। (विघ्न)

* चेयर के आदेशानुसार रिकार्ड नहीं किया गया।

(ii) श्री अत्तर सिंह सैनी द्वारा-

श्री अत्तर सिंह सैनी : कार्यकारी अध्यक्ष महोदय, मेरी पर्सनल एक्सपलेनेशन है भाई लाठर जी ने मेरे बारे में कहा है कि इन्होंने अपने हल्के की समस्याएं मेरे सामने बताई हैं। मैंने इनकी ये समस्याएं मुख्य मंत्री महोदय को बता दी थीं माईनर्ज की लिस्ट में इनकी 3 माईनर थीं। रामकली का ज्यादा मशहूर माईनर था। इनके अलावा 3-4 और माईनर्ज थीं। चौधरी बंसी लाल जी ने इन माईनर्ज को नाबार्ड की स्कीम में डलवाकर मेरे सामने वर्ल्ड बैंक वालों को टैलीफोन किया कि ये माईनर्ज जरूर बननी हैं। इसलिए पैसा जल्दी दिया जाए उस लिस्ट में कम से कम 65 माईनर्ज थे।

विश्वास-मत (पुरनारम्भ)

श्री सतनारायण लाठर : कार्यकारी अध्यक्ष महोदय, हांसी और भिवानी की माईनर तो चालू भी हो गई हैं मेरे हल्के की क्यों नहीं हुई हैं ? मैं एक बात और सदन की जानकारी के लिए कहना चाहता हूं कि 27 सितम्बर, 1998 को चौधरी बंसी लाल जी जुलाना की एक आम सभा में यह कहकर आए थे कि अक्तूबर के महीने में माईनर की खुदाई का काम शुरू हो जाएगा लेकिन आज तक पता नहीं इन्होंने अपना यह वायदा पूरा क्यों नहीं किया है। अब मेरे अपने निजी प्रयासों के फलीभूत ये माईनर नाबार्ड के पैसे से बनने जा रही हैं। चाहे सड़कों का मामला हो अथवा ड्रेनों का मामला हो, श्री ढेसी साहब यहां पर बैठे हुए हैं, उन को पूछा जा सकता है कि मेरे हल्के के साथ इन मामलों में भी भेदभाव हुआ है। एक बार मेरे हल्के की 8 सड़कों का लोन मंजूर हुआ, लेकिन अगले दिन ही इनके निर्माण को रद्द कर दिया गया कि पैसा उपलब्ध नहीं है। चौधरी बंसी लाल जी की जींद जिले के साथ भेदभाव करने की आम बात हो गई थी। (शोर एवं विघ्न) कार्यकारी अध्यक्ष महोदय, 20 तारीख को हम सभी साथियों ने चौधरी बंसी लाल जी को कहा कि हम अल्पमत में आ गए हैं, हमें त्याग-पत्र दे देना चाहिए। लेकिन उन्होंने जब त्याग-पत्र नहीं दिया तो हम ने नैतिकता के आधार पर त्याग-पत्र दे दिया। इस पर उन्होंने हमें पार्टी से निकाल दिया। फिर हम ने अपनी नई पार्टी बना ली। यह हमारी पार्टी असली हरियाणा विकास पार्टी है। मैं एक बार फिर कहता हूं कि यदि इन्होंने गुलामी छोड़ दी है तो ये चौधरी ओम प्रकाश चौटाला जी के पक्ष में मतदान दें। धन्यवाद। (थंपिंग) (शोर एवं विघ्न)

कैप्टन अजय सिंह यादव (रिवाड़ी) : कार्यकारी अध्यक्ष महोदय, इस सदन में जो विश्वास मत का प्रस्ताव लीडर ऑफ दि हाऊस ने रखा है, मैं उसके विरोध में बोलने के लिए खड़ा हुआ हूं। मैं कहना चाहता हूं कि आज जिस वजह से हम यहां तीसरी बार इकट्ठे हुए हैं, उसका कारण यह है कि हमारी पार्टी ने पिछली 25 जून को एक फैसला लिया था कि सांप्रदायिकता और जातिवाद में विश्वास करने वाली भारतीय जनता पार्टी के गठबंधन वाली सरकार हम नहीं बनने देंगे। पिछले तीन सालों में चौधरी बंसी लाल की सरकार बहुत ही अलोकप्रिय सरकार रही थी और जिस प्रकार से हविपा-भाजपा गठबंधन सरकार ने राज किया, वह सराहनीय नहीं है। मुझे बड़ा अफसोस हुआ कि बी०जे०पी० के भाई जो पिछले सवा 3 साल से सरकार में रहे और पूरी मलाई खाई, इनके पास 17 लम्बी-2 गाड़ियां थीं। 3 साल तक इन्होंने यह कभी नहीं कहा कि सरकार बहुत बुरी है, मुझे बड़ा अफसोस होता है कि ये बी०जे०पी० के नेता राम बिलास शर्मा जोकि हमारे इलाके के हैं अगर उस दिन अपना समर्थन वापस लेते जिस दिन किसानों पर गोली चली और ये खुद मुख्यमंत्री बंसी लाल को कहते थे कि उन्होंने इनका घर फुंकवा दिया और कोई सिक्योरिटी नहीं दी ।उस मुद्दे पर ये इस्तीफा देते तो किसान भी कहते कि रामबिलास जी ने कोई अच्छा काम किया है। दक्षिण हरियाणा के इलाके में जो पानी की समस्या खासकर है उसके लिए ये लड़ते तो अच्छी बात होती। (विघ्न)

श्री रामपाल माजरा : ये कांग्रेस पार्टी के भाई किसानों के ज्यादा खैर-ख्वाह हैं। कैप्टन साहब भी उस सरकार के मंत्री थे जब निसिंग, दोहाना, नारनौल और नारनौंद में 13 किसान गोली से मरे थे। सैंकड़ों जख्मी हुए थे और कैप्टन साहब जेल मंत्रालय से बंधे रहे थे, उस वक्त आपने इस्तीफा क्यों नहीं दिया ?

कैप्टन अजय सिंह यादव : कार्यकारी अध्यक्ष जी, बी०जे०पी० के नेता रामविलास शर्मा जी अगर इस बात पर इस्तीफा देते कि हमारे दक्षिण हरियाणा में पानी की बड़ी भारी कमी है। हिसार और सिरसा वाले लोग लड़ाई लड़ते रहे, चौ० बंसी लाल से लड़ाई लड़ते रहे कि पानी बराबर मात्रा में बांटा जाए। इस मुद्दे पर इस्तीफा दे देते तो दक्षिण हरियाणा के लोग कहते कि सही मायने में बी०जे०पी० ने कोई अच्छा काम किया है। ये दुहाई देते फिरते थे कि चुंगी माफ करेंगे और जगह-जगह ऐलान किया। बी०जे०पी० के अध्यक्ष ने खुद कहा कि चुंगी माफ होनी चाहिए और उसके लिए एक सब-कमेटी भी बनाई, यहां पर भी उसका खुलासा किया गया कि इनकी खुद की सब-कमेटी ने कहा कि चुंगी माफ होनी चाहिए। मैं व्यक्तिगत तौर पर इस बात का विरोध करता हूं क्योंकि चुंगी माफ कर देंगे तो कमेटीज के अन्दर कैसे काम होगा? हमारी सरकार ने रिवाड़ी के अन्दर 100 एकड़ जमीन पर रिजनल सैन्टर का काम शुरू किया, उस समय एक करोड़ रुपया उस पर लगा था। आज ओम प्रकाश चौटाला ने कहा कि अच्छे सजैशन दो तो मैं इस बारे में उनसे कहना चाहूंगा कि वैसे तो आपने देवीलाल जी का जन्म दिन मनाया मैं कहना चाहूंगा कि वैसे जब आप सत्ता में आज आए हैं तो सत्ता में आने के बाद आप उनका जन्म दिन मनाएं ताकि आप कुछ दे सकें। मैंने सुना है कि आप 30 तारीख को वहां जा रहे हैं। हमारा रिवाड़ी कितना पिछड़ा एरिया है, उस वक्त बी०जे०पी० वाले कुछ बोले नहीं, इनके मुंह सिल गए थे और मुझे बंसी लाल जी पर भी अफसोस है कि इन्होंने वहां वह रिजनल सैन्टर जिस पर एक करोड़ रुपया खर्च हुआ था, बन्द करवा दिया। चौटाला साहब, मैं आपको तब मानूंगा जब आप उसको दोबारा चालू करवाएं और हम समझेंगे कि जो बात आप कह रहे हैं, वह सही है। इसके अलावा पूरे दक्षिण हरियाणा में बावल एग्रीकल्चर कॉलेज था। बी०जे०पी० उस समय स्पोर्ट विवड़ा करती जब चौ० बंसी लाल ने बावल एग्रीकल्चर कॉलेज बन्द किया था। ये उस समय इस्तीफा देते जब दक्षिण हरियाणा की लिफ्ट कैनाल सबसे खराब हो रही थी, उसमें पानी अन्तिम छोर तक नहीं पहुंच रहा था। (शोर) जब प्रोहीबिशन लगाया और जब प्रोहीबिशन हटाया, उस वक्त इनको अपनी बात कहनी चाहिए थी।

श्री चन्द्र भानिया : ये बार-बार रामविलास जी का नाम ले रहे हैं और कह रहे हैं कि समर्थन वापस ले लेते। हमने 3 साल तक अपनी बात भी की और जब हमने समर्थन वापस लिया तो सबसे पहले चिपकने वाले ये ही थे। मैंने चौ० भजन लाल जी और सुर्जेवाला को बधाई दी थी जो उन्होंने इनके समर्थन का विरोध किया था। कैप्टन साहब ने सबसे पहले यहां आकर गुण गाने शुरू कर दिए थे। तब ये 3 साल की बात भूल गये थे कि 3 साल लोगों पर अत्याचार हो रहे थे, उस समय तो ये कहने लगे कि ये बहुत बढ़िया काम हो रहा है। (विघ्न)

कैप्टन अजय सिंह यादव : कार्यकारी अध्यक्ष जी, क्या ये आपकी परमिशन से खड़े हुए हैं? जब जी में आता है, खड़े होकर बोलना शुरू कर देते हैं। 22 जनवरी, 1998 को राम विलास जी ने जो आज ओम प्रकाश चौटाला के साथ लगे हुए हैं, के बारे में कहा था कि ओम प्रकाश चौटाला के समय में 24 लोगों की हत्याएं हुई, 10 बसें जलाई गई और रेलवे स्टेशन पर खड़ी 9 ट्रेनों को जलाया गया। कार्यकारी अध्यक्ष महोदय, श्री रामविलास शर्मा जी चौधरी बंसी लाल जी के बारे में कहते थे कि इन्होंने हरियाणा प्रदेश के हर गांव तक सड़क पहुंचाई और हर गांव को बिजली से जोड़ा लेकिन आज इन्होंने चौधरी बंसी

लाल जी से समर्थन वापिस ले लिया। इतना ही नहीं रामविलास शर्मा जी तो यहां तक कहते थे कि भाजपा और हरियाणा विकास पार्टी दो जिस्म एक जान है। कार्यकारी अध्यक्ष महोदय, मेरी तो समझ में नहीं आता कि पहले तो शर्मा जी बंसी लाल जी के बारे में ऐसी बातें करते थे और आज इनसे समर्थन वापिस क्यों ले लिया? (शोर एवं व्यवधान) कार्यकारी अध्यक्ष महोदय, गणेशी लाल जी ने 21 जनवरी को यहां सदन में कहा था कि हलोदरा और कांग्रेस के सदस्य अपनी-अपनी पार्टी छोड़कर भाग रहे हैं और ये भाजपा और हरियाणा विकास पार्टी के गठबंधन में शामिल हो रहे हैं। इन्होंने कहा था कि ये सदस्य इसलिए भाजपा और हरियाणा विकास पार्टी में शामिल हो रहे हैं क्योंकि इन दोनों पार्टियों को गठबंधन बाईक्ल है। गणेशी लाल जी ने दोनों पार्टियों के गठबंधन को बाईक्ल कहा था पता नहीं आज यह गठबंधन कैसे टूट गया ? (शोर एवं व्यवधान)

श्री कार्यकारी अध्यक्ष : कैप्टन साहब, प्लीज आप दो मिनट में कंक्लूड करें।

कैप्टन अजय सिंह यादव : कार्यकारी अध्यक्ष महोदय, भाई कर्ण सिंह दलाल जी ने चौटाला साहब के बारे में कहा था कि जब ये तीन-चार बार जबरदस्ती मुख्यमंत्री बने थे उस वक्त इन्होंने प्रदेश की भलाई के बारे में क्यों नहीं सोचा। दलाल साहब ने कहा था कि चौटाला साहब अपने पिता जी के जलसों में पंजाबी भाईयों को लूटेरा कहते थे और बनिये बिरादरी को देश का दुश्मन बताया था। आज मैं दलाल साहब से पूछना चाहता हूं कि वे चौटाला साहब से कैसे मिल गये ? कार्यकारी अध्यक्ष महोदय, मैं बताता हूँ ये क्यों मिल गये, ये सभी अपने स्वार्थों की पूर्ति के लिए एक हुए हैं। ये तीन साल तक सत्ता सुख भोगने के बाद आगे भी सत्ता में रहने के लिए चौटाला साहब से मिल गये हैं। कार्यकारी अध्यक्ष महोदय, मैं चौटाला साहब को भी आगाह करना चाहता हूँ कि जब ये लोग चौधरी बंसी लाल जी के साथ नहीं रहे तो इनके साथ कैसे रह सकते हैं? इन्होंने कभी भी अपने हल्के की तरफ ध्यान नहीं दिया। ये तो सिर्फ ऐश करना और वातानुकूल गाड़ियों में घूमना चाहते हैं। ये भाई सिद्धांतों को लेकर इकट्ठे नहीं हुए बल्कि स्वार्थ पूर्ति के लिए इकट्ठे हुए हैं। (शोर एवं व्यवधान) कार्यकारी अध्यक्ष महोदय, मैं उन भाईयों को जो हरियाणा विकास पार्टी छोड़कर चौटाला साहब से मिल गये हैं, को कहना चाहूंगा कि तब वे कहां जायेंगे जब चौटाला साहब लोक सभा चुनावों के बाद हरियाणा विधान सभा के चुनाव करायेंगे। मैं तो कहता हूँ कि तब इनको अपनी हैसियत का पता चल जायेगा। कार्यकारी अध्यक्ष महोदय, जनता ने भाजपा और हरियाणा विकास पार्टी को मेनडेट दिया था, इस सरकार को मेनडेट नहीं दिया था और ये भाई चोर दरवाजे से आकर सत्ता में बैठ गये। इनको इसका खामियाजा लोक सभा चुनावों में भुगतना पड़ेगा। प्रदेश की जनता इनको बिल्कुल भी माफ नहीं करेगी। (शोर एवं व्यवधान)

श्री कार्यकारी अध्यक्ष : कैप्टन साहब, प्लीज आप एक मिनट में कंक्लूड करें।

कैप्टन अजय सिंह यादव : कार्यकारी अध्यक्ष महोदय, मेरे भाईयों ने जो यह गठबंधन बनाया है यह सांप्रदायिक और जातिवादी गठबंधन है, इनको आने वाले लोक सभा चुनाओं में जनता सबक सीखायेगी। (शोर एवं व्यवधान)

श्री कार्यकारी अध्यक्ष : कैप्टन साहब, अब आप बैठिये।

श्री धर्मवीर यादव : कार्यकारी अध्यक्ष महोदय, कैप्टन साहब रिजनल सैन्टर, मीरपुर की अभी बात कर रहे थे। चौधरी भजनलाल जी की सरकार में ये पांच साल तक मंत्री रहे हैं और इन पांच सालों में इस रिजनल सैन्टर के लिये केवल 80 लाख रुपये की ग्रान्ट दी गई है जो कि ऊंट के मुंह में जीरे के

[श्री धर्मवीर यादव]

समान है। (शोर) यह हाऊस को मिस-लीड कर रहे हैं कि 1 करोड़ रुपये की ग्रान्ट दी गई है। इस रिजनल सैन्टर को 100 एकड़ जमीन देने की जो बात कैप्टन साहब कर रहे थे यह जमीन मीरपुर गांव वालों ने दी है। सरकार का इसमें कोई लेना-देना नहीं है और न ही सरकार के पास इसका कोई लेखा-जोखा है।

श्री सम्पत सिंह (फतेहाबाद) : कार्यकारी अध्यक्ष महोदय, आज आदरणीय मुख्यमंत्री श्री ओम प्रकाश चौटाला जी ने जो प्रस्ताव विश्वास मत प्राप्त करने के लिए रखा है मैं उसके समर्थन में खड़ा हुआ हूँ। कार्यकारी अध्यक्ष महोदय जहां तक विश्वास की बात है तो गवर्नर महोदय के सामने 55 विधायकों ने बकायदा फिल्मीकली पेश होकर दावा किया कि वे चौटाला साहब को अपना लीडर मानते हैं। कार्यकारी अध्यक्ष महोदय, जब शपथ समारोह हो रहा था तो आपने स्वयं देखा कि देखने लायक नजारा था। हरियाणा प्रदेश की जनता ने कितनी खुशियां मनाई। इससे पहले तो पता ही नहीं लगता था कि ओथ कब हो जाती है। हजारों लोग इस ओथ समारोह में शामिल हुए। सारे चण्डीगढ़ में कहीं भी पांव रखने की जगह नहीं थी। हरियाणा प्रदेश की जनता ने खुशियां मनाई और सारे हरियाणा प्रदेश में दिवाली मनाई गई। चौधरी बंसी लाल सरकार की छुट्टी होने पर लोगों ने इतना रिलीफ महसूस किया जितना कि एमरजैन्सी हटने के बाद भी महसूस नहीं किया। इसी से पता लगता है कि लोग क्या चाहते थे। लोग चाहते थे कि किसानों के, मजदूरों के, गरीबों के और 36 बिरादरियों के हकों की बात करने वाली सरकार आए और उनकी इच्छा पूरी हुई। आज सरकार को जनसमर्थन भी प्राप्त है और विधायकों का भी समर्थन प्राप्त है। मेरे उधर के साथी आज बड़े-बड़े आंसू बहा रहे हैं अभी तो विपक्ष में आए इनको जुमा-जुमा तीन दिन भी नहीं हुये हैं और कभी किसी पर इल्जाम लगा रहे हैं तो कभी किसी पर। उनमें इतनी फ्रस्ट्रेशन्स आ गई है। इनको थोड़ा सोचना चाहिए कि प्रजातंत्र का जो मूल स्ट्रक्चर था उसका क्या हाल इन्होंने बना दिया? बेसिक स्ट्रक्चर को किस तरह से इन्होंने बिगाड़ दिया है। अब इनकी सरकार चली गई तो कह रहे हैं कि कुछ सदस्य छोड़कर भाग गये, दल-बदलू हो गये जबकि उन्होंने इनको जवाब दे दिया कि पैरलल डिविजन हुआ है और 17 सदस्य आपकी ओर हैं तथा 17 सदस्य हमारी ओर हैं लेकिन सरकार जाने का जो असली कारण है वह कारण इनका अपना मुखिया बना है। इन्होंने प्रदेश के सारे ढांचे को कोलैप्स करके रख दिया। चाहे वह कानून और व्यवस्था की बात हो या लैजिस्लेचर की बात हो। विधायकों की क्या पोजिशन इन्होंने छोड़ी थी। जब हम हाऊस में आवाज उठाते थे तो बार-बार नेम कर दिया जाता था। वाक-आऊट करके बाहर जाते हुए भी नेम किया जाता था, सस्पैंड किया जाता था। एक मिनट भी नहीं होता था कि धमकियां दी जाती थी कि नेम कर दूंगा। बोलने नहीं दिया जाता था और किस तरह से जबरदस्ती की जाती थी। विधानसभा की कोई पोजिशन नहीं छोड़ी थी। आज ये लोग किस मुंह से संविधान की बात करते हैं, कानून व्यवस्था की बात करते हैं और नैतिकता की बात करते हैं जिन्होंने सारे सिस्टम का मलियामेट करके सत्यानाश करके छोड़ दिया था। खास कर के उस दिन तो यह सब कर जाते जिस दिन लाइव-टैलिकास्ट हो रहा था। किस तरह से स्पीकर का एक्सपोजर हुआ। इतना बुरा हाल तो शायद हिन्दुस्तान की पार्लियामैंट या किसी विधानसभा के अन्दर देखने को नहीं मिलेगा। कारण तो ये लोग खुद बने हैं। उस समय एम०एल०एज० की क्या पोजीशन होती थी यह आप सभी को पता है। उस समय मंत्रियों की पोजीशन खराब होती थी तो एम०एल०एज० बेचारों की औकात ही क्या थी। प्रजातंत्र सरकार में कोलैक्टिव रिस्पोंसिबिलिटी होती है उन लोगों की भी अकाऊंटेबिलिटी होती है। वे पब्लिक के प्रति जिम्मेदार होते हैं। यदि अच्छा काम करेंगे तो लोग उनको अच्छा रिजल्ट देंगे यदि बुरा काम करेंगे तो लोग उनको बुरा रिजल्ट देंगे। उस समय कौंसिल औफ मिनिस्टर्ज की पोजीशन भी

बहुत खराब होती थी। महकमों में घोषणाएं होती थी उनके बारे में मंत्रियों को खुद पता नहीं होता था। चौधरी मनी राम गोदारा जी इस हाऊस में सबसे सीनियर मैम्बर हैं और पूर्व सरकार में ये मम्बर दो के कैबिनेट मंत्री रहे हैं। दो तीन बार इनका खुद का ब्यान आया है कि इनके महकमें के बारे में जो घोषणाएं होती थीं तब उनके बारे में इनको पता नहीं होता था। हम इनको कहते थे कि आपके महकमें का फलां काम हो गया तो ये कहते थे नहीं इस बारे में मुझे नहीं मालूम। ये खुद इस बात को मानते रहे हैं। पूर्व सरकार के मुख्य मंत्री जब डिस्ट्रिक्ट हैडक्वार्टर पर जाया करते थे तो वे डी०सी० और एस०पी० को अन्दर ब्रीफिंग रूम में ले कर बैठ जाते थे और बाहर मिनिस्टर और एम०एल०एज० बैठे रहते थे जैसे चौकीदार बैठे हों। बाहर उनकी पार्टी के वर्कर बैठे रहते थे, वोटर बठे रहते थे उनको पता है वे उस समय अपनी क्या पोजीशन देखते थे। ये बार-बार उन लोगों को सताते थे उस समय वोटर और वर्कर्ज की बहुत बूरी हालत थी। हम लोग उस समय उनसे कहा करते थे कि इससे अच्छा है आप लोग इनको छोड़ कर अलग हो जाएं। आज आप सभी देख रहे हैं कि उनकी पार्टी के माननीय सदस्यों के चेहरों पर बहुत खुशी है। ऐसा लग रहा है जैसे ये लोग जेल से छूट कर आए हों। (शोर) मैं कह रहा हूं कि जैसे ये लोग आज आजाद हो गए हों। कार्यकारी अध्यक्ष महोदय, जिस किस्म की पोजीशन आज हुई है यदि इस तरह से लोगों को तंग किया जाएगा तो स्वाभाविक तौर पर आन्दोलन होगा। लोग आन्दोलन करके प्रोटैस्ट भी करेंगे। प्रौटैस्ट के रूप में बड़े-बड़े फैसले लिखा करते हैं। पूर्व सरकार ने भी फैसले लिए। उस सरकार ने जो फैसले लिए उनसे उनकी वह बात रंग लाई और हरियाणा प्रदेश की जनता की इच्छा पूरी हुई। आज मुझे पुराने फ्रैन्च रिवोल्यूशन की बात याद आ गई। फ्रैंच रिवोल्यूशन 1789 में बास्टल जेल से शुरू हुआ था। उस जेल में उस समय जितने भी लोग थे करीब उस जेल में सैकड़ों लोग थे वे जेल तोड़ कर भागे और उन लोगों ने वहां पर डिक्टेटरशिप को खत्म करने की नींव रखी। उसके बाद वहां पर डिक्टेटरशिप खत्म हुई। हरियाणा प्रदेश में आज इन लोगों ने भी पूर्व सरकार के मुख्य मंत्री की डिक्टेटरशिप को खत्म करने की नींव रखी है और हरियाणा प्रदेश से इन लोगों ने डिक्टेटरशिप को एकदम खत्म कर दिया है। हमें इनका स्वागत करना चाहिए इनका वैलकम करना चाहिए। आज हरियाणा प्रदेश में प्रजातंत्र रिवाइव हो गया है। वैसे लोगों की अपनी-अपनी आदत होती है। पोलिटिकल फिलासफर कहते हैं कि प्लैजर कई किस्म से होता है जिसमें शैडेस्टिक प्लैजर भी होता है। एक आदमी को एक नये बच्चे के जन्म पर खुशी होगी, किसी गरीब आदमी की मदद करने पर खुशी होगी, किसी को एक्सीडेंट में मरते हुए बचा कर खुशी होगी। कई आदमी ऐसे भी होते हैं जिनको किसी आदमी को मार कर खुशी होगी, किसी को तकलीफ में देख कर हंस कर खुशी होगी। इस तरह की खुशी के बारे में मैं आपको बताना चाहूँगा कि कम्बोडिया में एक डिक्टेटर हुआ है जिसका नाम पोलपोट था। उसने अपने समय में वहां के 2.6 मिलियन लोगों को मरवाया था यानि 26 लाख लोगों को उसने मरवाया था। उसको मनुष्य की खोपड़ियां रखने का शोक था। उसने लोगों की खोपड़ियां इकट्ठी करके एक म्यूजियम बनाया हुआ था, उनको शैडेस्टिक प्लैजर लेने की खुशी होती थी। हरियाणा प्रदेश में पूर्व मुख्य मंत्री चौधरी बंसी लाल जी को भी शैडस्टिक प्लैजर की खुशी होती थी। एम०एल०एज० की बेइज्जती करना, मंत्रियों की बेइज्जती करना, औफिसर्ज की बेइज्जती करना और तानाशाह तरीके से चलने में उनको खुशी मिलती थी। मंडियाली, बहादुरगढ़ और कलायत में किसान मरे और दूसरी कई जगहों पर किसान मरे। जो किसान मारे जाते थे हम लोग उसकी आलोचना करते थे उन द्वारा उसको एप्रिशिएट करने की बजाए, आयंदा ऐसी घटनाएं न हों इस बात को रोकने की बजाय वे प्लैजर महसूस करते थे। जिस आदमी की इस किस्म की नेचर होगी उस स्टेट का क्या हाल होगा? कार्यकारी अध्यक्ष महोदय, जिस दिन राज्यपाल महोदय ने आदेश दे दिया कि मुख्य मंत्री जी आप वोट औफ कांफिडैंस सीक करें। एक तरफ तो राज्यपाल महोदय

[श्री सम्पत सिंह]

का हमारे मुख्य मंत्री को वोट औफ कांफिडैंस सीक करने का आदेश हो गया और दूसरी तरफ पूर्व मुख्य मंत्री फाइलें मंगवा कर औफिसर्ज की *** लिख रहे थे। चौधरी बंसी लाल को कोई पौजीटिव वर्क करके प्लेजर नहीं होती थी। उन्होंने आधे से ज्यादा आई०ए०एस० आफिसरों की *** कर रखी थी। (विघ्न) जैसे वे व्यवहार कर रहे थे उसको कौन बर्दाश्त करेगा? कार्यकारी अध्यक्ष महोदय, उनके समय में व्यापारियों ने अपनी मांगों के बारे में आन्दोलन किया तो उन पर गोलियां चलाई गई और लाठियां बरसाई गईं। जबकि व्यापारियों को रियायत देने के बारे में इन्होंने वायदा किया कि हम टैक्सिज का सरलीकरण करेंगे और टैक्स कम करेंगे। लेकिन बंसी लाल जी को तो गलत काम करके प्लेजर मिलती थी।

प्रो० छत्तर सिंह चौहान : कार्यकारी अध्यक्ष महोदय, माननीय सम्पत सिंह जी कह रहे थे कि आई०ए०एस० आफिसर्ज की *** कर रखी है। मैं बताना चाहूंगा कि *** इसलिए इनको कोई गलत बात नहीं कहनी चाहिए क्योंकि ये गृह मंत्री भी रह चुके हैं और कई बार इस सदन के सदस्य रह चुके हैं। इसलिए इनको कोई गलत बात नहीं करनी चाहिए और न ही गुमराह करने वाली कोई बात यहां कहें। ऐसी निराधार बातें करना इनको शोभा नहीं देता।

श्री सम्पत सिंह : * * * * * *

श्री कार्यकारी अध्यक्ष : ए०सी०आर० से संबंधित जो बात कही गई है उसे रिकार्ड न किया जाये।

श्री सम्पत सिंह : कार्यकारी अध्यक्ष महोदय, आदमी जाते-जाते अच्छा काम करके जाता है लेकिन इन्होंने वह भी नहीं किया। चौहान साहब जो सुबह तक स्पीकर थे तो इनकी तरफ से बी०ए०सी० की मीटिंग का नोटिस कभी 11.00 बजे का मिलता है तो कभी 12.40 बजे का नोटिस मिलता है। इन्होंने मीटिंग से सिर्फ 5 मिनट पहले अपना रेजिगनेशन दिया। जिस दिन मुख्य मंत्री जी ने विश्वास मत लेना था तो उन्होंने भी सिर्फ 5 मिनट पहले रैजिगनेशन दिया। यह पांच मिनट का क्या चक्र है ? चौहान साहब ने भी आज 12.35 पर रैजिगनेशन दिया, वह इसलिए दिया कि आज की इनको स्पीकर की पे मिल सके। ऐसी सोच जिस आदमी की हो तो उससे आप क्या उम्मीद कर सकते हैं? (विघ्न)

श्री राम बिलास शर्मा : अभी प्रो० संपत सिंह जी ने कहा कि इनका 5 मिनट का क्या चक्र है। मैं बताना चाहूंगा कि बाटा के जूतों पर लिखा होता है 295 रुपये या 895 रुपये। इसका मतलब यह हुआ कि इनका जो जाने का मुहर्त निकला हुआ है वह जाने से 5 मिनट पहले का निकला हुआ है। इन्होंने आने का महूर्त नहीं निकलवाया। (विघ्न) इन्होंने ठीक मुहूर्त नहीं निकलवाया।

श्री सम्पत सिंह : कार्यकारी अध्यक्ष महोदय, यहां से गाबा साहब चले गए, वे गुड़गांव के बारे में जिक्र कर रहे थे। यह सही बात है कि पिछले सवा तीन साल से ला एण्ड आर्डर नाम की कोई चीज प्रदेश में नहीं थी। इन्होंने शराब बंदी की। उसकी आड़ में माफिया खड़ा किया हुआ था, उसके लिए सरकार ही बाकायदा जिम्मेदार थी। इन्हीं की मिलीभगत से शराब अवैध रूप से बिकती थी। इनकी सरकार ने शराब माफिया को प्रोटैक्शन दिया। इस काम में डेढ़ लाख लोग जिनमें छोटे-छोटे बच्चे थे, शामिल थे। इन्होंने जो थोक के व्यापारी थे उनको तो प्रोटैक्शन दिया लेकिन जो ये बच्चे शराब बेचने में उनके साथ लगे हुए थे उनकी ओर कोई ध्यान नहीं दिया। अब वे जो डेढ़ लाख बच्चे थे शराब बंदी खत्म होने के बाद क्राईम करने लग गए इसीलिए अपराधों की संख्या बढ़ी। उनको काबू करने में और राई

* चेयर के आदेशानुसार रिकार्ड नहीं किया गया।

21.00 बजे रास्ते पर लाने के लिए टाईम तो लगेगा ही। जैसे कि मुख्य मन्त्री चौधरी ओम प्रकाश चौटाला जी ने प्रायोरिटी की बात कही है, वाकायदा उस पर ध्यान दिया जाएगा। अगर उसका जिम्मेदार कोई है तो वह ये लोग हैं। अभी इससे पहले सिद्धान्तों की बात चलती रही है कि फलां पार्टी का समर्थन हो गया या फलां का वापिस ले लिया। सर, जो पार्टी अपने आप को नेशनल पार्टी कहती है उसकी क्या हालत है वह मैं आपको बताता हूं। पिछली बार जब वोट ऑफ कन्फिडैंस सीक करने की बात आई थी तो कोई पौने दो बजे चौधरी खुर्शीद अहमद जी बी०जे०पी० के दफ्तर के सामने जब वहां पर आप और आपके एक और साथी भी थे, यह कह कर गए थे कि कांग्रेस पार्टी ने फैसला कर लिया है कि हम विरोध में वोट डालेंगे और वोट ऑफ कॉन्फिडैंस का विरोध करेंगे। उस वक्त विरोध की बात आई थी। मुख्य मन्त्री जी द्वारा जब हाऊस में श्रद्धांजलि पेश करने की बात आई तो चौधरी बंसी लाल जी ने कहा था मुझे बैठे-बैठे बोलने की इजाजत दी जाए क्योंकि मैं हार्ट पेशन्ट हूं, मुझे दिल की बीमारी है। उस वक्त उनको बैठे-बैठे बोलने की इजाजत दी गई थी। उनकी हालत उस वक्त इतनी पतली हो गई थी क्योंकि कांग्रेस पार्टी ने इनके विरोध का फैसला कर लिया था। उसके बाद तीन बजे इनका व्हिप आता है कि ये लोग एबसैंट रहेंगे। हमें ये कहने लगे कि हमें व्हिप आ गया है इसलिए हमें एबसैंट रहना पड़ेगा। उसके बाद चौधरी बीरेन्द्र सिंह जी बोलते हैं तो चौधरी बंसी लाल जी को पता लग गया होगा लेकिन हमें पता नहीं लगा तो चौधरी बीरेन्द्र सिंह जी ने बोलते टाईम तीसरे व्हिप का जिक्र किया और कहा कि हम पक्ष में वोट देंगे। "पक्ष" का नाम सुनते ही चौधरी बंसी लाल जी खड़े हो कर बोलने लगे। ऐसी हवा, ऐसी ऑक्सीजन हमने कभी नहीं देखी। लोगों में हुश्न का नशा भी देखा है, ताकत का नशा भी देखा है, जायदाद का नशा भी देखा है लेकिन उस दिन सत्ता का जैसा नशा देखा वह आज तक देखने को नहीं मिला। कार्यकारी अध्यक्ष महोदय, एक नेशनल पार्टी का स्टैंड क्या रह गया जो एक दिन में तीन-तीन व्हिप जारी करे। अब क्या हालात पैदा हो गए हैं ? (विघ्न)

श्री धर्मबीर गाबा : कार्यकारी अध्यक्ष महोदय, मेरा प्वायंट ऑफ आर्डर है। चौधरी सम्पत सिंह जी बड़े सुलझे हुए आदमी हैं और मेरे दिल में उनके लिए बड़ी कद्र है। कोई भी नेशनल पार्टी तीन-तीन व्हिप जारी नहीं करती लेकिन अगर इनके यहां कोई ऐसी रिवायत हो तो मुझे मालूम नहीं। हमारे पास तीन बार व्हिप नहीं आया और न ही तीन बार व्हिप जारी ही हुआ था। केवल एक ही व्हिप जारी हुआ था जिस पर हमने अमल किया था। इस प्रकार की बात कह कर ये लोगों को मिसलीड क्यों करते हैं? उस सरकार का हमने समर्थन किया था हम खुद इस बात को मानते हैं। इस प्रकार की बात को बढ़ा-चढ़ा कर और मिर्च मसाला लगा कर पेश करना अच्छी बात नहीं है।

श्री सम्पत सिंह : कार्यकारी अध्यक्ष महोदय, खुद चौधरी खुर्शीद अहमद जी बात करके आये थे कि हम विरोध करेंगे क्योंकि विरोध का फैसला हुआ है। एक दिन में तीन-तीन बार फैसला बदला गया। अब उस बात को भी छोड़ो। अब क्या हालात बदल गये थे। पिछले दिनों इन्होंने उस सरकार का समर्थन किया था और अब कह रहे हैं कि जनता ने बी०जे०पी० और एच०वी०पी० को मैंडेट दिया था। बी०जे०पी ने गलती की कि उसने सपोर्ट विद्ड्रा कर ली और मैंडेट की कद्र नहीं की। इनको कोई पूछने वाला हो कि इनको किस बात का मैंडेट मिला था। इन के 12 सदस्यों को जो मैंडेट मिला था वह भी एच०वी०पी० और बी०जे०पी० के खिलाफ मिला था। कार्यकारी अध्यक्ष महोदय, इन लोगों ने उस मैंडेट को हाईजैक किया। हाईजैक करने के लिए क्या आर्थिक सौदा किया या क्या आर्थिक लाभ की बात हुई या किस बात पर इनका एग्रीमैंट हुआ यह मुझे मालूम नहीं है। इन्होंने उस सरकार का समर्थन दिया जबकि ये उनके खिलाफ मैंडेट ले कर आए थे। अब इन्होंने जो विरोध का फैसला लिया उसके लिए क्या हालात

[श्री सम्पत सिंह]

पैदा हो गए थे। वही मुख्य मंत्री और वही लोग पहले तो कांग्रेस पार्टी में उसका समर्थन किया और बाद में समर्थन वापिस ले लिया। ये किस सिद्धान्त की बात कर रहे हैं और जात-पात तथा साम्प्रदायिकता की बात करते हैं। कार्यकारी अध्यक्ष महोदय, इन लोगों को अपने गिरेबान में झांक कर देखना चाहिए। 31 अक्तुबर, 1984 को जब श्रीमती इंदिरा गांधी का कत्ल हो गया था सारा देश शोक में डूब गया था लेकिन सारे देश में यह भावना भी थी कि अगर प्रधान मंत्री लेवल तक सिक्योरिटी नहीं रहती तो फिर आम आदमी की कोई सिक्योरिटी नहीं है। मैं खुद उस दिन दिल्ली में था। 31 अक्तूबर से पहले मैंने कान का आप्रेशन करवाया था और मुझे ऑल इण्डिया मैडिकल इन्स्टीच्यूट में जाना था तो उस दिन मुझे बताया गया कि उनका पोस्ट मार्टम वगैरह होना है इसलिए आप कल आइये। मैं अगले दिन एक तारीख को ऑल इण्डिया मैडिकल इन्स्टीच्यूट गया। मैं ग्यारह बजे गया था और बारह बजे जब वापिस आता हूं तब तक दिल्ली में कोई हलचल नहीं थी। चौधरी देवी लाल जी भी उस दिन हरियाणा भवन में ही ठहरे हुए थे। मैं वहां से आने के बाद सो गया क्योंकि मैं बीमार था। दो बजे के करीब मुझे चौधरी देवी लाल जी ने जगाया और कहा, सम्पत सिंह तू सो रहा है और यहां दिल्ली जल रही है। जिस तरह से दिल्ली को जलाया गया और एक सम्प्रदाय के लोगों का कत्ल किया गया आज भी उस बात की याद आते ही रोंगटे खड़े हो जाते हैं। वह कत्ल करवाने वाला कौन था ? कांग्रेस के एम०पीज़० के खिलाफ चार्जशीट हुई और उनके चालान कोर्ट के अन्दर पुट हुए हैं फिर ये लोग आज साम्प्रदायिकता की बात करते हैं। कैसे नन्हें बच्चों को बोरियों में डाल कर तेल लगा कर उनके मां-बाप के सामने जलाया गया, औरतों को जलाया गया। इस तरह का साम्प्रदायिकता का नंगा नाच इन की पार्टी के लोगों ने किया और वह पार्टी आज जिक्र करती हैं कि हम सेक्यूलर हैं। फलाना फोर्सिज यह है, फलाना फोर्सिज वह है। स्पीकर साहब, देश में आग लगाने वाले ये लोग हैं। इन्होंने जात-पात के नाम पर लोगों से वोट लिए हैं। हमेशा लोगों को बांट-बांट कर, नारे दे दे कर लोगों से वोट लिए हैं। कभी किसी प्रोग्राम के नाम पर वोट लिए और कभी किसी पालिसी पर लोगों से वोट लिए। इसलिए यह बात जो ये कह रहे हैं वह इनको शोभा नहीं देती है। स्पीकर सर, मैं और ज्यादा बातें न कहते हुए मैं इतना ही चाहूंगा कि आज चौटाला साहब के सामने बहुत सी चिन्ताएं हैं। हमारे से पहले जो लोग यहां पर थे वे हमारे लिए काफी चिन्ताएं छोड़कर गए हैं। आज हरियाणा प्रदेश में 8 लाख से ज्यादा रजिस्टर्ड अन-इम्पलाईड लोग हैं, उनकी तरफ भी चौटाला साहब को देखना होगा ये लोग काफी माहौल खराब करके गए हैं विशेषकर बिजली महकमे का बहुत बुरा हाल हुआ है। अत्तर सिंह सैनी जी यहां पर बैठे हुए हैं इन्होंने आज सिविल वार टाईप माहौल कर दिया है। सर, मैं आपके माध्यम से यह पूछना चाहूंगा कि क्या उस समय के मुख्य मंत्री महोदय के मुंह से यह बात शोभा देती है कि मैं बिजली देता हूं लेकिन ये नहीं देते हैं इनको पकड़-पकड़ कर जूते मारो। सर, इस बात का असर भी हुआ और घरौंडा के अन्दर बिजली कर्मचारी मारा गया। यह बहुत ही बुरी घटना है और हम इस घटना की निंदा करते हैं। स्पीकर सर, वह उत्तेजना किस ने पैदा की, उस समय के मुख्य मंत्री महोदय ने की। उसके ब्यान ने वह उत्तेजना पैदा की लोगों ने सोचा कि सरकार तो बिजली दे रही है लेकिन बोर्ड वाले कर्मचारी बिजली नहीं दे रहे हैं इसलिए बिजली बोर्ड के कर्मचारियों को मार दिया गया। (विघ्न)

श्री अत्तर सिंह सैनी : कार्यकारी अध्यक्ष महोदय, उस समय के मुख्य मंत्री जी ने कोई ऐसी स्टेटमैंट नहीं दी जिससे कोई उत्तेजना पैदा होती हो। हम बिजली महकमें में पूरा काम करके गए हैं और अब आप उस काम को सम्भाल लेना।

श्री सम्पत सिंह : कार्यकारी स्पीकर सर, इनका एक सर्कुलर गया था कि सब-स्टेशन से दो फेज की बिजली जाती है अगर उस पर 25 प्रतिशत लोड पड़ जाता है तो उसको दो घंटे के लिए डिसकनैक्ट कर दिया जाए, उसको सब स्टेशन से काट दिया जाए। इसका मतलब यह हुआ कि टोटल एरिया का डिस-कनैक्शन हो जाएगा। अगर दोबारा यह बात हो जाए तो चार घंटे के लिए बिजली काट दो। तीसरा हो जाए तो सारे दिन के लिए बिजली काट दो। कार्यकारी स्पीकर सर, अब ये ही बताएं कि इससे क्या समझें ? सर, कुछ आदमी सब-स्टेशन पर चले गए और वहां पर उन्होंने देखा की दो फेज की बिजली थी। लेकिन उससे आगे के कनैक्शन को डिसकनैक्ट कर दिया गया था। उसको देखकर लोगों ने यह सोचा कि कर्मचारी बिजली नहीं दे रहे हैं इसलिए कार्यकारी स्पीकर सर, वहां पर कर्मचारियों को मारा पिटा गया और एक कर्मचारी मारा गया। सर, यह घटना और भी कई जगहों पर हुई। करनाल और कुरुक्षेत्र के अन्दर कई घटनाएं ऐसी हुई जिसमें बिजली कर्मचारियों को चोटें आई हैं। इन्होंने फिर 30 जून से 24 घंटे बिजली देने की बात कही। कार्यकारी स्पीकर सर, बिल्ली थैले से बाहर आ गई। 30 दिन से दो दिन पहले की अखबार में एडवरटाईजमैंट दी गई। उसमें हैडिंग दिया गया कि "अटैनशन इलैक्ट्रीसिटी कन्जयूमर्ज"। उसमें इन्होंने लिखा कि हमने कमिटमैंट की थी कि राउंड दि कलॉक दो फेज बिजली फार लाईटिंग परपज देंगे। क्या आपका तीन फेज से कोई मतलब नहीं है ? सैनी जी, क्या आपका पावर ब्लाकस और दूसरे इन्स्ट्रूमैंट से कोई मतलब नहीं है ? आप बिजली मंत्री थे और आपकी अखबार के अन्दर एडवरटाईजमैंट आई थी। आपने वह एडवरटाईजमैंट इलैक्ट्रीसीटी कन्जयूमर्ज को अटैनशन करने के लिए की थी। स्पीकर सर, मैं आपके माध्यम से इनको बताना चाहूंगा कि दो फेज कुछ भी नहीं हैं, दो फेज से न तो ट्यूबवैल चलता है और न ही इन्डस्ट्रीज चलती हैं। सर, आपको भी पता है कि डोमैस्टिक कंजयूमर्ज के पास भी तीन फेज के मीटर ज्यादा हैं। अब कौन बचा है, मेरे हिसाब से कोई भी नहीं बचा है जिसके पास दो फेज का कनैक्शन हो। डोमैस्टिक कन्जयूमर्ज 25 प्रतिशत हैं उनमें से भी तीन फेज के मीटर वालों को निकाल दें तो 10-12 प्रतिशत ही कन्जयूमर्ज रह जाते हैं। इसका मतलब यह हुआ कि इन्होंने जो कमिटमैंट की थी वह 90 प्रतिशत कन्जयूमर्ज के लिए खत्म कर दी। कार्यकारी स्पीकर सर, लाईटिंग परपज का मतलब होता है कि लोगों का एक बल्ब जलता रहे और इससे फालतु बिजली नहीं देंगे। फिर इन्होंने कह दिया कि 26 गांवों में बिजली नहीं दे पाएंगे । फिर मंत्री जी ने कह दिया की 400 गांवों में बिजली नहीं दे पाएंगे। सर, कुछ कनैक्शनज तो इन्होंने पहले ही काट दिए हैं। बहुत से गांव तो आज भी अंधेरे में हैं। इन लोगों के सामूहिक तौर पर लोगों के बिजली के कनैक्शन काट दिए हैं। आज लोगों को पूरी बिजली देने का चैलेंज चौटाला साहब के सामने है। (विघ्न) हां हो सकता है कि 24 घंटे बिजली एक हफ्ते में देने की बात कही होगी।

श्री अत्तर सिंह सैनी : सर, मेरा प्वायंट ऑफ आर्डर है। हमने एक हफ्ते में नहीं रोज 24 घंटे बिजली देने की बात कही थी। (विघ्न) वह बात हमने पूरी भी की है। सर, जब से हरियाणा बना है तब से लेकर आज तक 12-7-99 को हमने सबसे ज्यादा बिजली 516 लाख यूनिट दी है। इतनी यूनिट बिजली कभी किसी सरकार के समय में नहीं दी गई है। चौधरी भजन लाल के राज्य में 16-17 को 409 लाख यूनिट बिजली दी गई थी और चौधरी देवी लाल तथा ओम प्रकाश चौटाला के राज में 315 लाख यूनिट बिजली दी गई थी। सर, रही बात दो फेज की तो यह बात हमने पहले ही कह दी थी कि दो फेज की बिजली 24 घंटे मिलेगी और दो-दो घंटे के लिए वाटर सप्लाई की बिजली मिलेगी। इसके अलावा यह बात हमने पहले कही थी कि जो थ्री फेज की बिजली है वह किसानों को आठ दस घंटे मिलेगी। सर, ये सारी बातें जनता को पहले ही बता दी गयी थीं।

श्री सम्पत सिंह : इसी तरह से सर और भी बहुत चेलेंज हैं। आज हरियाणा प्रदेश की टोटल सड़कें टूटी पड़ी हैं कोई भी सड़क ऐसी नहीं है जिस पर आप आराम से चल सकें। अगर युरोपियन कंट्रीज या अमरीकन कंट्री की तरह हमारे देश में इस तरह के लॉ होते तो यहां पर भी लोग सड़कों को लेकर दावा डाल सकते थे लेकिन यहां ऐसे लॉ नहीं हैं। किसका दोष है ? सड़कों के खराब होने की वजह से कितने ही लोगों के हाथ पांव टूटे, कितनी ही बीमारियां जैसे स्पोंडीलाईटिस आयी है, कितनी ही गाड़ियां खत्म हुई हैं या कितना पैसा बर्बाद हुआ है लेकिन सर, ये टस से मस नहीं हुए। वह पैसा कहां गया है किसी को कोई पता नहीं है। आज जितने भी इंस्टीच्यूशंज हैं चाहे वह यूनिवर्सिटीज हों या कोई और हों, सबको बुरी हालत में पहुंचा दिया है। इन्होंने सारी यूनिवर्सिटीज की कॉलेज से भी डाउन कर दिया है। कभी ये वहां पर रिक्रूटमैंट बंद कर रहे थे और कभी ये वहां की फाईनेंशियल ऐड बंद कर रहे थे। पीछे तो यहां तक हालत हो गयी थी कि वहां के लोगों की तनख्वाह तक रुक गयी थी क्योंकि यूनिवर्सिटीज को ग्रांट तीन-तीन महीने, 6-6 महीने बाद दी जाती थी जबकि तनख्वाह तो हर महीने देनी होती थी। कार्यकारी अध्यक्ष महोदय, इनके समय में रैवेन्यू ग्रोथ 1.75 परसैंट तक आ गया था। जब से हरियाणा बना है तब से लेकर आज तक भी इतने लोएस्ट लेवल पर यह नहीं आया है। इसी तरह से इम्पलॉयमैन्ट चाहे वह गवर्नमैंट सैक्टर की थी या चाहे वह प्राईवेट सैक्टर की थी, दोनों सेक्टर्ज में इनकी सरकार के समय में बढ़ने के बजाए घटी ही है। इसलिए चाहे कानून व्यवस्था की समस्या हो, चाहे बिजली की समस्या हो या चाहे पानी की समस्या हो ये सारी समस्याएं मुख्यमंत्री जी के सामने चेलैंज के रूप में हैं। आज लोग नजर लगाए बैठे हैं कि चौटाला साहब अब मुख्यमंत्री बने हैं तो अब ये चीजें जरूर हल होंगी। चौटाला साहब ने पहले हर्ष कुमार जी से कहा था कि मैंने तो दो तीन काम ही किए हैं फिर भी अगर आप आलोचना ही करना चाहते हैं तो करिए लेकिन वह न तो आलोचना कर पाए और न ही उन्होंने ऐप्रिशिएट किया। कारगिल के अंदर जो हमारे फौजी शहीद हुए हैं उनके बारे में भी हमारी सरकार ने आते ही ध्यान दिया है। सर, कहना आसान है लेकिन उन दुर्गम पहाड़ियों पर लड़ाई लड़ना दूसरी बात है। बीस-बीस इक्कीस-इक्कीस साल के लड़कों ने वहां पर शहिदत दी है।

श्री निर्मल सिंह : सर, कारगिल के मामले में तो हमने इनको ऐप्रीशिएट ही किया है लेकिन हमने यह भी कहा है कि इनको अपने जेब से भी उनकी सहायता करनी चाहिए थी। (विघ्न)

श्री जगन नाथ : सर, मेरा प्वायंट ऑफ आर्डर है। कार्यकारी अध्यक्ष महोदय, देश के अंदर हर जगह पर चाहे राजस्थान हो, यू०पी० हो, बिहार हो, काश्मीर हो या पंजाब हो, जब भी किसी शहीद का दाह संस्कार होता था तो वहां के मुख्यमंत्री हर जगह पर गए हैं लेकिन हमारे हरियाणा के 79 लड़के शहीद हुए हैं परन्तु किसी के भी दाह संस्कार के समय चौधरी बंसी लाल जी कभी नहीं गए हैं। दबोवास गांव जो इनके हल्के में ही था, में भी एक लड़के की मृत्यु हुई थी लेकिन ये वहां पर भी नहीं पहुंचे। कोई दूसरा गया हो तो और बात है इसलिए इनको इन बातों का दुख नहीं है।

श्री सम्पत सिंह : पहले भी इन्होंने जो ग्रांट बढ़ायी वह भी हमारे बार-बार कहने पर ही बढ़ायी थी लेकिन वह भी इन्होंने रैंक के हिसाब से बढ़ायी थी। कार्यकारी अध्यक्ष महोदय, इससे बड़ी कोई सैक्रीफाइस नहीं हो सकती थी यह सुप्रीम सैक्रीफाइस है। जब हम सब लोगों ने इस बारे में आवाज उठायी तभी इन्होंने यह ग्रांट बढ़ायी थी इसलिए अब तो इनको हमारी इस बात को ऐप्रीशिएट करना चाहिए था। इसी तरह से चौटाला साहब ने अग्रोहा मेडीकल कॉलेज की ग्रांट बहाल की। इन्होंने तो वह कॉलेज बंद कर दिया था। कार्यकारी कार्यकारी महोदय, हरियाणा में मेडीकल काउंसिल ऑफ इंडिया के नोर्म्ज के हिसाब से चार मेडीकल कॉलेज की जरूरत है। दूसरा मैडीकल कॉलेज रोहतक में चौधरी देवी लाल ने

खोला था और उस टाइम खोला था जब बनारसी दास गुप्ता और चौधरी देवी लाल का दिल्ली में वैलकम हो रहा था, अग्रवाल भाई इकट्ठे हुए थे। तो कार्यकारी स्पीकर सर, मैं कहता रहा था कि चौधरी देवी लाल जी की सोच यह रहती थी कि लोगों से कांट्रीब्यूट करवाया जाए क्योंकि यदि सरकार टैक्स लगाएगी तो लोग उस पर नाराज होंगे। उनकी सोच होती थी कि लोग वोलैन्ट्रली मदद करें जैसे अगर वाटर वर्क्स बना हुआ है तो लोग आधा पैसा दे दें चाहे अपने मां बाप का नाम उसमें लिखवा दें ताकि गवर्नमैंट के खजाने में आधा पैसा आ जाएगा। एक मैचिंग ग्रान्ट स्कीम शुरू की थी। अग्रवाल भाइयों ने सोसायटी बनाई और उन्होंने निर्णय लिया कि सरकार अगर मदद करती है तो हमारी सोसायटी मैडीकल कॉलेज चलाएगी। चौधरी देवी लाल ने सहर्ष मान लिया व गवर्नमैंट और सोसायटी के बीच में एक एग्रीमैंट हो गया और उस ऐग्रीमैंट में तीन क्लॉज थी। पहली क्लॉज यह थी कि जो मैचिंग ग्रान्ट स्कीम थी उसमें कंस्ट्रक्शन के काम के लिए सरकार 50-50 परसैंट देगी, दूसरी क्लॉज रैकरिंग ग्रान्ट की थी जो एस्टैब्लिशमैंट का खर्च है 99 परसैंट सरकार देगी। कार्यकारी स्पीकर सर, यह चौधरी देवी लाल जी की बहुत दूर की सोच थी।

Shri Mani Ram Godara : Sir, it was an agreement between the Chief Minister and the President of that Medical College Society and the same Chief Minister was the President of the Medical College Society.

Shri Sampat Singh : It was in the name of Governor and not in the name of Chief Minister. I will show you the copy. That is only in the name of Governor.

Shri Mani Ram Godara : Who was the Chief Minister at that time ?

Shri Sampat Singh : Sir, the Chief Minister was not the President of that Society.

श्री जगन नाथ : आप जब मंत्री थे तब नहीं बोला करते थे। आज आपको कहां से ताकत आ गई ?

श्री मनी राम गोदारा : आज भी मैं इसलिए बोल रहा हूं कि कुछ गलत बातें हो रही हैं। बड़ी सीधी सी बात है कि आप कागज दोबारा देखिये, ये सारे मेरे सामने गणेशी लाल, शोरेवाला जी और कौन-कौन थे ? (विघ्न)

श्री सम्पत सिंह : तो कार्यकारी स्पीकर सर, मैं कह रहा था कि उसमें चौधरी देवी लाल को तो उन्होंने चीफ पैट्रोन बाई वरचयू ऑफ चीफ मिनिस्टर बनाया था, चौधरी देवी लाल जी चीफ पैट्रोन थे, प्रैजिडैण्ट नहीं थे। प्रैजिडैण्ट बालसमंद के घनश्याम दास गोयल थे।

श्री मनी राम गोदारा : उस समय बनारसी दास गुप्ता प्रैजिडैण्ट थे।

श्री सम्पत सिंह : कार्यकारी स्पीकर सर, मैं कह रहा था दूर की सोच की बात, जैसे सोसायटी हो सकता है कि कंस्ट्रक्शन के काम में उत्साह ले रही हो लेकिन अगर सोसायटी बैक मार गई तो कालेज बंद हो जाएगा इसलिए उन्होंने 99 परसैंट शेयर गवर्नमैंट का रखा था ताकि मैडीकल कालेज चलता रहे। मेडीकल कालेज, हॉस्पीटल, यूनीवर्सिटी खोलना गवर्नमैंट का काम होता है लेकिन उन्हें ऐप्रीशिएट करना चाहिए कि अगर अग्रवाल भाई कंट्रीब्यूट कर रहे थे। गवर्नमैंट का आधा काम तो अग्रवाल भाइयों ने हल

[श्री सम्पत सिंह]

कर दिया था। लेकिन न जाने इनको महाराज अग्रसेन के नाम से क्या चिढ़ थी कि इन्होंने उस ऐग्रीमैंट की धज्जियां उड़ा दीं। गुरू जम्भेश्वर का मैं बाद में जिक्र कर लूंगा। अब ये कह रहे हैं कि वह ऐग्रीमैंट कब टूटा ? वह ऐग्रीमैंट दो बार टूटा। एक बार जुलाई 1995 में चौधरी भजन लाल मुख्य मंत्री थे, तब एक क्लॉज उन्होंने हटा दी जो कि 99 परसैंट रैकरिंग ग्रान्ट की थी, वह उन्होंने हटा दी उसके बाद एक चिट्ठी जारी हो गई, मिनिट्स उसके जारी हुए। मिनिट्स जारी होने के अंदर मैचिंग ग्रान्ट की बात भी हो गई। सोसायटी ने ऐतराज किया, वह 2-8-95 का लैटर है। मैं उस दिन हाऊस में पढ़कर सुनाना चाहता था जिस दिन वोट ऑफ कांफीडैंस की बात थी। चौहान साहब, आप उस दिन वहां बैठे थे, आपने मुझे उस चिट्ठी को पढ़ने की इजाजत नहीं दी थी, मैं आधे घंटे तक बोलता रहा था। आज कार्यकारी स्पीकर महोदय की परमीशन लेकर वह चिट्ठी मैं पढ़कर सुनाऊंगा।

प्रो० छत्तर सिंह चौहान : ऑन ए प्वाइंट ऑफ पर्सनल ऐक्सप्लेनेशन सर। उस दिन आप भी यहीं थे। चौधरी सम्पत सिंह जी यह ऑन दि रिकार्ड है। मैंने दस दफा आपको उस समय कहा था कि जो लैटर आपके पास है वह मुझे दीजिए परन्तु आपके पास उस समय कोई लैटर नहीं था। वास्तव में बात यह है कि यह अग्रोहा कालेज का मसला है। कई बार इस सदन में आ चुका है। माननीय चौधरी बंसी लाल जी ने इस सदन के पटल पर कई बार कहा कि 11-7-1995 को मीटिंग में यह फैसला हुआ लेकिन C.M. has approved on 13-7-1995. Sampat Singh ji please do not try to mislead the House.

श्री सम्पत सिंह : चौहान साहब यह तो हो गया।

प्रो० छत्तर सिंह चौहान : कार्यकारी अध्यक्ष महोदय, मैं जो लैटर पढ़ रहा हूं वह यह है।

श्री सम्पत सिंह : कार्यकारी अध्यक्ष महोदय, चौहान साहब जो लैटर पढ़ रहे हैं वह 8-2-1995 का लैटर पढ़ रहे हैं। इस लैटर के बाद 8-11-1995 को एक मोडीफाइड लैटर जारी हुआ है। बाद वाला लैटर ही सही माना जायेगा या फिर पहले जारी हुआ लैटर माना जायेगा। मैं मानता हूं कि सोसायटी ने दुरूस्त किया है लेकिन 8-2-95 को जो लैटर जारी किया गया उसके बारे में प्रौटैस्ट किया गया कि सोसायटी के मिनट्स गलत तरीके से रिकार्ड किए गये हैं। उसके बाद ही वे मिनट्स मोडीफाई किए गये और 8-11-1995 को एक और लैटर जारी किया गया।

प्रो० छत्तर सिंह चौहान : कार्यकारी अध्यक्ष महोदय, मैं यह लैटर चौधरी सम्पत सिंह जी के पास भेज देता हूं।

श्री सम्पत सिंह : कार्यकारी अध्यक्ष महोदय, मैं बाद के लैटर की बात कर रहा हूं।

प्रो० छत्तर सिंह चौहान : कार्यकारी अध्यक्ष महोदय, मै इस लैटर की कापी चौधरी सम्पत सिंह जी के पास भेज देता हूं।

श्री सम्पत सिंह : कार्यकारी अध्यक्ष महोदय, बहुत कोशिश कर ली तथ्यों को छिपाने के लिए। चाहे वह प्रैस कान्फ्रेंस हो, चाहे असैम्बली हो और चाहे पब्लिक हो सभी को पहले वाला लैटर दिखा देते थे। चौधरी बंसी लाल जी ने इनको 8-2-95 वाले लैटर की कापी पकड़ा दी कि यह लैटर पढ़ते जायें। 8-2-95 को जो लैटर जारी किया गया उसमें पहले वाली मीटिंग के मिनट्स जारी किए गये थे। परन्तु उन मिनट्स के बारे में सोसायटी में प्रोटैस्ट किया तो सरकार को एक चिट्ठी लिखी गयी और उसके बाद

यह फैसला किया था और सरकार के हैल्थ सैक्रेटरी ने सोसायटी को एक चिट्ठी लिखी जोकि 8-11-1995 को लिखी गई

"Reference your letter No. MAMESRS-DL/1/95, dated 21-8-95 on the subject noted above. I am desired to convey the following decision in the meeting held on 11-7-95 under the Chairmanship of worthy Chief Minister :-

(i) Government will continue to share the expenditure on the construction cost of the Agroha Medical College on a 50 : 50 matching basis even after 1995-96."

यह जो चिट्ठी थी इसको पहले की सरकार छिपाती रही। यह असली लैटर तो 8-11-95 का ही है उसी को ही माना जायेगा।

प्रो० छत्तर सिंह चौहान : कार्यकारी अध्यक्ष महोदय, उस दिन यह लैटर चौधरी सम्पत सिंह के पास नहीं था।

श्री सम्पत सिंह : कार्यकारी अध्यक्ष महोदय, उस समय चौहान साहब ने मुझे यह लैटर पढ़ने का समय ही नहीं दिया था। But I would like to quote that letter which reads as under :—

"Minutes earlier issued vide letter dt. 2-8-95 may be deemed to be modified."

यह लैटर जो 8-11-95 का है वह मोडीफाई होकर आया है।

प्रो० छत्तर सिंह चौहान : कार्यकारी अध्यक्ष महोदय, चौधरी सम्पत सिंह जी बतायें कि इस 8-11-95 वाले लैटर पर किस अधिकारी के दस्तखत हैं ?

श्री सम्पत सिंह : कार्यकारी अध्यक्ष महोदय, 8-11-95 के लैटर पर दस्तखत हैं सुपरिंटैंडैंट हैल्थ फोर फार्नेसियल कमिश्नर एण्ड सैक्रेटरी, गवर्नमैंट ऑफ हरियाणा, हैल्थ एण्ड मैडीकल डिपार्टमैंट। यह सरकारी चिट्ठी है। इसको कोई अनपढ़ आदमी भी समझ लेगा कि फोर करके ही है। मैं यही कह रहा हूं।

श्री मनी राम गोदारा : कार्यकारी महोदय, यह चिट्ठी तो 1995-96 मार्च तक की ही होगी।

श्री सम्पत सिंह : यह जो 8-11-95 को सरकार का लैटर गया है, अब इस संबंध में 8-11-95 की तारीख को वैलिड माना जाएगा अथवा 2-8-95 की तारीख को वैलिड माना जाएगा ? इस पत्र में लिखा है कि पुरानी चिट्ठी को मोडीफाईड माना जाएगा। यह मुख्य मंत्री का 2-7-96 का आर्डर है। उस समय तो आपकी ही सरकार थी।

श्री हर्ष कुमार : कार्यकारी अध्यक्ष महोदय, जहां तक सरकारी चिट्ठी की बात है, इससे कोई फायदा नहीं होगा। यह सदन एक चीज मानेगा तथा जो लोग गैलरी में बैठे हुए हैं, वे भी इस बात को मानेंगे कि अग्रोहा मैडिकल कॉलेज की ग्रांट बंद करने के मामले में यदि मुख्य मंत्री द्वारा हस्ताक्षर की हुई कोई चिट्ठी हो तो वह सदन के पटल पर रखें। (विघ्न)

श्री जगन नाथ : मुख्य मंत्री तो कभी दस्तखत करते ही नहीं हैं। उनकी तरफ से सैक्रेटरी साईन करते हैं।

श्री सम्पत सिंह : कार्यकारी अध्यक्ष महोदय, यह 2-7-96 की मुख्य मंत्री की चिट्ठी है, मैं इसको पढ़कर सुना देता हूं। (विघ्न)

श्री हर्ष कुमार : कार्यकारी अध्यक्ष महोदय, जहां तक चौधरी जगन नाथ जी की बात है, ये बहुत ही सीनियर लीडर हैं, ये इस सदन में सबसे पहले आने वाले सदस्य हैं। ऐसे व्यक्ति को सदन का काम निपटाने में सहयोग करना चाहिए लेकिन इनकी तो वह स्थिति हो गई है कि तोता जिस पिंजरे में होगा, उस पिंजरे को जो भी ले जाएगा, वह उस के मकान में ही टैं-टैं करेगा। आखिर जो असलियत है, वह सदन के सम्मुख आनी चाहिए। (विघ्न)

श्री जगन नाथ : कार्यकारी अध्यक्ष महोदय, ऐसी चिट्ठियों पर मुख्यमंत्री के हस्ताक्षर नहीं होते हैं।

श्री हर्ष कुमार : कार्यकारी अध्यक्ष महोदय, मुख्यमंत्री के समय के तो हस्ताक्षर होंगे। (विघ्न) जब एक चीज सामने आ रही है, उसको स्वीकार करना चाहिए। जुलाई, 1995 में अम्बाला मैडिकल कालेज के मैनेजमैंट, मुख्यमंत्री और सैक्रेटरी का आपस में एग्रीमैंट साईन हुआ। 1995 में इस कॉलेज को ग्रांट दी गई, वह 1995 में बंद हो गई। आप ग्रांट बंद होने की तारीख बता दें।

श्री सम्पत सिंह : कार्यकारी अध्यक्ष महोदय, यह तारीख बताई गई है। (विघ्न)

श्री हर्ष कुमार : कार्यकारी अध्यक्ष महोदय, एक ग्रांट 1995 में बंद हुई है, दूसरी ग्रांट की तारीख और बता दें। (विघ्न)

बैठक का समय बढ़ाना

श्री कार्यकारी अध्यक्ष : यदि हाऊस की सहमति हो तो बैठक का समय बढ़ा दिया जाए।

आवाजें : ठीक है जी।

श्री कार्यकारी अध्यक्ष : ठीक है, बैठक का समय 10.00 बजे तक बढ़ाया जाता है।

विश्वास-मत (पुनरारम्भ)

श्री हर्ष कुमार : कार्यकारी अध्यक्ष महोदय, मेरी एक सबमिशन है। मैं अपने साथियों की तरफ से कह रहा हूं कि कांग्रेस के भाई भी बोल लिए हैं। (विघ्न) शर्मा जी, आपके स्पोर्टर रहे हैं। मैं यह कहना चाहता हूं कि मुख्यमंत्री महोदय ने सदन में जो विश्वास मत का प्रस्ताव पेश किया है, मैं इस का विरोध करता हूं। लेकिन मैं जो देख रहा हूं कि आज यह जो सैशन चला है, यह फिल्मी स्टाईल में चला है। इसको देखकर लोग * * * * उड़ाएंगे। सदन के नेता को जो बात कहनी है, वे अपनी बात कहें ताकि मतदान हो सके और सदन का कीमती समय बर्बाद होने से बच सके। (विघ्न)

श्री कार्यकारी अध्यक्ष : श्री हर्ष कुमार जी ने जो शब्द बोला है, उसे रिकार्ड न किया जाए।

---

*चेयर के आदेशानुसार रिकार्ड नहीं किया गया।

श्री कैलाश चन्द्र शर्मा : कार्यकारी अध्यक्ष महोदय, चौहान साहब बार-बार यह कह रहे हैं कि 1995 की चिट्ठी थी, उस समय अग्रोहा मैडिकल कॉलेज की ग्रांट बंद की गई थी। मैं इनसे पूछना चाहता हूं कि ये तो 3 साल सत्ता में रहे हैं, इन्होंने उस ग्रांट को रिस्टोर क्यों नहीं किया जिसको इस सरकार ने केवल 3 दिन के अंदर आते ही रिस्टोर कर दिया है।

श्री हर्ष कुमार : कार्यकारी अध्यक्ष जी, अग्रोहा मैडीकल कालेज की जो ग्रांट बन्द हुई थी उसको हमने शुरू नहीं किया। हमारा मन इसको शुरू करने का नहीं था।

श्री सम्पत सिंह : कार्यकारी अध्यक्ष जी, ठीक है इनका मन उस ग्रांट को शुरू करने का नहीं था। इनका मतलब इनटैन्शनली नहीं था। यह 2-7-96 का लैटर है जिसमें मुख्य मंत्री ने आर्डर किए हैं, चौहान साहब आप याद कर लें उस समय आपकी सरकार थी, इसको पढ़कर सुनाता हूं। (शोर)

श्री कार्यकारी अध्यक्ष : सम्पत सिंह जी, जब वे कह चुके कि हमारा मन ग्रांट को शुरू करने का नहीं था तो बात खत्म हो चुकी।

श्री सम्पत सिंह : लेकिन कार्यकारी अध्यक्ष जी, मैं इस आर्डर की 4 लाइनें पढ़कर सुनाऊंगा, जिस बात को लेकर इन लोग पिछले बहुत दिनों से लगे रहे और इन्होंने कभी यह बात जाहिर रिकार्ड में नहीं आने दी। 2-7-96 को मुख्यमंत्री के आर्डर हैं, लैटर तो बहुत बड़ा है लेकिन मैं इसकी नीचे की 4 लाइनें पढ़कर सुनाता हूं—

> "C.M. has seen. In view of the dire need to effect saving in expenditure, no further assistance of recurring or non-recurring grant may be given. The institution may be asked to deposit payment of the Endowment Fund to MDU. The provison of Rs. 2 crore made for this institution may be surrendered.
>
> PSCM
> 02-07-1996"

ये वही आर्डर हैं जो ये कह रहे थे कि ये आर्डर किस दिन किए गए। ये लोग पी०एस० हों, पी०ए० हों, ओ०एस०डी० हों या डिप्टी प्रिंसीपल सैक्रेटरी हों, ये मुख्यमंत्री के आर्डर को रिकार्ड करते हैं और इन्होंने बाकायदा उसको रिकार्ड किया। ये दोनों पेपर पहले वाला 8-11-96 का मोडीफाईड लैटर और यह 2-7-96 वाला लैटर अब मैं हाऊस के पटल पर रख दूंगा ताकि यह रिकार्ड हमेशा के लिए रह जाए। कार्यकारी अध्यक्ष महोदय, आपकी बात ठीक है कि इन लोगों ने खुद ही कह दिया कि हमारी इनटैंशन नहीं थी। इन्होंने किसको छोड़ा ? इन लोगों को गुरुओं से, देवताओं से, महात्माओं से, साधुओं से पता नहीं क्या नफरत थी। हिसार में गुरु जम्भेश्वर के नाम से यूनिवर्सिटी बन गई। उस यूनिवर्सिटी को चार दीवारी में बन्द करके छोड़ दिया। लोगों ने इनकी इस बात का इतना विरोध किया, आन्दोलन किए और धरने दिए। खुद गोदारा साहब ने कहा और इन्होंने भी कहा कि हम पूरी कोशिश करेंगे। हम जानते हैं उस वक्त मंत्रियों की क्या पोजीशन थी, उनकी बात को कोई सुनता नहीं था। (शोर)

श्री कंवल सिंह : मेरा प्वांयट आफ आर्डर है। कार्यकारी अध्यक्ष जी, मैं आपके माध्यम से माननीय सदस्य से पूछना चाहूंगा कि क्या इनको मालूम है कि मैडिकल कांउसिल आफ इंडिया से मान्यता प्राप्त करने के लिए 1000 बैड का अस्पताल होना चाहिए। अग्रोहा के आस-पास क्या 20-20 मील तक ऐसा कोई अस्पताल है।

श्री सम्पत सिंह : 20 मील तक अस्पताल क्यों नहीं है, हिसार में ऐसा अस्पताल रहा। जहां तक ये 1000 बैड के अस्पताल की बात करते हैं, उसके न होने के दोषी भी यहीं हैं क्योंकि जब ग्रांट बन्द कर दी थी तो 1000 बैड का अस्पताल कहां से बनता। कार्यकारी अध्यक्ष जी, एक एग्रीमैंट था कि 50 परसैन्ट कंस्ट्रक्शन के लिए देना था। 1000 बैड के अस्पताल का निर्माण कार्य होना था और उसका आधा शेयर सरकार का होना था। सरकार ने वह शेयर नहीं दिया। सोसायटी उस पर 12 करोड़ रुपए खर्च कर चुकी है और सरकार की तरफ से लगभग 5 करोड़ रुपए खर्च किए गए हैं। अगर बाकी 7 करोड़ रुपए पुरानी सरकार दे देती तो वह 1000 बैड का अस्पताल बन जाता। उन लड़कों का भविष्य अन्धकारमय नहीं होता जिनकी डिग्री रैकग्नाइज नहीं हुई। इसके लिए उनकी बात पर यह क्रिमिनल नैगलीजैंस है। (शोर)

श्री जगन नाथ : कार्यकारी अध्यक्ष महोदय, जम्भेश्वर यूनिवर्सिटी की ग्रांट देने में ज्यादती हुई या नहीं हुई। ये इस बारे में बतायें। (शोर एवं व्यवधान)

श्री मनी राम गोदारा : कार्यकारी अध्यक्ष महोदय, स्टेज के ऊपर चौधरी सम्पत सिंह जी से मेरी बात हुई थी उसमें मैंने कहा था कि चौधरी भजन लाल और चौधरी राम जी लाल तो अनपढ़ हैं और मैंने चौधरी सम्पत सिंह जी से कहा था कि आपकी जो भी शिकायतें हैं वे मुझे लिखकर दे दें। मैं उनको वर्क-आउट करवा दूंगा। (शोर एवं व्यवधान)

श्री सम्पत सिंह : कार्यकारी अध्यक्ष महोदय, मैं वे शिकायतें किसको लिखकर भेजता क्योंकि गोदारा साहब की तो चलती नहीं थी। इनकी बात तो कोई मानता नहीं था। गोदारा साहब जहां से मैं चुनाव लड़ता हूं वहां से ये भी लड़ते हैं। मैं इनकी पूरी इज्जत करता हूं। ये बहुत ही वरिष्ठ सदस्य हैं। मैंने इनको लिखकर इसलिए नहीं दिया। अगर मैं इनको लिखकर देता तो इनकी बात किसी ने माननी तो थी नहीं और अगर ऐसा होता तो इनकी बेइज्जती होती और मैं ऐसा करना नहीं चाहता था। गोदारा साहब चण्डीगढ़ आकर बड़ी मेहनत करके कमेटी बनाते थे लेकिन किसी भी कमेटी की रिपोर्ट कंक्लूड नहीं हुई। सारी की सारी कमेटी की रिपोर्टस कूड़े की टोकरी में डाल दी गई। इसीलिए मैंने इनको जम्भेश्वर यूनिवर्सिटी के बारे में लिखकर नहीं दिया। (शोर एवं व्यवधान)

श्री मनी राम गोदारा : कार्यकारी अध्यक्ष महोदय, मैंने कमेटीज की जितनी भी रिपोर्ट्स दी वे सारी की सारी स्वीकार की गई हैं, एक भी रिपोर्ट कूड़े की टोकरी में नहीं डाली गई। अगर कोई डाली है तो ये उसका नाम बतायें। (शोर)

श्री सम्पत सिंह : कार्यकारी स्पीकर सर, इस बात को छोड़िये कि कौन अनपढ़ है और कौन पढ़ा लिखा है। जिस समय जम्भेश्वर यूनिवर्सिटी बनी उस समय हमने इसकी ऐप्रिशियट किया था, चाहे कोई भी सरकार अच्छा काम करे उसे ऐप्रिशियट तो करना ही चाहिए। कार्यकारी अध्यक्ष महोदय, वह यूनिवर्सिटी एशिया की नंबर वन यूनिवर्सिटी बन सकती है। एक टैक्नीकल यूनिवर्सिटी है। विदेशों से भी लोग उस यूनिवर्सिटी के एक्ट को लेने के लिए आये। आज के दिन बी०ए०, एम०ए० का कोई महत्व नहीं है और टैक्नीकल डिग्रीज का ज्यादा महत्व है। अगर उस यूनिवर्सिटी को आगे बढ़ाया जाता, उसकी ग्रांट बंद न की जाती तो हमें बहुत खुशी होती। (शोर एवं व्यवधान) कार्यकारी स्पीकर सर, पिछली सरकार ने प्रजातंत्र के मूल्य को खत्म कर दिया था और सभी प्रकार के नॉर्म्ज को खत्म कर दिया था। लेकिन लोगों को अब चौधरी ओम प्रकाश चौटाला जी की सरकार बनने के बाद रिलीफ महसूस हुआ है इसलिए मैं कहता हूं कि अब लोगों को चौटाला साहब से उम्मीद है कि वे उनके लिए कुछ करेंगे और उनकी उम्मीदों

पर खरा उतरेंगे। मैं अंत में इस सदन के सभी माननीय सदस्य चाहे वे कांग्रेस के हों, चाहे एच०वी०पी० के हों, से अनुरोध करूंगा कि वे इस सरकार के अढ़ाई दिन के कार्यों को देखते हुए जो विश्वास प्रस्ताव चौधरी ओम प्रकाश चौटाला जी ने रखा है उसके पक्ष में मतदान करें। चौटाला साहब की सरकार ने आते ही वीर शहीदों को 5 लाख की जगह 10 लाख रुपये देने की घोषणा की है। (विघ्न) आप मैडिकल कालेज, अग्रोहा के खिलाफ जा रहे हैं। इन दिनों में केवल ये ढाई बातें हुई हैं और तो कुछ हुआ ही नहीं है। इसलिये इतिहास आपको माफ नहीं करेगा कि आपने इन चीजों का विरोध किया था। Irrespective of any party affiliation मैं आपसे अपील करता हूं कि सारे के सारे लोग इस विश्वास प्रस्ताव को यूनैनिमसली पास करें। धन्यवाद।

Mr. Acting Speaker : Now, the Hon'ble Chief Minister will speak.

मुख्य मंत्री (श्री ओम प्रकाश चौटाला) : अध्यक्ष महोदय, मैं आपके द्वारा सदन के सभी सम्मानित सदस्यों से विनम्र निवेदन करूंगा कि गवर्नर महोदय के निर्देशानुसार आज मुझे विश्वास मत अर्जित करना पड़ रहा है। किन परिस्थितियों में मुझे सत्ता संभालनी पड़ी इसका मुझे ज्यादा उल्लेख करने की आवश्यकता नहीं है। मुझ से पूर्व वक्ताओं ने बहुत विस्तार से इस पर चर्चा की। मैंने पहले भी कहा था कि मैं गड़े मुर्दे उखाड़ने में यकीन नहीं रखता। गड़े मुर्दे उखाड़ेंगे तो नुक्सान इन भाईयों को ही होगा। मैं इस बात में विश्वास रखता हूं कि हमारा यह देश प्रजातांत्रिक देश है और प्रजातांत्रिक प्रणाली का पिछले तीन साल में निरन्तर हनन होता रहा है। हरियाणा प्रदेश की छवि भी इससे बहुत खराब हुई। मैं आप सभी साथियों के सहयोग और समर्थन से जनतंत्र को पुनः बहाल कर सकूं इसके लिये मैं आप सब का समर्थन मांग रहा हूं। मैंने पहले भी जैसा कहा था कि मैंने तो मुख्य मंत्री का पद भार संभालने के बाद केवल दो-तीन काम किये हैं जिनका मैं दोबारा उल्लेख नहीं करूंगा। मैं अपने शहीदों का, अपने पुर्खों का और अपने बुजुर्गों का सम्मान करता हूं यह मेरी आदत है। अपना वायदा निभाने की आदत मुझे चौधरी देवी लाल जी से मिली है। चौधरी देवी लाल का खून मेरी रगों में है। चौधरी देवी लाल की करनी और कथनी में कोई अन्तर नहीं। कांग्रेस के दोस्तों और हविपा के दोस्तों की तरह जनता जनार्दन से अमंगल वायदा करके और वायदे को न निभाना हमारी आदत नहीं है, हमारी नीति नहीं है। मैं आपसे वायदा करता हूं कि जो वायदे हमने किये हैं हम वे निश्चित रूप से निभायेंगे। (इस समय मेजें थपथपाई गई) जनतांत्रिक प्रणाली में मुख्यमंत्री के पद पर बैठने पर वाले मुख्य मंत्री की पूर्व मुख्य मंत्री के वायदों को भी पूरा करने की जिम्मेवारी है। मुझ से पूर्व जो मुख्य मंत्री रहे चाहे वह कांग्रेस के रहे, चाहे वह हविपा के चौधरी बंसी लाल जी हों उन्होंने वोट अर्जित करने के लिये, सत्ता का सुख भोगने के लिये और लूट मचाने के लिये जनता से जितने भी वायदे किये, वह नहीं निभाए गए। यह मैं नहीं कह रहा हूं यह सारे प्रदेश की जनता कह रही है कि वे वायदे निभाये नहीं गये। स्वयं हर्ष कुमार जी ने माना है कि वायदे निभाये नहीं गये। (विघ्न)

श्री हर्ष कुमार : सर, मैंने किसी वायदे के बारे में नहीं कहा कि वह वायदा निभाया नहीं गया। मुख्यमंत्री जी बड़े जिम्मेदार व्यक्ति हैं और मेरे बुजुर्ग भी हैं इनको ऐसी बात नहीं कहनी चाहिए।

श्री ओम प्रकाश चौटाला : कार्यकारी अध्यक्ष महोदय, मैं इस सदन को और विशेष रूप से कांग्रेस पार्टी के और हविपा के सम्मानित सदस्यों को यह वायदा भी देता हूं कि आपके नेताओं के अधूरे वायदे भी मैं पूरे करूंगा। यह मेरी जिम्मेवारी है क्योंकि उसका लाभ जनता को मिलना है। जनता को लाभ दिया जाये यह जनतांत्रिक प्रणाली की प्राथमिकता होनी चाहिए। श्री छत्तर सिंह चौहान के किस्सों का तो मैं

[श्री ओम प्रकाश चौटाला]

जिक्र ही नहीं करूंगा क्योंकि इसमें सदन का समय बर्बाद हो जाएगा। उन्हें स्वयं इस बात का अहसास हो गया होगा कि कितना परिवर्तन आया है। यही सदन था यही सदस्य थे फर्क सिर्फ इतना था कि कार्यकारी अध्यक्ष महोदय, श्री छत्तर सिंह चौहान आप जहां बैठे हैं इस कुर्सी पर बैठे हुए थे जो आज विपक्षी सदस्यों की पंक्ति में बैठे हैं। जब ये इस कुर्सी पर बैठे हुए थे तो प्रोफैसर सम्पत सिंह ने एक सरकारी डाकुमैंट पढ़ कर सुनाने की कोशिश की तो श्री छत्तर सिंह चौहान ने इनको वह सरकारी डाकुमैंट पढ़ कर सुनाने का अवसर नहीं दिया। आज श्री छत्तर सिंह चौहान ने स्वयं एक डाकुमैंट पढ़ा है। सत्ता परिवर्तन के बाद भी इनको यह डाकुमैंट पढ़ कर सुनाने का अवसर दिया गया है। (शोर) मैं श्री छत्तर सिंह चौहान के बारे में ज्यादा नहीं कहना चाहूंगा। मैं तो केवल यह कहूंगा कि ये अपने किए हुए कुकर्मों को ध्यान में रख करके उनका प्रायश्चित करें।

प्रो० छत्तर सिंह चौहान : चौटाला साहब ने जो कूकर्म शब्द का इस्तेमाल किया है वह कार्यवाही से निकाला जाए।

श्री ओम प्रकाश चौटाला : कुकर्म शब्द असंसदीय नहीं है। आप तो इस अध्यक्ष की चेयर पर रहे हुए हैं। आपने तो रूल्ज बनाए हैं। आपने अपने बनाए हुए रूल्ज की उल्लंघना की है। हमने आपके खिलाफ रिमूवल का रैजोल्यूशन दिया था आपने अपने चैम्बर में जा कर उसको रिजैक्ट कर दिया जबकि वह सदन में रिजैक्ट होना चाहिए था। आपने तो अपने बनाए हुए रूल्ज की निरन्तर उलंघना की है। मैं आपके बारे में ज्यादा चर्चा करके अपनी जुबान को गंदा नहीं करना चाहूंगा। इस सदन में शुरू में चौधरी खुरशीद अहमद द्वारा एक बात कही गई कि यह मोशन संविधान के मुताबिक नहीं है। सदन के अन्दर मेरे से ज्यादा विद्वान लोग बैठे हुए हैं। चौधरी खुरशीद अहमद और बीरेन्द्र सिंह जी और दूसरे साथी संविधान के जानने वाले बैठे हैं। मोरारजी देसाई ने प्रधान मंत्री पद की अकेले ही ओथ ली थी बम्बई के केस में सुप्रीम कोर्ट का फैसला हो चुका है जिसके बारे में मैं ज्यादा नहीं कहना चाहूंगा। रूल्ज के अनुसार ही यह सारी बात चली है। हम संविधान की कदर करते हैं और उसकी कदर करते रहेंगे यह हमारी जिम्मेदारी है। बहन करतार देवी ने आया राम गया राम का जिक्र किया। यह प्रथा पता नहीं कब से चली होगी किसने चलाई होगी लेकिन अगर लेटैस्ट देखा जाए तो यह तो थोक में चली है और यह कांग्रेस पार्टी की सरकारों में चली है। चौधरी खुरशीद अहमद जी आप बता दें कि 35-35 लोग थोक में गए हैं या नहीं गए अदल बदल करके हमने तो ऐसा काम नहीं किया।

श्री हर्ष कुमार : आप खुरशीद अहमद जी के साथ साथ बहन कमला वर्मा जी से भी पूछ लें।

श्री ओम प्रकाश चौटाला : आप बहुत दूर की बात को छोड़ें ताजा बात सुनिए। चौधरी बीरेन्द्र सिंह आप हमें साम्प्रदायिक भी कहते हैं तानाशाह भी कहते हैं। हमारे ऊपर जातिवाद का लांछन भी लगाते हैं। आप तलखिया लहजे में यह बात भी कहते हैं कि ग्रांट बहाल करते ही वोट न काट देना। हम भी समझते हैं आप भी समझते हैं और लोग भी समझते हैं। मैं आपसे केवल एक ही बात पूछना चाहता हूं कि जनादेश की कदर करने वाले कांग्रेस पार्टी के दोस्तो क्या जनता ने अपना जनादेश इनके खिलाफ आपको नहीं दिया था लेकिन ऐसी क्या आफत आ पड़ी थी कि आप उस सरकार के खिलाफ वोट दे रहे थे जिस पार्टी का अध्यक्ष निरन्तर एक बात कहता रहा कि ओम प्रकाश चौटाला और बंसी लाल मिले हुए हैं। कोई भी दिन ऐसा खाली नहीं गया जिस दिन आपकी पार्टी के प्रैजीडैंट की तरफ से मेरे खिलाफ अखबारात में ऐसा बयान न छपा हो। पिछला बजट अधिवेशन था आपके पार्टी अध्यक्ष की तरफ से निरन्तर अखबारों में आता रहा कि हम बंसी लाल सरकार के खिलाफ विश्वास प्रस्ताव लाएंगे।

गवर्नर के निर्देश के अनुसार चौधरी बंसी लाल जी को भी विश्वास मत अर्जित करना पड़ा। बंसी लाल जी की सरकार बी०जे०पी० के गठबंधन से सरकार चली और लोगों ने इसी बात के लिए वोट दिए थे। अगर बंसी लाल जी में जरा सी भी नैतिकता होती तो जिस दिन 22 तारीख को बी०जे०पी० ने अपना समर्थन वापस लिया था उसी दिन उनको त्यागपत्र दे देना चाहिए था लेकिन 25 तारीख को मुर्दा सरकार को आपने आक्सीजन देकर जिताया। उसके बाद से लेकर 22 दिन के अरसे में क्या कुछ हुआ वह मैं बाद में आपको बताऊंगा। आपकी मजबूरी रही होगी जिस कारण आप लोगों ने समर्थन किया था। यहां पर होर्स ट्रेडिंग का लफ्ज इस्तेमाल किया गया। ये जो इधर बैठे हैं ये जिन्दा होर्स हैं। इनका मोल कोई और नहीं करता बल्कि ये स्वयं करते हैं ये मुर्दा घोड़े थे, कोई बेचकर खा गए आप लोगों को पता ही नहीं लग पाया। इस मामले को लेकर बीच के 22 दिन के अरसे में किस प्रकार इस प्रदेश को लूटा गया इसका सारा विवरण मैं अगले सैशन में दूंगा। यह चौधरी बंसी लाल जी की पुरानी आदत रही है। 1987 में जब वे मुख्यमंत्री थे, पद छूट गया था क्योंकि ये चुनाव हार गए थे और गिनती के बीच के जो 3 दिन थे उन 3 दिनों में उन्होंने हजारों प्लाट बांट दिए, अनेकों बेकायदगियां की गई। चौधरी बीरेन्द्र सिंह जी आपको तो सारा याद है, जाते जाते कालोनाइजर्ज को लाईसैंस दिए गए, उस वक्त क्या क्या नहीं किया गया, जिस प्रकार से हारी हुई फौज जब वापस जाती है तो वह जाते जाते रास्ते में जितने दरख्त होते हैं उनको भी काट कर जाती है। वह जाते जाते रास्ते में सब कुछ साफ करती हुई चली जाती है। इसी प्रकार की हालत उस वक्त के मुख्य मंत्री चौधरी बंसी लाल जी ने की थी। उनकी आदत कभी बदली नहीं। अब की बार मुख्यमंत्री बनने के बाद इसी सदन में उन्होंने कहा था कि मैं विन्डिक्टिव नहीं रहा। मुझे मजा आता यदि बंसी लाल मेरे सामने आकर बैठे होते। लेकिन कमजोर, कायर व बुजदिल लोगों में यह हिम्मत नहीं हुआ करती। चौधरी बंसी लाल जी ने उस वक्त जो कहा था, उसके आप सब लोग गवाह हैं। उस वक्त उन्होंने कहा था कि मैं विन्डिक्टिव नहीं रहा, मैं बदले की भावना से कार्य नहीं करूंगा। उस वक्त मैंने कहा था कि चौधरी बंसी लाल जी अगर आप ऐसा निर्णय लेंगे और आप अपनी आदत बदलेंगे तो हम आपका सम्मान करेंगे व इस लोग आपकी इज्जत करेंगे। लेकिन आपके पिछले किए हुए कामों की वजह से, पिछली आपकी आदत को देखते हुए और आपके किरदार से मुझे यह लगता है कि आप ऐसा कर नहीं पायेंगे। कुत्ते की पूंछ को 12 वर्ष तक बांस में दे दो और 12 बरस के बाद जब बांस को फोड़ोगे तो उसके बाद भी उसीकी पूंछ टेढी मिलेगी। मेरी यह बात असैम्बली की प्रोसिडिंग्ज में दर्ज है, जो मैंने उस वक्त कही थी। मुझे इनकी आदत का पता था। चौधरी बीरेन्द्र सिंह जी इस 22 दिन की लूट के किस्से जब हरियाणा की जनता के बीच जाएंगे तो लोग आपको पूरा दोष देंगे। बाद में फिर ऐसी कौन सी परिस्थितियां आ गई थी कि आपने इतनी जल्दी समर्थन वापस ले लिया। आपने एक ऐसे व्यक्ति से समर्थन वापस लिया जिसने इसी सदन में आपकी कांग्रेस का गुणगान गाया। उन्होंने इन्दिरा गांधी से लेकर सोनिया गांधी तक के सजदे किए थे। (विघ्न) चौधरी बंसी लाल जी ने कितना गुणगान गाया, फिर भी आपकी पटी नहीं। इस देश में अंग्रेज की हकूमत रही। अंग्रेजी हकूमत के जो अंग्रेज आफिसर्ज होते थे, जो बड़े लार्डज होते थे जब वे शिकार पर जाते थे तो साथ में अपनी मेमों को लेकर के जाते थे। यह बात मनी राम गोदारा जी को अच्छी तरह से पता है। जो खुशामदीद किस्म के लोग होते थे वे शिकार को बांध करके मेम के सामने खड़ा कर देते थे और फिर वह मेम शिकार करती थी। इस इटली की मेम से तो बंधा बंधाया शिकार भी नहीं हो पाया। इन्होंने कह दिया कि श्री ओम प्रकाश चौटाला ने बी०जे०पी० का खुल्लमखुला समर्थन किया और फिर यह कह कर समर्थन वापस ले लिया कि खाद के दाम बढ़ाये गए हैं। चौधरी बीरेन्द्र सिंह जी, इसने यह कह कर भी समर्थन वापिस लिया था कि गरीब आदमी के लिए जरूरी राशन, गेहूं, चीनी, मिट्टी का तेल आदि के दाम बढ़ गए हैं इनको वापिस लिया

[श्री ओम प्रकाश चौटाला]

जाए। हमने कहा था। आपकी पार्टी के अग्रणी नेताओं की ओर से तथा आपकी पार्टी की अध्यक्ष की तरफ से अखबारों में यह ब्यान छपा था कि चौटाला तीसरी किश्त वसूल करना चाहता है। (विघ्न) यह बात छपी थी या नहीं छपी थी, आप ही बता दें। (विघ्न) अब अगर उसी भाषा में मैं आपसे पूछूंगा तो बहुत भद्दा लगेगा इसलिए मैं पूछना नहीं चाहता लेकिन हमने किसी असूल और आदर्श के तहत समर्थन दिया और उसी के तहत समर्थन वापिस लिया। आपने पूछा कि फिर कोई राहत किसान और गरीब तबके को प्रदान की गई या नहीं की गई ? अगर कोई राहत प्रदान नहीं की गई तो फिर समर्थन वापिस क्यों दिया। 17 अप्रैल, 1999 को इस देश के प्रधान मन्त्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी ने अपने विश्वास मत पर बहस करते हुए कहा है जो कि प्रोसीडिंग्ज में दर्ज है, "हम इस देश के किसानों को भरपूर राहत प्रदान करेंगे"। आपके जैसे लोगों की वजह से अगर वह सरकार एक मत से न हार गई होती तो निश्चित् रूप से किसानों और गरीबों को लाभ मिलना था और इसी के लिए हमने समर्थन वापिस दिया था। उन परिस्थितियों में हमें समर्थन वापिस देना ही पड़ता था जब आपकी पार्टी के प्रवक्ता ने 15 अप्रैल को अखबारों को ब्रीफिंग करते वक्त यह कहा कि कांग्रेस अपने तौर पर वैकल्पिक सरकार बनाएगी और उस सरकार की मुखिया तथा प्रधानमन्त्री श्रीमती सोनिया गांधी बनेंगी। मैंने खुल कर उस वक्त एक बात कही थी कि हम वैचारिक तौर पर कांग्रेस के खिलाफ हैं। इस देश की प्रधानमन्त्री एक विदेशी महिला बने जो इस देश की सभ्यता तथा संस्कृति से नावाकिफ है, इस देश की भाषा नहीं जानती है, इस देश के कल्चर से अनभिज्ञ है, चौधरी बीरेन्द्र सिंह जी, मेरी इस बात पर आपने 25 जून को कहा था कि "आप भी तो राजस्थान से आए हैं"। ये महानुभाव उस समय स्पीकर थे और मुझे बोलने का समय नहीं मिलता था! बीरेन्द्र सिंह जी, राजस्थान और रोम में बहुत अन्तर है। (विघ्न)

बैठक का समय बढ़ाना

श्री कार्यकारी अध्यक्ष : माननीय सदस्यगण यदि हाऊस की सैंस हो तो हाऊस का समय आधा घण्टा और बढ़ा दिया जाए।

आवाजें : ठीक है जी।

श्री कार्यकारी अध्यक्ष : हाऊस का समय आधे घण्टे के लिए और बढ़ाया जाता है।

विश्वास-मत (पुनरारम्भ)

मुख्य मंत्री (श्री ओम प्रकाश चौटाला) : हम राजस्थान से आए हैं, हम इस बात को मानते हैं, इसीलिए इन्होंने कहा था लेकिन राजस्थान और रोम में बहुत अन्तर है। जो स्थिति आज देश में व्याप्त है हम उसे पूरी तरह से समझते थे और वैसे हालात फिर पैदा न हो जाएं इसलिए हमने श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी को समर्थन दिया था। राजनैतिक तौर पर हमारी विचारधारा अलग-अलग हो सकती है। (विघ्न)

श्रीमती करतार देवी : कार्यकारी अध्यक्ष महोदय, मेरा प्वांयट ऑफ आर्डर है। यह बात इस सदन में कई बार उठ चुकी है कि श्रीमती सोनिया गांधी विदेशी हैं। आपके गृहमंत्री महोदय खुद यह कह चुके हैं कि वे भारत की नागरिक हैं, उनको विदेशी कहना भारत के संविधान तथा भारत की संस्कृति का

अपमान है। इस बात का जवाब तो जनता देगी। जनता में यह मुद्दा गया है और आपने अटल बिहारी बाजपेयी जी का नाम रखा है जब कि हमने श्रीमती सोनिया गांधी का नाम दिया है अब जनता स्वयं फैसला कर देगी इसलिए यह बात यहां पर कहने की तो कोई आवश्यकता ही नहीं है। (विघ्न)

श्री बीरेन्द्र सिंह : कार्यकारी अध्यक्ष महोदय, मैं एक बात स्पष्ट करना चाहता हूं। मैंने यह कहा था, "अगर हम यह कहें कि आप राजस्थान से आए हुए हैं, तो हम नहीं कहेंगे क्योंकि यह कोई मुद्दा नहीं है, कोई बात नहीं है" आपने अगर 100 साल पहले तेजा खेड़ा गांव बसा दिया और कोई 32 साल पहले किसी भारतीय से शादी करके अगर कोई महिला यहां पर आती है तो उससे कोई लम्बा-चौड़ा फर्क नहीं पड़ता लेकिन मैंने यह कहा था कि यह राजनैतिक मुद्दा नहीं है। चौटाला साहब, जब आपने बात शुरू की थी तब मैंने कहा था। शुरू में आपने कहा था "हम इनको देश का प्रधानमंत्री नहीं बनने देंगे" चौटाला साहब, आपके प्रधानमन्त्री बनाने या न बनाने से कुछ नहीं होता न तो आपके बनाने से कोई प्रधानमन्त्री बन सकता है और न आपके न बनाने से नहीं बन सकता है, यह फैसला तो देश की जनता करेगी। राजनीति में विरोध की प्राथमिकताएं होती हैं। अगर आपकी प्राथमिकता सोनिया गांधी जी हैं, क्योंकि वे विदेशी हैं इसलिए प्रधानमंत्री न बनें, तो और बात है लेकिन यह कोई मुद्दा नहीं है। इस देश के सामने और भी बहुत से मुद्दे हैं, क्या आपने उन मुद्दों का कोई जिक्र किया ?

22.00 बजे **श्री ओम्प्रकाश सिंह :** सर, जैसे कि चौधरी बीरेन्द्र सिंह ने कहा कि इस बात से फर्क नहीं पड़ता कि 32 साल पहले आ गए और यहां की नागरिकता ले ली। कार्यकारी स्पीकर साहब आप भी देखते हैं कि जब इन्टरनैशनल मैच टैलिकास्ट होते हैं तथा अगर मैच इंग्लैंड में इण्डिया और इंग्लैंड के बीच में हो रहा हो और वहां जो हिन्दुस्तान के गए हुए लोग हैं उन्होंने वहां की नागरिकता ले ली है और वहीं पर रह रहे हैं जब वह मैच होता है तो जो इण्डिया के लोग वहां पर गए हुए हैं चाहे उन्होंने वहां की नागरिकता ले ली है लेकिन फिर भी उनकी इच्छा होती है कि क्रिकेट में इण्डिया जीते। इण्डिया की अगर अच्छी परोफारमैंस होगी तो वे उस चीज को भी ऐप्रीशिएट करते हैं, तालियां बजाते हैं और गुब्बारे छोड़ते हैं। मेरे कहने का मतलब यह है कि उनके दिमाग में जिस देश में वे पैदा हुए हैं। उसकी लायलटी रहती है। सर ये जो 32 साल कह रहे हैं तो उस आदमी के दिमाग में अपने देश की लायलटी रहती है और वह कभी भूलती नहीं है। चाहे कलकत्ता और बम्बई गया हुआ व्यापारी जब वापस राजस्थान आएगा तो वह भी कोशिश करेगा कि 2-4 पैसे अपने गांव में लगाए। इसलिए जो लायलटी है वह डाउटफूल है।

श्रीमती करतार देवी : सर, यह एक आम नागरिक की बात नहीं है, सोनिया जी राजीव गांधी जी की धर्म पत्नी हैं। वह जिस दिन से ब्याह के आई थी उसी दिन से भारतीय हैं, भारत की है। जैसी उसने निभाई है वह तो भारत की एक आदर्श नारी ही निभा सकती है यह तो आप सब जानते हैं।

श्री ओम प्रकाश चौटाला : सर, हम भारतीय नारी का सम्मान करते हैं। (विघ्न) मैं अपमान करने में यकीन नहीं करता हूं क्योंकि मैं आपसे सीख रहा हूं। आपकी आदतें देख कर मैं बहुत कुछ सीखता हूं। इन्सान जिन्दगी में जो सीखता है वह किसी को देखकर सीखता है। मैं यह कह रहा था कि हमारे सामने दो विकल्प हैं कि अटल बिहारी वाजपेयी को प्रधानमंत्री बनाया जाए या सोनिया को प्रधानमंत्री बनाया जाए। हमारे राजनैतिक मतभेद हो सकते हैं यह अलग बात है। हमारा देश नेपाल की तरह हिन्दू राष्ट्र नहीं है। हमारा देश एक सैकूलर देश है। इस देश में हर आदमी को अपना मजहब मानने की छूट है। हर कोई अपनी स्वेच्छा से अपने धर्म की पालना करता है चाहे वह हिन्दू, मुसलमान, सिख या ईसाई है। इस बात का सबूत कारगिल में लोगों ने दिया है। हमारा सोनिया जी से कोई द्वेष नहीं है लेकिन कुछ पुराने किए हुए कामों को ध्यान में रखकर ही निर्णय लिए जाते हैं। श्री बीरेन्द्र सिंह जी, 1971 में जब

[श्री ओम प्रकाश चौटाला]

हिन्दुस्तान और पाकिस्तान की लड़ाई हुई थी तो इन्दिरा गांधी जी ने बड़ी बहादुरी से वह लड़ाई लड़ी थी। आज जो अपने आप को श्रीमति इन्दिरा गांधी की बहू कहती है, आपकी पार्टी की अध्यक्षा हैं उस वक्त राजीव गांधी को लेकर इटली चली गई थीं। (विघ्न) सर, मैं जो कुछ भी कह रहा हूं वह रिकार्ड की बात है, आप चाहे तो इस बारे में डैट लगा लें। (विघ्न) कैप्टन तुझे तो कुछ देर नहीं, तू क्यों बीच में बोलता है। यह मेरी और बीरेन्द्र सिंह जी की बात है। बीरेन्द्र सिंह जी यह रिकार्ड की बात है मैं कोई अनर्गल बात नहीं कहूंगा और न ही मेरी आदत है। आप चाहें तो रिकार्ड निकलवा कर देख लें। आप चाहे तो हम प्रैस में चलते हैं प्रैस वालों से पूछ लेंगे कि इन्दिरा के मना करने के बावजूद सोनिया इटली चली गई और यह कह कर गई कि जब देश के हालात ठीक होंगे तब आऊंगी। मैंने अपने बच्चे पालने हैं। (विघ्न) सर, कारगिल की लड़ाई होनी ही थी। चौधरी बीरेन्द्र सिंह जी अगर आपकी नेत्री देश की प्रधानमंत्री होती और कारगिल की लड़ाई हो गई होती तो वह इटली चली जाती। आप यह बताएं फिर देश के 100 करोड़ लोगों की किस्मत का फैसला कौन करता। किस के पास हम जाते और क्या करते। हम इसलिए इसका विरोध करते हैं। (विघ्न)

श्री बीरेन्द्र सिंह : चौटाला साहब ने फिर वही बात कहूंगा कि अगर आज आप इस बात को खत्म में मुद्दा बना करके अपनी तकरीर देना चाहते हैं तो हमें भी बोलने का मौका दें। हम भी इस बात पर बोलेंगे। मेरा आपसे अनुरोध यह है कि आज भूख का, गरीबी का और नौजवानों के लिए रोजगार का मुद्दा है। आज किसान का लड़का अपराध की तरफ बढ़ रहा है ये सब मुद्दे हैं। इनकी तरफ गौर करने की जरूरत है। अगर आपके पास इनका समाधान है तो आप इस पर गौर करें। यह फैसला तो देश की 100 करोड़ जनता ने करना है, 70 करोड़ वोटर्ज ने करना है कि कौन प्रधानमंत्री होगा।

श्री ओम प्रकाश चौटाला : चौधरी बीरेन्द्र सिंह शायद आप यह भूल गये होंगे कि इस किस्से को हमने नहीं छेड़ा था बल्कि 25 तारीख को जब चौधरी बंसी लाल जी विश्वास मत अर्जित कर रहे थे तो सर्वप्रथम आपने ही बड़ी दलील के साथ यह किस्सा छेड़ा था। तब आपने अपनी गलत बात को कहकर भी हमारी सही बात को दबाने का प्रयास किया था। हम मानते हैं कि वह इस देश की बहू है लेकिन इस देश में भारत मां है और इस देश के रहने वाले सौ करोड़ लोग इसको माता कहते हैं इस देश में जो कोई भी रहेगा वह मां कहकर ही रहेगा सास या बहू बनकर नहीं रहेगा। इसी तरह से ये किसानों की बात करते हैं।

श्री बीरेन्द्र सिंह : चौटाला साहब, आपको बी०जे०पी० के प्रभाव में आने की इतनी जरूरत नहीं है आप अपनी बात कहें। (विघ्न)

श्री ओम प्रकाश चौटाला : चौधरी बीरेन्द्र सिंह, आपने ही उस समर्थन के मामले को लेकर यह इल्जाम लगाया था कि आप किसानों के हमदर्द बनते थे। मैं आपको बताना चाहता हूं कि हमने तो किसानों के लिए आजीवन लड़ाईयां लड़ी हैं लेकिन आप तो उस पार्टी में शामिल हैं जिस पार्टी ने किसानों को गोलियों से मारा था चाहे वह कादमा कांड हो, चाहे वह निसिंग कांड हो, चाहे वह टोहाना कांड हो या चाहे वह नारनौल कांड हो। ये सब आपकी सरकार ने ही किए थे और आप भी उस सरकार में शामिल थे।

श्री बीरेन्द्र सिंह : मैं शामिल नहीं था। मैं तो खुद निसिंग में जाकर कह कर आया था कि किसानों के साथ ज्यादती हुई है।

श्री ओम प्रकाश चौटाला : कोई बात नहीं मैं दूसरी बातों के बारे में बता देता हूं। चौधरी देवी लाल ने मुख्यमंत्री बनने के बाद एक निर्णय लिया था कि जिस किसान से मूल से ज्यादा ब्याज लिया जाता रहा है वह आगे से नहीं लिया जाएगा। चौधरी बीरेन्द्र सिंह, आपने को-ऑपरेशन मिनिस्टर के तौर पर उस कानून को रद्द करके नये सिरे से चक्रवृद्धि ब्याज करने का कानून क्या नहीं बनाया था ? आपने इस बारे में बिल मूव किया था। आप उस समय को-ऑपरेशन मिनिस्टर थे। आप उस पार्टी में शामिल थे इसलिए चौधरी बीरेन्द्र सिंह, मैं पुराने किस्सों को नहीं छेड़ना चाहता और न छेड़ना ही ज्यादा अच्छा है।

श्री बीरेन्द्र सिंह : किस्से तो आपके भी 6 महीने के इतने हैं जितने 60 साल के होते हैं।

श्री ओम प्रकाश चौटाला : मैं तो यह छेड़ ही नहीं रहा हूं। मुझे तो एक अवसर मिला है लेकिन आप कहते हैं कि यह जनादेश नहीं है। आपको सोचना चाहिए कि इस जनादेश की वजह से ही मैं मुख्य मंत्री हूं। जो ये लोग आज इधर आकर बैठे हैं इनको जनता ने मजबूर कर दिया था और ये इसी वजह से इधर आकर बैठे हैं आपकी वजह से नहीं बैठे हैं। आपने तो जनता के आदेश की उल्लंघना की थी क्योंकि आपने तो ऐसी सरकार को समर्थन दिया था जिसको इस प्रदेश की जनता बिल्कुल भी देखना पसंद नहीं करती थी।

श्रीमती करतार देवी : चौटाला साहब, अब भी आप हमारी वजह से ही मुख्यमंत्री बने हैं जब हमने समर्थन वापस लिया तभी आप मुख्यमंत्री बने।

श्री ओम प्रकाश चौटाला : मैं तो शुरू में ही कह रहा था कि हमें तो सबका समर्थन है। इसी तरह से चौधरी बीरेन्द्र सिंह जी ने कहा कि वजारत छोटी बनायी जाए। मैं इनकी बात से सहमत हूं लेकिन मेरे सामने वाली सीटों से जो लोग मेरे पास आएंगे इनसे ये इस बारे में कह दें मैं इनको मंत्री नहीं बनाऊंगा। लेकिन ये लोग तो पिछले तीन दिन से मुझे सोने ही नहीं दे रहे हैं क्योंकि इनका नेता तो भाग लिया इसलिए अब ये बेचारे कहां जाएं ? आप इनको समझा दो, मैं मान जाऊंगा। मेरा आपसे वादा है। डबल करैक्टर की बात को मैं दोहराऊंगा नहीं। मेरे ये रिश्तेदार हैं और इन्होंने शुरूआत में ही कहा कि ओमप्रकाश मुख्यमंत्री बनते ही अम्बाला में शेखों के यहां क्यों गया। ओम प्रकाश में यह आदत है कि जिन्होंने मुसीबत के वक्त में हमारा साथ दिया, आप जैसे जालिमों की वजह से जो परेशान हुए, मैं उनके प्यार और स्नेह को ठुकरा नहीं सकता।

श्री बीरेन्द्र सिंह : चौटाला साहब के बारे में एक बात मशहूर है जब भाषण करते हैं तो उसमें एक खास लफ्ज है कि मैं सुख में आऊं या न आऊं, दुख में जरूर आऊंगा, ये चाहते हैं कि दुख होता रहे और ये जाते रहें।

श्री ओम प्रकाश चौटाला : अपने हाथों किसी ने दुख मोल लिया है तो मेरी जिम्मेदारी नहीं है। शाखा के साथ जो आदमी सोया था वह तो इनको प्रोटेक्शन देने के लिए सोया था क्योंकि ये कमजोर आदमी थे और कोई तो ये बात कहे लेकिन निर्मल सिंह भी यही कहता है। 27 और 35 नंबर का कमरा पी०डब्ल्यू०डी० रैस्ट हाउस अम्बाला में जगमोहन बुटेला के प्रैस कोरिस्पोंडैंट के नाम बुक था वह अपनी मां की गत कराने के लिए पेहवा जा रहा था उसके रिश्तेदार यू०पी० से आने थे। आप मंत्री थे आप रात में गए वहां ठहरना था तो उस प्रैस कोरिस्पोंडैंट को कमरे से बाहर फेंक दिया। वह अपने रिश्तेदारों के इंतजार में रात भर सर्दी में बाहर ठिठुरता रहा। उनका नाम रिकार्ड में दर्ज है और प्रैस कोरिस्पोंडैंट को पी०डब्ल्यू०डी० रैस्ट हाउस में कमरा मिलता है आपने उस ठिठुरती सर्दी में उसको बाहर निकाल

[श्री ओम प्रकाश चौटाला]

दिया। आपने तो ऐसे कितने ही कुकर्म कर रखे हैं आपको याद थोड़े ही हैं। अब रिश्तेदारी का मामला है अब ज्यादा नहीं कहना चाहूंगा। निष्पक्ष चुनाव की बात आई थी। मैं आपको यकीन से एक बात कहना चाहूंगा कि मैं इस बात का पक्षधर हूं। भारतीय संविधान के अनुसार 18 वर्ष के प्रत्येक बालक को वोट देने का अधिकार मिला हुआ है। हमने तो वह दिन देखे हैं कि हमें जीते हुए को भी लोगों ने हराया है इसलिए मैं इस बात का पक्षधर हूं कि निष्पक्ष चुनाव हों। अगर चुनाव तक मैं इस प्रदेश का मुख्यमंत्री रहूंगा तो निश्चित रूप से चुनाव निष्पक्ष होंगे और इस बात की जिम्मेदारी मेरी होगी, यह मैं आपसे वादा करता हूं। (विघ्न) यह जनतंत्र है मैं चौधरी बंसी लाल की तरह ऊंट का पुछला पकड़ कर यह नहीं कहूंगा कि छोड़ूं ना। यह राज किसी के पास सदा नहीं रहे। न चौधरी देवी लाल सदा सत्ता में रहे, न चौधरी बंसी लाल सदा रहे न चौधरी भजन लाल सदा रहे न चौटाला सदा रहेगा। यह बात जनता के हाथ में है जनता चाहे तो मिट्टी के जर्रे को आसमान में भेज दे या जुल्म से सताई हुई जनता बदला ले। तो आकाश के तारे को बंसी लाल की तरह गंदगी के ढेर में फेंक दे लेकिन एक वायदा मेरा है कि अगर मैं इस कुर्सी पर रहूंगा तो चुनाव में किसी प्रकार की किसी अधिकारी की तरफ से पक्षपात की शिकायत नहीं मिलेगी। मैं तो चौधरी मनीराम के गोद गया हूं मैंने तो मुख्यमंत्री बनने के बाद इनको सबसे पहले सम्मान दिया है। (विघ्न) छतर सिंह तू तो लोगों का दुत्कारा हुआ आदमी है, क्यों समय खराब कर रहा है। अब तेरा कोई जिक्र नहीं है अगर जिक्र करवाना चाहे तो अलग बात है। ये तो मानते हैं कि आपका जिक्र खत्म हो गया है। आपकी और हमारी हैसियत में बहुत फर्क है। आपके क्षेत्र से तो इन हालात में जबकि आपकी सरकार ने पूरा जोर मारा लेकिन मेरा लड़का अजय सिंह आपके हल्के से 3800 वोटों से जीतकर आया। चौहान साहब आप की तो हर तरह से हैसियत खत्म हो गई है इसलिए मैंने पहले भी कहा है कि मेरे से मुकाबला करना छोड़ दो। इसलिए मैं एक बात कह रहा हूँ (विघ्न)

प्रो० छतर सिंह चौहान : कार्यकारी अध्यक्ष महोदय, ऑन ए प्वायंट ऑफ आर्डर। माननीय मुख्यमंत्री जी ने कहा है (विघ्न)

श्री कार्यकारी अध्यक्ष : चौहान साहब यह कोई प्वायंट ऑफ आर्डर नहीं है। इसलिए आप बैठ जायें।

श्री ओम प्रकाश चौटाला : कार्यकारी अध्यक्ष महोदय, चौहान साहब यह भी कह रहे थे कि इन को तो तनख्वाह मिलनी थी। मैं इनको बताना चाहता हूँ कि चौहान साहब की तनख्वाह में और एक एम०एल०ए० की तनख्वाह में सिर्फ 150 रुपये प्रतिदिन का फर्क है। 150 रुपये की खातिर ये इतने दिन तक डूबे रहे। अगर ये एम०एल०ए० रहते तो सिर्फ 150 रुपये कम मिलते। इनके नेता ने भी तो इनकी तरह ही 10 मिनट पहले ही त्याग-पत्र दिया था। (विघ्न)

जहां तक कानून-व्यवस्था की स्थिति का ताल्लुक है, मैंने मुख्यमंत्री का पद ग्रहण करते ही एक बात कही थी कि कानून-व्यवस्था की स्थिति में सुधार करने की मेरी सरकार की पहली प्राथमिकता होगी। आज प्रदेश में हालात बहुत बिगड़े हुए हैं। अगर सारी बातों को दोहराऊंगा तो अच्छा नहीं लगेगा। आप सभी सदस्य उन बातों से परिचित है। कि क्या हालात इस प्रदेश में रहे हैं और उन हालातों को सुधारने में कुछ समय जरूर लगेगा। हमारे प्रदेश में हमारी भाषा में एक बात कही जाती है कि बिगड़ोड़ो तिवण समरै कोनी, तिवण हमारे यहां सब्जी को कहते हैं अगर सब्जी में नमक ज्यादा डाल दिया जाये तो सब्जी ठीक नहीं बनती। सब्जी बनते वक्त अगर बिगड़ जाये तो उसको सवांरना बहुत मुश्किल होता है। इसी

तरह से बिगड़ी हुई कानून-व्यवस्था को सुधारने में निश्चित रूप से समय जरूर लगेगा। इसलिए मैंने मुख्यमंत्री का पद ग्रहण करने के बाद सबसे पहला काम डी०आई०जी०, सी०आई०डी० को बदलने का किया था। चौधरी बंसी लाल जी अगर आज सदन में मौजूद होते तो मैं उनको बताता कि जब चौधरी बंसी लाल जी, चौधरी बीरेन्द्र सिंह जी वाली सीट पर बैठा करते थे तो उस समय उन्होंने दो सिपाहियों को पीट-पीट कर थाने में ले जाकर बन्द कर दिया था। मुख्यमंत्री का पद ग्रहण करने के बाद हमने उन सभी की जाँच करवाई और तभी जाकर उन सब को बदला गया। चौधरी मनीराम गोदारा जी मुझे से कहते थे कि मैं काहे का गृह मंत्री हूं। यो सतेन्द्रीयो मेरी पार ये कोनी पड़ने दे। क्योंकि मैं गोदारा साहब के गोद गया हुआ हूं, इसलिए सबसे पहले मैंने उन्हीं को रिलीफ दिया डी०आई०जी० सी०आई०डी० को बदलकर ताकि गोदारा साहब इस जेल से आजाद हो सकें। मैं इस बात का पक्षधर हूं कि कानून-व्यवस्था की स्थिति में सुधार करने का हर तरह से भरसक प्रयास करूंगा। यह मेरी सरकार की जिम्मेवारी होगी। कैप्टन अजय सिंह ने रिवाड़ी के मीरपुर के रीजनल सैन्टर का जिक्र किया। चाहे वह मीरपुर का रीजनल सैन्टर हो, चाहे फूलपुर, सिरसा का रिजनल सैन्टर हो मैं इस सदन को विश्वास दिलाता हूँ कि जो आदेश पुरानी सरकारों के जारी किए हुए हैं उन आदेशों को निश्चित रूप से बहाल किया जायेगा। जम्भेश्वर यूनिवर्सिटी का जिक्र आया। मैं चौधरी मनीराम गोधारा जी से वायदा करता हूं कि अगर वे गुरु जम्भेश्वर के पवित्र जन्म दिवस के सालाना फंक्शन पर वे मुझे निमंत्रण देंगे तो मैं खुशी से जाकर वहीं पर कुछ खास घोषणा करके आऊंगा।

श्री मनी राम गोदारा : हमने तो आपको भी पहले बुलाया था और चौधरी देवीलाल जी को भी बुलाया था।

श्री ओम प्रकाश चौटाला : चौधरी , साहब अपने चौधरी देवीलाल जी को इज्जत दी यह बड़ी अच्छी बात है। मगर आपके अपनों ने ही आपका नुक्सान किया हो तो मैं क्या कर सकता हूँ। मैं तो अपना दर्तव्य निभाऊंगा। खासतौर से कुछ ऐसे मामले हैं जैसे शहीदों की बात को लेकर कई किस्म की चर्चायें की गई । हमने क्या किया, हम कहां गये। हम ने तो अपनी तरफ से प्रयास किया है। हम तो शहीदों का सम्मान करते हैं क्योंकि वे हमारे सजग प्रहरी हैं। जो देश की सीमाओं की रक्षा करते हुए अपने प्राण न्यौच्छावर करते हैं। कितनी विकट परिस्थितियों में यह लड़ाई लड़ी गई थी। यह तो आकाश और धरती के बीच की लड़ाई थी। माफ करना, मुझे फिर एक और बात का जिक्र करना पड़ गया। हमारे नौजवानों ने अपना बलिदान दिया और आपकी नेत्री ने उनका अपमान किया, जिसे हजार और सौ के अंतर का भी ज्ञान नहीं। यदि सरकार की नुक्ताचीनी करें तो बात जच सकती है, लेकिन यह कहना कहां तक मुनासिब है कि सरकार की गलती से कारगिल में हजारों नौजवान शहीद हो गए जबकि शहीदों की संख्या मात्र 400 है।

श्री बीरेन्द्र सिंह : कार्यकारी अध्यक्ष महोदय, इनको पता होना चाहिए कि जो सैनिक घायल हुए हैं, वे भी उन में शामिल हैं।

श्री ओम प्रकाश चौटाला : बीरेन्द्र सिंह जी, ठीक है, आप अपनी बात को सुधारिये, लेकिन कहां तक ? इसे तो मैं भी जानता हूँ, आप भी जानते हैं। मुझे इस बात पर गर्व महसूस होता है कि श्री अटल बिहारी वाजपेयी ने स्वयं माना है कि पाकिस्तानी घुसपैठियों ने हमारे साथ दगाबाजी की, हमारे साथ विश्वासघात किया तथा हमारी सरजमीं में दाखिल हो गए। लेकिन उनके नेतृत्व की सराहना की जानी चाहिए कि उन्होंने सारे के सारे पाकिस्तानी घुसपैठियों व फौजियों को अपनी सरजमीं से खदेड़ने का काम किया है। इनको यह बात याद नहीं आ रही है। (शोर एवं विघ्न)

श्री बीरेन्द्र सिंह : कार्यकारी अध्यक्ष महोदय, श्री अटल बिहारी वाजपेयी ने कौन सी तोप चला दी है ?

श्री ओम प्रकाश चौटाला : बीरेन्द्र सिंह जी, फौज ने लड़ाई लड़ी या सरकार ने लड़ाई लड़ी, मैं इस बात में नहीं जाऊँगा। मैं आपको बताना चाहूंगा कि उस समय आपकी ही सरकार थी जब चीन ने हमारी लाखों एकड़ जमीन पर कब्जा कर लिया तथा 50 वर्षों तक आपकी सरकार रही, परन्तु एक इंच जमीन भी आप चीन से छुड़ा नहीं पाए। इतना ही नहीं, पाकिस्तान से सियाचिन का एरिया नहीं छुड़ा पाए। श्री लंका में लड़ाई में हमारे 2600 नौजवान मारे गए लेकिन उन मरने वाले सैनिकों के बिस्तर उनके घर आया करते थे, दूसरी ओर, आज मौजूदा सरकार ने शहीदों को जिस ढंग से सम्मान प्रदान किया है, वह सराहनीय है।

Shri Birender Singh : Mr. Acting Speaker, Sir, leader of the House has touched the war issue. I think, he should not touch the 'peace-keeping-forces operations' otherwise a lot of discussion may take place. मैं एक बात कहना चाहता हूं कि उस समय श्री राजीव गांधी जी ने श्रीलंका में ''पीस-कीपिंग-फोर्स भेजी थी। उस समय, शायद आप राज्यसभा के सदस्य थे, आपको याद होगा। उस समय अमरीका ने यह बोल दिया था कि यदि श्री लंका उन से सहायता चाहता है तो वे जाफना का जो द्वीप है उस पर अपना जहाज भेज सकते हैं तथा इस प्रकार से यदि श्रीलंका में अमरीका का अड्डा बन जाता तो हिन्दुस्तान का ऐसा कोई हिस्सा नहीं बचता जो उनकी मार से बाहर होता। आज हमें इस बात का फक्र है कि पाकिस्तान चाहे मिग-16 खरीदे या कुछ भी खरीदे, लेकिन पाकिस्तान का जहाज नागपुर से आगे मार नहीं कर सकता है। हमारी फोर्स की जो टैक्नीकल बातें हैं, यदि उन पर जाएंगे तो मैं कहना चाहूंगा कि जिस बोफोर्स तोप को ये नकली कहते थे, उन बोफोर्स तोपों की सहायता से हमारे सैनिकों ने देश की सरहदों से पाकिस्तानी घुसपैठियों को केवल 2 महीने में ही निकाल बाहर किया अन्यथा हम उन घुसपैठियों को 20 साल में भी वहां से नहीं निकाल सकते थे। 1989 के चुनावों में इन्होंने बोफोर्स के नाम पर बड़े-बड़े इश्तहार लगवाए थे तथा जिसका हमें खामियाजा भी भुगतना पड़ा था। कार्यकारी अध्यक्ष महोदय, यदि ये 1962 की लड़ाई की बात करते हैं तो फिर इनको यह बात भी करनी चाहिए कि श्रीमति इंदिरा गांधी जी ने बंगलादेश में एक लाख फौजियों को सरेंडर कराया था।

श्री ओम प्रकाश चौटाला : कार्यकारी अध्यक्ष महोदय, मैं बीरेन्द्र सिंह जी की इस बात से सहमत हूँ कि बोफोर्स तोपों से हमें कारगिल की लड़ाई में बहुत ही फायदा पहुंचा है। (विघ्न) बीरेन्द्र सिंह जी, हमें बोफोर्स के प्रति कोई शिकायत नहीं थी। आपकी अध्यक्षा के रिश्तेदार क्वात्रोची ने जो बोफोर्स सौदे में दलाली खाई थी, हम तो उसके खिलाफ लड़ रहे थे। मैं लंका की भी यही बात कह रहा हूँ। हां, यह रिकार्ड की बात है। आप रिकार्ड से कैसे मुकर पाओगे। अगर आपको पीड़ा है तो मैं इसको छोड़ देता हूँ। मैं आपके केन्द्र की नेत्री का जिक्र नहीं करूंगा। यह तो ताजा ही है। हर्ष कुमार भी इस बात को बताएंगे। आपकी पार्टी का अध्यक्ष शोध गांव में जाकर लड्डू खाकर आ गया और 3 किलोमीटर के फासले पर गढी में समारोह में भी शामिल नहीं हुए। हर्ष जी क्या वहां गये थे? इस बारे में बताइए। (शोर)

श्री हर्ष कुमार : चौटाला साहब की बात बिल्कुल ठीक है। (थम्पिंग)

श्री ओम प्रकाश चौटाला : मैं यह बात आन ओथ कह रहा हूँ। मैं कोई अनर्गल बात नहीं कह रहा हूँ। मैं इसी लिए एक बात कह रहा हूँ कि जो कौम और मुल्क अपने बुजर्गों का अपने पुरखों का,

अपने गुरुओं का, शहीदों का सम्मान नहीं करती है, वह मुल्क और कौम बरबाद हो जाया करती है। इस प्रकार का अगर आपका नेतृत्व रहेगा तो आप हल्के में क्या लेने जाएंगे। जब आप लोगों के बीच में जाएंगे तभी आपको आटे-दाल का भाव मालूम होगा।

श्रीमती करतार देवी : मुख्यमंत्री बनते ही आप हमें थ्रेट करने लगें। अभी तो आपको आए ढाई दिन ही हुए हैं।

कैप्टन अजय सिंह यादव : अभी से आप हमें धमकाने लगे हैं।

श्री ओम प्रकाश चौटाला : मैं धमका नहीं रहा। मैंने तेरी बात मान ली। कोई और मुनासिब और जायज बात कहें तो उसे भी मान लूंगा। मैं यकीन और विश्वास के साथ एक बात कहकर सदन से जा रहा हूँ। मेरे दिमाग में लेश मात्र भी कभी फर्क नहीं आएगा चुनावी मैदान में तो हम एक दूसरे के साथ लड़ेंगे। जब प्रदेश के हित का सवाल आएगा और आपके कोई भी सम्मानित सदस्य किसी भी जायज और मुनासिब बात के लिए अगर सरकार से उम्मीद रखेगा तो मैं आपको वायदा करता हूँ कि यह सरकार आपकी उम्मीदों को पूरा करेगी।

श्री धर्मबीर गाबा : मैंने एस०एल०एज० ग्रांट की बात कही थी, उसका जवाब दे दीजिए।

श्री ओम प्रकाश चौटाला : गाबा साहब, मैं सबको बता देता हूँ कि चुनाव आचार संहिता रूपी तलवार कच्चे धागे से बंधी मेरे सिर पर लटक रही है।

बैठक का समय बढ़ाना

श्री कार्यकारी अध्यक्ष : यदि हाउस की सैन्स हो तो हाउस का समय 15 मिनट के लिए बढ़ा दिया जाए।

आवाजें : ठीक है जी।

श्री कार्यकारी अध्यक्ष : ठीक है, हाउस का समय 15 मिनट के लिए बढ़ा दिया जाता है।

विश्वास-मत (पुनरारम्भ)

श्री सोमवीर सिंह : आप देश के भले की बात कह रहे हैं ? कल गुड़गांव के अन्दर जो साढ़े 17 एकड़ जमीन प्रकाश सिंह बादल के परिवार को दी थी उस पर नाजायज कब्जा हुआ है। इस बारे में आपने क्या किया।

मुख्यमंत्री (श्री ओम प्रकाश चौटाला) : यह बात निराधार, बेसलैस और अनर्गल है। उस जमीन पर किसी का कोई कब्जा नहीं है। केस सुप्रीम कोर्ट में है। पहले भी एक-दो लोगों ने यह शोशा छोड़ने की कोशिश की थी लेकिन वह बात दब गई। आज पोजीशन ज्यों की त्यों है और वह जमीन आज भी हरियाणा सरकार के कब्जे में है। मैं सदन के सम्मानित सदस्यों से विनम्र निवेदन करता हूँ कि आज की इन परिस्थितियों में जिस प्रकार के वातावरण से यह प्रदेश गुजर रहा है इस प्रदेश की भलाई के लिए, बहबुद्धि के लिए सबसे निवेदन करूंगा कि इस मामले में मुझे विश्वास में लें और मुझे विश्वास दें और इस विश्वास मत पर आप सब लोगों की तरफ से मुझे सहयोग और समर्थन मिले, ऐसी मुझे आशा है। आपका धन्यवाद।

Mr. Acting Speaker : Question is—

That the House reposes its Confidence in the Chief Minister enjoying the support of the majority of its Members.

Shri Birender Singh : Sir, we want division.

(After ascertaining the votes of the members by voices, Mr. Acting Speaker announced that "The Ayes have it". This opinion was challenged and division was claimed. Mr. Acting Speaker after calling upon those members who were for "Ayes" and those who were for "Noes", respectively to rise in their places and on a count having been taken, declared that the motion was carried. 54 votes were in favour of the motion and 32 votes were against the motion.

The motion was carried.

Mr. Acting Speaker : Hon'ble Members, Mr. Ramesh Kashyap has no right to vote as per the decision of the Hon'ble Supreme Court.

अध्यक्ष के निर्वाचन के बारे में घोषणा

Mr. Acting Speaker : Hon'ble Members, the Governor of Haryana has fixed the 28th July, 1999, the date for election of the Speaker which matter will be taken up tomorrow.

Is it the sense of the House that the House be adjourned till 9.30 A.M. tomorrow ?

Voices : Yes.

Mr. Acting Speaker : Hon'ble Members, Now the House is adjourned till 9.30 a.m. tomorrow.

*10.40 p.m. (The House then * adjourned till 9.30 a.m. on Wednesday, the 28th July, 1999).

31382–H.V.S.–H.G.P., Chd.